

# Pānini Sutras

## Study Guide to Laghu Siddhanta Kaumudi Part 3 – HalantapumlingaH to Avyayani

**Editor : Medhā Michika, AVG, Anaikatti**



E-Published by:



Arsha Avinash Foundation

104 Third Street, Tatabad, Coimbatore 641012, India

Phone: + 91 9487373635

E mail: [arshaavinash@gmail.com](mailto:arshaavinash@gmail.com)

[www.arshaavinash.in](http://www.arshaavinash.in)

ॐ

The Study Guide to

Pāṇini-Sūtra

through Laghusiddhāntakaumudī

Volume 3

हलन्तपुंलिङ्गाः to अव्ययानि

Medhā Michika

AVG Anaikkatti, 2016

Copyright © 2016 by Medhā Michika  
All rights reserved.

The contents of this work may not in any shape or form be reproduced without permission of Medhā Michika.

All profit from the sales of this book goes towards the activities initiated by Śrī Pūjya Svamī Dayānanda Sarasvatī.

Electronic version of this book is available at:

Arsha Avinash Foundation

[www.arshaavinash.in](http://www.arshaavinash.in)

Printed version of this book is available at:

Arsha Vidya Gurukulam, Coimbatore, TN, India

[www.arshavidya.in](http://www.arshavidya.in)

Swami Dayananda Ashram, Rishikesh, UK, India

[www.dayananda.org](http://www.dayananda.org)

Arsha Vidya Gurukulam, Saylorsburg, PA, USA

[www.arshavidya.org](http://www.arshavidya.org)

CreateSpace

[wwwcreatespace.com](http://wwwcreatespace.com) (Search by “Medha Michika”)

Amazon of your country

[www.amazon.com](http://www.amazon.com) etc. (Search by “Medha Michika”)

ओम्

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

This book is the third volume in a series titled

“The Study Guide to Pāṇini-Sūtra through Laghusiddhāntakaumudī”.

As a traditional entry book into Pāṇinian Sanskrit grammar,  
the Laghusiddhāntakaumudī of Varadarāja is studied widely, especially in India.

The “Study Guide to Laghusiddhāntakaumudī” series of books makes  
Laghusiddhāntakaumudī easily accessible to students and teachers alike who desire to  
gain a good grasp of Pāṇinian Sanskrit grammar in a proper traditional manner.

In this series, each Pāṇinian sūtra is clearly explained in Laghusiddhāntakaumudī  
sequence with a diagram, word by word translation,  
and translation of the vṛtti (the short commentary on the sūtra).

This series of books has been developed as study material in 39-month Vedānta and  
Sanskrit courses conducted under Sri Pūjya Swami Dayananda Sarasvatī  
at Arsha Vidya Gurukulam, Anaikkatti, Tamil Nadu, India.

Study Guide to Pāṇini Sūtra through Laghusiddhāntakaumudī Series

- Volume 1. संज्ञाप्रकरणम्, सन्धिप्रकरणम्  
Volume 2. षड्विङ्गाः 1 अजन्तशब्दाः  
Volume 3. षड्विङ्गाः 2 हलन्तशब्दाः  
Volume 4. तिङन्तप्रकरणम् 1 भ्वादयः  
Volume 5. तिङन्तप्रकरणम् 2 अदादयः ~ जुहोत्यादयः  
Volume 6. तिङन्तप्रकरणम् 3 दिवादयः ~ क्र्यादयः  
Volume 7. तिङन्तप्रकरणम् 4 चुरादयः ~ लकारार्थप्रक्रियाः with complete सनादिप्रत्ययसूत्राणि  
Volume 8. कृदन्तप्रकरणम्  
Volume 9. विभक्त्यर्थप्रकरणम् with complete कारक-विभक्तिसूत्राणि  
Volume 10. समासप्रकरणम्  
Volume 11. तद्धितप्रकरणम्  
Volume 12. स्त्रीप्रत्ययाः ~ लिङ्गानुशासनम्

## Table of Contents

### Table of Contents

|   |     |
|---|-----|
| अथ हलन्तपुँल्लिङ्गः.....                      | 1   |
| ह-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (1) लिह् .....          | 1   |
| ह-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (2) दुह् .....          | 4   |
| ह-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (3) द्रुह् .....        | 8   |
| ह-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (4) विश्ववाह् .....     | 13  |
| ह-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (5) अनडुह् .....        | 17  |
| ह-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (6) तुरासाह् .....      | 25  |
| व-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (1) सुदिव् .....        | 27  |
| रेफ-अन्त-पुँल्लिङ्गः (1) चतुर् .....          | 30  |
| म-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (1) प्रशाम् .....       | 35  |
| म-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (2) किम् .....          | 37  |
| म-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (3) इदम् .....          | 39  |
| न-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (1) राजन् .....         | 53  |
| न-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (2) यज्वन् .....        | 59  |
| न-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (3 #1) वृत्रहन् .....   | 62  |
| न-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (3 #2) शार्ङ्गिन् ..... | 70  |
| न-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (3 #3) पूषन् .....      | 71  |
| न-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (3 #4) अर्यमन् .....    | 72  |
| न-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (4) मघवन् .....         | 73  |
| न-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (5) युवन् .....         | 79  |
| न-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (6) अर्वन् .....        | 82  |
| न-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (7) पथिन् .....         | 84  |
| न-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (8) पञ्चन् .....        | 90  |
| न-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (9) अष्टन् .....        | 93  |
| ज-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (1) ऋत्विज् .....       | 96  |
| ज-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (2 #1) युज् .....       | 101 |
| ज-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (2 #2) सुयुज् .....     | 103 |
| ज-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (3) खञ्ज् .....         | 105 |
| ज-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (4) राज् .....          | 107 |

|  |     |
|--|-----|
| ज-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (5) विश्वराज्.....                             | 111 |
| ज-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (6) भृस्ज्.....                                | 113 |
| द-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (1) त्यद् .....                                | 115 |
| द-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (2) युष्मद्, अस्मद् .....                      | 119 |
| Summary of declension of युष्मद्/अस्मद् (द्-पुं-3) by the part ..... | 140 |
| द-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (3) सुपाद् .....                               | 151 |
| थ-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (1) अग्निमथ्.....                              | 153 |
| च-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (1) प्राच्.....                                | 154 |
| च-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (2) उदच् .....                                 | 161 |
| च-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (3) सम्यच्.....                                | 164 |
| च-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (4) सध्यच् .....                               | 167 |
| च-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (5) तिर्यच् .....                              | 169 |
| च-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (6) प्राच्.....                                | 172 |
| च-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (7) पयोमुच्.....                               | 179 |
| त-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (1) महत्.....                                  | 181 |
| त-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (2) धीमत्.....                                 | 185 |
| त-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (3) भवतुँ.....                                 | 187 |
| त-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (4) भवत्.....                                  | 189 |
| त-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (5) ददतुँ.....                                 | 190 |
| प्-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (1) गुप् .....                                | 194 |
| श-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (1) तादृश्.....                                | 195 |
| श-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (2) विश्.....                                  | 198 |
| श-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (3) नश्.....                                   | 199 |
| श-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (4) घृतस्पृश्.....                             | 201 |
| ष्-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (1) दधृष्.....                                | 203 |
| ष्-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (2) रत्नमुष्.....                             | 204 |
| ष्-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (3) षष्.....                                  | 205 |
| ष्-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (4) पिपठिष्.....                              | 206 |
| ष्-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (5) चिकीर्ष्.....                             | 210 |
| स्-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (1) विद्वस्.....                              | 212 |

## Table of Contents

|  |     |
|--|-----|
| स्-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (2) पुंस्.....                            | 215 |
| स्-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (3) उशनस्.....                            | 218 |
| स्-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (4) अनेहस्.....                           | 222 |
| स्-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (5) वेधस्.....                            | 224 |
| स्-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (6) अदस्.....                             | 226 |
| अथ हलन्तस्त्रीलिङ्गाः.....                                       | 236 |
| ह-कारान्त-स्त्रीलिङ्गः (1) उपानह्.....                           | 236 |
| ह-कारान्त-स्त्रीलिङ्गः (2) उष्णिह्.....                          | 239 |
| व-कारान्त-स्त्रीलिङ्गः (1) दिव्.....                             | 241 |
| रेफान्त-स्त्रीलिङ्गः (1) गिर्.....                               | 242 |
| रेफान्त-स्त्रीलिङ्गः (2) चतुर्.....                              | 244 |
| म-कारान्त-स्त्रीलिङ्गः (1) किम्.....                             | 246 |
| म-कारान्त-स्त्रीलिङ्गः (2) इदम्.....                             | 249 |
| The सूत्रक्रम analysis of इदम् section (7.1.108 to 7.2.113)..... | 250 |
| द-कारान्त-स्त्रीलिङ्गः (1) त्यद्.....                            | 255 |
| च-कारान्त-स्त्रीलिङ्गः (1) वाच्.....                             | 258 |
| प-कारान्त-स्त्रीलिङ्गः (1) अप्.....                              | 260 |
| श-कारान्त-स्त्रीलिङ्गः (1) दिश्.....                             | 262 |
| श-कारान्त-स्त्रीलिङ्गः (2) दृश्.....                             | 264 |
| ष-कारान्त-स्त्रीलिङ्गः (1) त्विष्.....                           | 266 |
| ष-कारान्त-स्त्रीलिङ्गः (2) सजुष्.....                            | 267 |
| ष-कारान्त-स्त्रीलिङ्गः (3) आशिष्.....                            | 269 |
| स-कारान्त-स्त्रीलिङ्गः (1) अदस्.....                             | 271 |
| अथ हलन्तनपुंसकलिङ्गाः.....                                       | 276 |
| ह-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (1) स्वनडुह्.....                         | 276 |
| रेफ-अन्त-नपुंसकलिङ्गः (1) वार्.....                              | 278 |
| रेफ-अन्त-नपुंसकलिङ्गः (2) चतुर्.....                             | 280 |
| म-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (1) किम्.....                             | 281 |
| म-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (2) इदम्.....                             | 282 |
| न-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (1) अहन्.....                             | 285 |

|   |     |
|---|-----|
| न-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (2) दण्डिन्.....                 | 288 |
| न-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (3) सुपथिन्.....                 | 290 |
| ञ्-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (1) ऊर्ज्.....                  | 292 |
| द-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (1) तद्.....                     | 294 |
| द-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (2) यद्.....                     | 295 |
| द-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (3) एतद्.....                    | 296 |
| च-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (1) गो + अच् (गत्यर्थे अच्)..... | 297 |
| च-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (2) गो + अच् (पूजार्थे अच्)..... | 300 |
| त-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (1) शकृत्.....                   | 304 |
| त-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (2) ददत्.....                    | 305 |
| त-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (3) तुदत्.....                   | 308 |
| त-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (4) पचत्.....                    | 311 |
| त-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (5) दीव्यत्.....                 | 314 |
| Summary of declension of शत्रन्त for all लिङ्गs.....    | 316 |
| ष-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (1) धनुष्.....                   | 329 |
| स-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (1) पयस्.....                    | 331 |
| स-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (2) सुपुंस्.....                 | 333 |
| स-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (3) अदस्.....                    | 335 |
| अथाव्ययानि.....   | 337 |
| Index.....  | 354 |

Abbreviations:

AK – अव्ययकोशः Avyaya Kosa, a dictionary of indeclinables – Sri V. Srivatsankacharya – Samskrit

Education Society

Bh1 – भैमीव्याख्या प्रथम भाग – भीमसेन शास्त्री

SK – सिद्धान्तकौमुदी

B – बालमनोरमा

## अथ हलन्तपुँल्लिङ्गाः

As they were in अजन्त section, प्रातिपदिकs are introduced by the last letter in the order of माहेश्वरसूत्र.

### ह-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (1) लिह्

लेढि इति लिट् । One who licks is called लिह्.

लिह् आस्वादने (2U) to lick

लिह् + क्विप् 3.2.76 क्विप् च ।

लिह् 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

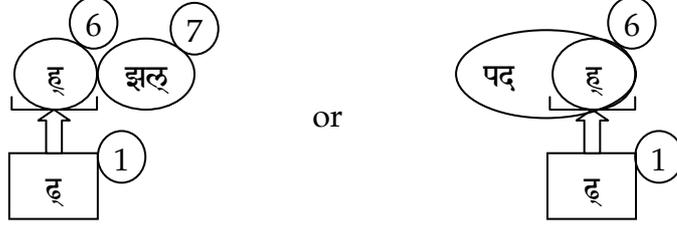
लिह् + सुँ<sup>1/1</sup>

लिह् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

Continue to the next sūtra.

[विधिसूत्रम्] 8.2.31 हो ढः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

ह् is replaced by ढ् when followed by झल् or at the end of पद.



हः 6/1 ढः 1/1 । ~ झलि 7/1 पदस्य 6/1 अन्ते 7/1 च 0

2 words in the सूत्र; 4 words as अनुवृत्ति

- हः 6/1 – प्रातिपदिक ह्; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- ढः 1/1 – The अ after ढ् is उच्चारणार्थ. This is आदेश.
- झलि 7/1 – From 8.2.26 झलो झलि।. प्रत्याहार झल्; in परसप्तमी.
- पदस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 8.1.16 पदस्य।; in सम्बन्धे षष्ठी to अन्ते.
- अन्ते 7/1 – From 8.2.29 स्कोः संयोगाद्योरन्ते च।; in अधिकरणे सप्तमी.
- च 0 – From 8.2.29 स्कोः संयोगाद्योरन्ते च।; connecting झलि and पदस्य अन्ते.

[LSK] हस्य 6/1 ढः 1/1 स्यात् III/1 झलि 7/1 पदान्ते 7/1 च 0 ।

ढ् is the substitute in the place of ह् when झल् follows, or at the end of पद.

[LSK] लिट् 1/1, लिङ् 1/1।

लिह् + सुँ 1/1

लिह् 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

लिढ् 8.2.31 हो ढः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

लिङ् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

लिट् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ चर् झलाम्

[LSK] लिहौ 1/2 । लिहः 1/3 ।

[LSK] लिङ्भ्याम् 3/2 । By पदसंज्ञा.

लिह् + भ्याम्

लिढ् + भ्याम् 8.2.31 हो ढः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

लिङ् + भ्याम् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।

[LSK] लिट्सु 7/3, लिट्सु 7/3 ॥

लिह् + सुप्

लिह् + सु 8.2.31 हो ढः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

लिङ् + सु 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।

लिङ् + घ् सु 8.3.29 डः सि घुट् । ~ वा

लिङ् + त् सु 8.4.55 खरि च । ~ चर् झलाम्

लिट् + त् सु 8.4.55 खरि च । ~ चर् झलाम्

घुट्-आगम-अभाव-पक्षे

लिह् + सु 8.2.31 हो ढः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

लिङ् + सु 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।

लिट् + सु 8.4.55 खरि च । ~ चर् झलाम्

Summary of declension of लिह् (ह्-पुं-1)

|   | एकवचनम्                                     | द्विवचनम्                            | बहुवचनम्   |
|---|---|--------------------------------------|--|
| 1 | लिट्/लिङ् 6.1.68, 8.2.31,<br>8.2.39, 8.4.56 | लिहौ                                 | लिहः   |
| 5 | same as above                               | same as above                        | same as above                                      |
| 2 | लिहम्                                       | same as above                        | same as above                                      |
| 3 | लिहा  | लिङ्भ्याम् 8.2.31, 8.2.39,<br>8.4.53 | लिङ्भिः 8.2.31, 8.2.39, 8.2.66,<br>8.3.15, 8.4.53  |
| 4 | लिहे  | same as above                        | लिङ्भ्यः 8.2.31, 8.2.39, 8.2.66,<br>8.3.15, 8.4.53 |
| 5 | लिहः  | same as above                        | same as above                                      |
| 6 | same as above                               | लिहोः                                | लिहाम्   |
| 7 | लिहि  | same as above                        | लिट्सु/लिङ्सु 8.2.31, 8.2.39,<br>8.3.29, 8.4.55    |

## ह-कारान्त-पुंलिङ्गः (2) दुह्

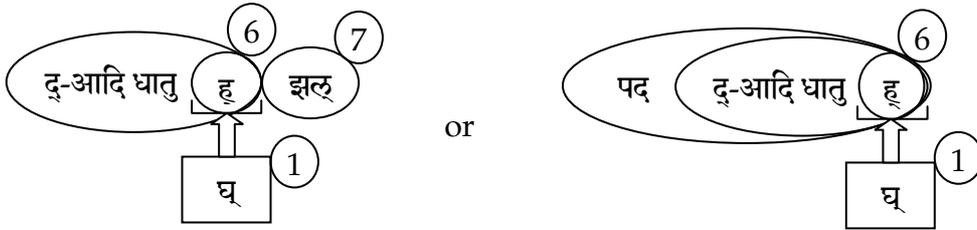
दुह् प्रपूर्णे (2U) to milk + क्विप् 3.2.76 क्विप् च ।

दुह् 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

As अपवाद for 8.2.31 हो ढः।, ह् belonging to a धातु starting with द् is replaced by घ्, instead of ह् by the next sūtra.

### [विधिसूत्रम्] 8.2.32 दादेर्धातोर्घः । ~ हः झलि पदस्य अन्ते च

For द्-beginning धातु, its ह् is replaced by घ् when followed by झल् or at the end of पद.



द्-आदेः 6/1 धातोः 6/1 घः 1/1 । ~ हः 6/1 झलि 7/1 पदस्य 6/1 अन्ते 7/1 च 0

3 words in the सूत्र; 5 words as अनुवृत्ति

- द्-आदेः 6/1 – द् आदिः यस्य सः दादिः (116B) धातुः, तस्य ।; adjective to धातोः.
- धातोः 6/1 – In सम्बन्धे षष्ठी to हः.
- घः 1/1 – The अ after घ् is उच्चारणार्थ. This is आदेश.
- हः 6/1 – प्रातिपदिक ह्; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- झलि 7/1 – From 8.2.26 झलो झलि।. प्रत्याहार झल्; in परसप्तमी.
- पदस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 8.1.16 पदस्य।; in सम्बन्धे षष्ठी to अन्ते.
- अन्ते 7/1 – From 8.2.29 स्कोः संयोगाद्योरन्ते च।; in अधिकरणे सप्तमी.
- च 0 – From 8.2.29 स्कोः संयोगाद्योरन्ते च।; connecting झलि and पदस्य अन्ते.

[LSK] झलि 7/1 पद-अन्ते 7/1 च 0 उपदेशे 7/1 द्-आदेः 6/1 धातोः 6/1 हस्य 6/1 घः 1/1 ॥

घ् is the substitute in the place of ह् of धातु which begins with द्, when झल् follows, or at the end of पद.

The धातु is द्-beginning in उपदेश, not after modification, such as addition of अट्-आगम.

दुह् + सुं<sup>1/1</sup>

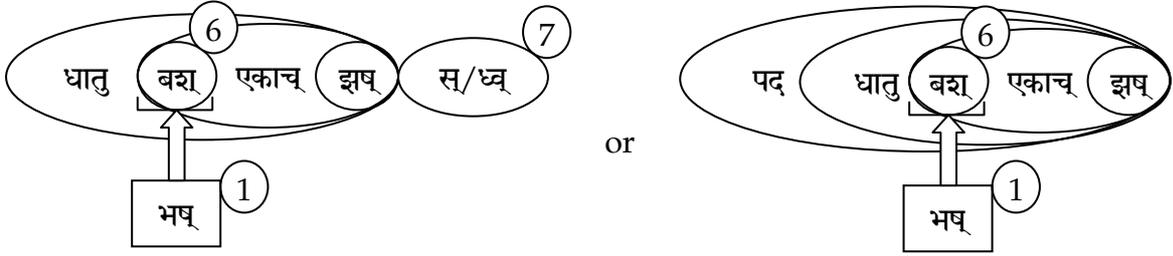
दुह् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

दुघ् 8.2.32 दादेर्धातोर्घः।, after negating 8.2.31 हो ढः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

Continue to the next sūtra.

### [विधिसूत्रम्] 8.2.37 एकाचो बशो भष् झषन्तस्य सध्वोः । ~ धातोः पदस्य अन्ते च

Of a group of letters which has one अच् (एकाच्), which is a part of धातु, and ends with झष, बश is replaced by भष् when the एकाच् is followed by स/ध्व, or at the end of पद.



एक-अचः<sup>6/1</sup> बशः<sup>6/1</sup> भष्<sup>1/1</sup> झष-अन्तस्य<sup>6/1</sup> सध्वोः<sup>7/2</sup> । ~ धातोः<sup>6/1</sup> पदस्य<sup>6/1</sup> अन्ते<sup>7/1</sup>

5 words in the सूत्र; 3 words as अनुवृत्ति

- एक-अचः 6/1 – एकः अच् यस्य सः एकाच् (116B), तस्य।; that which has one vowel in it; in सम्बन्धे षष्ठी (अवयव-षष्ठी) to बशः.
- बशः 6/1 – प्रत्याहार बशः; ब, ग, ङ, द्; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- भष् 1/1 – This is आदेश.
- झष-अन्तस्य 6/1 – झष अन्ते यस्य सः झषन्तः (176B), तस्य ।; adjective to एक-अचः.
- सध्वोः 7/2 – स च ध्व च सध्वौ (ID), तयोः।; in परसप्तमी.
- धातोः 6/1 – From 8.2.32 दादेर्धातोर्घः।; in सम्बन्धे षष्ठी (अवयव-षष्ठी) to एक-अचः.
- पदस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 8.1.16 पदस्य।; in सम्बन्धे षष्ठी to अन्ते.
- अन्ते 7/1 – From 8.2.29 स्कोः संयोगाद्योरन्ते च।; in अधिकरणे सप्तमी.
- च 0 – From 8.2.29 स्कोः संयोगाद्योरन्ते च।; connecting सध्वोः and पदस्य अन्ते.

[LSK] धातु-अवयवस्य<sup>6/1</sup> एक-अचः<sup>6/1</sup> झष-अन्तस्य<sup>6/1</sup> बशः<sup>6/1</sup> भष्<sup>1/1</sup> से<sup>7/1</sup> ध्वे<sup>7/1</sup> पदान्ते<sup>7/1</sup> च<sup>0</sup> ।

भष् is the substitute in the place of बश of that which is a part of धातु, contains one अच्, and ends with झष, when स or ध्व follows, or at the end of पद.

Note that एकाच् and धातु are not समानाधिकरण. In अनेकाच् धातु, such as गर्दम् (गर्दभ + णिच् by तत्करोति तदाचष्टे । + क्तिप्), झषन्त एकाच् which has बश् is दम्.

In the case of दुह्, the एकाच् has to be understood as व्यपदेशिवद्भाव because दुह् is the whole धातु, not अवयव. Denoting the only son as the eldest son or the youngest son is called व्यपदेशिवद्भाव.

[LSK] धुक्<sup>1/1</sup>, धुग्<sup>1/1</sup>

दुह् + सुँ<sup>1/1</sup>

दुह् 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्वपृक्तं हल् । ~ लोपः

दुघ् 8.2.32 दादेर्धातोर्घः।

धुघ् 8.2.37 एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्वध्वोः । ~ हः झलि पदस्य अन्ते च

धुग् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।

धुक् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ चर् झलाम्

[LSK] दुहौ<sup>1/2</sup> । दुहः<sup>1/3</sup> ।

[LSK] धुग्भ्याम्<sup>3/2</sup> ।

दुह् + भ्याम्

दुघ् + भ्याम् 8.2.32 दादेर्धातोर्घः।

धुघ् + भ्याम् 8.2.37 एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्वध्वोः । ~ हः झलि पदस्य अन्ते च

धुग् + भ्याम् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।

[LSK] धुक्षु<sup>7/3</sup> ॥

दुह् + सुप्

दुघ् + सु 8.2.32 दादेर्धातोर्घः।

धुघ् + सु 8.2.37 एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्वध्वोः । ~ हः झलि पदस्य अन्ते च

धुग् + सु 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।

धुग् + षु 8.3.59 आदेश-प्रत्यययोः । ~ इणकोः सः मूर्धन्यः

धुक् + षु 8.4.55 खरि च । ~ चर् झलाम्

## Summary or declension of दुह् (ह्-पुं-2)

दकारादि-हकारान्त-धातु-अन्त-शब्दः

|   | एकवचनम्   | द्विवचनम्                                    | बहुवचनम्   |
|---|---|--|--|
| 1 | धुक/धुग 6.1.68, 8.2.32, 8.2.37,<br>8.2.39, 8.4.56 | दुहौ   | दुहः   |
| S | same as above                                     | same as above                                | same as above  |
| 2 | दुहम्   | same as above                                | same as above  |
| 3 | दुहा  | धुग्भ्याम् 8.2.32, 8.2.37,<br>8.2.39, 8.4.53 | धुग्भिः 8.2.32, 8.2.37, 8.2.39,<br>8.2.66, 8.3.15, 8.4.53  |
| 4 | दुहे  | same as above                                | धुग्भ्यः 8.2.32, 8.2.37, 8.2.39,<br>8.2.66, 8.3.15, 8.4.53 |
| 5 | दुहः  | same as above                                | same as above  |
| 6 | same as above                                     | दुहोः  | दुहाम्   |
| 7 | दुहि  | same as above                                | धुक्षु 8.2.32, 8.2.37, 8.2.39,<br>8.3.59, 8.4.55           |

In the same manner, द्-beginning, ह्-ending धातु-ending प्रातिपदिकs decline like दुह्.

They are: दह्, दिह्, दह्, दंह्, द्राह्.

दुह् is an exception by the next sūtra.

## ह-कारान्त-पुंलिङ्गः (3) द्रुह्

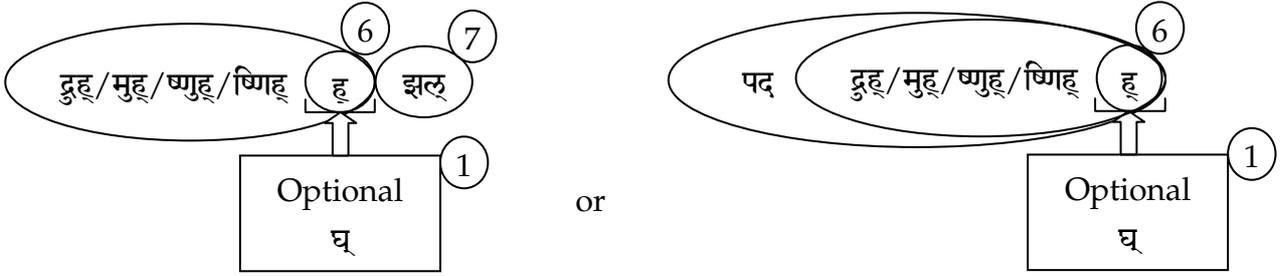
द्रुह् जिघांसायाम् (4P) to bear malice or hatred + क्तिप् 3.2.76 क्तिप् च ।

द्रुह् 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

The next sūtra is अपवाद for 8.2.31 हो ढः। and 8.2.32 दादेर्धातोर्घः।.

### [विधिसूत्रम्] 8.2.33 वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम् । ~ हः घः झलि पदस्य अन्ते च

For द्रुह्/मुह्/ष्णुह्/ष्णिह् धातुs, their ह् is optionally replaced by घ् when followed by झल् or at the end of पद. The other option is ढ्.



वा<sup>0</sup> द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम्<sup>6/3</sup> । ~ हः<sup>6/1</sup> घः<sup>1/1</sup> झलि<sup>7/1</sup> पदस्य<sup>6/1</sup> अन्ते<sup>7/1</sup> च<sup>0</sup>

2 words in the सूत्र; 6 words as अनुवृत्ति

- वा 0 – घ-आदेश is optional. The other option is ढ् by 8.2.31 हो ढः।
- द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम् 6/3 – द्रुह् च मुह् च ष्णुह् च ष्णिह् इति द्रुहमुहष्णुहष्णिहः (ID) तेषाम् ।; in सम्बन्धे षष्ठी to हः.
- हः 6/1 – From 8.2.31 हो ढः।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- घः 1/1 – From 8.2.32 दादेर्धातोर्घः।. The अ after घ् is उच्चारणार्थ. This is आदेश.
- झलि 7/1 – From 8.2.26 झलो झलि।. प्रत्याहार झल्; in परसप्तमी.
- पदस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 8.1.16 पदस्य।; in सम्बन्धे षष्ठी to अन्ते.
- अन्ते 7/1 – From 8.2.29 स्कोः संयोगाद्योरन्ते च।; in अधिकरणे सप्तमी.
- च 0 – From 8.2.29 स्कोः संयोगाद्योरन्ते च।; connecting झलि and पदस्य अन्ते.

[LSK] एषाम्<sup>6/3</sup> हस्य<sup>6/1</sup> वा<sup>0</sup> घः<sup>1/1</sup> झलि<sup>7/1</sup> पद-अन्ते<sup>7/1</sup> च<sup>0</sup> ॥

घ् is optionally the substitute in the place of ह् of धातुs द्रुह्, मुह्, ष्णुह्, and ष्णिह् when झल् follows, or at the end of पद.

Note that for द्रुह्, it is प्राप्तविभाषा, while it is अप्राप्तविभाषा for the rest. Thus the option given by this sūtra is said to be प्राप्त-अप्राप्तविभाषा.

[LSK] ध्रुक्<sup>1/1</sup>, ध्रुग्<sup>1/1</sup>, ध्रुट्<sup>1/1</sup>, ध्रुड्<sup>1/1</sup>।

द्रुह् + सुँ<sup>1/1</sup>

|        |  |
|--------|--|
| द्रुह् | 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः       |
| द्रुघ् | 8.2.33 वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम् । ~ हः घः झलि पदस्य अन्ते च  |
| ध्रुघ् | 8.2.37 एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्वोः । ~ हः झलि पदस्य अन्ते च |
| ध्रुग् | 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।                                       |
| ध्रुक् | 8.4.56 वाऽवसाने । ~ चर् झलाम्                                |

पक्षे, in the other option,

|        |  |
|--------|--|
| द्रुह् | 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः       |
| द्रुह् | 8.2.31 हो ढः।  |
| ध्रुह् | 8.2.37 एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्वोः । ~ हः झलि पदस्य अन्ते च |
| ध्रुह् | 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।                                       |
| ध्रुट् | 8.4.56 वाऽवसाने । ~ चर् झलाम्                                |

[LSK] द्रुहौ<sup>1/2</sup> । द्रुहः<sup>1/3</sup> ।

[LSK] ध्रुग्भ्याम्<sup>3/2</sup>, ध्रुड्भ्याम्<sup>3/2</sup>।

द्रुह् + भ्याम्

|                 |  |
|-----------------|--|
| द्रुघ् + भ्याम् | 8.2.33 वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम् । ~ हः घः झलि पदस्य अन्ते च  |
| ध्रुघ् + भ्याम् | 8.2.37 एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्वोः । ~ हः झलि पदस्य अन्ते च |
| ध्रुग् + भ्याम् | 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।                                       |

पक्षे, in the other option,

|                 |  |
|-----------------|--|
| द्रुह् + भ्याम् | 8.2.31 हो ढः।  |
| ध्रुह् + भ्याम् | 8.2.37 एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्वोः । ~ हः झलि पदस्य अन्ते च |
| ध्रुह् + भ्याम् | 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।                                       |

[LSK] धृक्षु<sup>7/3</sup>, धृत्त्सु<sup>7/3</sup>, धृत्सु<sup>7/3</sup> ॥

द्रुह् + सुप्

- द्रुघ् + सु 8.2.33 वा द्रुहमुहृष्णुहृष्णिहाम् । ~ हः घः झलि पदस्य अन्ते च  
 धृघ् + सु 8.2.37 एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्वोः । ~ हः झलि पदस्य अन्ते च  
 धृग् + सु 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।  
 धृग् + षु 8.3.59 आदेश-प्रत्यययोः । ~ इणकोः सः मूर्धन्यः  
 धृक् + षु 8.4.55 खरि च । ~ चर् झलाम्

पक्षे, in the other option,

द्रुह् + सुप्

- द्रुह् + सु 8.2.31 हो ढः।  
 धृह् + सु 8.2.37 एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्वोः । ~ हः झलि पदस्य अन्ते च  
 धृह् + सु 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।  
 धृह् + ध् सु 8.3.29 ढः सि धृट् । ~ वा  
 धृह् + त् सु 8.4.55 खरि च । ~ चर् झलाम्  
 धृट् + त् सु 8.4.55 खरि च । ~ चर् झलाम्

धृट्-आगम-अभाव-पक्षे

- धृह् + सु 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।  
 धृट् + सु 8.4.55 खरि च । ~ चर् झलाम्

## Summary of declension of द्रुह् (ह्-पुं-3)

|   | एकवचनम्  | द्विवचनम्  | बहुवचनम्   |
|---|--|--|--|
| 1 | ध्रुक, ध्रुग, ध्रुट्, ध्रुड्<br>6.1.68, 8.2.33/8.2.31,<br>8.2.37, 8.2.39, 8.4.56 | द्रुहौ   | द्रुहः   |
| S | same as above  | same as above  | same as above  |
| 2 | द्रुहम्  | same as above  | same as above  |
| 3 | द्रुहा   | ध्रुग्भ्याम्, ध्रुड्भ्याम्<br>8.2.33/8.2.31,<br>8.2.37, 8.2.39, 8.4.53 | ध्रुग्भिः, ध्रुड्भिः<br>8.2.33/8.2.31, 8.2.37, 8.2.39,<br>8.2.66, 8.3.15, 8.4.53             |
| 4 | द्रुहे   | same as above  | ध्रुग्भ्यः, ध्रुड्भ्यः<br>8.2.33/8.2.31, 8.2.37, 8.2.39,<br>8.2.66, 8.3.15, 8.4.53           |
| 5 | द्रुहः   | same as above  | same as above  |
| 6 | same as above  | द्रुहोः  | द्रुहाम्   |
| 7 | द्रुहि   | same as above  | ध्रुक्षु, ध्रुट्सु, ध्रुड्सु<br>8.2.33/8.2.31, 8.2.37, 8.2.39,<br>(8.3.29), (8.3.59), 8.4.55 |

As there are four ह्-ending धातुs mentioned in the sūtra 8.2.33 वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम् ।, क्तिप्-ending प्रातिपदिकs of all these four are introduced in लघुसिद्धान्तकौमुदी.

1. द्रुह् जिघांसायाम् (4P) to bear malice or hatred
2. मुह् वैचित्ये (4P) to become confused
3. ष्णुह् उद्विगणे (4P) to vomit
4. ष्णिह् प्रीतौ (4P/10U) to have affection

[LSK] एवम्<sup>0</sup> मुक्<sup>1/1</sup>, मुग्<sup>1/1</sup> इत्यादि<sup>1/1</sup> ॥

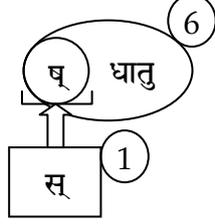
In the same manner, मुह् declines like द्रुह्.

मुह् + क्तिप्

As for णुह् and णिह्, the next sūtra is required.

### [विधिसूत्रम्] 6.1.64 धात्वादेः षः सः ।

ष at the beginning of धातु is replaced by स.



धातु-आदेः 6/1 षः 6/1 सः 1/1 ।

3 words in the सूत्र; no word is required as अनुवृत्ति.

- धातु-आदेः 6/1 – धातोः आदिः धात्वादिः (6T) तस्य ।; adjective to षः.
- षः 6/1 – In स्थानेयोगा षष्ठी.
- सः 1/1 – The अ after स is उच्चारणार्थ. This is आदेश.

[LSK] स्रुक्<sup>1/1</sup>, स्रुग्<sup>1/1</sup>, स्रुट्<sup>1/1</sup>, स्रुड्<sup>1/1</sup>।

णुह्

स णुह् 6.1.64 धात्वादेः षः सः ।

स नुह् (प०) निमित्तापाये नैमित्तिकास्याप्यपायः ।<sup>1</sup>

स्रुह् + क्तिप् 3.2.76 क्तिप् च ।

स्रुह् 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

स्रुह् + सुँ

Declension and its प्रक्रिया is exactly the same as द्रुह्.

[LSK] एवम्<sup>0</sup> स्रुक्<sup>1/1</sup>, स्रुग्<sup>1/1</sup>, स्रुट्<sup>1/1</sup>, स्रुड्<sup>1/1</sup> ॥

So too, णिह् + क्तिप्.

<sup>1</sup> निमित्तस्य (of the cause) अपायः (removal) निमित्तापायः, तस्मिन् सति नैमित्तिकस्य (of the effect) अपि अपायः ।

When the cause is removed, the effect is also gone.

**ह-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (4) विश्ववाह्**

विश्वं वहति इति विश्ववाट्

विश्व + डस् + वह् प्रापणे (1U) to carry + णिवँ 3.2.64 वहश्च । ~ णिवँ

प्रातिपदिक-संज्ञा by 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

विश्व + वह् + णिवँ 2.4.71 सुपो धातुप्रातिपदिकयोः । ~ लुक्

विश्व + वाह् + णिवँ 7.2.115 अत उपधायाः । ~ वृद्धिः

विश्व + वाह् 6.1.67 वेरपृक्तस्य । ~ लोपः

[LSK] विश्ववाट्<sup>1/1</sup>, विश्ववाड्<sup>1/1</sup> ।

विश्ववाह् + सुँ

विश्ववाह् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

विश्ववाह् 8.2.31 हो ढः ।

विश्ववाड् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

विश्ववाट् 8.4.56 वाऽवसाने ।

[LSK] विश्ववाहौ<sup>1/2</sup> । विश्ववाहः<sup>1/3</sup> । विश्ववाहम्<sup>2/1</sup> । विश्ववाहौ<sup>2/2</sup> ॥

When शस् follows and अङ्ग is termed भ, भ-कार्य takes place which needs the next संज्ञा.

**[संज्ञासूत्रम्] 1.1.45 इग्यणः संप्रसारणम् ।**

Modifying into इक् from यण् is termed संप्रसारणम् (विधान). The इक् which was modified from यण् is also termed संप्रसारणम् (अनुवाद).

इक्<sup>1/1</sup> यणः<sup>6/1</sup> संप्रसारणम्<sup>1/1</sup> ।

3 words in the सूत्र; no अनुवृत्ति is required.

- इक् 1/1 – This is संज्ञी.
- यणः 6/1 – In स्थानेयोगा षष्ठी.
- संप्रसारणम् 1/1 – This is संज्ञा.

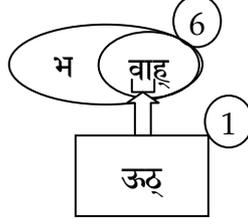
[LSK] यणः<sup>6/1</sup> स्थाने<sup>7/1</sup> प्रयुज्यमानः<sup>1/1</sup> यः<sup>1/1</sup> इक्<sup>1/1</sup> सः<sup>1/1</sup> संप्रसारण-संज्ञः<sup>1/1</sup> स्यात्<sup>III/1</sup> ॥

इक् in the place of यण् is termed संप्रसारणम्.

The next sūtra teaches आदेश which requires संप्रसारण-संज्ञा.

[विधिसूत्रम्] 6.4.132 वाह ऊठ् । ~ संप्रसारणम् भस्य

व् of वाह् at the end of भ-संज्ञक अङ्ग is replaced by ऊठ्, which is संप्रसारण (यण् is replaced by इक्)



वाहः<sup>6/1</sup> ऊठ्<sup>1/1</sup> । ~ संप्रसारणम्<sup>1/1</sup> भस्य<sup>6/1</sup>

2 words in the सूत्र; 2 words as अनुवृत्ति

- वाहः 6/1 – “वाह्” in स्थानेयोगा षष्ठी.
- ऊठ् 1/1 – This is आदेश. ठ् is इत्.
- संप्रसारणम् 1/1 – From 6.4.131 वसोः संप्रसारणम् ।. Here, the term संप्रसारण is used as विधान. संप्रसारण being इक्, this specifies the letter to be replaced as व्, one of यण्, and negates 1.1.52 अलोऽन्त्यस्य।.
- भस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 6.4.129 भस्य।.

[LSK] भस्य<sup>6/1</sup> वाहः<sup>6/1</sup> संप्रसारणम्<sup>1/1</sup> ऊठ्<sup>1/1</sup> ॥

ऊठ् is the संप्रसारण substitute (that इक् which replaces यण्) in the place of (व्, which is यण् of) वाह् at the end of भ-संज्ञक अङ्ग<sup>2</sup>.

विश्ववाह् + शस्

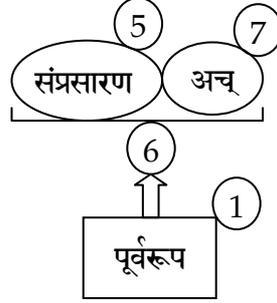
विश्व ऊ आह् + अस् 6.4.132 वाह ऊठ् । ~ संप्रसारणम् भस्य

When संप्रसारण comes, the next sūtra is to come.

<sup>2</sup> वाहः इत्येवमन्तस्य भस्य ऊठ् इति एतत् संप्रसारणं भवति ।[K]

[विधिसूत्रम्] 6.1.108 संप्रसारणाच्च । ~ अचि पूर्वः पूर्वपरयोः एकः संहितायाम्

Between संप्रसारण and अच, पूर्वरूप takes place.



संप्रसारणात्<sup>5/1</sup> च<sup>0</sup> । ~ पूर्वः<sup>1/1</sup> अचि<sup>7/1</sup> पूर्वपरयोः<sup>6/2</sup> एकः<sup>1/1</sup> संहितायाम्<sup>7/1</sup>

2 words in the सूत्र; 5 words as अनुवृत्ति

- संप्रसारणात्<sup>5/1</sup> – Here, संप्रसारण-संज्ञा is used as अनुवाद; in पूर्वपञ्चमी.
- च<sup>0</sup> – This is to bring पूर्वः from the previous sūtra, 6.1.107 अमि पूर्वः।.
- पूर्वः<sup>1/1</sup> – This is आदेश; from 6.1.107 अमि पूर्वः।.
- अचि<sup>7/1</sup> – From 6.1.77 इको यणचि।; in परसप्तमी.
- पूर्वपरयोः<sup>6/2</sup> – From अधिकारसूत्र 6.1.84 एकः पूर्वपरयोः।; in स्थानयोगा षष्ठी..
- एकः<sup>1/1</sup> – From अधिकारसूत्र 6.1.84 एकः पूर्वपरयोः।; adjective to पूर्वः.
- संहितायाम्<sup>1/1</sup> – From अधिकारसूत्र 6.1.72 संहितायाम् ।; in विषयसप्तमी.

[LSK] संप्रसारणात्<sup>5/1</sup> अचि<sup>7/1</sup> पूर्वरूपम्<sup>1/1</sup> एकादेशः<sup>1/1</sup> ।

पूर्वरूप is the substitute in the place of संप्रसारण and अच.

[LSK] वृद्धिः (6.1.88 वृद्धिरेचि।) – विश्वौहः<sup>2/3</sup> । इत्यादिः<sup>1/1</sup> ॥

विश्ववाह् + शस्

विश्व ऊ आह् + अस् 6.4.132 वाह ऊट् । ~ संप्रसारणम् भस्य

विश्व ऊह् + अस् 6.1.108 संप्रसारणाच्च । ~ अचि पूर्वः पूर्वपरयोः एकः संहितायाम्

विश्वौह् + अस् 6.1.89 एत्येधत्यूठसु । ~ आत् वृद्धिः पूर्वपरयोः एकः संहितायाम्

विश्वौहः 8.2.66, 8.3.15

Declension of विश्ववाह् (ह-पुं-4)

|   | एकवचनम्   | द्विवचनम्  | बहुवचनम्  |
|---|---|--|---|
| 1 | विश्ववाह् + सुँ<br>विश्ववाह् 6.1.68<br>विश्ववाद् 8.2.31<br>विश्ववाड् 8.2.39<br>विश्ववाट् 8.4.56       | विश्ववाह् + औ<br>विश्ववाहौ   | विश्ववाह् + जस्<br>विश्ववाहः 8.2.66, 8.3.15   |
| S | same as above   | same as above  | same as above   |
| 2 | विश्ववाह् + अम्<br>विश्ववाहम्   | same as above  | विश्ववाह् + शस्<br>विश्व ऊ आह् + अस् 6.4.132<br>विश्व ऊह् + अस् 6.1.108<br>विश्वौह् + अस् 6.1.89<br>विश्वौहः 8.2.66, 8.3.15   |
| 3 | विश्ववाह् + टा<br>विश्व ऊ आह् + आ 6.4.132<br>विश्व ऊह् + आ 6.1.108<br>विश्वौह् + आ 6.1.89<br>विश्वौहा | विश्ववाह् + भ्याम्<br>विश्ववाद् + भ्याम् 8.2.31<br>विश्ववाड् + भ्याम् 8.2.39<br>विश्ववाड्भ्याम्                              | विश्ववाह् + भिस्<br>विश्ववाद् + भिस् 8.2.31<br>विश्ववाड् + भिस् 8.2.39<br>विश्ववाड्भिः 8.2.66, 8.3.15   |
| 4 | विश्ववाह् + डे<br>Similar to above<br>विश्वौहे  | same as above  | विश्ववाह् + भ्यस्<br>Similar to above<br>विश्ववाड्भ्यः 8.2.66, 8.3.15   |
| 5 | विश्ववाह् + डसिँ<br>Similar to above<br>विश्वौहः  | same as above  | same as above   |
| 6 | same as above   | विश्ववाह् + ओस्<br>विश्व ऊ आह् + ओस् 6.4.132<br>विश्व ऊह् + ओस् 6.1.108<br>विश्वौह् + ओस् 6.1.89<br>विश्वौहोः 8.2.66, 8.3.15 | विश्ववाह् + आम्<br>विश्व ऊ आह् + आम् 6.4.132<br>विश्व ऊह् + आम् 6.1.108<br>विश्वौह् + आम् 6.1.89<br>विश्वौहाम्  |
| 7 | विश्ववाह् + ङि<br>विश्व ऊ आह् + इ 6.4.132<br>विश्व ऊह् + इ 6.1.108<br>विश्वौह् + इ 6.1.89<br>विश्वौहि | same as above  | विश्ववाह् + सुप्<br>विश्ववाद् + सु 8.2.31<br>विश्ववाड् + सु 8.2.39<br>विश्ववाड् + ध् सु 8.3.29<br>विश्ववाड् + त् सु 8.4.55<br>विश्ववाट्सु 8.4.55<br>पक्षे विश्ववाट्सु |

ह-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (5) अनडुह

अनः शकटं वहति इति अनड्वान् ।

अनस् + डस् + वह् प्रापणे (1U) to carry + क्विप् अनसि वहेः क्विप् डश्चानसः ।

अनड् + डस् + वह् + क्विप् अनसि वहेः क्विप् डश्चानसः ।

प्रातिपदिक-संज्ञा by 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

अनड् + वह् + क्विँ 2.4.71 सुपो धातुप्रातिपदिकयोः । ~ लुक्

अनड् + वाह् + क्विँ 7.2.115 अत उपधायाः । ~ वृद्धिः

अनड् + उ आह् + क्विँ 6.1.15 वचिस्वपियजादीनां किति ।

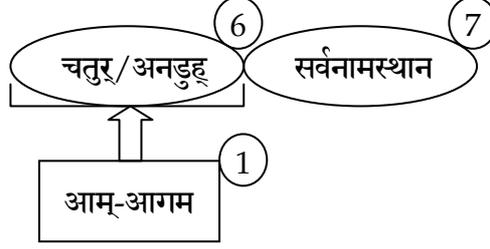
अनड् + उह् + क्विँ 6.1.108 संप्रसारणाच्च । ~ अचि पूर्वः पूर्वपरयोः एकः संहितायाम्

अनड् + उह् 6.1.67 वेरपृक्तस्य । ~ लोपः

अनडुह्

[विधिसूत्रम्] 7.1.98 चतुरनडुहोरामुदात्तः । ~ सर्वनामस्थाने

आम्-आगम is for चतुर् and अनडुह् when सर्वनामस्थान follows.



चतुर्-अनडुहोः 6/2 आम् 1/1 उदात्तः 1/1 । ~ सर्वनामस्थाने 7/1

3 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- चतुर्-अनडुहोः 6/2 – प्रातिपदिकs चतुर् and अनडुह्; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- आम् 1/1 – This is आगम. Being मित, 1.1.47 मिदचोऽन्त्यात् परः। is needed.
- उदात्तः 1/1 – This is about intonation for the आगम, which is outside the scope of our study.
- सर्वनामस्थाने 7/1 – From 7.1.86 इतोऽत् सर्वनामस्थाने।; in परसप्तमी.

[LSK] अनयोः 6/2 आम् 1/1 स्यात् 1/1 सर्वनामस्थाने 7/1 परे 7/1 ॥

आम् is the आगम for the words चतुर् and अनडुह् when सर्वनामस्थान follows.

अनडुह् + सुँ

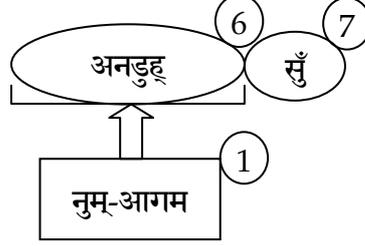
अनडु आम् ह् + सुँ 7.1.98 चतुरनडुहोरामुदात्तः । ~ सर्वनामस्थाने  
with the help of 1.1.47 मिदचोऽन्त्यात् परः।

अनड् वाम् ह् + सुँ 6.1.77 इको यणचि । ~ संहितायाम्

To be continued...

[विधिसूत्रम्] 7.1.82 सावनडुहः । ~ नुम्

नुम्-आगम is attached to अनडुह् when followed by सुँ



सौ<sup>7/1</sup> अनडुहः<sup>6/1</sup> । ~ नुम्<sup>1/1</sup>

2 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- सौ 7/1 – प्रातिपदिक is सुँ in परसप्तमी.
- अनडुहः 6/1 – प्रातिपदिक is अनडुह् in स्थानेयोगा षष्ठी.
- नुम् 1/1 – From 7.1.58 इदितो नुम् धातोः। This is आगम. Being मित, 1.1.47 मिदचोऽन्त्यात् परः। is needed.

[LSK] अस्य<sup>6/1</sup> नुम्<sup>1/1</sup> स्यात्<sup>1/1</sup> सौ<sup>7/1</sup> परे<sup>7/1</sup> ।

नुम् is the आगम for the word अनडुह् when सुँ follows.

[LSK] अनड्वान्<sup>1/1</sup> ॥

अनडुह् + सुँ

अनडु आ ह् + सुँ 7.1.98 चतुरनडुहोरामुदातः । ~ सर्वनामस्थाने  
with the help of 1.1.47 मिदचोऽन्त्यात्परः।

अनड् व् आ ह् + सुँ 6.1.77 इको यणचि । ~ संहितायाम्

अनड् व् आ न् ह् + सुँ 7.1.82 सावनडुहः । ~ नुम्

अनड् व् आ न् ह् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

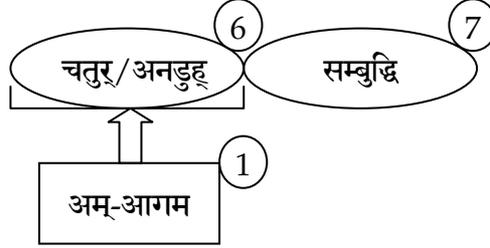
अनड् व् आ न् 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः । ~ पदस्य

अनड्वान्

When सम्बुद्धि follows, the next sūtra is अपवाद for 7.1.98 चतुरनडुहोरामुदातः । ~ सर्वनामस्थाने.

[विधिसूत्रम्] 7.1.99 अम् सम्बुद्धौ । ~ चतुरनडुहोः

अम्-आगम is for चतुर् and अनडुह् when सम्बुद्धि follows.



अम्<sup>1/1</sup> सम्बुद्धौ<sup>7/1</sup> । ~ चतुर्-अनडुहोः<sup>6/2</sup>

2 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- अम्<sup>1/1</sup> – This is आगम. Being मित, 1.1.47 मिदचोऽन्त्यात् परः। is needed.
- सम्बुद्धौ<sup>7/1</sup> – In परसप्तमी. Since सम्बुद्धि is subset of सर्वनामस्थान, this is अपवाद for 7.1.98 चतुरनडुहोरामुदातः । ~ सर्वनामस्थाने.
- चतुर्-अनडुहोः<sup>6/2</sup> – From 7.1.98 चतुरनडुहोरामुदातः।; in स्थानेयोगा षष्ठी.

[LSK] हे अनड्वन्<sup>S/1</sup> ॥

अनडुह् + सुँ

अनडु अ ह् + सुँ 7.1.99 अम् सम्बुद्धौ । ~ चतुरनडुहोः with the help of 1.1.47 मिदचोऽन्त्यात्परः।

अनड् व् अ ह् + सुँ 6.1.77 इको यणचि । ~ संहितायाम्

अनड् व् अ न् ह् + सुँ 7.1.82 सावनडुहः । ~ नुम्

अनड् व् अ न् ह् 6.1.68 हल्ब्याब्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

अनड् व् अ न् 8.2.23 संयोगानस्य लोपः । ~ पदस्य

अनड्वन्

[LSK] अनड्वाहौ<sup>1/2</sup> । अनड्वाहः<sup>1/3</sup> ।

When सर्वनामस्थान follows, 7.1.98 चतुरनडुहोरामुदातः । takes place.

अनडुह् + औ

अनडु आ ह् + औ 7.1.98 चतुरनडुहोरामुदातः । ~ सर्वनामस्थाने

अनड् व् आ ह् + औ 6.1.77 इको यणचि । ~ संहितायाम्

अनड्वाहौ

[LSK] अनडुहः<sup>2/3</sup> । अनडुहा<sup>3/1</sup> ॥

When सर्वनामस्थान does not follow, there is no special modification.

अनडुह् + शस्

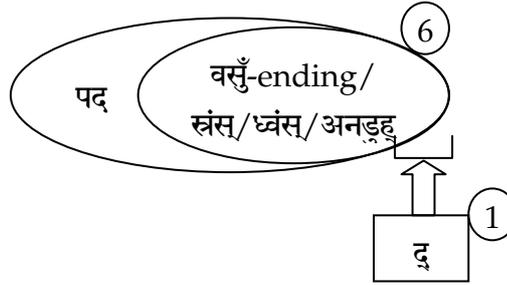
अनडुहस्

अनडुहः 8.2.66, 8.3.15

At the end of पद, the next sūtra is applicable.

[विधिसूत्रम्] 8.2.72 वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः । ~ सः पदानाम्

At the end of पद, स-ending वसुँ-प्रत्यय-ending, स्रंस, ध्वंस, and अनडुह् words take द्-आदेश at the last letter.



वसु-स्रंसु-ध्वंसु-अनडुहाम्<sup>6/3</sup> दः<sup>1/1</sup> । ~ सः<sup>6/1</sup> पदानाम्<sup>6/3</sup>

2 words in the सूत्र; 2 words as अनुवृत्ति

- वसु-स्रंसु-ध्वंसु-अनडुहाम् 6/3 – वसुँश्च स्रसुश्च ध्वंसुश्च अनड्वान् च वसु-स्रंसु-ध्वंसु-अनडुहः (ID), तेषाम् ।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
  1. वसुँ is आदेश for शतृँ-प्रत्यय taught by 7.1.36 विदेः शतुर्वसुँः। By स्थानिवद्भाव, the आदेश is considered to be प्रत्यय.
  2. स्रंसुँ is धातु अवस्रंसने (1A) to fall down, to sink, to hang down
  3. ध्वंसुँ is धातु अवस्रंसने गतौ च (1A) to fall down, to perish
  4. अनडुह् is प्रातिपदिक
- दः 1/1 – This is आदेश. अ after द् is for उच्चारण.
- सः 6/1 – From 8.2.66 ससजुषो रँः।; connected to वसुँ only. With तदन्तविधि, it is understood as “सकारान्त वसुँ-प्रत्यय-ending word”
- पदानाम् 6/3 – From अधिकारसूत्र 8.1.16 पदस्य।; connected to all with तदन्तविधि.

[LSK] स-अन्त-वसुँ-अन्तस्य<sup>6/1</sup> स्रंसादेः<sup>6/1</sup> च<sup>0</sup> दः<sup>1/1</sup> स्यात्<sup>III/1</sup> पदान्ते<sup>7/1</sup> ।

द् is the substitute in the place of the last letter of स-ending वसुँ-प्रत्यय-ending word, or स्रंस, ध्वंस, and अनडुह् at the end of पद.

[LSK] अनडुद्भ्याम्<sup>3/2</sup> इत्यादि<sup>1/1</sup> ॥

अनडुह् + भ्याम्

अनडुद् + भ्याम् 8.2.72 वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः । ~ सः पदानाम्

[LSK] “सान्त” इति<sup>0</sup> किम्<sup>0</sup>? विद्वान्<sup>1/1</sup> ।

Why should it be said that वसुँ-प्रत्यय-ending word should be स-ending? In the case of विद्वान्<sup>1/1</sup>, the end of पद is not स, at the time of 8.2.72 वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः ।.

विद् + लट् 3.2.123 वर्तमाने लट् । ~ धातोः प्रत्ययः

विद् + शत् 3.2.124 लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे ।

विद् + वसुँ 7.1.36 विदेः शतुर्वसुँः ।

विद् + शप् + वस् 3.1.68 कर्तरि शप् । ~ सार्वधातुके

विद् + वस् 2.4.72 अदिप्रभृतिभ्यः शपः । ~ लुक्

विद्वस् 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

विद्वस् + सुँ

विद्व न् + सुँ 7.1.70 उगिदचां स्थाने चाधातोः । ~ नुम्

विद्वान् + सुँ 6.4.10 सान्तमहतः संयोगस्य ।

विद्वान् + स् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

विद्वान् 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः ।

At the time of 8.2.72 वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः ।, the end of पद is not स. Thus 8.2.72 वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः । is not applied.

[LSK] “पदान्ते” किम्<sup>0</sup>? स्रस्तम्<sup>1/1</sup> । ध्वस्तम्<sup>1/1</sup> ॥

Why should “at the end of पद” be said? In the case of स्रस्त, स्रंस is not at the end of पद, thus 8.2.72 वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः । is not applied.

स्रंस + क्त 3.2.102 निष्ठा । ~ धातोः प्रत्ययः

स्रस् + त 6.4.24 अनिदितां हल उपधायाः किडति । ~ न लोपः

Declension of अनडुह् (ह-पुं-5)

|   | एकवचनम्  | द्विवचनम्   | बहुवचनम्   |
|---|--|---|--|
| 1 | अनडुह् + सुँ<br>अनडु आ ह् + सुँ 7.1.98<br>अनड् व् आ ह् + सुँ 6.1.77<br>अनड् व् आ न् ह् + सुँ 7.1.82<br>अनड् व् आ न् ह् 6.1.68<br>अनड् व् आ न् 8.2.23<br>अनड्वान्             | अनडुह् + औ<br>अनडु आ ह् + औ 7.1.98<br>अनड् व् आ ह् + औ 6.1.77<br>अनड्वौ | अनडुह् + जस्<br>अनडु आ ह् + अस् 7.1.98<br>अनड् व् आ ह् + अस् 6.1.77<br>अनड्वाहः 8.2.66, 8.3.15 |
| S | अनडुह् + सुँ<br>अनडु अ ह् + सुँ 7.1.99<br>अनड् व् अ ह् + सुँ 6.1.77<br>अनड् व् अ न् ह् + सुँ 7.1.82<br>अनड् व् अ न् ह् 6.1.68<br>अनड् व् अ न् 8.2.23<br>अनड्वन् <sup>3</sup> | same as above   | same as above  |
| 2 | अनडुह् + अम्<br>अनडु आ ह् + अम् 7.1.98<br>अनड् व् आ ह् + अम् 6.1.77<br>अनड्वाहम्   | same as above   | अनडुह् + शस्<br>अनडुहस्<br>अनडुहः 8.2.66, 8.3.15   |
| 3 | अनडुह् + टा<br>अनडुहा  | अनडुह् + भ्याम्<br>अनडुद्भ्याम् 8.2.72                                  | अनडुह् + भिस्<br>अनडुद्भिस् 8.2.72<br>अनडुद्भिः 8.2.66, 8.3.15                                 |
| 4 | अनडुह् + डे<br>अनडुहे  | same as above   | अनडुह् + भ्यस्<br>अनडुद्भ्यस् 8.2.72<br>अनडुद्भ्यः 8.2.66, 8.3.15                              |
| 5 | अनडुह् + डसिँ<br>अनडुहः 8.2.66, 8.3.15   | same as above   | same as above  |
| 6 | same as above  | अनडुह् + ओस्<br>अनडुहोः 8.2.66, 8.3.15                                  | अनडुह् + आम्<br>अनडुहाम्   |
| 7 | अनडुह् + डि<br>अनडुहि  | same as above   | अनडुह् + सुप्<br>अनडुद् + सु 8.2.72<br>अनडुत् + सु 8.4.55<br>अनडुत्सु                          |

<sup>3</sup> Between हे and अनड्वन्, etc., there is प्रकृतिभाव. See टिप्पणी ३.

उखायाः स्रंसते इति उखास्रत् । That which falls from vessel.

उखा + स्रस् + क्तिप्

उखास्रस्

6.4.24 अनदितां हल उपधायाः किङिति । ~ न लोपः

Declension of उखास्रस् (स-पु)

|   | एकवचनम्   | द्विवचनम्                                  | बहुवचनम्  |
|---|---|--|---|
| 1 | उखास्रस् + सुँ<br>उखास्रस् 6.1.68<br>उखास्रद् 8.2.72<br>उखास्रत् 8.4.56 | उखास्रस् + औ<br>उखास्रसौ                   | उखास्रस् + जस्<br>उखास्रसः 8.2.66, 8.3.15                                     |
| 5 | same as above   | same as above                              | same as above   |
| 2 | उखास्रस् + अम्<br>उखास्रसम्   | same as above                              | same as above   |
| 3 | उखास्रस् + टा<br>उखास्रसा   | उखास्रस् + भ्याम्<br>उखास्रद्भ्याम् 8.2.72 | उखास्रस् + भिस्<br>उखास्रद् + भिस् 8.2.72<br>उखास्रद्भिः 8.2.66, 8.3.15       |
| 4 | उखास्रस् + डे<br>उखास्रसे   | same as above                              | उखास्रस् + भ्यस्<br>उखास्रद् + भ्यस् 8.2.72<br>उखास्रद्भ्यः 8.2.66, 8.3.15    |
| 5 | उखास्रस् + डसिँ<br>उखास्रसः 8.2.66, 8.3.15                              | same as above                              | same as above   |
| 6 | same as above   | उखास्रस् + ओस्<br>उखास्रसोः 8.2.66, 8.3.15 | उखास्रस् + आम्<br>उखास्रसाम्  |
| 7 | उखास्रस् + डि<br>उखास्रसि   | same as above                              | उखास्रस् + सुप्<br>उखास्रद् + सु 8.2.72<br>उखास्रत् + सु 8.4.55<br>उखास्रत्सु |

पर्णानि ध्वंसते इति पर्णध्वत् । That which causes the falling of leaves.

पर्ण + शस् + ध्वंस + क्तिप्

पर्णध्वस्

6.4.24 अनदितां हल उपधायाः किङिति । ~ न लोपः

ह-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (6) तुरासाह

तुरम् = वेगवन्तं साहयति = अभिभवति इति तुराषाट् ।

षहँ मर्षणे (1A) to endure + णिच् (causative) 3.1.26 हेतुमति च ।

साहि 3.1.32 सनाद्यन्ता धातवः ।

तुर + डस् + साहि + किँप् 3.2.76 किँप् च ।

प्रातिपदिक-संज्ञा by 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

तुर + साहि + किँ 2.4.71 सुपो धातुप्रातिपदिकयोः । ~ लुक्

तुर + साहि 6.1.67 वेरपृक्तस्य । ~ लोपः

तुर + साह् 6.4.51 णेरनिटि ।

तुरा + साह् 6.3.136 अन्येषामपि दृश्यते ।

तुरासाह्

तुरासाह् + सुँ

तुरासाह् 6.1.68 हल्ब्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्वपृक्तं हल् । ~ लोपः

तुरासाह् 8.2.31 हो ढः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

तुरासाह् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।

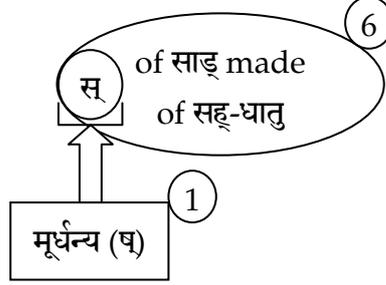
To be continued with the next sūtra...

## Declension of तुरासाह् (ह्-पुँ-6)

|   | एकवचनम्           | द्विवचनम्      | बहुवचनम्              |
|---|-------------------|----------------|-----------------------|
| 1 | तुराषाट्/तुराषाड् | तुरासाहौ       | तुरासाहः              |
| S | same as above     | same as above  | same as above         |
| 2 | तुरासाहम्         | same as above  | same as above         |
| 3 | तुरासाहा          | तुराषाड्भ्याम् | तुराषड्भिः            |
| 4 | तुरासाहे          | same as above  | तुराषड्भ्यः           |
| 5 | तुरासाहः          | same as above  | same as above         |
| 6 | same as above     | तुरासाहोः      | तुरासाहाम्            |
| 7 | तुरासाहि          | same as above  | तुराषाट्सु/तुराषाट्सु |

[विधिसूत्रम्] 8.3.56 सहेः साडः सः । ~ मूर्धन्यः

स् of the form साड् made of सह्-धातु takes मूर्धन्य-आदेश.



सहेः 6/1 साडः 6/1 सः 6/1 । ~ मूर्धन्यः 1/1

3 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- सहेः 6/1 – प्रातिपदिक सहि which is made of सह्-धातु with इक् by (वा०) इक्-शितपौ धातुनिर्देशे।; in सम्बन्धे षष्ठी to साडः.
- साडः 6/1 – प्रातिपदिक साड् which is made by सह्-धातु with णिच्, ढ्-आदेश, जश्-आदेश; in अवयवषष्ठी to सः.
- सः 6/1 – In स्थानेयोगा षष्ठी.
- मूर्धन्यः 1/1 – This is आदेश. From 8.3.55 अपदान्तस्य मूर्धन्यः।. मूर्ध्नि भवः मूर्धन्यः । That which exists at मूर्धन्, the roof, is called मूर्धन्य. मूर्धन् + डि + यत् by 4.3.55 शरीरावयवाच्च। ~ यत् तद्धिताः.

[LSK] साड्-रूपस्य 6/1 सहेः 6/1 सस्य 6/1 मूर्धन्य-आदेशः 1/1 ।

मूर्धन्य is the substitute in the place of the स् of सह्-धातु which is in the form of साड्.

[LSK] तुराषाट् 1/1, तुराषाड् 1/1 ॥

तुरासाह् + सुँ

तुरासाह् 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

तुरासाह् 8.2.31 हो ढः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

तुरासाह् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।

तुरासाह् 8.3.56 सहेः साडः सः । ~ मूर्धन्यः

तुरासाह् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ चर्

[LSK] तुरासाहौ 1/2 । तुरासाहः 1/3 । तुरासाह्भ्याम् 3/2 इत्यादि 1/1 ॥

When पद-संज्ञा is given to अङ्ग, 8.2.31 हो ढः।, then 8.2.39 झलां जशोऽन्ते। are applied. Then 8.3.56 सहेः साडः सः । ~ मूर्धन्यः becomes applicable.

**व-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (1) सुदिव्**

सु = शोभना द्यौः = आकाशः यस्य सः सुद्यौः ।

सु + सुँ + दिव् + सुँ 2.2.24 अनेकमन्यपदार्थे । ~ बहुव्रीहिः समासः

दिव् is a feminine प्रातिपदिक.

प्रातिपदिक-संज्ञा by 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

सु + दिव् 2.4.71 सुपो धातुप्रातिपदिकयोः । ~ लुक्

सुदिव्

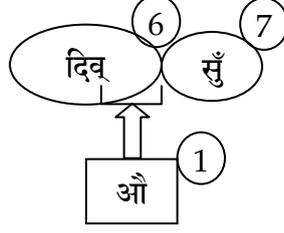
सुदिव् + सुँ

**Declension of सुदिव् (व-पुं-1)**

|   | एकवचनम्        | द्विवचनम्            | बहुवचनम्                 |
|---|----------------|----------------------|--------------------------|
| 1 | सुद्यौः 7.1.84 | सुदिवौ               | सुदिवः                   |
| 5 | same as above  | same as above        | same as above            |
| 2 | सुदिवम्        | same as above        | same as above            |
| 3 | सुदिवा         | सुद्युभ्याम् 6.1.131 | सुद्युभिः 6.1.131        |
| 4 | सुदिवे         | same as above        | सुद्युभ्यः 6.1.131       |
| 5 | सुदिवः         | same as above        | same as above            |
| 6 | same as above  | सुदिवोः              | सुदिवाम्                 |
| 7 | सुदिवि         | same as above        | सुद्युषु 6.1.131, 8.3.59 |

[विधिसूत्रम्] 7.1.84 दिव औत् । ~ सौ

The last letter of दिव् is replaced by औ when followed by सुँ



दिवः 6/1 औत् 1/1 । ~ सौ 7/1

2 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- दिवः 6/1 – प्रातिपदिक is दिव्; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- औत् 1/1 – This is आदेश. The त् is just for उच्चारण.
- सौ 7/1 – From 7.1.82 सावनडुहः ।; प्रातिपदिक is सुँ; in परसप्तमी.

[LSK] “दिव्” इति<sup>0</sup> प्रातिपदिकस्य<sup>6/1</sup> औत्<sup>1/1</sup> स्यात्<sup>III/1</sup> सौ<sup>7/1</sup> ।

औ is the substitute for प्रातिपदिक दिव् when सुँ follows.

[LSK] सुद्यौः<sup>1/1</sup> ।

सुदिव् + सुँ

सुदि औ + सुँ 7.1.84 दिव औत् । ~ सौ

सुद्य औ + सुँ 6.1.77 इको यणचि ।

सुद्यौः 8.2.66, 8.3.15

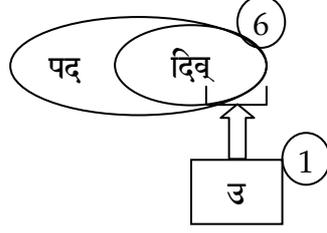
[LSK] सुदिवौ<sup>1/2</sup> ॥

सुदिव् + औ

सुदिवौ

[विधिसूत्रम्] 6.1.131 दिव उत् । ~ पदान्ते

The last letter of दिव् at the end of पद is replaced by उ.



दिवः 6/1 उत् 1/1 । ~ पदान्ते 7/1

2 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- दिवः 6/1 – प्रातिपदिक is दिव्; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- उत् 1/1 – This is आदेश. The त् is just for उच्चारण.
- पदान्ते 7/1 – From 6.1.109 एङः पदान्तादति ।; by मण्डूकसुतगति and विभक्तिविपरिणाम; in अधिकरणे सप्तमी.

[LSK] दिवः 6/1 अन्त-आदेशः 1/1 उकारः 1/1 स्यात् III/1 पदान्ते 7/1 ।

उ is the substitute for प्रातिपदिक दिव् at the end of पद.

[LSK] सुद्युभ्याम् 3/2 इत्यादि 1/1 ॥

सुदिव् + भ्याम्

सुदि उ + भ्याम् 7.1.84 दिव उत् । ~ पदान्ते

सुद्य उ + भ्याम् 6.1.77 इको यणचि ।

सुद्युभ्याम्

## रेफ-अन्त-पुँल्लिङ्गः (1) चतुर्

चतुर् (four) is नित्य-बहुवचन-अन्त word. It declines in three genders, with different forms.

[LSK] चत्वारः<sup>1/3</sup> ।

चतुर् + जस्

चतु आम्र् + अस् 7.1.98 चतुरनडुहोरामुदातः । ~ सर्वनामस्थाने

चत्वा र् + अस् 6.1.77 इको यणचि ।

चत्वारः 8.2.66, 8.3.15

[LSK] चतुरः<sup>2/3</sup> ।

चतुर् + शस्

चतुर् + अस्

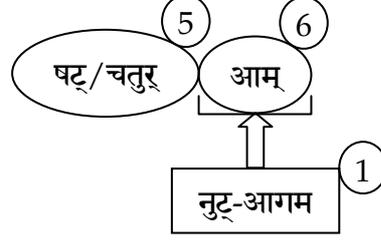
[LSK] चतुर्भिः<sup>3/3</sup> । चतुर्भ्यः<sup>4/3, 5/3</sup> ॥

### Declension of चतुर् (र-पुं-1)

|   | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम्                                  |
|---|---------|-----------|---|
| 1 |         |           | चत्वारः 7.1.98                            |
| 5 |         |           |   |
| 2 |         |           | चतुरः                                     |
| 3 |         |           | चतुर्भिः                                  |
| 4 |         |           | चतुर्भ्यः                                 |
| 5 |         |           | same as above                             |
| 6 |         |           | चतुर्णाम्/चतुर्णाम् 7.1.55, 8.4.1, 8.4.46 |
| 7 |         |           | चतुर्षु 8.3.16, 8.4.49                    |

[विधिसूत्रम्] 7.1.55 षट्चतुर्भ्यश्च । ~ आमः नुट्

After षट्-संज्ञक word and चतुर्, आम् takes नुट्-आगम.



षट्चतुर्भ्यः<sup>5/3</sup> च<sup>0</sup> । ~ आमः<sup>6/1</sup> नुट्<sup>1/1</sup>

2 words in the सूत्र; 2 words as अनुवृत्ति

- षट्चतुर्भ्यः 5/3 – षट् is संज्ञा defined by 1.1.24 ष्णान्ता षट् । and 1.1.25 डति च ।, and प्रातिपदिक चतुर् in द्वन्द्वसमास; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- आमः 6/3 – From 7.1.52 आमि सर्वनाम्नः सुट् ।; by विभक्तिविपरिणाम, in स्थानेयोगा षष्ठी.
- नुट् 1/1 – This is आगम. By being टित्, it becomes आदि-अवयव of आम् by 1.1.46 आद्यन्तौ टकितौ।.

[LSK] एभ्यः<sup>5/3</sup> आमः<sup>6/1</sup> नुट्-आगमः<sup>1/1</sup> ॥

औ is the substitute for प्रातिपदिक दिव् when सुँ follows.

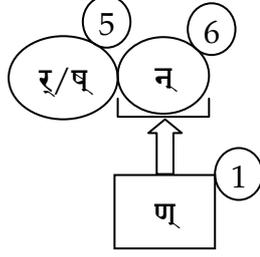
चतुर् + आम्<sup>6/3</sup>

चतुर् + न् आम 7.1.55 षट्चतुर्भ्यश्च । ~ आमः नुट्

Now, न् is immediately preceded by र्. The next sūtra teaches णत्व in such case.

### [विधिसूत्रम्] 8.4.1 रषाभ्यां णो नः समानपदे ।

In one word, after र् or ष, न is replaced by ण्.



रषाभ्याम्<sup>5/2</sup> नः<sup>6/1</sup> णः<sup>1/1</sup> समानपदे<sup>0</sup> ।

4 words in the सूत्र; no अनुवृत्ति is required.

- रषाभ्याम्<sup>5/2</sup> – रः च षः च रषौ (ID), ताभ्याम् ।; in स्थानेयोगा षष्ठी. The अ after र् and ष् is उच्चारणार्थ.
- नः<sup>6/1</sup> – In स्थानेयोगा षष्ठी.
- णः<sup>1/1</sup> – This is आदेश. The अ after ण् is उच्चारणार्थ.
- समानपदे<sup>7/1</sup> – समानं च अदः पदं च समानपदम् (KT), तस्मिन् । in one word; in अधिकरणे सप्तमी.

चतुर् + आम्<sup>6/3</sup>

चतुर् + न् आम् 7.1.55 षट्चतुर्भ्यश्च । ~ आम्: नुट्

चतुर् + णाम् 8.4.1 रषाभ्यां णो नः समानपदे ।

चतुर् + ण्णाम् 8.4.46 अचो रहाभ्यां द्वे । ~ यरः वा

This sūtra is already studied in हल्-सन्धि section.

[LSK] अचः<sup>5/1</sup> पराभ्याम्<sup>5/2</sup> रेफ-हकाराभ्याम्<sup>5/2</sup> परस्य<sup>6/1</sup> यरः<sup>6/1</sup> द्वे<sup>1/2</sup> वा<sup>0</sup> स्तः<sup>III/2</sup> ।

There is optional duplication of यर् which is after र् and ह् which are after अच्.

[LSK] चतुर्णाम्<sup>6/3</sup> । चतुर्णाम्<sup>6/3</sup> ॥

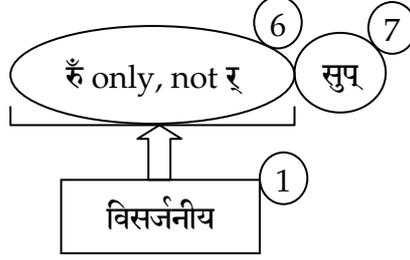
Because of the option, there are two forms.

चतुर् + सुप्<sup>7/3</sup>

Here, विसर्ग for र् by 8.3.15 खरवसानयोर्विसर्जनीयः । is प्राप्त, but it is restricted by the next नियमसूत्र.

## [नियमसूत्रम्] 8.3.16 रोः सुप् । ~ विसर्जनीयः

When सुप् of 7/3 follows, only रँ is replaced by विसर्ग, not र्.



रोः<sup>6/1</sup> सुप्<sup>7/1</sup> । ~ विसर्जनीयः<sup>1/1</sup>

2 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- रोः 6/1 – प्रातिपदिक is रँ, which is given only by रँत्व-प्रकरण starting from 8.2.66 ससजुषो रँः।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- सुप् 7/1 – प्रातिपदिक is सुप्, 7/3 of सुप्-प्रत्यय; in परसप्तमी.
- विसर्जनीयः 1/1 – From 8.3.15 खरवसानयोर्विसर्जनीयः।.

[LSK] रोः<sup>6/1</sup> एव<sup>0</sup> विसर्गः<sup>1/1</sup> सुप्<sup>7/3</sup> ।

विसर्ग is only for रँ when सुप् follows.

र् of रँ could have been replaced by विसर्ग by 8.3.15 खरवसानयोर्विसर्जनीयः।, even without this sūtra, but this sūtra is started by Pāṇini. In this case, this sūtra should be understood as नियमसूत्र, which restricts the scope of application of the previous sūtra, hence excludes any other situations than what is specified in the नियमसूत्र.

Here in this नियमसूत्र, only रँ is specified when सुप् follows. In the case of चतुर् + सुप्<sup>7/3</sup>, the रेफ is not of रँ, thus विसर्जनीय-आदेश is not applied.

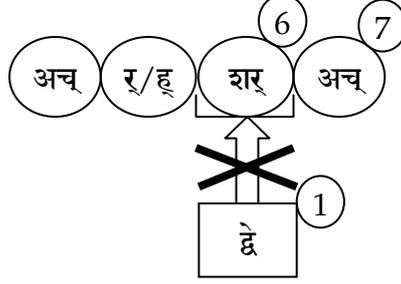
चतुर् + सुप्<sup>7/3</sup>

चतुर् + षु 8.3.59 आदेश-प्रत्यययोः । ~ इण्कोः सः मूर्धन्यः

र् is found in इण्. Now, उ of अचः, and र् of रषाभ्याम् are preceding ष, which is of यरः, thus 8.4.46 अचो रहाभ्यां द्वे । ~ यरः वा द्वे is applicable. This is negated by the next sūtra.

[निषेधसूत्रम्] 8.4.49 शरोऽचि । ~ न द्वे

When अच् follows, शर् does not get duplicated by 8.4.47 अचो रहाभ्यां द्वे।<sup>4</sup>.



शरः<sup>6/1</sup> अचि<sup>7/1</sup> । ~ न<sup>0</sup> द्वे<sup>1/2</sup>

2 words in the सूत्र; 2 words as अनुवृत्ति

- शरः 6/1 – प्रत्याहार शर्; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- अचि 7/1 – प्रत्याहार अच्; in परसप्तमी.
- न<sup>0</sup> – From 8.4.48 नादिन्याक्रोशे पुत्रस्य।. This is to negate द्वे in this particular situation.
- द्वे 1/2 – From 8.4.47 अचो रहाभ्यां द्वे।. This is आदेश.

[LSK] अचि<sup>7/1</sup> परे<sup>7/1</sup> शरः<sup>6/1</sup> द्वे<sup>1/2</sup> न<sup>0</sup> स्तः<sup>III/2</sup> ।

When अचि follows, शर् does not become duplicated.

[LSK] चतुर्षु<sup>7/3</sup> ॥

चतुर् + सुप्

8.3.15 खरवसानयोर्विसर्जनीयः । is applicable, but restricted by 8.3.16 रोः सुपि ।

चतुर् + षु 8.3.59 आदेश-प्रत्यययोः । ~ इण्कोः सः मूर्धन्यः

8.4.46 अचो रहाभ्यां द्वे । ~ यरः वा द्वे is प्राप्त but negated by 8.4.49 शरोऽचि ।

चतुर्षु

<sup>4</sup> This निषेध is particularly for 8.4.47 अचो रहाभ्यां द्वे ।. Ref[K] अचो रहाभ्याम् इति प्राप्तिः प्रतिषिध्यते ।

म-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (1) प्रशाम्

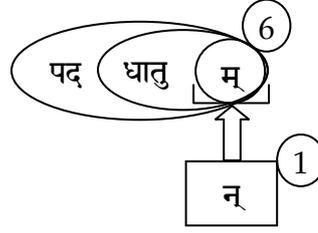
प्र + शम् उपशमे (4P) + क्तिप् 3.2.76 क्तिप् च ।

प्र + शाम् 6.4.15 अनुनासिकस्य किङ्गलोः किङ्गति ।

प्रातिपदिकसंज्ञा 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च ।

[विधिसूत्रम्] 8.2.64 मो नो धातोः । ~ पदस्य अन्ते

न् takes the place of म् of धातु at the end of पद.



मः<sup>6/1</sup> नः<sup>1/1</sup> धातोः<sup>6/1</sup> । ~ पदस्य<sup>6/1</sup> अन्ते<sup>7/1</sup>

3 words in the सूत्र; 2 words as अनुवृत्ति

- मः 6/1 – In स्थानेयोगा षष्ठी.
- नः 1/1 – This is आदेश. The अ after न् is उच्चारणार्थ.
- धातोः 6/1 – In सम्बन्धे षष्ठी to मः.
- पदस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 8.1.16 पदस्य।; in सम्बन्धे षष्ठी to अन्ते.
- अन्ते 7/1 – From 8.2.29 स्कोः संयोगाद्योरन्ते च ।; in अधिकरणे सप्तमी.

[LSK] धातोः<sup>6/1</sup> मस्य<sup>6/1</sup> नः<sup>1/1</sup> पदान्ते<sup>7/1</sup> ।

न् is the substitute in the place of म् of धातु, at the end of पद.

[LSK] प्रशान्<sup>1/1</sup> ।

प्रशाम् + सुँ

प्रशाम् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

प्रशान् 8.2.64 मो नो धातोः । ~ पदस्य अन्ते

[LSK] प्रशान्भ्याम्<sup>3/2</sup> इत्यादि<sup>1/1</sup> ।

प्रशाम् + भ्याम्

प्रशान् + भ्याम् 8.2.64 मो नो धातोः । ~ पदस्य अन्ते

Note that 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य। does not occur because of असिद्धत्व. Being पदान्त,  
8.3.24 नश्चापदान्तस्य झलि । ~ अनुस्वारः does not happen, either.

प्रशाम् + सुप्<sup>7/1</sup>

प्रशान् + सु 8.2.64 मो नो धातोः । ~ पदस्य अन्ते

प्रशान् + ध् सु 8.3.30 नश्च । ~ सि धुट् वा

प्रशान् + त् सु 8.4.55 खरि च । ~ चर् झलाम्

प्रशान्तसु

पक्षे प्रशान्सु

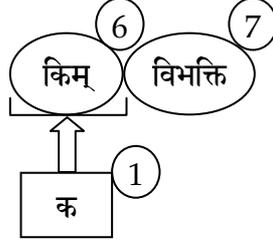
### Declension of प्रशान् (म्-पुं-1)

|   | एकवचनम्        | द्विवचनम्            | बहुवचनम्                            |
|---|----------------|----------------------|-------------------------------------|
| 1 | प्रशान् 8.2.64 | प्रशामौ              | प्रशामः                             |
| 5 | same as above  | same as above        | same as above                       |
| 2 | प्रशामम्       | same as above        | same as above                       |
| 3 | प्रशामा        | प्रशान्भ्याम् 8.2.64 | प्रशान्भिः 8.2.64                   |
| 4 | प्रशामे        | same as above        | प्रशान्भ्यः 8.2.64                  |
| 5 | प्रशामः        | same as above        | same as above                       |
| 6 | same as above  | प्रशामोः             | प्रशामाम्                           |
| 7 | प्रशामि        | same as above        | प्रशान्तसु/प्रशान्सु 8.2.64, 8.3.30 |

म-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (2) किम्

## [विधिसूत्रम्] 7.2.103 किमः कः । ~ विभक्तौ

When विभक्ति follows, किम् is replaced by क.



किमः<sup>6/1</sup> कः<sup>1/1</sup> । ~ विभक्तौ<sup>7/1</sup>

2 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- किमः 6/1 – प्रातिपदिक is किम्, one of the सर्वादिगण; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- कः 1/1 – This is आदेश. This is अनेकाल्, consisting क् and अ.
- विभक्तौ 7/1 – From 7.2.84 अष्टन आ विभक्तौ।; in परसप्तमी. विभक्ति is संज्ञा defined as 1.4.104 विभक्तिश्च । ~ सुपः तिङः

[LSK] किमः<sup>6/1</sup> कः<sup>1/1</sup> स्यात्<sup>III/1</sup> विभक्तौ<sup>7/1</sup>।

क is the substitute in the place of किम् when विभक्ति follows.

[LSK] कः<sup>1/1</sup> ।

किम् + सुँ

क + सुँ 7.2.103 किमः कः । ~ विभक्तौ

कः 8.2.66, 8.3.15

Note that after विप्रतिषेध with 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः, being पर, 7.2.103 किमः कः । ~ विभक्तौ takes place.

[LSK] कौ<sup>1/2</sup> । के<sup>1/3</sup> । शेषम्<sup>1/1</sup> सर्ववत्<sup>0</sup> ॥

Because of 7.2.103 किमः कः । ~ विभक्तौ, the प्रातिपदिक becomes अ-ending सर्वनाम. Thus it declines exactly like सर्व.

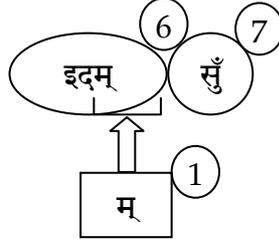
Declension of किम् (म्-पुं-2)

|   | एकवचनम् | द्विवचनम्     | बहुवचनम्      |
|---|---------|---------------|---------------|
| 1 | कः      | कौ            | के            |
| S |         |               |               |
| 2 | कम्     | same as above | कान्          |
| 3 | केन     | काभ्याम्      | कैः           |
| 4 | कस्मै   | same as above | केभ्यः        |
| 5 | कस्मात् | same as above | same as above |
| 6 | कस्य    | कयोः          | केषाम्        |
| 7 | कस्मिन् | same as above | केषु          |

म-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (3) इदम्

[विधिसूत्रम्] 7.2.108 इदमो मः । ~ सौ

When सुँ follows, the last letter (म) of इदम् is replaced by म्.



इदमः 6/1 मः 1/1 । ~ सौ 7/1

2 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- इदमः 6/1 – प्रातिपदिक is इदम्, one of the सर्वादिगण; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- मः 1/1 – This is आदेश. The अ after म् is उच्चारणार्थ.
- सौ 7/1 – From 7.2.106 तदोः सः सावनन्त्ययोः ।; in परसप्तमी.

[LSK] सौ 7/1।

म् is the substitute in the place of the last letter of इदम् when सुँ follows.

[LSK] त्यदादि-अत्व-अपवादः 1/1 ॥

This is अपवाद for अ-आदेश of 7.2.102 त्यदादीनामः ।.

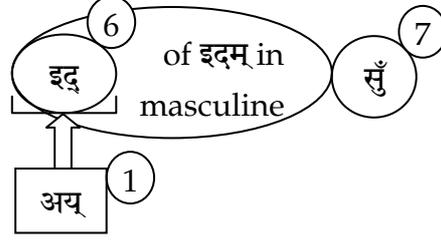
इदम् + सुँ

इदम् + सुँ 7.2.108 इदमो मः । ~ सौ

To be continued with the next sūtra –

[विधिसूत्रम्] 7.2.111 इदोऽय् पुंसि । ~ सौ

When सुँ follows, इद् of इदम् in masculine is replaced by अय्.



इदः<sup>6/1</sup> अय्<sup>1/1</sup> पुंसि<sup>7/1</sup> । ~ इदमः<sup>6/1</sup> सौ<sup>7/1</sup>

3 words in the सूत्र; 2 words as अनुवृत्ति

- इदः 6/1 – प्रातिपदिक is इद्; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- अय् 1/1 – This is आदेश. Being अनेकाल्, it replaces all the letters by 1.1.55 अनेकाल्शिात्सर्वस्य।.
- पुंसि 7/1 – प्रातिपदिक is पुंस, masculine; in विषयसप्तमी.
- इदमः 6/1 – From 7.2.108 इदमो मः।; in सम्बन्धे षष्ठी to इदः.
- सौ 7/1 – From 7.2.110 यः सौ।; in परसप्तमी.

[LSK] इदमः<sup>6/1</sup> इदः<sup>6/1</sup> अय्<sup>1/1</sup> सौ<sup>7/1</sup> पुंसि<sup>7/1</sup>।

अय् is the substitute in the place of इद् of इदम् in masculine when सुँ follows.

[LSK] अयम्<sup>1/1</sup> ।

इदम् + सुँ

इदम् + सुँ 7.2.108 इदमो मः । ~ सौ

अय् अम् + सुँ 7.2.112 इदोऽय् पुंसि । ~ सौ

अय् अम् 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्वपृक्तं हल् । ~ लोपः

अयम्

Note that this is अपवाद for

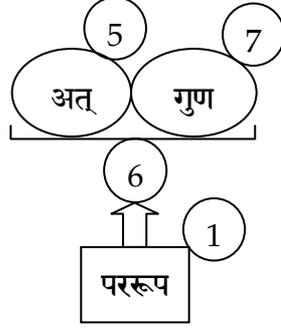
इदम् + औ

इद अ + औ 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

Continue to the next sūtra.

## [विधिसूत्रम्] 6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

When short अ, which is not at the end of पद, is followed by गुण (अ, ए, ओ), they are replaced by पररूप (गुण)



अतः 5/1 गुणे 7/1 । ~ अपदान्तात् 5/1 पररूपम् 1/1 एकः 1/1 पूर्वपरयोः 6/2 संहितायाम् 7/1

2 words in the सूत्र; 5 words as अनुवृत्ति

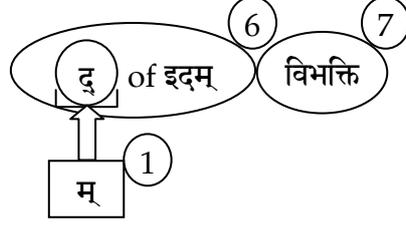
- अतः 5/1 – Short अ; in पूर्वपञ्चमी.
- गुणे 7/1 – गुण s संज्ञा for अ, ए, ओ by 1.1.2 अदेङ् गुणः।; in परसप्तमी.
- अपदान्तात् 5/1 – From 6.1.96 उस्यपदान्तात् ।; adjective to अतः, “short अ, not at the end of पद”.
- पररूपम् 1/1 – This is आदेश. From 6.1.94 एङि पररूपम् ।. परस्य रूपं पररूपम् (6T)।.
- एकः 1/1 – From अधिकारसूत्र 6.1.84 एकः पूर्वपरयोः।. Two letters become one.
- पूर्वपरयोः 6/2 – From अधिकारसूत्र 6.1.84 एकः पूर्वपरयोः।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- संहितायाम् 7/1 – In विषयसप्तमी.

[LSK] अपदान्तात् 5/1 अतः 5/1 गुणे 7/1 पररूपम् 1/1 एकादेशः 1/1 ॥

पररूप is the one substitute for short अ, not at the end of पद, and गुण.

[विधिसूत्रम्] 7.2.109 दश्च । ~ विभक्तौ इदम् मः

When विभक्ति follows, द् of इदम् is replaced by म्.



दः 6/1 च 0 । ~ विभक्तौ 7/1 इदम्ः 6/1 मः 1/1

2 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- दः 6/1 – In स्थानेयोगा षष्ठी.
- च 0 – This is to connect to the previous sūtra, 7.2.108 इदमो मः।.
- इदम्ः 6/1 – From 7.2.108 इदमो मः।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- मः 1/1 – From 7.2.108 इदमो मः।; This is आदेश. The अ after म् is उच्चारणार्थ.
- विभक्तौ 7/1 – From 7.2.84 अष्टन आ विभक्तौ।; in परसप्तमी.

[LSK] इदम्ः 6/1 दस्य 6/1 मः 1/1 स्यात् III/1 विभक्तौ 7/1।

म् is the substitute in the place of द् of इदम् when विभक्ति follows.

[LSK] इमौ 1/2 ।

इदम् + औ

इद अ + औ 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

इद + औ 6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

इम + औ 7.2.109 दश्च । ~ विभक्तौ इदम् मः

इमौ 6.1.88 वृद्धिरेचि ।, after negating 6.1.102 प्रथमयोः पूर्वसवर्ण। by 6.1.104 नादिचि।.

[LSK] इमे 1/3 ।

इदम् + जस्

इदम् + शी 7.1.17 जसः शी । ~ सर्वनाम्नः अतः

इद अ + ई 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

इद + ई 6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

इम + ई 7.2.109 दश्च । ~ विभक्तौ इदम् मः

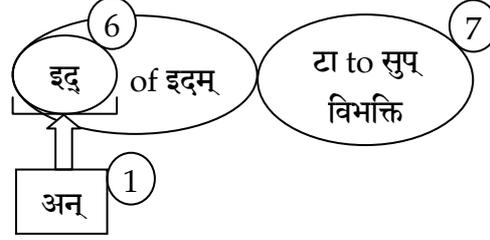
इमे 6.1.87 आद्गुणः ।, after negating 6.1.102 प्रथमयोः पूर्वसवर्ण। by 6.1.104 नादिचि।.

[LSK] त्यदादेः<sup>6/1</sup> सम्बोधनम्<sup>1/1</sup> न<sup>0</sup> अस्ति<sup>III/1</sup> इति<sup>0</sup> उत्सर्गः<sup>1/1</sup> ॥

Generally, there is no सम्बोधन for प्रातिपदिकs in त्यदादि-गण. (There can be exceptions.)

[विधिसूत्रम्] 7.2.112 अनाप्यकः । ~ विभक्तौ इदमः इदः

इद् of इदम् without क् is replaced by अन् when विभक्ति starting from 3<sup>rd</sup> case follows.



अन्<sup>1/1</sup> आपि<sup>7/1</sup> अकः<sup>6/1</sup> । ~ इदमः<sup>6/1</sup> इदः<sup>6/1</sup> विभक्तौ<sup>7/1</sup>

3 words in the सूत्र; 3 words as अनुवृत्ति

- अन् 1/1 – This is आदेश. This is अनेकाल्.
- आपि 7/1 – This is प्रत्याहार made of आ of टा and इत् letter of सुप्; in परसप्तमी.
- अकः 6/1 – अविद्यमानः ककारः यस्मिन् इति अकः (N17B)। that in which there is no क् of अकच् प्रत्यय. This is adjective to इदमः.
- इदमः 6/1 – From 7.2.108 इदमो मः।; in सम्बन्धे षष्ठी to इदः.
- इदः 6/1 – From 7.2.111 इदोऽय् पुंसि।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- विभक्तौ 7/1 – From 7.2.84 अष्टन आ विभक्तौ।; in परसप्तमी.

[LSK] अककारस्य<sup>6/1</sup> इदमः<sup>6/1</sup> इदः<sup>6/1</sup> अन्<sup>1/1</sup> आपि<sup>7/1</sup> विभक्तौ<sup>7/1</sup> ।

अन् is the substitute in the place of इद् of इदम् when आप् (from टा to सुप्) विभक्ति follows.

[LSK] “आप्” इति<sup>0</sup> प्रत्याहारः<sup>1/1</sup> ।

आप् is प्रत्याहार. The आदि letter is आ of टा, and अन्त्य इत् is प् of सुप्.

[LSK] अनेन<sup>3/1</sup> ॥

इद् अ + टा 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

इद् + आ 6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

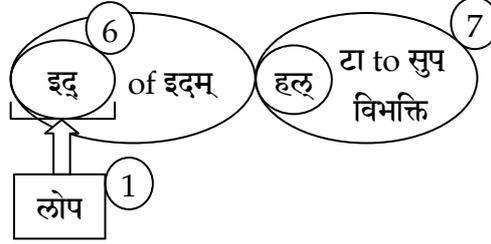
अन् अ + आ 7.2.112 अनाप्यकः । ~ विभक्तौ इदमः इदः, with 1.1.55 अनेकाल्शिात्सर्वस्य।

अन् अ + इन 7.1.12 टाडसिँडसामिनात्याः । ~ अतः अङ्गात्

अनेन 6.1.87 आद्गुणः । ~ अचि एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

[विधिसूत्रम्] 7.2.113 हलि लोपः । ~ अकः इदमः इदः आपि विभक्तौ

इद् of इदम् without क is elided when हलादि-विभक्ति starting from 3<sup>rd</sup> case follows.



हलि<sup>7/1</sup> लोपः<sup>1/1</sup> । ~ अकः<sup>6/1</sup> इदमः<sup>6/1</sup> इदः<sup>6/1</sup> आपि<sup>7/1</sup> विभक्तौ<sup>7/1</sup>

2 words in the सूत्र; 5 words as अनुवृत्ति

- हलि 7/1 – This is adjective to विभक्तौ, and also अल्पग्रहण, thus with तदादिविधि, it results in “हलादौ विभक्तौ”.
- लोपः 1/1 – This is आदेश.
- अकः 6/1 – From 7.2.112 अनाप्यकः।. This is adjective to इदमः.
- आपि 7/1 – This does not need to be अनुवृत्ति, because of हल्, and वचनसामर्थ्य for 7.2.111.
- इदमः 6/1 – From 7.2.108 इदमो मः।; in सम्बन्धे षष्ठी to इदः.
- इदः 6/1 – From 7.2.111 इदोऽय् पुंसि।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- विभक्तौ 7/1 – From 7.2.84 अष्टन आ विभक्तौ।; in परसप्तमी.

[LSK] अककारस्य<sup>6/1</sup> इदमः<sup>6/1</sup> इदः<sup>6/1</sup> लोपः<sup>1/1</sup> आपि<sup>7/1</sup> हलादौ<sup>7/1</sup> ।

लोप is the substitute in the place of इद् of अककार इदम् when हलादि आप् (from टा to सुप) विभक्ति follows.

[LSK] (परिभाषा) न<sup>0</sup> अनर्थके<sup>7/1</sup> अलोऽन्त्य-विधिः<sup>1/1</sup> अनभ्यास-विकारे<sup>7/1</sup> ॥

परिभाषा tells “in a group of letters which is not meaningful, 1.1.52 अलोऽन्त्यस्य। does not work, except for modifications in अभ्यास”. Thus all the letters of “इद्” are to be elided.

इदम् + भ्याम्

इद अ + भ्याम् 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

इद + भ्याम् 6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

अ + भ्याम् 7.2.113 हलि लोपः । ~ अकः इदमः इदः आपि विभक्तौ

Here, is 7.3.102 सुपि च। applicable? The condition for this sūtra is अदन्त-अङ्गस्य. The अङ्ग here consists of only one letter, अ. Is this considered to be अदन्त-अङ्गस्य? The next sūtra says.

## [परिभाषा-सूत्रम्] 1.1.21 आद्यन्तवदेकस्मिन् ।

An effect can take place on a single letterlike onan आदि or अन्त letter.

आदि-अन्तवत्<sup>0</sup> एकस्मिन्<sup>7/1</sup> ।

2 words in the सूत्र; no अनुवृत्ति is required.

- आदि-अन्तवत्<sup>0</sup> – आदिः च अन्तः च आद्यन्तौ (ID)। तयोः इव आद्यन्तवत् by 5.1.116 तत्र तस्य इव ।
- एकस्मिन्<sup>7/1</sup> – Here, this means “in a single letter”.

[LSK] एकस्मिन्<sup>7/1</sup> क्रियमाणम्<sup>1/1</sup> कार्यम्<sup>1/1</sup> आदौ<sup>7/1</sup> इव<sup>0</sup> अन्ते<sup>7/1</sup> इव<sup>0</sup> स्यात्<sup>III/1</sup> ।

An operation performed on a single letter should be like it is upon an initial or final letter.

This is based on sentences found in महाभाष्य :

यस्मात्<sup>5/1</sup> पूर्वम्<sup>1/1</sup> न<sup>0</sup> अस्ति<sup>III/1</sup> परम्<sup>1/1</sup> अस्ति<sup>III/1</sup> सः<sup>1/1</sup> आदिः<sup>1/1</sup> इति<sup>0</sup> उच्यते<sup>III/1</sup> ।

That which does not have letter before, and has letter after, is called आदि.

यस्मात्<sup>5/1</sup> पूर्वम्<sup>1/1</sup> अस्ति<sup>III/1</sup> परम्<sup>1/1</sup> च<sup>0</sup> न<sup>0</sup> अस्ति<sup>III/1</sup> सः<sup>1/1</sup> अन्तः<sup>1/1</sup> इति<sup>0</sup> उच्यते<sup>III/1</sup> ।

That which has letter before, and does not have letter after, is called अन्त.

According to these sentences, the single letter अ in the अङ्ग under discussion is not considered to be अन्त, which is required for application of 7.3.102 सुपि च।, whose requirement is अ-ending अङ्ग. This is where this परिभाषा is useful.

[LSK] “सुपि च” (7.3.102) इति<sup>0</sup> दीर्घः<sup>1/1</sup> । आभ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

The दीर्घ of 7.3.102 सुपि च। takes place on the single letter अ in the अङ्ग, just like on the last letter of an अङ्ग by the help of this परिभाषा 1.1.21 आद्यन्तवदेकस्मिन् ।

इदम् + भ्याम्

इद अ + भ्याम् 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

इद + भ्याम् 6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

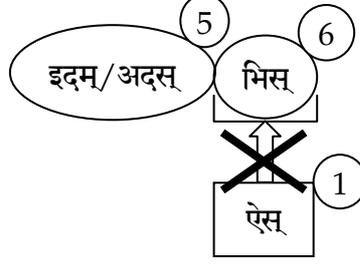
अ + भ्याम् 7.2.113 हलि लोपः । ~ अकः इदमः इदः आपि विभक्तौ

आ + भ्याम् 7.3.102 सुपि च। ~ दीर्घः अतः अङ्गस्य with परिभाषा 1.1.21 आद्यन्तवदेकस्मिन् ।

आभ्याम्

[निषेधसूत्रम्] 7.1.11 नेदमदसोरकोः । ~ भिसः अङ्गात्

For इदम् and अदस् without क, ऐस् does not take the place of भिस.



न<sup>0</sup> इदम्-अदसोः 6/2 अकोः 6/2 । ~ भिसः 6/1 ऐस् 1/1

3 words in the सूत्र; 2 words as अनुवृत्ति

- न 0 – This is to negate ऐस्-आदेश for भिस.
- इदम्-अदसोः 6/2 – प्रातिपदिक इदम् and अदस् in इतरेतरद्वन्द्वसमास; in सम्बन्धे षष्ठी to भिसः.
- अकोः 6/2 – अविद्यमानः ककारः यस्मिन् इति अकः (N17B)। that in which there is no क् of अकच् प्रत्यय. This is adjective to इदम्-अदसोः.
- भिसः 6/1 – From 7.1.9 अतो भिस ऐस्।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- ऐस् 1/1 – From 7.1.9 अतो भिस ऐस्।; this is आदेश to be negated by this sūtra.

[LSK] अककारयोः 6/2 इदम्-अदसोः 6/2 भिसः 6/1 ऐस् 1/1 न<sup>0</sup>।

ऐस् substitute does not take place for भिस for इदस् and अदस् without क् of अकच्.

[LSK] एभिः 3/3 ।

इदम् + भिस्

इद अ + भिस् 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

इद + भिस् 6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

अ + भिस् 7.2.113 हलि लोपः । ~ अकः इदमः इदः आपि विभक्तौ

ए + भिस् 7.3.103 बहुवचने झल्येत् । ~ अतः सुपि

एभिः 8.2.66, 8.3.15

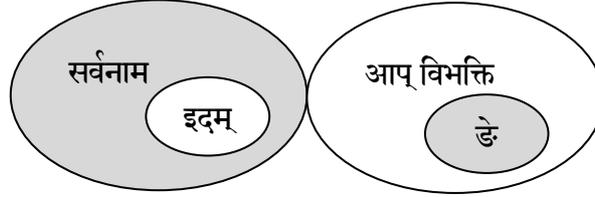
[LSK] अस्मै<sup>4/1</sup> ।

इदम् + डे

इद अ + डे 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

इद + डे 6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

Here, 7.1.14 सर्वनाम्नः स्मै । ~ अतः डेः and 7.2.112 अनाप्यकः । ~ विभक्तौ इदमः इदः are in विप्रतिषेध.



However, परं कार्यम् is not desired in this case. According to परिभाषा “पूर्वपर-नित्य-अन्तरङ्ग-अपवादानाम् उत्तरोत्तरं बलीयः”, 7.1.14 सर्वनाम्नः स्मै । is to be applied because स्मै is नित्य.

परिभाषा “पूर्वपर-नित्य-अन्तरङ्ग-अपवादानाम् उत्तरोत्तरं बलीयः” says: between two sūtras, अपवाद (exception) takes precedence over उत्सर्ग (general). If अपवाद-उत्सर्ग relationship is not there, अन्तरङ्ग (intimate) takes precedence over बहिरङ्ग (external). If such relationship is not there, then नित्य (always applicable) takes precedence over अनित्य (not always applicable). Finally, even when there is no such relationship, पर takes precedence over पूर्व.

1. अपवाद over उत्सर्ग
2. अन्तरङ्ग over बहिरङ्ग
3. नित्य over अनित्य
4. पर over पूर्व

Between 7.1.14 सर्वनाम्नः स्मै । and 7.2.112 अनाप्यकः ।, 7.1.14 सर्वनाम्नः स्मै । is applicable even after applying 7.2.112 अनाप्यकः ।, while this is not the case for 7.2.112 अनाप्यकः ।. Thus स्मै is नित्य.

इदम् + स्मै 7.1.14 सर्वनाम्नः स्मै । ~ अतः डेः

इद अ + स्मै 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

इद + स्मै 6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

अ + स्मै 7.2.113 हलि लोपः । ~ अकः इदमः इदः आपि विभक्तौ

अस्मै

[LSK] एभ्यः<sup>4/3</sup> ।

इदम् + भ्यस्

इद अ + भ्यस् 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

इद + भ्यस् 6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

अ + भ्यस् 7.2.113 हलि लोपः । ~ अकः इदमः इदः आपि विभक्तौ

ए + भ्यस् 7.3.103 बहुवचने झल्येत् । ~ अतः सुपि

एभ्यः 8.2.66, 8.3.15

[LSK] अस्मात्<sup>5/1</sup> ।

इदम् + ङसिँ

इद अ + अस् 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

इद + अस् 6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

इद + स्मात् 7.1.15 ङसिँङ्योः स्मात्स्मिनौ । ~ अतः सर्वनाम्नः, by negating 7.2.112 अनाप्यकः। by नित्य.

अ + स्मात् 7.2.113 हलि लोपः । ~ अकः इदमः इदः आपि विभक्तौ

अस्मात्

[LSK] अस्य<sup>6/1</sup> ।

इदम् + ङस्

इद अ + अस् 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

इद + अस् 6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

इद + स्य 7.1.12 टाङ्सिँङ्सामिनात्याः । ~ अतः अङ्गात्

अ + स्य 7.2.113 हलि लोपः । ~ अकः इदमः इदः आपि विभक्तौ

अस्य

[LSK] अनयोः<sup>6/2</sup> ।

इदम् + ओस्

इद अ + ओस् 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

इद + ओस् 6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

अन + ओस् 7.2.112 अनाप्यकः। ~ इदमः इदः विभक्तौ

अने + ओस् 7.3.104 ओसि च । ~ एत् अतः अङ्गस्य

अनय् + ओस् 6.1.78 एचोऽयवायावः। ~ अचि

अनयोः 8.2.66, 8.3.15

[LSK] एषाम्<sup>6/3</sup> ।

इदम् + आम्

इद अ + आम् 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

इद + आम् 6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

इद + स् आम् 7.1.52 आमि सर्वनाम्नः सुट् । ~ अङ्गात् आत्

अ + साम् 7.2.113 हलि लोपः । ~ अकः इदमः इदः आपि विभक्तौ

ए + साम् 7.3.103 बहुवचने झल्येत् । ~ अतः सुपि

ए + षाम् 8.3.59 आदेश-प्रत्यययोः । ~ इण्कोः सः मूर्धन्यः

[LSK] अस्मिन्<sup>7/1</sup> । अनयोः<sup>7/2</sup> ।

इदम् + डि

इद अ + डि 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

इद + डि 6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

इद + स्मिन् 7.1.15 ङसिञ्चोः स्मात्स्मिनौ । ~ अतः सर्वनाम्नः, by negating 7.2.112 अनाप्यकः। by नित्य.

अ + स्मिन् 7.2.113 हलि लोपः । ~ अकः इदमः इदः आपि विभक्तौ

अस्मिन्

[LSK] एषु<sup>7/3</sup> ॥

इदम् + सुप्

इद अ + सु 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

इद + सु 6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

अ + सु 7.2.113 हलि लोपः । ~ अकः इदमः इदः आपि विभक्तौ

ए + सु 7.3.103 बहुवचने झल्येत् । ~ अतः सुपि

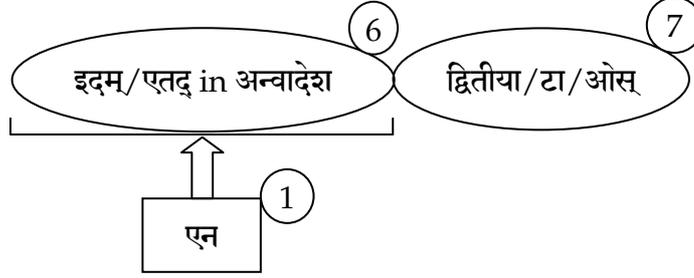
ए + षु 8.3.59 आदेश-प्रत्यययोः । ~ इण्कोः सः मूर्धन्यः

Declension of इदम् (म्-पुं-3)

|   | एकवचनम्  | द्विवचनम्  | बहुवचनम्  |
|---|--|--|---|
| 1 | इदम् + सुँ<br>इदम् + स् 7.2.108<br>अय् अम् + स् 7.2.111<br>अयम् 6.1.68                   | इदम् + औ<br>इद + औ 7.2.102, 6.1.97<br>इम + औ 7.2.109<br>इमौ 6.1.88   | इदम् + जस्<br>इदम् + शी 7.1.17<br>इद + ई 7.2.102, 6.1.97<br>इम + ई 7.2.109<br>इमे 6.1.87                          |
| S |  |  |   |
| 2 | इद + अम् 7.2.102, 6.1.97<br>इम + अम् 7.2.109<br>इमम् 6.1.107                             | same as above  | इद + शस् 7.2.102, 6.1.97<br>इम + अस् 7.2.109<br>इमान् 6.1.102, 6.1.103  |
| 3 | इदम् + टा<br>इद + टा 7.2.102, 6.1.97<br>इद + इन 7.1.12<br>अन + इन 7.2.112<br>अनेन 6.1.87 | इदम् + भ्याम्<br>इद + भ्याम् 7.2.102, 6.1.97<br>अ + भ्याम् 7.2.113<br>आभ्याम् 7.3.102, 1.1.21                      | इदम् + भिस्<br>इद + भिस् 7.2.102, 6.1.97<br>अ + भिस् 7.1.11, 7.2.113<br>एभिः 7.3.103, 8.2.66,<br>8.3.15           |
| 4 | इदम् + डे<br>इद + डे 7.2.102, 6.1.97<br>इद + स्मै 7.1.14<br>अस्मै 7.2.113                | same as above  | इदम् + भ्यस्<br>इद + भ्यस् 7.2.102, 6.1.97<br>अ + भ्यस् 7.2.113<br>एभिः 7.3.103, 8.2.66,<br>8.3.15                |
| 5 | इदम् + डसिँ<br>इद + डसिँ 7.2.102, 6.1.97<br>इद + स्मात् 7.1.15<br>अस्मात् 7.2.113        | same as above  | same as above   |
| 6 | इदम् + डस्<br>इद + डस् 7.2.102, 6.1.97<br>इद + स्य 7.1.12<br>अस्य 7.2.113                | इदम् + ओस्<br>इद + ओस् 7.2.102, 6.1.97<br>अन + ओस् 7.2.112<br>अने + ओस् 7.3.104<br>अनयोः 6.1.78, 8.2.66,<br>8.3.15 | इदम् + आम्<br>इद + आम् 7.2.102, 6.1.97<br>इद + साम् 7.1.52<br>अ + साम् 7.2.113<br>ए + साम् 7.1.52<br>एषाम् 8.3.59 |
| 7 | इदम् + डि<br>इद + डि 7.2.102, 6.1.97<br>इद + स्मिन् 7.1.15<br>अस्मिन् 7.2.113            | same as above  | इदम् + सुप्<br>इद + सु 7.2.102, 6.1.97<br>अ + सु 7.2.113<br>ए + सु 7.1.52<br>एषु 8.3.59                           |

## [विधिसूत्रम्] 2.4.34 द्वितीयाटौस्वेनः । ~ इदमः एतदः अन्वादेशे

इदम् and एतद् are replaced by एन in अन्वादेश, mentioning for the second time, when द्वितीया (अम्, औट्, शस्), टा and ओस् follow.



द्वितीया-टा-ओस्सु<sup>7/3</sup> एनः<sup>1/1</sup> । ~ इदमः<sup>6/1</sup> एतदः<sup>6/1</sup> अन्वादेशे<sup>7/1</sup>

2 words in the सूत्र; 3 words as अनुवृत्ति

- द्वितीया-टा-ओस्सु 7/3 – द्वितीया च टा च ओस् च द्वितीयाटौसः (ID), तेषु।; in परसप्तमी.
- एनः 1/1 – This is आदेश. Being अनेकाल्, 1.1.55 अनेकाल्शिात्सर्वस्य। will be applied.
- इदमः 6/1 – प्रातिपदिक is इदम्; from 2.4.32 इदमोऽन्वादेशेऽशनुदात्तस्तृतीयादौ।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- एतदः 6/1 – प्रातिपदिक is एतद्; from 2.4.33 एतदस्त्र-तसोस्त्र-तसौ चानुदात्तौ।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- अन्वादेशे 7/1 – From 2.4.32 इदमोऽन्वादेशेऽशनुदात्तस्तृतीयादौ।; in विषयसप्तमी.

[LSK] इदमेतदोः<sup>6/2</sup> अन्वादेशे<sup>7/1</sup> ।

एन is the substitute for इदम्/एतद् in अन्वादेश, when द्वितीया (अम्, औट्, शस्), टा and ओस् follow.

[LSK] किञ्चित्<sup>0</sup> कार्यम्<sup>2/1</sup> विधातुम्<sup>0</sup> उपात्तस्य<sup>6/1</sup> कार्यान्तरम्<sup>2/1</sup> विधातुम्<sup>0</sup> पुनः<sup>0</sup> उपादानम्<sup>1/1</sup> अन्वादेशः<sup>1/1</sup>।

अन्वादेश is mentioning again to reveal other information after mentioning the same thing to reveal one thing.

[LSK] यथा<sup>0</sup> – अनेन<sup>3/1</sup> व्याकरणम्<sup>1/1</sup> अधीतम्<sup>1/1</sup> एनम्<sup>2/1</sup> छन्दः<sup>2/1</sup> अध्यापय<sup>II/1</sup> इति<sup>0</sup> ।

For example – “By this (boy) grammar has been studied. To this (boy), please teach prosody”.

[LSK] अनयोः<sup>6/2</sup> पवित्रम्<sup>1/1</sup> कुलम्<sup>1/1</sup> अनयोः<sup>6/2</sup> प्रभूतम्<sup>1/1</sup> स्वम्<sup>1/1</sup> इति<sup>0</sup> ॥

These two people maintain a good family. There is also abundance of wealth for them.

[LSK] एनम्<sup>2/1</sup> ।

इदम् + अम्

एन + अम् 2.4.34 द्वितीयाटौस्वेनः । ~ इदमः एतदः अन्वादेशे

एनम् 6.1.107 अमि पूर्वः । ~ अकः पूर्वपरयोः एकः संहितायाम्

Declension of इदम् in अन्वादेश (म्-पुं-3-1)

|   | एकवचनम्     | द्विवचनम्     | बहुवचनम्      |
|---|-------------|---------------|---------------|
| 1 | अयम्        | इमौ           | इमे           |
| S |             |               |               |
| 2 | एनम् 2.4.34 | एनौ 2.4.34    | एनान् 2.4.34  |
| 3 | एनेन 2.4.34 | आभ्याम्       | एभिः          |
| 4 | अस्मै       | same as above | एभ्यः         |
| 5 | अस्मात्     | same as above | same as above |
| 6 | अस्य        | एनयोः 2.4.34  | एषाम्         |
| 7 | अस्मिन्     | same as above | एषु           |

Note that the forms in अन्वादेश are not optional.

In many textbooks these forms are presented in one declensional chart, combined with non-अन्वादेश forms, which can give the impression that they are optional forms. One should not get confused by such misleading presentation.

It is better to make two separate charts: one for the original forms, and the other for the forms in अन्वादेश.

न-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (1) राजन्

राजते शोभते इति राजा । The one who shines is राजन्, king.

राज् दीप्तौ (1U) to shine + कनिन् by (उ० 1.156) कनिन् युवृषितक्षिराजिधन्विद्युप्रतिदिवः ।

राज् + अन् अनुबन्धलोपे

राजन् प्रातिपदिकसंज्ञा by 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च ।

[LSK] राजा<sup>1/1</sup>॥

राजन् + सुँ

राजन् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

राजान् 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ । ~ नोपधायाः दीर्घः

राजा 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य । ~ पदस्य

राजन् + सुँ<sup>S/1</sup>

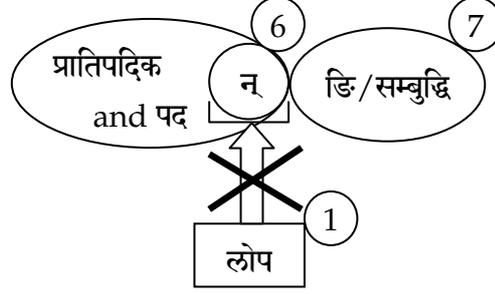
राजन् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

The सुँ being सम्बुद्धि by 2.3.49 एकवचनं संबुद्धिः ।, 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ । does not apply.

As for 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य ।, the next sūtra gives निषेध, prohibition.

[निषेधसूत्रम्] 8.2.8 न ङि-सम्बुद्धोः । ~ न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य

The elision of न् is prohibited when ङि or सम्बुद्धि follows.



न<sup>0</sup> ङि-सम्बुद्धोः 7/2 । ~ न<sup>6/1</sup> लोपः 1/1

2 words in the सूत्र; 3 words as अनुवृत्ति

- न<sup>0</sup> – Negation for नकारलोप taught in 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य।
- ङि-सम्बुद्धोः 7/2 – ङिः च सम्बुद्धिः च ङि-सम्बुद्धौ (ID), तयोः।; in परसप्तमी.
- न<sup>6/1</sup> – From 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य।; लुप्तषष्ठी-एकवचनम्; it should be understood as “नः” or “नकारस्य”; in स्थानेयोगा षष्ठी. Other conditions such as पदस्य are understood by the context.
- लोपः 1/1 – This is आदेश from 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य।
- प्रातिपदिकान्तस्य 6/1 – From 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य।

[LSK] नस्य<sup>6/1</sup> लोपः<sup>1/1</sup> न<sup>0</sup> ङौ<sup>7/1</sup> सम्बुद्धौ<sup>7/1</sup> च<sup>0</sup> ।

There is no elision of न् by 8.2.7 when ङि or सम्बुद्धि follows.

[LSK] हे<sup>0</sup> राजन्<sup>S/1</sup> ।

राजन् + सुँ<sup>S/1</sup>

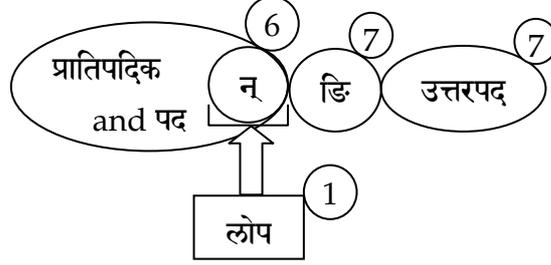
राजन् 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्वपृक्तं हल् । ~ लोपः

The सुँ being सम्बुद्धि by 2.3.49 एकवचनं संबुद्धिः।, 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ । does not apply.

And 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य। is debarred by 8.2.8 न ङि-सम्बुद्धोः । ~ न लोपः.

## (वार्तिकम्) ङावुत्तरपदे प्रतिषेधो वक्तव्यः ।

The prohibition of न-लोप does not apply when ङि is followed by उत्तरपद in समास.



ङौ 7/1 उत्तरपदे 7/1 प्रतिषेधः 1/1 वक्तव्यः 1/1।

4 words in the वार्तिक, other words are understood by the context.

- ङौ 7/1 – प्रातिपदिक ङि in परसप्तमी.
- उत्तरपदे 7/1 – The second word in समास; in परसप्तमी.
- प्रतिषेधः 1/1 – प्रति + सिध् to prohibit + घञ्, prohibition.
- वक्तव्यः 1/1 – वच् + तव्य, that which should have been said.

[LSK] ब्रह्मनिष्ठः 1/1 ।

ब्रह्मणि 7/1 निष्ठा 1/1 यस्य 6/1 सः 1/1 ब्रह्मनिष्ठः 1/1 (116B) । One whose commitment is Brahman

ब्रह्मन् + ङि + निष्ठा + सुँ 2.2.24 अनेकमन्यपदार्थे । ~ समासः बहुव्रीहिः

प्रातिपदिकसंज्ञा 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

ब्रह्मन् + निष्ठा 2.4.71 सुपो धातुप्रातिपदिकयोः । ~ लुक्

ब्रह्म + निष्ठा 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य ।, after negating 8.2.8 न ङिसम्बुद्धोः ।

by (वा०) ङावुत्तरपदे प्रतिषेधो वक्तव्यः ।

ब्रह्मनिष्ठ 1.2.48 गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य । ~ ह्रस्वः

[LSK] राजानौ 1/2, 2/2 । राजानः 1/3 ।

राजन् + औ

राजान् + औ 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ । ~ नोपधायाः दीर्घः

[LSK] राज्ञः 2/3 ॥

राजन् + शस्

भ-संज्ञा 1.4.18 यच्चि भम् । ~ स्वादिषु असर्वनामस्थाने

राज् + अस् 6.4.134 अल्लोपोऽनः । ~ भस्य अङ्गस्य

राज् + अस् 8.4.40 स्तोः श्रुना श्रुः ।

## [नियमसूत्रम्] 8.2.2 नलोपः सुँप्-स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति । ~ असिद्धः

असिद्धत्व of नलोप is only when these four things follow, 1. सुप्-विधि, 2. स्वर-विधि, 3. संज्ञाविधि, 4. तुक्-विधि with following कृत्प्रयय.

नलोपः <sup>1/1</sup> सुँप्-स्वर-संज्ञा-तुक्-विधिषु <sup>7/3</sup> कृति <sup>7/1</sup> । ~ असिद्धः <sup>1/1</sup>

3 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- नलोपः 1/1 – नस्य लोपः नलोपः (6T)।, the elision of न् by 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य।
- सुँप्-स्वर-संज्ञा-तुक्-विधिषु 7/3 – सुँप् च स्वरः च संज्ञा च तुक् च सुँप्-स्वर-संज्ञा-तुक्ः (ID), तेषां विधयः सुँप्-स्वर-संज्ञा-तुक्-विधयः (6T), तेषु।; in विषयसप्तमी.

The four members of इतरेतरद्वन्द्वसमास are connected to विधि in शेषे षष्ठी, by कर्म-अविवक्षितत्वात्.

- कृति 7/1 – This word is connected only to तुक्-विधि; in परसप्तमी.
- असिद्धः 1/1 – That which does not exist. Since असिद्ध is already said, and again said with restricted condition, this sūtra is understood to be नियमसूत्र as सिद्धे सति आरभ्यमाणः नियमाय।

[LSK] सुप्-विधौ <sup>7/1</sup> स्वर-विधौ <sup>7/1</sup> संज्ञा-विधौ <sup>7/1</sup> कृति <sup>7/1</sup> तुक्-विधौ <sup>7/1</sup> च <sup>0</sup> नलोपः <sup>1/1</sup> असिद्धः <sup>1/1</sup> न <sup>0</sup> अन्यत्र <sup>0</sup> ।

नलोप is असिद्ध only with reference to 1. सुप्-विधि, 2. स्वर-विधि, 3. संज्ञाविधि, 4. तुक्-विधि with following कृत्प्रयय, not anywhere else.

[LSK] राजाश्वः <sup>1/1</sup> इत्यादौ <sup>7/1</sup> ।

राजन् + डस् + अश्व + सुँ 2.2.8 षष्ठी । ~ समासः तत्पुरुषः

प्रातिपदिक-संज्ञा 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

राजन् + अश्व 2.4.71 सुपो धातुप्रातिपदिकयोः । ~ लुक्

राज + अश्व 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य।

राजाश्व 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः । ~ एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

For 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः।, नलोप is not असिद्ध, because 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः। is not any of the four विधि listed in this नियमसूत्र.

[LSK] इति <sup>0</sup> असिद्धत्वात् <sup>5/1</sup> आत्वम् <sup>1/1</sup> एत्वम् <sup>1/1</sup> ऐस्त्वम् <sup>1/1</sup> च <sup>0</sup> न <sup>0</sup> ।

Because of असिद्धत्व of नलोप by this नियमसूत्र, आत्-आदेश by 7.3.102 सुपि च।, एत्-आदेश by 7.3.103 बहुवचने झल्येत्।, and ऐस्-आदेश by 7.1.9 अतो भिस ऐस्। do not take place.

[LSK] राजभ्याम्<sup>3/2</sup> ।

राजन् + भ्याम्

राज + भ्याम् 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य ।

For 7.3.102 सुपि च।, the नलोप is असिद्धवत्. Thus आत्त्व does not take place.

[LSK] राजभिः<sup>3/3</sup> ।

राजन् + भिस्

राज + भिस् 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य ।

For 7.1.9 अतो भिस ऐस्।, the नलोप is असिद्धवत्. Thus ऐस्त्व does not take place.

राजन् + भ्यस्

राज + भ्यस् 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य ।

For 7.3.103 बहुवचने झल्येत्।, the नलोप is असिद्धवत्. Thus एत्त्व does not take place.

[LSK] राज्ञि<sup>7/1</sup>, राजनि<sup>7/1</sup> ।

राजन् + ङिः

भ-संज्ञा 1.4.18 यच्चि भम् । ~ स्वादिषु असर्वनामस्थाने

राजन् + इ 6.4.136 विभाषा ङिश्योः। ~ अत् लोपः अनः भस्य

राज् + इ 8.4.40 स्तोः श्रुना श्रुः ।

राज्ञि

अत्-लोप-अभाव-पक्षे

राजनि

[LSK] राजसु<sup>7/3</sup> ॥

राजन् + सुप्

राज + सु 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य ।

7.3.103 बहुवचने झल्येत्।, the नलोप is असिद्धवत्. Thus एत्त्व does not take place.

राजसु

For 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः।, नलोप is सिद्ध.

अणिमन्, प्रेमन्, उक्षन्, तक्षन्, वृषन्, मूर्धन्, etc. decline in the same manner.

Declension of राजन् (न-पुं-1)

|   | एकवचनम्  | द्विवचनम्  | बहुवचनम्  |
|---|--|--|---|
| 1 | राजन् + सुँ<br>राजन् 6.1.68<br>राजान् 6.4.8<br>राजा 8.2.7                              | राजन् + औ<br>राजान् + औ 6.4.8<br>राजानौ  | राजन् + जस्<br>राजान् + अस् 6.4.8<br>राजानः 8.2.66, 8.3.15                          |
| 5 | राजन् + सुँ<br>राजन् 6.1.68<br>राजन् 8.2.8   | same as above  | same as above   |
| 2 | राजन् + अम्<br>राजान् + म् 6.4.8<br>राजानम्  | same as above  | राजन् + शस्<br>राजन् + अस् 6.4.134<br>राज् ज् + अस् 8.4.40<br>राज्ञः 8.2.66, 8.3.15 |
| 3 | राजन् + टा<br>राज् न् + आ 6.4.134<br>राज् ज् + आ 8.4.40<br>राज्ञा                      | राजन् + भ्याम्<br>राज् + भ्याम् 8.2.7<br>राज्भ्याम् 8.2.2                              | राजन् + भिस्<br>राज् + भिस् 8.2.7<br>राजभिः 8.2.2, 8.2.66,<br>8.3.15                |
| 4 | राजन् + डे<br>राज् न् + ए 6.4.134<br>राज् ज् + ए 8.4.40<br>राज्ञे                      | same as above  | राजन् + भ्यस्<br>राज् + भ्यस् 8.2.7<br>राज्भ्यः 8.2.2, 8.2.66,<br>8.3.15            |
| 5 | राजन् + डसिँ<br>राज् न् + अस् 6.4.134<br>राज् ज् + अस् 8.4.40<br>राज्ञः 8.2.66, 8.3.15 | same as above  | same as above   |
| 6 | same as above  | राजन् + ओस्<br>राज् न् + ओस् 6.4.134<br>राज् ज् + ओस् 8.4.40<br>राज्ञोः 8.2.66, 8.3.15 | राजन् + आम्<br>राज् न् + आम् 6.4.134<br>राज् ज् + आम् 8.4.40<br>राज्ञाम्            |
| 7 | राजन् + डि<br>राज् न् + ए 6.4.136 वा<br>राज् ज् + ए 8.4.40<br>राज्ञि<br>पक्षे राजनि    | same as above  | राजन् + सुप्<br>राज् + सु 8.2.7<br>राजसु 8.2.2                                      |

न-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (2) यज्वन्

यजँ देवपूजासङ्गतिकरणदानेषु (1U) to worship

यज् + ड्वर्निप् 3.2.103 सुयजोर्द्वर्निप् ।

यज् + वन् अनुबन्धलोपे

यज्वन् प्रातिपदिकसंज्ञा by 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च ।

[LSK] यज्वा<sup>1/1</sup> ।

यज्वन् + सुँ

यज्वन् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

यज्वान् 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ । ~ नोपधायाः दीर्घः

यज्वा 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य । ~ पदस्य

[LSK] राजानौ<sup>1/2, 2/2</sup> ।

राजन् + औ

राजान् + औ 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ । ~ नोपधायाः दीर्घः

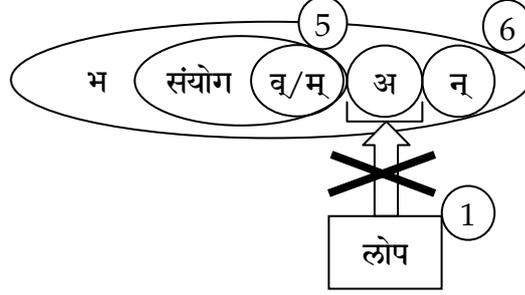
[LSK] राजानः<sup>1/3</sup> ॥

राजन् + जस्

राजान् + अस् 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ । ~ नोपधायाः दीर्घः

[निषेधसूत्रम्] 6.4.137 न संयोगाद्धमन्तात् । ~ अनः भस्य अङ्गस्य अत् लोपः

लोप of अ in अन् by 6.4.134 is prohibited when संयोग which ends with व/म् precedes.



न<sup>0</sup> संयोगात्<sup>5/1</sup> वमन्तात्<sup>5/1</sup> । ~ अनः<sup>6/1</sup> भस्य<sup>6/1</sup> अङ्गस्य<sup>6/1</sup> अत्<sup>6/1</sup> लोपः<sup>1/1</sup>

3 words in the सूत्र; 5 words as अनुवृत्ति

- न 0 – Negation to अत्-लोप.
- संयोगात् 5/1 – In पूर्वपञ्चमी.
- वमन्तात् 5/1 – वकारः च म् च वमौ (ID) । वमौ अन्तौ यस्य सः वमन्तः (116B), तस्मात् । This is adjective to संयोगात्.
- अत् 6/1 – Short अ; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- लोपः 1/1 – This is आदेश.
- अनः 6/1 – प्रातिपदिक is अनः; in सम्बन्धषष्ठी to अत्.
- भस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 6.4.129 भस्य।.
- अङ्गस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 6.4.1 अङ्गस्य।.

[LSK] वमन्त-संयोगात्<sup>5/1</sup> अनः<sup>6/1</sup> अकारस्य<sup>6/1</sup> लोपः<sup>1/1</sup> न<sup>0</sup>।

लोप does not happen for short अ belonging to अन् which is preceded by संयोग ending with व/म्.

[LSK] यज्वनः<sup>2/3</sup> । यज्वना<sup>3/1</sup> ।

यज्वन् + शस्

यज्वनः 6.4.134 अल्लोपोऽनः। ~ भस्य अङ्गस्य is negated by 6.4.137 न संयोगाद्धमन्तात् ।.

[LSK] यज्वभ्याम्<sup>3/2</sup> ।

यज्वन् + भ्याम्

यज्व + भ्याम् 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य । ~ पदस्य

## Declension of यज्वन् (न-पुं-2)

व्/म्-ending संयोग + अन्-ending पुल्लिङ्गशब्दः

|   | एकवचनम्   | द्विवचनम्  | बहुवचनम्  |
|---|---|--|---|
| 1 | यज्वन् + सुँ<br>यज्वन् 6.1.68<br>यज्वान् 6.4.8<br>यज्वा 8.2.7 | यज्वन् + औ<br>यज्वान् + औ 6.4.8<br>यज्वानौ                 | यज्वन् + जस्<br>यज्वान् + अस् 6.4.8<br>यज्वानः 8.2.66, 8.3.15             |
| 5 | यज्वन् + सुँ<br>यज्वन् 6.1.68<br>यज्वन् 8.2.8                 | same as above  | same as above   |
| 2 | यज्वन् + अम्<br>यज्वान् + म् 6.4.8<br>यज्वानम्                | same as above  | यज्वन् + शस्<br>राज्वनः 6.4.137, 8.2.66,<br>8.3.15                        |
| 3 | यज्वन् + टा<br>यज्वना 6.4.137                                 | यज्वन् + भ्याम्<br>यज्व + भ्याम् 8.2.7<br>यज्वभ्याम् 8.2.2 | यज्वन् + भिस्<br>यज्व + भिस् 8.2.7<br>यज्वभिः 8.2.2, 8.2.66,<br>8.3.15    |
| 4 | यज्वन् + डे<br>यज्वने 6.4.137                                 | same as above  | यज्वन् + भ्यस्<br>यज्व + भ्यस् 8.2.7<br>यज्वभ्यः 8.2.2, 8.2.66,<br>8.3.15 |
| 5 | यज्वन् + डसिँ<br>यज्वनः 6.4.137, 8.2.66,<br>8.3.15            | same as above  | same as above   |
| 6 | same as above   | यज्वन् + ओस्<br>यज्वनोः 6.4.137, 8.2.66,<br>8.3.15         | यज्वन् + आम्<br>यज्वनाम् 6.4.137  |
| 7 | यज्वन् + डि<br>यज्वनि 6.4.137                                 | same as above  | यज्वन् + सुप्<br>यज्व + सु 8.2.7<br>यज्वसु 8.2.2                          |

The difference from राजन् is in भ. अल्लोप is prohibited by 6.4.137 न संयोगाद्धमन्तात् ।

[LSK] ब्रह्मणः<sup>2/3</sup> । ब्रह्मणा<sup>3/3</sup> ॥

ब्रह्मन्, having म्-ending संयोग before अन्, declines in the same manner.

न-कारान्त-पुंलिङ्गः (3 #1) वृत्रहन्

वृत्रं हतवान् इति वृत्रहा । The one who killed a demon called वृत्र. इन्द्र.

हृन् हिंसगत्योः (2P) to kill

वृत्र + हन् + क्तिप् 3.2.79 ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु क्तिप् ।

वृत्र + हन् 6.1.66 वेरपृक्तस्य । ~ लोपः

वृत्रहन् प्रातिपदिकसंज्ञा by 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च ।

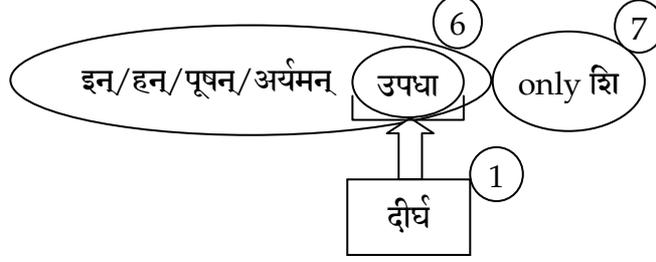
वृत्रहन् + सुँ

वृत्रहन् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्वपृक्तं हल् । ~ लोपः

Now, 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ । ~ नोपधायाः दीर्घः is प्राप्त, but अपवाद is coming next.

## [नियमसूत्रम्] 6.4.12 इन्हन्पूर्वार्थम्णां शौ । ~ उपधायाः दीर्घः अङ्गानाम्

For अङ्गs which are इन्-प्रत्यय-ending, हन्-शब्द-ending, पूषन्-शब्द-ending, and अर्थमन्-शब्द-ending, उपधादीर्घ takes place only when शि follows. When other प्रत्ययs follow, उपधादीर्घ does not take place.



इन्हन्पूर्वार्थम्णाम्<sup>6/3</sup> शौ<sup>7/1</sup> । ~ उपधायाः<sup>6/1</sup> दीर्घः<sup>1/1</sup> अङ्गानाम्<sup>6/3</sup>

2 words in the सूत्र; 3 words as अनुवृत्ति

- इन्हन्पूर्वार्थम्णाम् 6/3 – इतरेतरद्वन्द्व of इन, हन्, पूषन्, अर्थमन्; in सम्बन्धषष्ठी to उपधायाः.
- शौ 7/1 – प्रातिपदिक is शि, enjoined by 7.1.20 जश्शसोः शिः।; in परसप्तमी.
- उपधायाः 6/1 – From 6.4.7 नोपधायाः।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- दीर्घः 1/1 – From 6.3.111 द्रुलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः।; this is आदेश.
- अङ्गानाम् 6/3 – From 6.4.1 अङ्गस्य।; qualified by नः, this is in सम्बन्धे षष्ठी to उपधायाः.

[LSK] एषाम्<sup>6/3</sup> शौ<sup>7/1</sup> एव<sup>0</sup> उपधायाः<sup>6/1</sup> दीर्घः<sup>1/1</sup> न<sup>0</sup> अन्यत्र<sup>0</sup> ॥

For those four types of अङ्गs, दीर्घ takes place only when शि follows, not anything else.

Since शि is सर्वनामस्थान by 1.1.42 शि सर्वनामस्थानम्।, उपधा दीर्घ is सिद्ध by 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ।. This sūtra becomes redundant unless it is taken as नियमसूत्र, as सिद्धे सति आरभ्यमाणं नियमाय।. This sūtra is to restrict the application of उपधा दीर्घ.

वृत्रहन् + सुँ

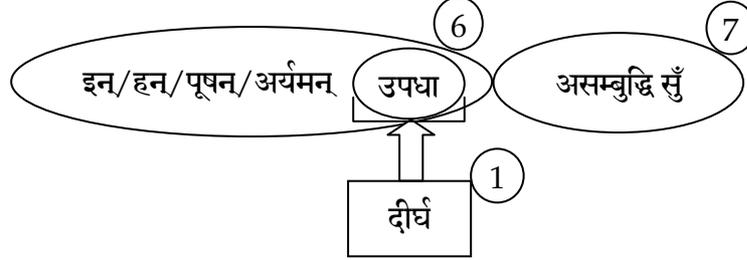
वृत्रहन् 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

Even though 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ । ~ नोपधायाः दीर्घः is applicable, since what is following हन्-ending अङ्ग is not शि, उपधा दीर्घ is restricted by 6.4.12 इन्हन्पूर्वार्थम्णां शौ ।.

However, there is one more sūtra related to this topic.

[विधिसूत्रम्] 6.4.13 सौ च । ~ असंबुद्धौ इन्हनूषार्यम्णाम् उपधायाः दीर्घः अङ्गानाम्

For अङ्गs which are इन्-प्रत्यय-ending, हन्-शब्द-ending, पूषन्-शब्द-ending, and अर्यमन्-शब्द-ending, उपधादीर्घ takes place when असम्बुद्धि सुँ follows.



सौ<sup>7/1</sup> च<sup>0</sup> । ~ असम्बुद्धौ<sup>7/1</sup> इन्हनूषार्यम्णाम्<sup>6/3</sup> उपधायाः<sup>6/1</sup> दीर्घः<sup>1/1</sup> अङ्गानाम्<sup>6/3</sup>

2 words in the सूत्र; 5 words as अनुवृत्ति

- सौ 7/1 – प्रातिपदिक is सुँ; in परसप्तमी.
- च 0 – Bringing the same topic of उपधादीर्घ.
- असम्बुद्धौ 7/1 – From 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ ।; in परसप्तमी.
- इन्हनूषार्यम्णाम् 6/3 – From the previous नियमसूत्र 6.4.12 इन्हनूषार्यम्णां शौ ।.
- उपधायाः 6/1 – From 6.4.7 नोपधायाः ।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- दीर्घः 1/1 – From 6.3.111 ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घाऽणः ।; this is आदेश.
- अङ्गानाम् 6/3 – From 6.4.1 अङ्गस्य ।; qualified by नः, this is in सम्बन्धे षष्ठी to उपधायाः.

[LSK] इन्-आदीनाम्<sup>6/3</sup> उपधायाः<sup>6/1</sup> दीर्घः<sup>1/1</sup> असम्बुद्धौ<sup>7/1</sup> सौ<sup>7/1</sup> ।

For इन्-ending, etc. अङ्गs, दीर्घ takes place when असम्बुद्धि सुँ follows.

[LSK] वृत्रहा<sup>1/1</sup> ।

वृत्रहन् + सुँ

वृत्रहन् 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

वृत्रहान् 6.4.13 सौ च । ~ असंबुद्धौ इन्हनूषार्यम्णाम् उपधायाः दीर्घः अङ्गानाम्

वृत्रहा 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य । ~ पदस्य

[LSK] हे वृत्रहन्<sup>S/1</sup> ॥

वृत्रहन् + सुँ

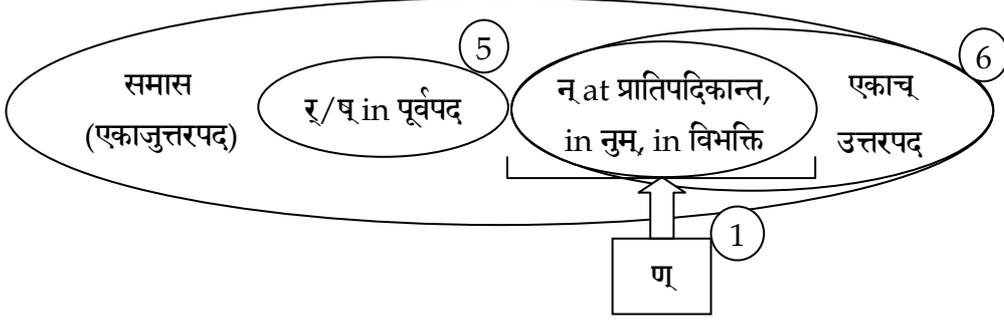
वृत्रहन् 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

6.4.13 सौ च । does not apply when सम्बुद्धि follows. By 8.2.8 न ङिसम्बुद्धोः ।, नलोप is negated for सम्बुद्धि.

[विधिसूत्रम्] 8.4.12 एकाजुत्तरपदे णः । ~ रषाभ्याम् नः णः पूर्वपदाभ्याम्

प्रातिपदिकान्तनुम्बिभक्तिषु

In समास in which उत्तरपद has only one अच्, न् which is found at the end of प्रातिपदिक, in नुम्, or in विभक्ति, is replaced by ण्, when र्/ष् is in the पूर्वपद.



एकाजुत्तरपदे<sup>7/1</sup> णः<sup>1/1</sup> । ~ रषाभ्याम्<sup>5/2</sup> नः<sup>6/1</sup> णः<sup>1/1</sup> पूर्वपदाभ्याम्<sup>5/2</sup> प्रातिपदिकान्तनुम्बिभक्तिषु<sup>7/3</sup>

2 words in the सूत्र; 5 words as अनुवृत्ति

- एकाजुत्तरपदे 7/1 – एकः अच् यस्मिन् तत् पदम् एकच् (117B)। एकाच् उत्तरपदं यस्य स एकाजुत्तरपदः (116B) समासः, तस्मिन् ।; in अधिकरणे सप्तमी for all other words.
- णः 1/1 – This is आदेश. Even though णः is already taught in 8.4.1 रषाभ्यां नो णः समानपदे।, णः is taught again here to withdraw from the optional status of ण्, which was taught in 8.4.10 वा भावकरणयोः।<sup>5</sup>
- रषाभ्याम् 5/2 – From 8.4.1 रषाभ्यां नो णः समानपदे।; in पूर्वपञ्चमी.
- नः 6/1 – From 8.4.1 रषाभ्यां नो णः समानपदे।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- णः 1/1 – From 8.4.1 रषाभ्यां नो णः समानपदे।; this is आदेश.
- पूर्वपदाभ्याम् 5/2 – From 8.4.3 पूर्वपदात् संज्ञायामगः।. पूर्व पदं ययोः पूर्वपदौ (116B) रषौ, ताभ्याम् ।; adjective to रषाभ्याम्.
- प्रातिपदिकान्तनुम्बिभक्तिषु 7/3 – From 8.4.11 प्रातिपदिकान्तनुम्बिभक्तिषु च ।; प्रातिपदिकस्य अन्तः प्रातिपदिकान्तः (6T), प्रातिपदिकान्तः च नुम् च विभक्तिः च प्रातिपदिकान्तनुम्बिभक्तयः (ID), तासु।; in अधिकरणे सप्तमी for नः.

<sup>5</sup>[K] णः इति वर्तमाने पुनः ण-ग्रहणम् विकल्प-अधिकार-निवृत्तेः विस्पष्टीकरणार्थम् ।

[LSK] एकाजुत्तरपदम्<sup>1/1</sup> यस्य<sup>6/1</sup> तस्मिन्<sup>7/1</sup> समासे<sup>7/1</sup> पूर्वपदस्थात्<sup>5/1</sup> निमित्तात्<sup>5/1</sup> परस्य<sup>6/1</sup> प्रातिपदिकान्त-नुम्-विभक्तिस्थस्य<sup>6/1</sup> नस्य<sup>6/1</sup> णः<sup>1/1</sup>।

ण् is the substitute in the place of न् which is found in प्रातिपदिक-अन्त, नुम्, or विभक्ति, when the निमित्त र्/ष् is found in पूर्वपद in समास whose उत्तरपद is एकच्.

In the case of वृत्रहन्, the न् is found at the end of प्रातिपदिक.

[LSK] वृत्रहणौ<sup>1/2</sup> ॥

वृत्रहन् + औ

वृत्रहण् + औ 8.4.12 एकाजुत्तरपदे णः । ~ रषाभ्याम् नः णः पूर्वपदाभ्याम् प्रातिपदिकान्तनुम्बिभक्तिषु

Example of न् found in नुम् – क्षीरप (क्षीरं पिबति) in neuter in 1/3 and 2/3:

क्षीरप + जस्

क्षीरप + शि 7.1.20 जश्शसोः शिः । ~ नपुंसकात्

क्षीरप न् + इ 7.1.72 नपुंसकस्य झलचः । ~ नुम्

क्षीरपा न् + इ 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ । ~ नोपधायाः दीर्घः

क्षीरपा ण् + इ 8.4.12 एकाजुत्तरपदे णः । ~ रषाभ्याम् नः णः पूर्वपदाभ्याम् प्रातिपदिकान्तनुम्बिभक्तिषु

क्षीरपाणि

Example of न् found in विभक्ति – क्षीरप (क्षीरं पिबति) in 3/1:

क्षीरप + टा

क्षीरप + इन 7.1.12 टाडसिँड्सामिनात्याः । ~ अतः अङ्गात्

क्षीरप + इण 8.4.12 एकाजुत्तरपदे णः । ~ रषाभ्याम् नः णः पूर्वपदाभ्याम् प्रातिपदिकान्तनुम्बिभक्तिषु

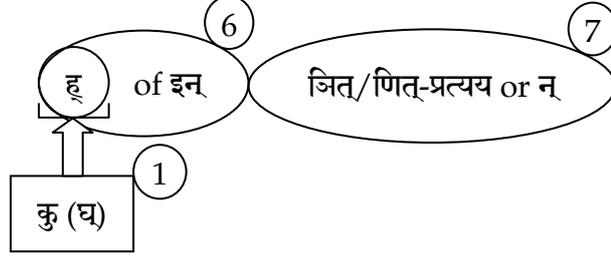
क्षीरपेण 6.1.87 आद्गुणः । ~ अचि संहितायाम्

वृत्रहन् + शस्

वृत्रह् न् + अस् 6.4.134 अल्लोपोऽनः ।

## [विधिसूत्रम्] 7.3.54 हो हन्तेर्जिण्नेषु । ~ अङ्गस्य कु

ह् of हन्-धातु is replaced by घ् (its कवर्ग) when जित्/णित्-प्रत्यय, or न् follows.



हः 6/1 हन्तेः 6/1 जिण्नेषु 7/3 । ~ अङ्गस्य 6/1 कु 1/1

3 words in the सूत्र; 2 words as अनुवृत्ति

- हः 6/1 – प्रातिपदिक is ह्; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- हन्तेः 6/1 – प्रातिपदिक is हन्ति; धातु हन् हिंसायाम् (2P) to kill with शितप् प्रत्यय by (वा०) इक्-शितपौ धातुनिर्देशे; in सम्बन्धे षष्ठी to हः.
- जिण्नेषु 7/1 – ज् च ण् च ज्णौ (ID), तौ इतौ ययोः तौ जिण्तौ (116B) प्रत्ययौ। जिण्तौ च नः च जिण्नाः (ID), तेषु; in परसप्तमी.
- अङ्गस्य 6/1 – From 6.4.1 अङ्गस्य।
- कु 1/1 – From 7.3.52 चजोः कु घिण्यतोः।; this is आदेश. By the help of 1.1.50 स्थानेऽन्तरतमः ।, the nearest of ह् out of five letters of कु is decided as घ्.

[LSK] जिति 7/1 णिति 7/1 प्रत्यये 7/1 नकारे 7/1 च<sup>0</sup> परे 7/1 हन्तेः 6/1 हकारस्य 6/1 कुत्वम् 1/1।

कवर्ग is the substitute in the place of ह् of हन्-धातु when जित्/णित्-प्रत्यय or a letter न् immediately follows.

[LSK] वृत्रघ्नः 2/3 इत्यादि 1/1।

वृत्रहन् + शस्

वृत्रह् न् + अस् 6.4.134 अल्लोपोऽनः ।

वृत्रघ् न् + अस् 7.3.54 हो हन्तेर्जिण्नेषु । ~ अङ्गस्य कु

वृत्रघ्नः 8.2.66, 8.3.15

Note that the उत्तरपद is not एकाच् here, thus णत्व does not take place.

Declension of वृत्रहन् (न-पुं-3 #1)

हन्-धातु-ending पुल्लिङ्गशब्दः

|   | एकवचनम्   | द्विवचनम्  | बहुवचनम्  |
|---|---|--|---|
| 1 | वृत्रहन् + सुँ<br>वृत्रहन् 6.1.68<br>वृत्रहान् 6.4.13<br>वृत्रहा 8.2.7                  | वृत्रहन् + औ<br>वृत्रहणौ 8.4.12  | वृत्रहन् + जस्<br>वृत्रहणः 8.4.12,<br>8.2.66, 8.3.15                            |
| 5 | वृत्रहन् + सुँ<br>वृत्रहन् 6.1.68<br>वृत्रहन् 8.2.8                                     | same as above  | same as above   |
| 2 | वृत्रहन् + अम्<br>वृत्रहणम् 8.4.12  | same as above  | वृत्रहन् + शस्<br>वृत्रह् न् + आ 6.4.134<br>वृत्रघ्नः 7.3.54, 8.2.66,<br>8.3.15 |
| 3 | वृत्रहन् + टा<br>वृत्रह् न् + आ 6.4.134<br>वृत्रघ्ना 7.3.54                             | वृत्रहन् + भ्याम्<br>वृत्रह् + भ्याम् 8.2.7<br>वृत्रहभ्याम् 8.2.2                  | वृत्रहन् + भिस्<br>वृत्रह् + भिस् 8.2.7<br>वृत्रहभिः 8.2.2, 8.2.66, 8.3.15      |
| 4 | वृत्रहन् + डे<br>वृत्रह् न् + ए 6.4.134<br>वृत्रघ्ने 7.3.54                             | same as above  | वृत्रहन् + भ्यस्<br>वृत्रह् + भ्यस् 8.2.7<br>वृत्रहभ्यः 8.2.2, 8.2.66, 8.3.15   |
| 5 | वृत्रहन् + ङसिँ<br>वृत्रह् न् + अस् 6.4.134<br>वृत्रघ्नः 7.3.54, 8.2.66,<br>8.3.15      | same as above  | same as above   |
| 6 | same as above   | वृत्रहन् + ओस्<br>वृत्रह् न् + ओस् 6.4.134<br>वृत्रघ्नोः 7.3.54,<br>8.2.66, 8.3.15 | वृत्रहन् + आम्<br>वृत्रह् न् + आम् 6.4.134<br>वृत्रघ्न्याम् 7.3.54              |
| 7 | वृत्रहन् + ङि<br>वृत्रह् न् + आम् 6.4.136<br>वृत्रघ्नि 7.3.54<br>पक्षे वृत्रहनि 6.4.136 | same as above  | वृत्रहन् + सुप्<br>वृत्रह् + सु 8.2.7<br>वृत्रहसु 8.2.2                         |

When सर्वनामस्थान follows, only for असम्बुद्धि सुँ, उपधादीर्घ takes palce by नियमसूत्र 6.4.13 सौ च।.

In भ, after अल्लोप, there is कुत्व by 7.3.54 हो हन्तेर्जिर्णेषु । ~ अङ्गस्य कृ.

The rest is like राजन्.

[LSK] एवम् शार्ङ्गिन्, यशस्विन्, अर्यमन्, पूषन् ॥

These words mentioned by 6.4.12 इन्हन्पूर्धार्यम्गां शौ । decline in the same manner.

1. इन्-ending: शार्ङ्गिन्

शार्ङ्ग + इनिँ 5.2.115 अत इनिठनौ । ~ तत् अस्य अस्मिन् अस्ति इति

यशस्विन्

यशस् + विनिँ 5.2.121 अस्माआमेधास्त्रगो विनिः । ~ तत् अस्य अस्मिन् अस्ति इति

2. हन्- ending: वृत्रहन्

3. अर्यमन्

4. पूषन्

The only difference between हन्-ending and the rest is the कुत्व in भ. Other than भ, the declension is the same.

Note:

In शार्ङ्गिन्, इन् is considered to be सार्थक, a meaningful unit of letters, while in यशस्विन्, इन्, a part of विन्-प्रत्यय is considered to be अनर्थक, not a meaningful unit of letters, as per the statement “समुदायो ह्यर्थवान् तस्य एकदेशः अनर्थकः ।”, a part of a meaningful group of letters is called अनर्थक.

However, by परिभाषा (16) “अन्-इन्-अस्-मन्-ग्रहणानि अर्थवता च अनर्थकेन च तदन्तविधिं प्रयोजयन्ति।”, mentioning of अन्, इन्, अस्, and मन् can be taken as both सार्थक and अनर्थक, with reference to तदन्तविधि, यशस्विन् is also considered to be इन्-ending here.

Examples are:

[B] राज्ञः इति अत्र अन् अर्थवान्, दाम्नः इति अनर्थकः ।

अल्लोप for अन्-ending word is taught by 6.4.134 अल्लोपोऽनः । This is applicable for both राजन् (राज् + अन्) and दामन् (अव्युत्पन्न).

[B] सुपया इति अत्र अस् अर्थवान्, सुस्रोता इति अनर्थकः ।

दीर्घ for अस्-ending word is taught by 6.4.10 सान्तमहतः संयोगस्य । This is applicable for both पयस् (पा + असुन्) and स्रोतस् (अव्युत्पन्न).

[B] सुशर्मा इति अत्र मन् अर्थवान्, सुप्रथिमा इति अनर्थकः ।

मन्-ending words decline in the same manner.

[B] “4.1.11 मनः । ~ न डीप्” इति न हीप् ।

### न-कारान्त-पुंलिङ्गः (3 #2) शार्ङ्गिन्

शार्ङ्गम् अस्य अस्ति इति शार्ङ्गी। one who has शार्ङ्ग, शृङ्गनिर्मितधनुस्, a bow made of horn, is called शार्ङ्गिन्.

शार्ङ्ग + इनिँ 5.2.115 अत इनिँ-ठनौ ।

शार्ङ्ग + इन् 6.4.148 यस्येति च । ~ लोपः भस्य

शार्ङ्गिन् प्रातिपदिकसंज्ञा by 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च ।

When असम्बुद्धि सुँ follows, 6.4.13 सौ च । ~ इन्हन्पूर्षार्यम्णाम् नोपधायाः दीर्घः is applied. Because of this नियम, there is no नोपधादीर्घ when सर्वनामस्थान other than असम्बुद्धि सुँ.

### Declension of शार्ङ्गिन् (न-पुं-4 #1)

|   | एकवचनम्           | द्विवचनम्            | बहुवचनम्           |
|---|-------------------|----------------------|--------------------|
| 1 | शार्ङ्गी 6.4.13   | शार्ङ्गिणौ 8.4.2     | शार्ङ्गिणः 8.4.2   |
| 5 | हे शार्ङ्गिन्     | same as above        | same as above      |
| 2 | शार्ङ्गिणम् 8.4.2 | same as above        | same as above      |
| 3 | शार्ङ्गिणा 8.4.2  | शार्ङ्गिभ्याम् 8.2.7 | शार्ङ्गिभिः 8.2.7  |
| 4 | शार्ङ्गिणे 8.4.2  | same as above        | शार्ङ्गिभ्यः 8.2.7 |
| 5 | शार्ङ्गिणः 8.4.2  | same as above        | same as above      |
| 6 | same as above     | शार्ङ्गिणोः 8.4.2    | शार्ङ्गिणाम् 8.4.2 |
| 7 | शार्ङ्गिणि 8.4.2  | same as above        | शार्ङ्गिषु 8.2.7   |

Unlike वृत्रहन्, there is no special modification in भ.

The rest declines like वृत्रहन्.

यशस्विन्, पूषन्, and अर्यमन् decline in the same manner as शार्ङ्गिन्

न-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (3 #3) पूषन्

पुष्पाति इति पूषा । The lord Sun. One who nourishes.

पुषँ पुष्टौ (9P) to nourish + कर्त्तिन् (उ.)

पूषन् निपातनम्

प्रातिपदिकसंज्ञा by 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च ।

## Declension of पूषन् (न-पुँ-3 #3)

|   | एकवचनम्                         | द्विवचनम्              | बहुवचनम्                |
|---|---------------------------------|------------------------|-------------------------|
| 1 | पूषा 6.4.13                     | पूषणौ 8.4.12           | पूषणः 8.4.12            |
| 5 | हे पूषन्                        | same as above          | same as above           |
| 2 | पूषणम् 8.4.12                   | same as above          | पूषणः 6.4.134, 8.4.1    |
| 3 | पूष्णा 6.4.134, 8.4.1           | पूषभ्याम् 8.2.7        | पूषभिः 8.2.7            |
| 4 | पूष्णे 6.4.134, 8.4.1           | same as above          | पूषभ्यः 8.2.7           |
| 5 | पूष्णः 6.4.134, 8.4.1           | same as above          | same as above           |
| 6 | same as above                   | पूष्णोः 6.4.134, 8.4.1 | पूष्णाम् 6.4.134, 8.4.1 |
| 7 | पूष्णि/पूष्णि<br>6.4.134, 8.4.1 | same as above          | पूषसु 8.2.7             |

न-कारान्त-पुंलिङ्गः (3 #4) अर्यमन्

अर्यं श्रेष्ठं मिमीते । The lord Sun. One who measures well.

अर्य + माङ् माने (3A) to measure + कर्त्तिन्

अर्यमन् निपातनम्

प्रातिपदिकसंज्ञा by 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च ।

Declension of अर्यमन् (न-पुं-3 #3)

|   | एकवचनम्                            | द्विवचनम्                | बहुवचनम्                   |
|---|------------------------------------|--------------------------|----------------------------|
| 1 | अर्यमा 6.4.13                      | अर्यमणौ 8.4.12           | अर्यमणः 8.4.12             |
| 5 | हे अर्यमन्                         | same as above            | same as above              |
| 2 | अर्यमणम् 8.4.12                    | same as above            | अर्यम्यः 6.4.134, 8.4.12   |
| 3 | अर्यम्या 6.4.134, 8.4.12           | अर्यमभ्याम् 8.2.7        | अर्यमभिः 8.2.7             |
| 4 | अर्यम्यो 6.4.134, 8.4.12           | same as above            | अर्यमभ्यः 8.2.7            |
| 5 | अर्यम्यः 6.4.134, 8.4.12           | same as above            | same as above              |
| 6 | same as above                      | अर्यम्यः 6.4.134, 8.4.12 | अर्यम्याम् 6.4.134, 8.4.12 |
| 7 | अर्यमिण/अर्यमणि<br>6.4.136, 8.4.12 | same as above            | अर्यमसु 8.2.7              |

If अर्यमन् is taken as अव्युत्पन्न, not derived word, णत्व is by 8.4.2.

न-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (4) मघवन्

मघवन्, इन्द्र, is an उणादिप्रत्यय-ending word, formed without grammatical explanation.

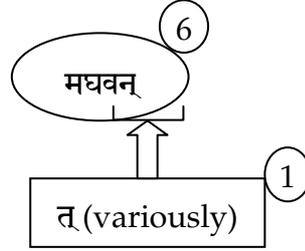
महँ पूजायाम् (1P) to worship

मह् + कनिँन् (उ०) 1.159 श्वन्...मघवन् इति।

मघवन् निपात्यते

[विधिसूत्रम्] 6.4.128 मघवा बहुलम् । ~ तँ

Optionally, the last letter of मघवन् is replaced by त्.



मघवा<sup>1/1</sup> बहुलम्<sup>1/1</sup> । ~ तँ<sup>1/1</sup>

2 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- मघवा 1/1 – प्रातिपदिक is मघवन्; in षष्ठ्यर्थे प्रथमा. It was meant in स्थानेयोगा षष्ठी.
- बहुलम् 1/1 – Variously, optionally.
- तँ 1/1 – From 6.4.128 अर्वणस्त्रसावनजः।; this is आदेश. ऋँ is इत्.

[LSK] मघवन्-शब्दस्य<sup>6/1</sup> वा<sup>0</sup> तँ<sup>1/1</sup> इति<sup>0</sup> अन्त-आदेशः<sup>1/1</sup> ।

For इन्-ending, etc. अङ्गस, दीर्घ takes place when असम्बुद्धि सुँ follows.

[LSK] ऋँ<sup>1/1</sup> इत्<sup>1/1</sup> ॥

Being अनुनासिक, ऋँ is इत्.

Because this sūtra does not have any निमित्त, तँ-आदेश can come before suffixing सुप्-प्रयय.

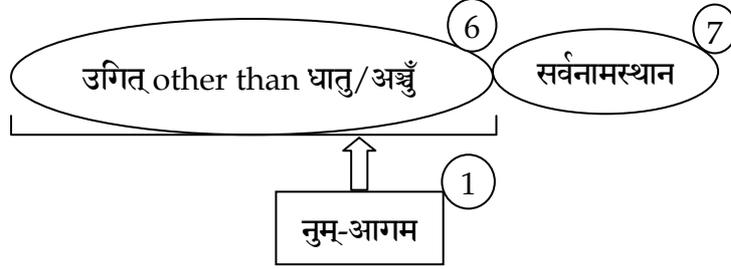
First, declension of मघवन् with तँ-आदेश is studied.

मघवतँ 6.4.128 मघवा बहुलम् । ~ तँ

मघवतँ + सुँ

[विधिसूत्रम्] 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः । ~ नुम्

नुम्-आगम is attached to non-धातु उगित् word or अञ्चु-धातु whose न is elided, when सर्वनामस्थान follows.



उगिदचाम्<sup>6/3</sup> सर्वनामस्थाने<sup>7/1</sup> अधातोः<sup>6/1</sup> । ~ नुम्<sup>1/1</sup>

3 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- उगिदचाम्<sup>6/3</sup> – उक् इत् येषां ते उगितः (116B), those of whom इत् is उँ, ऋँ, ऌँ । उगितः च अच् च उगितचः (ID), तेषाम्!; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- सर्वनामस्थाने<sup>7/1</sup> – In परसप्तमी.
- अधातोः<sup>6/1</sup> – This is adjective to उगित्.
- नुम्<sup>1/1</sup> – This is आगम. Being मित्, परिभाषासूत्र 1.1.47 मिदचोऽन्त्यात्परः! is used.

[LSK] अधातोः<sup>6/1</sup> उगितः<sup>6/1</sup> न-लोपिनः<sup>6/1</sup> अञ्चतेः<sup>6/1</sup> च<sup>0</sup> नुम्<sup>1/1</sup> स्यात्<sup>III/1</sup> सर्वनामस्थाने<sup>7/1</sup> परे<sup>7/1</sup> ।

नुम् is the augment for उगित् other than धातु and अञ्चु-धातु without elision of न, when followed by सर्वनामस्थान.

[LSK] मघवान्<sup>1/1</sup> ।

मघवतुँ 6.4.128 मघवा बहुलम् । ~ तुँ

मघवतुँ + सुँ 4.1.2 स्वौजसमौड्ढस्ठाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् । ~ ङ्याप्रातिपदिकात्

मघवन्त् + स् 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः ।

मघवन्त् 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

मघवन् 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः । ~ पदस्य

मघवान् 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ । ~ दीर्घः

Here, असिद्धत्व of 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः । is dismissed by बहुलत्व of 6.4.128 मघवा बहुलम् ।.

[LSK] मघवन्तौ<sup>1/2</sup> । मघवन्तः<sup>1/3</sup> ।

मघवतुँ + औ 4.1.2 स्वौजसमौड्ढस्ठाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् । ~ ङ्याप्रातिपदिकात्

मघवन्त् + औ 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः ।, 8.2.24 नश्चापदन्तस्य झलि ।, 8.4.58 परसवर्णः ।

[LSK] हे मघवन्<sup>S/1</sup> ।

मघवतुँ + सुँ

मघवन्त् + स् 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः ।

मघवन्त् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

मघवन् 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः । ~ पदस्य

[LSK] मघवञ्चाम्<sup>3/2</sup> ।

मघवतुँ + भ्याम्

मघवद् + भ्याम् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।

### Declension of मघवन् (न-पुं-4 #1)

#### तुँ-आदेश-पक्षे

|   | एकवचनम्  | द्विवचनम्                             | बहुवचनम्   |
|---|--|---------------------------------------|--|
| 1 | मघवतुँ + सुँ<br>मघवन्त् + स् 7.1.70<br>मघवन्त् 6.1.68<br>मघवान्त् 6.4.8<br>मघवान् 8.2.23 | मघवतुँ + औ<br>मघवन्तौ 7.1.70          | मघवतुँ + जस्<br>मघवन्तः 7.1.70, 8.2.66,<br>8.3.15    |
| 5 | मघवतुँ + सुँ<br>मघवन्त् + स् 7.1.70<br>मघवन्त् 6.1.68<br>मघवन् 8.2.23                    | same as above                         | same as above  |
| 2 | मघवतुँ + अम्<br>मघवन्तम् 7.1.70  | same as above                         | मघवतुँ + शस्<br>मघवतः 8.2.66, 8.3.15                 |
| 3 | मघवतुँ + टा<br>मघवता   | मघवतुँ + भ्याम्<br>मघवद्भ्याम् 8.2.39 | मघवतुँ + भिस्<br>मघवद्भिः 8.2.39, 8.2.66, 8.3.15     |
| 4 | मघवतुँ + डे<br>मघवते   | same as above                         | मघवतुँ + भ्यस्<br>मघवद्भ्यः 8.2.39, 8.2.66, 8.3.15   |
| 5 | मघवतुँ + डसिँ<br>मघवतः 8.2.66, 8.3.15  | same as above                         | same as above  |
| 6 | same as above  | मघवतुँ + ओस्<br>मघवतोः 8.2.66, 8.3.15 | मघवतुँ + आम्<br>मघवताम्                              |
| 7 | मघवतुँ + डि<br>मघवति   | same as above                         | मघवतुँ + सुप्<br>मघवद् + सु 8.2.39<br>मघवत्सु 8.4.55 |

[LSK] तुँत्व-अभावे मघवा<sup>1/1</sup> ।

When तुँ-आदेश does not take place, -

मघवन् + सुँ

मघवन् 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

मघवान् 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ । ~ दीर्घः

मघवा 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य । ~ पदस्य

[LSK] सुँटि<sup>7/1</sup> राजवत्<sup>0</sup> ॥

In सर्वनामस्थान, मघवन् declines like राजन्-शब्द.

In भ, the next sūtra is required.

### Declension of मघवन् (न-पुं-4 #2)

#### तुँ-अभाव-पक्षे

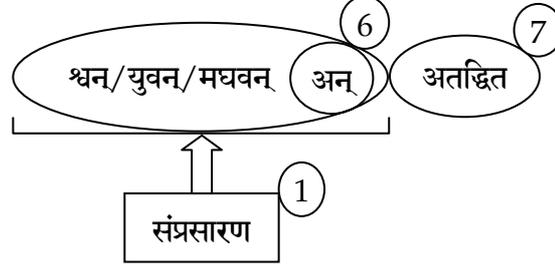
|   | एकवचनम्               | द्विवचनम्              | बहुवचनम्  |
|---|-----------------------|------------------------|---|
| 1 | मघवा                  | मघवानौ                 | मघवानः  |
| S | मघवन्                 | same as above          | same as above   |
| 2 | मघवानम्               | same as above          | मघवन् + शस्<br>मघ उ अन् + अस् 6.4.133<br>मघ उन् + अस् 6.1.108<br>मघोन् + अस् 6.1.87<br>मघोनः 8.2.66, 8.3.15 |
| 3 | मघवन् + टा<br>मघोना   | मघवभ्याम्              | मघवभिः  |
| 4 | मघवन् + डे<br>मघोने   | same as above          | मघवभ्यः   |
| 5 | मघवन् + ङसिँ<br>मघोनः | same as above          | same as above   |
| 6 | same as above         | मघवन् + ङसिँ<br>मघोनोः | मघवन् + आम्<br>मघोनाम्  |
| 7 | मघवन् + ङसिँ<br>मघोनि | same as above          | मघवसु   |

In भ, सम्प्रसारण by 6.4.133 श्रयुवमघोनामतद्धिते । ~ अनाम् भानाम् सम्प्रसारणम्

The rest declines like राजन्

## [विधिसूत्रम्] 6.4.133 श्वयुवमघोनामतद्धिते । ~ अनाम् भानाम् सम्प्रसारणम्

सम्प्रसारण takes place for अन्-ending भ-संज्ञक श्वन्, युवन्, and मघवन् when प्रत्यय other than तद्धित follows.



श्व-युव-मघोनाम्<sup>6/3</sup> अतद्धिते<sup>7/1</sup> । ~ अनाम्<sup>6/3</sup> भानाम्<sup>6/3</sup> संप्रसारणम्<sup>1/1</sup>

2 words in the सूत्र; 3 words as अनुवृत्ति

- श्व-युव-मघोनाम्<sup>6/3</sup> – श्वा च युवा च मघवा च श्वयुवमघवानः (ID), तेषाम्।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- अतद्धिते<sup>7/1</sup> – न तद्धितः इति अतद्धितः (NT), तस्मिन् ।; in परसप्तमी.
- अनाम्<sup>6/3</sup> – From 6.4.134 अल्लोपोऽनः ।; by प्रतिलोमगति (going contrary direction); with वचनविपरिणाम to match with श्व-युव-मघोनाम्; this is adjective to श्व-युव-मघोनाम्, and with तदन्तविधि, it results in “अन्-अन्त-श्व-युव-मघोनाम्”.
- भानाम्<sup>6/3</sup> – From अधिकारसूत्र 6.4.129 भस्य ।; with वचनविपरिणाम to match with श्व-युव-मघोनाम्; this is adjective to श्व-युव-मघोनाम्.
- संप्रसारणम्<sup>1/1</sup> – From 6.4.131 वसोः संप्रसारणम्।; this is आदेश.

[LSK] अन्-अन्तानाम्<sup>6/3</sup> भानाम्<sup>6/3</sup> एषाम्<sup>6/3</sup> अतद्धिते<sup>7/1</sup> सम्प्रसारणम्<sup>1/1</sup>।

सम्प्रसारण is the substitute for अन्-ending भ-संज्ञक श्वन्, युवन्, and मघवन् when प्रत्यय other than तद्धित follows.

[LSK] मघोनः<sup>2/3</sup>।

मघवन् + शस्

मघ उ अन् + अस् 6.4.133 श्वयुवमघोनामतद्धिते । ~ अनाम् भानाम् सम्प्रसारणम्

मघ उन् + अस् 6.1.108 सम्प्रसारणाच्च । ~ पूर्वरूपम् पूर्वपरयोः एकः संहितायाम्

मघोन् + अस् 6.1.87 आद्गुणः । ~ अचि पूर्वपरयोः एकः संहितायाम्

मघोनः 8.2.66, 8.3.15

[LSK] मघवभ्याम्<sup>3/2</sup>।

मघवन् + भ्याम्

मघव + भ्याम् 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य ।

[LSK] एवम्<sup>0</sup> श्वन्, युवन् ॥

In the same manner, श्वन् (dog) and युवन् (young), the other members of the समास told in 6.4.133 श्वयुवमघोनामतद्धिते ।

श्वन् + सुँ<sup>1/1</sup>

श्वन् 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

श्वान् 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ । ~ दीर्घः

श्वा 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य । ~ पदस्य

श्वन् + सुँ<sup>S/1</sup>

श्वन् 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

8.2.8 न ङिसम्बुद्धोः । ~ नलोपः

श्वन् + शस्<sup>2/3</sup>

श् उ अन् + अस् 6.4.133 श्वयुवमघोनामतद्धिते । ~ अनाम् भानाम् सम्प्रसारणम्

श् उन् + अस् 6.1.108 सम्प्रसारणाच्च । ~ पूर्वरूपम् पूर्वपरयोः एकः संहितायाम्

श्वः 8.2.66, 8.3.15

श्वन् + भ्याम्<sup>3/2</sup>

श्व + भ्याम् 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य । ~ पदस्य

### Declension of श्वन्

|   | एकवचनम्       | द्विवचनम्     | बहुवचनम्      |
|---|---------------|---------------|---------------|
| 1 | श्वा          | श्वानौ        | स्वानः        |
| 5 | श्वन्         | same as above | same as above |
| 2 | श्वानम्       | same as above | श्वुनः        |
| 3 | श्वाना        | श्वभ्याम्     | श्वभिः        |
| 4 | श्वाने        | same as above | श्वभ्यः       |
| 5 | श्वुनः        | same as above | same as above |
| 6 | same as above | श्वानोः       | श्वानाम्      |
| 7 | श्वानि        | same as above | श्वसु         |

The entire declension is like मघवन् without तृ-आदेश.

न-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (5) युवन्

The declension of युवन् is just like मघवन् without तुँ-आदेश, and श्वन्.

The only difference is that युवन् has more than one यण, which calls for another sūtra.

युवन् + सुँ<sup>1/1</sup>

युवन् 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

युवान् 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ । ~ दीर्घः

युवा 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य । ~ पदस्य

In भ, सम्प्रसारण is to take place by 6.4.133 श्वयुवमघोनामतद्धिते । ~ भस्य.

युवन् + शस्<sup>2/3</sup>

यु उ अन् + अस् 6.4.133 श्वयुवमघोनामतद्धिते । ~ अनाम् भानाम् सम्प्रसारणम्

यु उन् + अस् 6.1.108 सम्प्रसारणाच्च । ~ पूर्वरूपम् पूर्वपरयोः एकः संहितायाम्

यून् + अस् 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः । ~ पूर्वपरयोः एकः संहितायाम्

Now, 6.4.133 श्वयुवमघोनामतद्धिते । ~ अनाम् भानाम् सम्प्रसारणम् is again applicable to the य्.

The next sūtra debars this.

The next sūtra also indicates why the व्, the last यण् in the अङ्ग was replaced by सम्प्रसारण, not the य् before that.

## [निषेधसूत्रम्] 6.1.37 न सम्प्रसारणे सम्प्रसारणम् ।

When followed by सम्प्रसारण, another सम्प्रसारण does not take place to preceding यण्.

न<sup>0</sup> सम्प्रसारणे<sup>7/1</sup> सम्प्रसारणम्<sup>1/1</sup> ।

3 words in the सूत्र, no अनुवृत्ति is required.

- न<sup>0</sup> – This is to stop सम्प्रसारण.
- सम्प्रसारणे<sup>7/1</sup> – in परसप्तमी.
- सम्प्रसारणम्<sup>1/1</sup> – This is आदेश to be stopped.

[LSK] सम्प्रसारणे<sup>7/1</sup> परतः<sup>0</sup> पूर्वस्य<sup>6/1</sup> यणः<sup>6/1</sup> सम्प्रसारणम्<sup>1/1</sup> न<sup>0</sup> स्यात्<sup>III/1</sup> ।

There is no सम्प्रसारण for यण् which precedes, when another सम्प्रसारण follows.

[LSK] इति यकारस्य<sup>6/1</sup> न<sup>0</sup> इत्वम्<sup>1/1</sup> ।

Thus the य् (at the beginning of युवन्) does not become इ (सम्प्रसारण).

[LSK] अतः<sup>0</sup> एव<sup>0</sup> ज्ञापकात्<sup>5/1</sup> अन्त्यस्य<sup>7/1</sup> यणः<sup>6/1</sup> पूर्वम्<sup>0</sup> सम्प्रसारणम्<sup>1/1</sup> ।

From this ज्ञापक alone, the last यण् takes सम्प्रसारण first.

[LSK] यूनः<sup>2/3</sup> ।

युवन् + शस्<sup>2/3</sup>

यु उ अन् + अस् 6.4.133 श्वयुवमघोनामतद्धिते । ~ अनाम् भानाम् सम्प्रसारणम्

यु उन् + अस् 6.1.108 सम्प्रसारणाच्च । ~ पूर्वरूपम् पूर्वपरयोः एकः संहितायाम्

यून + अस् 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः । ~ पूर्वपरयोः एकः संहितायाम्

सम्प्रसारण for the second time is debarred by 6.1.36 न सम्प्रसारणे सम्प्रसारणम् ।

[LSK] यूना<sup>3/1</sup> । युवभ्याम्<sup>3/1</sup> इत्यादि<sup>1/1</sup> ॥

In the same manner, सम्प्रसारण takes place in भ. In पदसंज्ञक अङ्ग 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य। takes place.

## Declension of युवन् (न-पुं-5)

There are more than one यण् in अङ्ग

|   | एकवचनम्              | द्विवचनम्             | बहुवचनम्   |
|---|----------------------|-----------------------|--|
| 1 | युवा                 | युवानौ                | युवानः   |
| 5 | युवन्                | same as above         | same as above  |
| 2 | युवानम्              | same as above         | युवन् + शस्<br>यु उ अन् + अस् 6.4.133<br>यु उन् + अस् 6.1.108<br>यून् + अस् 6.1.37, 6.1.101<br>यूनः 8.2.66, 8.3.15 |
| 3 | युवन् + टा<br>यूना   | युवभ्याम्             | युवभिः   |
| 4 | युवन् + डे<br>यूने   | same as above         | युवभ्यः  |
| 5 | युवन् + ङसिँ<br>यूनः | same as above         | same as above  |
| 6 | same as above        | युवन् + ङसिँ<br>यूनोः | युवन् + आम्<br>यूनाम्  |
| 7 | युवन् + ङसिँ<br>यूनि | same as above         | युवसु  |

In भ, सम्प्रसारण by 6.4.133 श्वयुवमघोनामतद्धिते । ~ अनाम् भानाम् सम्प्रसारणम्

The rest declines like राजन्

न-कारान्त-पुंलिङ्गः (6) अर्वन्

[LSK] अर्वा<sup>1/1</sup> ।

अर्वन् + सुँ

अर्वन् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्वपृक्तं हल् । ~ लोपः

अर्वान् 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ । ~ दीर्घः

अर्वा 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य । ~ पदस्य

[LSK] हे<sup>0</sup> अर्वन्<sup>1/1</sup> ॥

अर्वन् + सुँ

अर्वन् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्वपृक्तं हल् । ~ लोपः

अर्वा 8.2.8 न ङिसम्बुद्धोः । ~ नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य

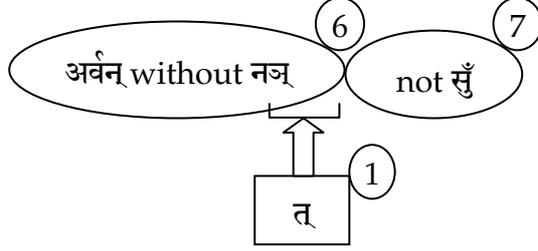
Declension of अर्वन् (न-पुं-6)

|   | एकवचनम्                   | द्विवचनम्                    | बहुवचनम्                         |
|---|---------------------------|------------------------------|----------------------------------|
| 1 | अर्वा                     | अर्वन्तौ 6.4.127, 7.1.70     | अर्वन्तः 6.4.127, 7.1.70         |
| 5 | अर्वन्                    | same as above                | same as above                    |
| 2 | अर्वन्तम् 6.4.127, 7.1.70 | same as above                | अर्वतः 6.4.127                   |
| 3 | अर्वता 6.4.127            | अर्वद्भ्याम् 6.4.127, 8.2.39 | अर्वद्भिः 6.4.127, 8.2.39        |
| 4 | अर्वते 6.4.127            | same as above                | अर्वद्भ्यः 6.4.127, 8.2.39       |
| 5 | अर्वतः 6.4.127            | same as above                | same as above                    |
| 6 | same as above             | अर्वतोः 6.4.127              | अर्वताम् 6.4.127                 |
| 7 | अर्वति 6.4.127            | same as above                | अर्वत्सु 6.4.127, 8.2.39, 8.4.55 |

Everywhere other than सुँ, तँ is अन्तादेशः.

## [विधिसूत्रम्] 6.4.127 अर्वणरुनसावनजः । ~ अङ्गस्य

अर्वन् without नञ् becomes त्वँ-ending when it is not followed by सुँ.



अवर्णः 6/1 त्वँ<sup>1/1</sup> असौ<sup>7/1</sup> अनजः 6/1 । ~ अङ्गस्य 6/1

4 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- अवर्णः 6/1 – प्रातिपदिक is अर्वन्; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- त्वँ 1/1 – This is आदेश. ऋँ is इत्.
- असौ 7/1 – न सुँ इति असुँ (NT), तस्मिन् ।; in परसप्तमी.
- अनजः 6/1 – न नञ् इति अनञ् (NT), तस्य ।; adjective to अवर्णः.
- अङ्गस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 6.4.1 अङ्गस्य।.

[LSK] नजा<sup>3/1</sup> रहितस्य<sup>6/1</sup> “अर्वन्” इति<sup>0</sup> अस्य<sup>6/1</sup> अङ्गस्य<sup>6/1</sup> त्वँ<sup>1/1</sup> इति<sup>0</sup> अन्त-आदेशः<sup>1/1</sup>, न<sup>0</sup> तु<sup>0</sup> सौ<sup>7/1</sup> ।

त्वँ is the substitute in the place of the last letter of अङ्ग अर्वन् without नञ्, but not when followed by सुँ.

[LSK] अर्वन्तौ<sup>1/2</sup> अर्वन्तः<sup>1/3</sup>।

अर्वन् + औ

अर्वत् + औ 6.4.127 अर्वणरुनसावनजः । ~ अङ्गस्य

अर्वन्त् + औ 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः।

अर्वत् + औ 8.3.24 नश्चापदान्तस्य झलि । ~ अनुस्वारः

अर्वन्त् + औ 8.4.58 अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः ।

अर्वन्तौ

[LSK] अर्वद्भ्याम्<sup>3/2</sup> इत्यादिः<sup>1/1</sup> ॥

अर्वन् + भ्याम्

अर्वत् + भ्याम् 6.4.127 अर्वणरुनसावनजः । ~ अङ्गस्य

अर्वद् + भ्याम् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य, 8.4.53 झलां जश् झशि।

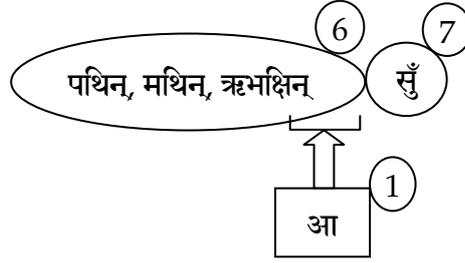
अर्वद्भ्याम्

## न-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (7) पथिन्

The declension of पथिन् (road), मथिन् (churner), and ऋभुक्षिन् (*Indra*) involves the follows four sūtras.

### [विधिसूत्रम्] 7.1.85 पथिमथ्यृभुक्षामात् । ~ सौ

पथिन्, मथिन्, and ऋभुक्षिन् followed by सुँ take आ-आदेश.



पथि-मथ्यृभुक्षाम्<sup>6/3</sup> आत्<sup>1/1</sup> । ~ सौ<sup>7/1</sup>

2 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- पथि-मथ्यृभुक्षाम् 6/3 – पथिन्, मथिन्, and ऋभुक्षिन् are compounded by इतरेतरद्वन्द्व; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- आत् 1/1 – This is आदेश. त् is for clarity.
- सौ 7/1 – प्रातिपदिक is सुँ; in परसप्तमी.

[LSK] एषाम्<sup>6/3</sup> आकारः<sup>1/1</sup> अन्त-आदेशः<sup>1/1</sup> स्यात्<sup>III/1</sup> सौ<sup>7/1</sup> परे<sup>7/1</sup> ॥

आ is the substitute in the place of the last letter of पथिन्, मथिन्, and ऋभुक्षिन् when सुँ follows.

पथिन् + सुँ

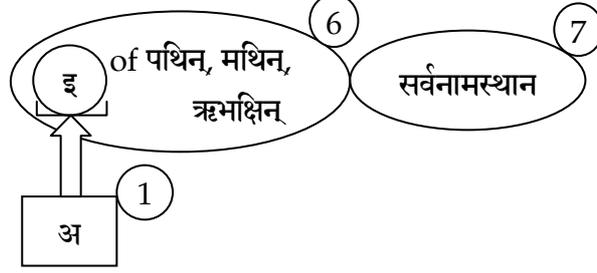
पथि आ + स् 7.1.85 पथिमथ्यृभुक्षामात् । ~ सौ

To be continued...

Note that between 7.1.85 पथिमथ्यृभुक्षामात् । and 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् ।, there is नित्य/अनित्य relationship, because 7.1.85 can be applied after 6.1.68, while 6.1.68 cannot be applied after 7.1.85. Thus, 7.1.85 पथिमथ्यृभुक्षामात् । has priority over 6.1.68.

[विधिसूत्रम्] 7.1.86 इतोऽत्सर्वनामस्थाने । ~ पथिमथ्यृभुक्षाम्

इ of पथिन्, मथिन्, and ऋभुक्षिन् is replaced by अ when सर्वनामस्थान follows.



इतः<sup>6/1</sup> अत्<sup>1/1</sup> सर्वनामस्थाने<sup>7/1</sup> । ~ पथि-मथ्यृभुक्षाम्<sup>6/3</sup>

2 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- इतः 6/1 – Short इ; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- अत् 1/1 – This is आदेश. त् is for clarity.
- सर्वनामस्थाने 7/1 – In परसप्तमी.
- पथि-मथ्यृभुक्षाम् 6/3 – From 7.1.85 पथिमथ्यृभुक्षामात् ।; in सम्बन्धे षष्ठी to इतः.

[LSK] पथि-आदेः<sup>6/1</sup> इकारस्य<sup>6/1</sup> अकारः<sup>1/1</sup> स्यात्<sup>III/1</sup> सर्वनामस्थाने<sup>7/1</sup> परे<sup>7/1</sup> ॥

अ is the substitute in the place इ of पथिन्, मथिन्, and ऋभुक्षिन् when सर्वनामस्थान follows.

पथिन् + सुँ

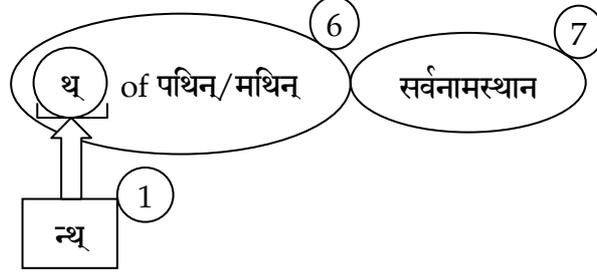
पथि आ + स् 7.1.85 पथिमथ्यृभुक्षामात् । ~ सौ

पथ् अ आ + स् 7.1.86 इतोऽत्सर्वनामस्थाने । ~ पथिमथ्यृभुक्षाम्

To be continued...

[विधिसूत्रम्] 7.1.87 थो न्यः । ~ पथिमथोः सर्वनामस्थाने

थ् of पथिन् and मथिन् is replaced by न्य् when सर्वनामस्थान follows.



थः 6/1 न्यः 1/1 । ~ पथि-मथोः 6/2 सर्वनामस्थाने 7/1

2 words in the सूत्र; 2 words as अनुवृत्ति

- थः 6/1 – प्रातिपदिक is थ्; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- न्यः 1/1 – This is आदेश. न्य् is the content. The अ is for उच्चारण.
- पथि-मथोः 6/2 – From 7.1.85 पथिमथ्यृभुक्षामात् ।; in सम्बन्धे षष्ठी to थः
- सर्वनामस्थाने 7/1 – 7.1.86 इतोऽत्सर्वनामस्थाने ।; in परसप्तमी.

[LSK] पथि-मथोः 6/2 थस्य 6/1 न्य्-आदेशः 1/1 सर्वनामस्थाने 7/1 ।

न्य् is the substitute in the place थ् of पथिन् and मथिन्, when सर्वनामस्थान follows.

[LSK] पन्थाः 1/1 ।

पथिन् + सुँ

पथि आ + स् 7.1.85 पथिमथ्यृभुक्षामात् । ~ सौ

पथ् अ आ + स् 7.1.86 इतोऽत्सर्वनामस्थाने । ~ पथिमथ्यृभुक्षाम्

पन्थ् अ आ + स् 7.1.87 थो न्यः । ~ पथिमथोः सर्वनामस्थाने

पन्था + स् 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः । ~ एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

पन्थाः 8.2.66, 8.3.15

[LSK] पन्थानौ 1/2 । पन्थानः 1/3 ॥

पथिन् + औ

पथ् अ न् + औ 7.1.86 इतोऽत्सर्वनामस्थाने । ~ पथिमथ्यृभुक्षाम्

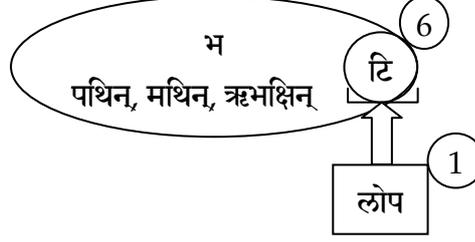
पन्थ् अ न् + औ 7.1.87 थो न्यः । ~ पथिमथोः सर्वनामस्थाने

पन्थ् आ न् + औ 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ । ~ नोपधायाः दीर्घः

पन्थानौ

## [विधिसूत्रम्] 7.1.88 भस्य टेलोपः । ~ पथिमथ्यृभुक्षाम्

टि of पथिन्, मथिन्, and ऋभुक्षिन् is elided when it is भ.



भस्य<sup>6/1</sup> टेः<sup>6/1</sup> लोपः<sup>1/1</sup> । ~ पथि-मथ्यृभुक्षाम्<sup>6/3</sup>

2 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- भस्य 6/1 – भ-संज्ञक अङ्ग as defined by 1.4.18 यच्चि भम्।; in सम्बन्धे षष्ठी to टेः.
- टेः 6/1 – टि as defined by 1.1.64 अचोऽन्त्यादि टि।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- लोपः 1/1 – This is आदेश.
- पथि-मथ्यृभुक्षाम् 6/3 – From 7.1.85 पथिमथ्यृभुक्षामात् ।; in समानाधिकरण to भस्य.

[LSK] भस्य<sup>6/1</sup> पथि-आदेः<sup>6/1</sup> लोपः<sup>1/1</sup> ।

लोप is the substitute in the place टि of पथिन्, मथिन्, and ऋभुक्षिन् when it is भ.

[LSK] पथः<sup>2/3</sup> । पथा<sup>3/1</sup> ।

पथिन् + शस्

पथ् + अस् 7.1.88 भस्य टेलोपः । ~ पथिमथ्यृभुक्षाम्

पथः 8.2.66, 8.3.15

[LSK] पथिभ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

पथिन् + भ्याम्

पथि + भ्याम् 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य । ~ पदस्य

[LSK] एवम्<sup>0</sup> मथिन्, ऋभुक्षिन् ॥

Declension of पथिन् (न-पुं-7)

|   | एकवचनम्   | द्विवचनम्   | बहुवचनम्  |
|---|---|---|---|
| 1 | पथिन् + सुँ<br>पथि आ + स् 7.1.85<br>पथ् अ आ + स् 7.1.86<br>पन्थ् अ आ + स् 7.1.87<br>पन्था + स् 6.1.101<br>पन्थाः 8.2.66, 8.3.15 | पथिन् + औ<br>पथ् अ न् + स् 7.1.86<br>पन्थ् अ न् + स् 7.1.87<br>पन्थ् आ न् + स् 6.4.8<br>पन्थानौ | पथिन् + जस्<br>पथ् अ न् + अस् 7.1.86<br>पन्थ् अ न् + अस् 7.1.87<br>पन्थ् आ न् + अस् 6.4.8<br>पन्थानः 8.2.66, 8.3.15 |
| S | same as above   | same as above   | same as above   |
| 2 | पथिन् + अम्<br>पथ् अ न् + अम् 7.1.86<br>पन्थ् अ न् + अम् 7.1.87<br>पन्थ् आ न् + अम् 6.4.8<br>पन्थानौ                            | same as above   | पथिन् + शस्<br>पथ् + अस् 7.1.88<br>पथः 8.2.66, 8.3.15   |
| 3 | पथिन् + टा<br>पथ् + आ 7.1.88<br>पथा   | पथिन् + भ्याम्<br>पथिभ्याम् 8.2.7   | पथिन् + भिस्<br>पथिभिः 8.2.7, 8.2.66,<br>8.3.15   |
| 4 | पथिन् + डे<br>पथ् + ए 7.1.88<br>पथा   | same as above   | पथिन् + भ्यस्<br>पथिभिः 8.2.7, 8.2.66,<br>8.3.15  |
| 5 | पथिन् + ङसिँ<br>पथ् + अस् 7.1.88<br>पथः 8.2.66, 8.3.15  | same as above   | same as above   |
| 6 | same as above   | पथिन् + ओस्<br>पथ् + ओस् 7.1.88<br>पथोः 8.2.66, 8.3.15  | पथिन् + आम्<br>पथ् + आम् 7.1.88<br>पथा  |
| 7 | पथिन् + डि<br>पथ् + इ 7.1.88<br>पथि   | same as above   | पथिन् + सुप्<br>पथिसु 8.2.7, 8.3.59   |

Declension of मथिन् (न-पुं-7)

|   | एकवचनम्       | द्विवचनम्     | बहुवचनम्      |
|---|---------------|---------------|---------------|
| 1 | मन्था         | मन्थानौ       | मन्थानः       |
| S | same as above | same as above | same as above |
| 2 | मन्थानम्      | same as above | मथः           |
| 3 | मथा           | मथिभ्याम्     | मथिभिः        |
| 4 | मथे           | same as above | मथिभ्यः       |
| 5 | मथः           | same as above | same as above |
| 6 | same as above | मथोः          | मथाम्         |
| 7 | मथि           | same as above | मथिषु         |

The entire declension is like पथिन्

Declension of ऋभुक्षिन् (न-पुं-7)

|   | एकवचनम्       | द्विवचनम्     | बहुवचनम्      |
|---|---------------|---------------|---------------|
| 1 | ऋभक्षा        | ऋभक्षाणौ      | ऋभक्षाणः      |
| S | same as above | same as above | same as above |
| 2 | ऋभक्षाणम्     | same as above | ऋभक्षः        |
| 3 | ऋभक्षा        | ऋभक्षिभ्याम्  | ऋभक्षिभिः     |
| 4 | ऋभक्षे        | same as above | ऋभक्षिभ्यः    |
| 5 | ऋभक्षः        | same as above | same as above |
| 6 | same as above | ऋभक्षोः       | ऋभक्षाम्      |
| 7 | ऋभक्षि        | same as above | ऋभक्षिषु      |

The entire declension is like पथिन्

## न-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (8) पञ्चन

### [संज्ञासूत्रम्] 1.1.24 षान्ता षट् । ~ सङ्ख्या

ष/न्-ending numeral word is termed षट्.

षान्ता<sup>1/1</sup> षट्<sup>1/1</sup> । ~ सङ्ख्या<sup>1/1</sup>

2 words in the सूत्र, 1 word as अनुवृत्ति

- षान्ताः 1/1 – ष च नः च षणौ (ID) । अ is उच्चारणार्थ. षणौ अन्तौ यस्याः सा षान्ता (116B) सङ्ख्या । The number whose ending is ष or न्. This is adjective to सङ्ख्या, number. Such numbers are only six: पञ्चन (five), षष् (six), सप्तन (seven), अष्टन (eight), नवन् (nine), and दशन (ten).
- षट् 1/1 – This is संज्ञा.
- सङ्ख्या 1/1 – From 1.1.23 बहुगणवतुडति सङ्ख्या । Here in this sūtra, the word सङ्ख्या is used in the sense of natural (अकृत्रिम) meaning, not artificial (कृत्रिम) meaning as per the sūtra 1.1.23.

[LSK] ष-अन्ता<sup>1/1</sup> न-अन्ता<sup>1/1</sup> च<sup>0</sup> सङ्ख्या<sup>1/1</sup> षट्-संज्ञा<sup>1/1</sup> स्यात्<sup>III/1</sup> ।

ष-ending and न्-ending word denoting number is termed षट्.

[LSK] पञ्चन-शब्दः<sup>1/1</sup> नित्यम्<sup>0</sup> बहुवचन-अन्तः<sup>1/1</sup> ।

The word पञ्चन always ends with सुप्-प्रत्यय which is termed बहुवचन.

[LSK] पञ्च<sup>1/3</sup> । पञ्च<sup>2/3</sup> ।

पञ्चन + जस्

पञ्चन 7.1.22 षड्भ्यो लुक् । ~ जश्शसोः

पञ्च 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य । ~ पदस्य

[LSK] पञ्चभिः<sup>3/3</sup> । पञ्चभ्यः<sup>4/3, 5/3</sup> ।

पञ्चन + भिस्

पञ्च + भिस् 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य । ~ पदस्य

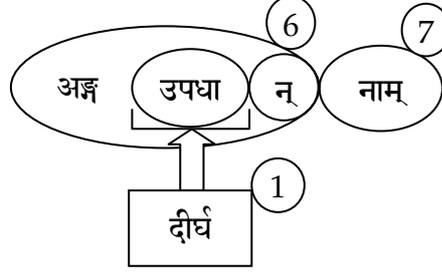
[LSK] नुट्<sup>1/1</sup> ॥

पञ्चन + आम्<sup>6/3</sup>

पञ्चन + न् आम् 7.1.55 षट्चतुर्भ्यश्च । ~ आम्: नुट्

## [विधिसूत्रम्] 6.4.7 नोपधायाः । ~ दीर्घः अङ्गस्य नामि

The second to last letter of न्-ending अङ्ग becomes दीर्घ when नाम् follows.



न<sup>6/1</sup> उपधायाः<sup>6/1</sup> । ~ दीर्घः<sup>1/1</sup> अङ्गस्य<sup>6/1</sup> नामि<sup>7/1</sup>

2 words in the सूत्र; 3 words as अनुवृत्ति

- न 6/1 – प्रातिपदिक is न्; लुप्तषष्ठी-ending; adjective to अङ्गस्य; by तदन्तविधि, this is understood as “न्-अन्तस्य अङ्गस्य”.
- उपधायाः 6/1 Defined as 1.1.65 अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा ।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- दीर्घः 1/1 – From 6.3.111 ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः।; this is आदेश.
- अङ्गस्य 6/1 – From 6.4.1 अङ्गस्य।; qualified by न्; this is in सम्बन्धे षष्ठी to उपधायाः.
- नामि 7/1 – From 6.4.3 नामि; in परसप्तमी.

[LSK] न-अन्तस्य<sup>6/1</sup> उपधायाः<sup>6/1</sup> दीर्घः<sup>1/1</sup> नामि<sup>7/1</sup> ।

दीर्घ is the substitute for the second to last letter of न्-ending अङ्ग when नाम् follows.

[LSK] पञ्चानाम्<sup>6/3</sup> ।

पञ्चन् + आम्

पञ्चन् + न् आम् 7.1.55 षट्चतुर्भ्यश्च । ~ आम्: नुट्

पञ्चान् + नाम् 6.4.7 नोपधायाः । ~ दीर्घः अङ्गस्य नामि

पञ्चा + नाम् 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य । ~ पदस्य

[LSK] पञ्चसु<sup>7/3</sup> ॥

पञ्चन् + सुप्

पञ्च + सु 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य । ~ पदस्य

Declension of पञ्चन् (न्-पुं-8)

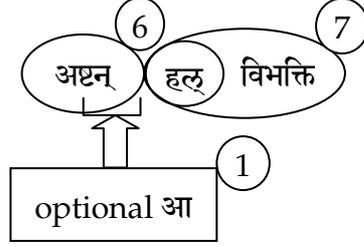
|   | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम्           |
|---|---------|-----------|--------------------|
| 1 |         |           | पञ्च 7.1.22, 8.2.7 |
| 5 |         |           | /                  |
| 2 |         |           | पञ्च 7.1.22, 8.2.7 |
| 3 |         |           | पञ्चभिः 8.2.7      |
| 4 |         |           | पञ्चभ्यः 8.2.7     |
| 5 |         |           | same as above      |
| 6 |         |           | पञ्चानाम् 6.4.7    |
| 7 |         |           | पञ्चसु 8.2.7       |

सप्तन् (seven), अष्टन् (eight) without आ-आदेश (by next sūtra), नवन् (nine), and दशन् (ten) decline in the same manner.

न-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (9) अष्टन्

## [विधिसूत्रम्] 7.2.84 अष्टन् आ विभक्तौ । ~ हलि

The last letter of अष्टन् optionally becomes आ when हलादि विभक्ति follows.



अष्टन्ः 6/1 आ 1/1 विभक्तौ 7/1 । ~ हलि 7/1

3 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- अष्टन्ः 6/1 – प्रातिपदिक is अष्टन्; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- आ 1/1 – This is आदेश.
- विभक्तौ 7/1 – In परसप्तमी.
- हलि 7/1 – From 7.2.85 रायो हलि ।, by प्रतिलोमगति. This is adjective to विभक्तौ, thus तदादिविधि is applied to result in “हलादौ विभक्तौ परे”.

[LSK] हल्-आदौ 7/1 वा<sup>0</sup> स्यात्<sup>III/1</sup> ॥

आ is the optional substitute in the place of the last letter of अष्टन् when हलादि विभक्ति follows.

आत्व by this sūtra is understood as वैकल्पिक, optional, because of the indication seen in sūtra 6.1.172 अष्टनो दीर्घात् ।. If आत्व is नित्य, दीर्घ in that sūtra need not be specified.

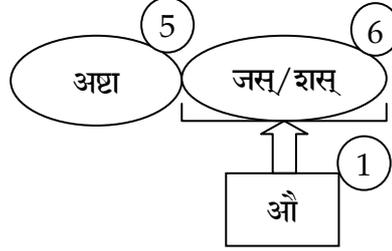
हलि is required for अष्टानाम् 6/3. Without हलि, आ-आदेश comes before नुट् (by 7.1.55) because of परत्व and नित्यत्व (आ-आदेश can come after नुट्, while नुट् cannot come after आ-आदेश, because of not being न-ending)<sup>6</sup>.

When जस् follows, since it is अजादि-प्रत्यय, this sūtra, whose निमित्त is हलादि-प्रत्यय, looks inapplicable. This is negated by the next sūtra.

<sup>6</sup> हलीत्यस्यानपकर्षणे त्वष्टानामिति न सिध्येत् । परत्वानित्यत्वाच्च नुटः प्रागात्वे कृते अनान्तत्वेन षट्-संज्ञाभावाच्चटोऽप्रवृत्तेः । [T]

[विधिसूत्रम्] 7.1.21 अष्टाभ्य औश् । ~ जश्शसोः

जस् and शस् are replaced by औश् when preceded by अष्टा, अष्टन्-शब्द with आ-आदेश.



अष्टाभ्यः<sup>5/3</sup> औश्<sup>1/1</sup> । ~ जश्शसोः<sup>6/2</sup>

2 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- अष्टाभ्यः 5/3 – After अष्टा, अष्टन्-शब्द with आ-आदेश by 7.2.84 अष्टन आ विभक्तौ।; in पूर्वपञ्चमी
- औश् 1/1 – This is आदेश. Being शित्, the entire स्थानिन् is replaced by 1.1.55 अनेकात्त्रिंशत् सर्वस्य।.
- जश्शसोः 6/2 – From 7.1.20 जश्शसोः शिः।; जस् (1/3) च शस् (2/3) च जश्शसौ (ID), तयोः।; in स्थानेयोगा षष्ठी.

[LSK] कृत-आकारात्<sup>5/1</sup> अष्टनः<sup>5/1</sup> जश्शसोः<sup>6/2</sup> औश्<sup>1/1</sup>।

औश् is the substitute in the place of जस् and शस् after अष्टन्, after making modification of आ by 7.2.84 अष्टन आ विभक्तौ।.

[LSK] “अष्टाभ्यः<sup>5/3</sup>” इति<sup>0</sup> वक्तव्ये<sup>7/1</sup> कृत-आत्व-निर्देशः<sup>1/1</sup> जश्शसोः<sup>6/2</sup> विषये<sup>7/1</sup> आत्वम्<sup>2/1</sup> ज्ञापयति<sup>III/1</sup>।

While “अष्टाभ्यः<sup>5/3</sup>” had to be said, for achieving अल्पाक्षरत्व, minimum length in letters, presenting with longer letter आ-आदेश in the sūtra indicates आ-आदेश should be done for जस् and शस्. “अष्टाभ्यः<sup>5/3</sup>”

[LSK] अष्टौ<sup>1/3</sup> । अष्टौ<sup>2/3</sup> ।

अष्टन् + जस्

अष्ट आ + अस् 7.2.84 अष्टन आ विभक्तौ । ~ हलि

अष्टा + अस् 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः । ~ एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

अष्टा + औ 7.1.21 अष्टाभ्य औश् । ~ जश्शसोः

अष्टौ 6.1.88 वृद्धिरेचि । ~ आत् संहितायाम्

[LSK] अष्टाभिः<sup>3/3</sup> । अष्टाभ्यः<sup>4/3</sup> । अष्टाभ्यः<sup>5/3</sup> ।

अष्टन् + भिस्

अष्ट आ + भिस् 7.2.84 अष्टन आ विभक्तौ । ~ हलि

अष्टाभिः 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः ।, 8.2.66, 8.3.15

[LSK] अष्टानाम्<sup>6/3</sup> ।

अष्टन् + आम्

अष्टन् + न् आम् 7.1.55 षट्चतुर्भ्यश्च । ~ आमः नुट्

अष्ट आ + नाम् 7.2.84 अष्टन आ विभक्तौ । ~ हलि

अष्टानाम् 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः । ~ एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

[LSK] अष्टासु<sup>7/3</sup> ।

अष्टन् + सुप्

अष्ट आ + सु 7.2.84 अष्टन आ विभक्तौ । ~ हलि

अष्टासु 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः । ~ एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

### Declension of अष्टन् (न-पुं-9)

With आ-आदेश by 7.2.84 अष्टन आ विभक्तौ । ~ हलि

|   | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम्                              |
|---|---------|-----------|---------------------------------------|
| 1 |         |           | अष्टौ 7.2.84, 6.1.101, 7.1.21, 6.1.88 |
| 5 |         |           |                                       |
| 2 |         |           | अष्टौ 7.2.84, 6.1.101, 7.1.21, 6.1.88 |
| 3 |         |           | अष्टाभिः 7.2.84, 6.1.101              |
| 4 |         |           | अष्टाभ्यः 7.2.84, 6.1.101             |
| 5 |         |           | same as above                         |
| 6 |         |           | अष्टानाम् 7.1.55, 7.2.84, 6.1.101     |
| 7 |         |           | अष्टासु 7.2.84, 6.1.101               |

[LSK] आत्व-अभावे<sup>7/1</sup> अष्ट<sup>1/3</sup>, पञ्चवत्<sup>0</sup> ॥

When आ-आदेश option is not taken, अष्टन् declines like पञ्चन.

## ज-कारान्त-पुंलिङ्गः (1) ऋत्विज्

ऋत्विज् (priest) is derived from धातु यजँ देवपूजासङ्गतिकरणदानेषु (1U) to sacrifice, to worship, to give, to consecrate with ऋतु उपपद, with प्रत्यय taught in the next sūtra.

### [विधिसूत्रम्] 3.2.59 ऋत्विग्दधृक्स्त्रिग्दिग्गुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च । ~ किन्

ऋत्विज्, दधृष्, स्त्रज्, दिश्, and उष्णिह् are किन्-ending forms created without grammatical steps, which is called निपातनम्. अञ्चु with सुप्-उपपद<sup>7</sup>, and also युज् and क्रुञ्च without उपपद take किन्. In this case न-लोप of क्रुञ्च does not occur.

ऋत्विग्-दधृक्-स्त्रिग्-उष्णिग्<sup>1/1</sup> अञ्चु-युजि-क्रुञ्चाम्<sup>6/3</sup> च<sup>0</sup> । ~ किन्<sup>1/1</sup>

3 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- ऋत्विग्-दधृक्-स्त्रिग्-उष्णिग् 1/1 – ऋत्विज्, दधृष्, स्त्रज्, दिश्, and उष्णिह् are compounded in इतरेतरद्वन्द्व.
  1. प्रातिपदिकम् – ऋत्विज् (ऋतु + यज् + किन्)      जकारान्तः पुंलिङ्गः
  2. प्रातिपदिकम् – दधृष् (धृष् + किन्)      षकारान्तः पुंलिङ्गः
  3. प्रातिपदिकम् – स्त्रज् (सृज् + किन्)      जकारान्तः स्त्रीलिङ्गः
  4. प्रातिपदिकम् – दिश् (दिश् + किन्)      शकारान्तः स्त्रीलिङ्गः
  5. प्रातिपदिकम् – उष्णिह् (उद् + स्त्रिह् + किन्)      हकारान्तः स्त्रीलिङ्गः
  6. धातुः – अञ्चु (उपपद + अञ्चु + किन्)      चकारान्तः अनियतलिङ्गः
  7. धातुः – युज् (no उपपद + युज् + किन्)<sup>8</sup>      जकारान्तः अनियतलिङ्गः
  8. धातुः – क्रुञ्च (no उपपद + क्रुञ्च + किन्)      चकारान्तः अनियतलिङ्गः
- अञ्चु-युजि-क्रुञ्चाम् 6/3 – अञ्चु, युज्, and क्रुञ्च are compounded in इतरेतरद्वन्द्व; in दिग्योगे पञ्चम्यर्थे षष्ठी.
- च 0 – This brings किन्.
- किन् 1/1 – From 3.2.58 स्पृशोऽनुदके किन् ।; this is प्रत्यय.

<sup>7</sup> उपपद is a technical terminology in कृत्-प्रत्यय section. उपपद is a word which has to be present near the धातु in order to suffix certain कृत्-प्रत्यय.

<sup>8</sup> इ indicates युजिर् योगे of 7<sup>th</sup> conjugation, not इक् धातुनिर्देशे. See बालमनोरमा for चोः कुः।.[B] युजेरसमासे इति सूत्रे युजीति, ऋत्विगादिसूत्रे युजीति च धातुपाठे युजिर् योगे इति इकारविशिष्टो यः पठितः, यस्येव रेफाशिरस्कृतया ग्रहणम्, नत्विका निर्देशः, व्याख्यानादित्यर्थः ।

The content of प्रत्यय is व् only. क् and न् are इत्. इ is for उच्चारण.

[LSK] एभ्यः<sup>5/3</sup> किन्<sup>1/1</sup>, अच्चेः<sup>5/1</sup> सुप्<sup>7/1</sup> उपपदे<sup>7/1</sup>, युजिकुञ्चोः<sup>6/2</sup> केवल्योः<sup>6/2</sup>, कुञ्चेः<sup>6/1</sup> नलोप-अभावः<sup>1/1</sup> निपात्यते<sup>III/1</sup> ।

After these धातुs, किन् is suffixed. After अच्च्-धातु, when सुप्-उपपद is present. After युज्, and कुञ्च्, there should not be उपपद. Absence of नलोप for कुञ्च् is also told by this sūtra.

[LSK] कनौ<sup>1/2</sup> इतौ<sup>1/2</sup> ॥

क् and न् are इत्.

इ is उच्चारण.

ऋतुं यजते इति ऋत्विक् । One who worships the season.

ऋतु + अम् + यज् + किन् 3.2.59 ऋत्विग्दधृक्स्त्रिग्दिगुष्णिग् अच्चुयुजिकुञ्चां च । ~ किन्

प्रातिपदिकसंज्ञा 3.1.93 कृदतिङ् ।, 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

ऋतु + अम् + यज् + व् 1.3.8 लशक्तद्धिते । 1.3.3 हलन्त्यम् । इकारः उच्चारणार्थः

ऋतु + अम् + यज् 6.1.67 वेरपृक्तस्य । ~ लोपः

ऋतु + यज् 2.4.71 सुपो धातुप्रातिपदिकयोः । ~ लुक्

ऋतु + इ अज् 6.1.15 वचिस्वपिजयादीनां किति ।

ऋतु + इज् 6.1.108 संप्रसारणाच्च । ~ पूर्वरूपम्

ऋत् + इज् 6.1.77 इको यणचि ।

ऋत्विज्

The next sūtra gives कृत्-संज्ञा to किन् so that this group of words can get प्रातिपदिकसंज्ञा by 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्.

[संज्ञासूत्रम्] 3.1.93 कृदतिङ् । ~ तत्र

In the अधिकार of 3.1.91 धातोः।, प्रत्यय other than तिङ् is termed कृत्.

कृत्<sup>1/1</sup> अतिङ्<sup>1/1</sup> । ~ तत्र<sup>0</sup>

3 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- कृत् 1/1 – This is संज्ञा.
- अतिङ् 1/1 – न तिङ् इति अतिङ् (NT)।; This is संज्ञा.
- तत्र 0 – In the अधिकार of 3.1.91 धातोः।.

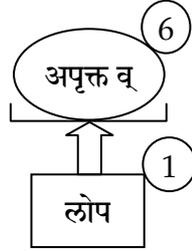
[LSK] अत्र<sup>0</sup> धातु-अधिकारे<sup>7/1</sup> तिङ्-भिन्नः<sup>1/1</sup> प्रत्ययः<sup>1/1</sup> कृत्-संज्ञः<sup>1/1</sup> स्यात्<sup>III/1</sup> ॥

In this धातु-अधिकार, starting from 3.1.91 धातोः। to the end of 3<sup>rd</sup> chapter, प्रत्यय other than तिङ् is termed कृत्.

The next sūtra is to elide व् in क्तिन्.

[विधिसूत्रम्] 6.1.67 वेरपृक्तस्य । ~ लोपः

अपृक्त व् s elided.



वेः<sup>6/1</sup> अपृक्तस्य<sup>6/1</sup> । ~ लोपः<sup>1/1</sup>

2 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

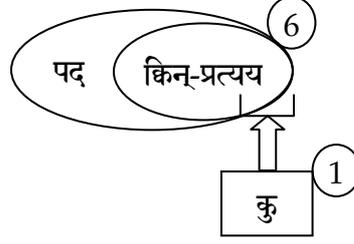
- वेः 6/1 – प्रातिपदिक is वि; in स्थानेयोगा षष्ठी. इ is उच्चारणार्थ. Only व् is intended.
- अपृक्तस्य 6/1 – This is adjective to वेः. अपृक्त is defined in 1.2.41 अपृक्त एकाल् प्रत्ययः।.
- लोपः 1/1 – This is आदेश.

[LSK] अपृक्तस्य<sup>6/1</sup> वस्य<sup>6/1</sup> लोपः<sup>1/1</sup> ॥

There is elision of व् which is अपृक्त.

[विधिसूत्रम्] 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः । ~ पदस्य अन्ते

For the धातु which takes किन्-प्रत्यय, कु-आदेश takes place at the end of पद.



किन्-प्रत्ययस्य<sup>6/1</sup> कुः<sup>1/1</sup> । ~ पदस्य<sup>6/1</sup> अन्ते<sup>7/1</sup>

2 words in the सूत्र; 2 words as अनुवृत्ति

- किन्-प्रत्ययस्य 6/1 – किन् प्रत्ययः यस्मात् सः किन्-प्रत्ययः (115B) धातुः, तस्य ।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- कुः 1/1 – कवर्गः; this is आदेश. 1.1.52 अलोऽन्त्यस्य । is required.
- पदस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 8.1.16 पदस्य।; in सम्बन्धे षष्ठी to अन्ते.
- अन्ते 7/1 – From 8.2.29 स्कोः संयोगाद्योरन्ते च ।; in अधिकरणे सप्तमी.

[LSK] किन्-प्रत्ययः<sup>1/1</sup> यस्मात्<sup>5/1</sup> तस्य<sup>6/1</sup> कवर्गः<sup>1/1</sup> अन्तादेशः<sup>1/1</sup> स्यात्<sup>III/1</sup> पदान्ते<sup>7/1</sup> ।

कवर्ग is the substitute in the place of the last letter of that which takes किन्-प्रत्यय, at the end of पद.

[LSK] अस्य<sup>6/1</sup> असिद्धत्वात्<sup>5/1</sup> “चोः कुः (8.2.30)” इति<sup>0</sup> कुत्वम्<sup>1/1</sup> ।

Because this sūtra is असिद्ध for 8.2.30 चोः कुः।, कुत्व is done by 8.2.30 चोः कुः।.

[LSK] ऋत्विक्<sup>1/1</sup>, ऋत्विग्<sup>1/1</sup> ।

ऋत्विज् 6.1.68 हल्-ञ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

Here, 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः । is प्राप्त, but it is असिद्ध in the view of 8.2.30 चोः कुः ।.

ऋत्विग् 8.2.30 चोः कुः । ~ झलि पदस्य अन्ते

ऋत्विक् 8.4.56 वाऽवसाने ।

[LSK] ऋत्विजौ<sup>1/2</sup>।

ऋत्विज् + औ

[LSK] ऋत्विग्भ्याम्<sup>3/2</sup>॥

ऋत्विज् + भ्याम्

ऋत्विग् + भ्याम् 8.2.30 चोः कुः । ~ झलि पदस्य अन्ते

ऋत्विज् + सुप्<sup>7/3</sup>

ऋत्विग् + सु 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः । ~ पदस्य अन्ते

ऋत्विग् + षु 8.3.59 आदेश-प्रत्यययोः । ~ इण्कोः सः मूर्धन्यः

ऋत्विक् + षु 8.4.55 खरि च । ~ चर् झलाम्

### Declension of ऋत्विज् (ज्-पुं-1)

किन्-प्रत्यय-अन्तः जकारान्त-शब्दः

|   | एकवचनम्  | द्विवचनम्   | बहुवचनम्  |
|---|--|---|---|
| 1 | ऋत्विज् + सुँ<br>ऋत्विज् 6.1.68<br>ऋत्विग् 8.2.30 (8.2.62)<br>ऋत्विक् 8.4.56 | ऋत्विज् + औ<br>ऋत्विजौ                            | ऋत्विज् + जस्<br>ऋत्विजः 8.2.66, 8.3.15   |
| 5 | same as above  | same as above                                     | same as above   |
| 2 | ऋत्विज् + अम्<br>ऋत्विजम्  | same as above                                     | ऋत्विज् + शस्<br>ऋत्विजः 8.2.66, 8.3.15   |
| 3 | ऋत्विज् + टा<br>ऋत्विजा  | ऋत्विज् + भ्याम्<br>ऋत्विग्भ्याम् 8.2.30 (8.2.62) | ऋत्विज् + भिस्<br>ऋत्विग् + भिस् 8.2.30 (8.2.62)<br>ऋत्विग्भिः 8.2.66, 8.3.15             |
| 4 | ऋत्विज् + डे<br>ऋत्विजे  | same as above                                     | ऋत्विज् + भ्यस्<br>ऋत्विग् + भ्यस् 8.2.30 (8.2.62)<br>ऋत्विग्भ्यः 8.2.66, 8.3.15          |
| 5 | ऋत्विज् + ङसिँ<br>ऋत्विजः 8.2.66, 8.3.15                                     | same as above                                     | same as above   |
| 6 | same as above  | ऋत्विज् + ओस्<br>ऋत्विजोः 8.2.66, 8.3.15          | ऋत्विज् + आम्<br>ऋत्विजाम्  |
| 7 | ऋत्विज् + ङि<br>ऋत्विजि  | same as above                                     | ऋत्विज् + सुप्<br>ऋत्विग् + सु 8.2.30 (8.2.62)<br>ऋत्विग् + षु 8.3.59<br>ऋत्विक्शु 8.4.55 |

ज-कारान्त-पुंलिङ्गः (2 #1) युज्

युजिँर् योगे (7U) to unite

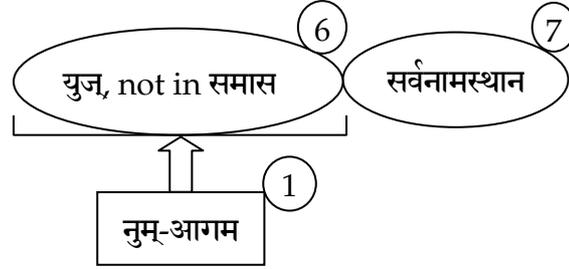
युज् + किन् 3.2.59 ऋत्विग्दधृक्स्त्रिगिदगुष्णिग् अञ्चुयुजिकुञ्चां च । ~ किन्

प्रातिपदिकसंज्ञा 3.1.93 कृदतिङ् ।, 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

युज् 6.1.67 वेरपृक्तस्य । ~ लोपः

[विधिसूत्रम्] 7.1.71 युजेरसमासे । ~ नुम् सर्वनामस्थाने

नुम्-आगम is attached to युज्, but not in समास, when सर्वनामस्थान follows.



युजेः 6/1 असमासे 7/1 । ~ नुम् 1/1 सर्वनामस्थाने 7/1

2 words in the सूत्र; 2 words as अनुवृत्ति

- युजेः 6/1 – युज्-धातु in 7<sup>th</sup> conjugation (युजिँर् योगे (7U) to unite); in स्थानेयोगा षष्ठी.

Note that इ of युजि in the sūtra is not इक्-प्रत्यय in धातुनिर्देश, but is to indicate युजिँर् योगे (7U) to unite, to exclude other युज्-धातुs in other conjugations. Other युज्s do not take नुम्.

- असमासे 7/1 – In अधिकरणे सप्तमी.
- नुम् 1/1 – This is आगम. Being मित, परिभाषासूत्र 1.1.47 मिदचोऽन्त्यात्परः। is used.
- सर्वनामस्थाने 7/1 – From 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः।; in परसप्तमी.

[LSK] युजेः 6/1 सर्वनामस्थाने 7/1 नुम् 1/1 स्यात् III/1 असमासे 7/1 ।

नुम् is the augment for युज् which is not in समास, when followed by सर्वनामस्थान.

[LSK] सुलोपः 1/1 । संयोगान्त-लोपः 1/1 । कुत्वेन 3/1 नस्य 6/1 ङः 1/1 । युङ् 1/1 ।

युज् + सुँ

यु न् ज् + स् 7.1.71 युजेरसमासे । ~ नुम् सर्वनामस्थाने

युन्ज् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

युन् 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः । ~ पदस्य

युङ् 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः । ~ पदस्य अन्ते

[LSK] अनुस्वार-परसवर्णौ<sup>1/2</sup> । युञ्जौ<sup>1/2</sup> । युञ्जः<sup>1/3</sup> ।

युज् + औ

यु न्ज् + औ 7.1.71 युजेरसमासे । ~ नुम् सर्वनामस्थाने with the help of 1.1.47 मिदचोऽन्त्यात् परः ।

युञ्ज् + औ 8.3.24 नश्चापदान्तस्य झलि । ~ अनुस्वारः

युञ्ज् + औ 8.4.58 अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः ।

[LSK] युग्भ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

युज् + भ्याम्

युग् + भ्याम् 8.2.30 चोः कुः । ~ पदस्य अन्ते

Because of असिद्धत्व, 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः । is not used.

युज् + सुप्<sup>7/3</sup>

युग् + सु 8.2.30 चोः कुः । ~ पदस्य अन्ते

Because of असिद्धत्व, 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः । is not used.

युग् + षु 8.3.59 आदेश-प्रत्यययोः । ~ इणकोः सः मूर्धन्यः

युक् + षु 8.4.55 खरि च । ~ चर् झलाम्

### Declension of युज् (ज्-पुं-2 #1)

किन्-प्रत्यय-अन्तः असमासे युज्-शब्दः

|   | एकवचनम्             | द्विवचनम्         | बहुवचनम्                      |
|---|---------------------|-------------------|-------------------------------|
| 1 | युङ् 7.1.71, 8.2.30 | युञ्जौ 7.1.71     | युञ्जः 7.1.71                 |
| 5 | same as above       | same as above     | same as above                 |
| 2 | युञ्जम् 7.1.71      | same as above     | युजः                          |
| 3 | युजा                | युग्भ्याम् 8.2.30 | युग्भिः 8.2.30                |
| 4 | युजे                | same as above     | युग्भ्यः 8.2.30               |
| 5 | युजः                | same as above     | same as above                 |
| 6 | same as above       | युजोः             | युजाम्                        |
| 7 | युजि                | same as above     | युक्षु 8.2.30, 8.3.59, 8.4.55 |

## ज-कारान्त-पुंलिङ्गः (2 #2) सुयुज्

सुयुज् is उपपद-तत्पुरुष-समास made of युज्-धातु with सु उपपद and क्तिप्-प्रत्यय.

Being समास, 7.1.71 युजेरसमासे । ~ नु सर्वनामस्थाने is not applicable.

As क्तिन्-प्रत्यय is suffixed to only केवल युज्-धातु, which means धातु without उपपद, by 3.2.59

ऋत्विग्दधृक्स्त्रिदिगुष्णिग् अञ्चुयुजिक्नुञ्चां च । ~ क्तिन्, the suffix of सुयुज् is क्तिप्.

सुष्ठु युङ्क्ते इति सुयुज् । One who meditates well.

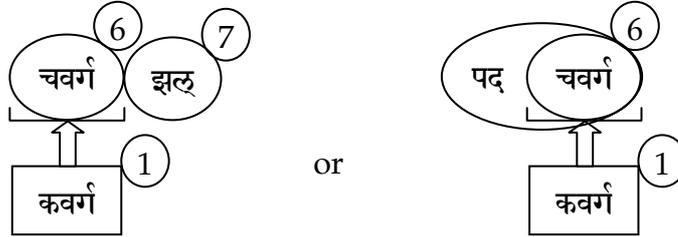
सु + युज् + क्तिप् 3.2.76 क्तिप् च ।

प्रातिपदिकसंज्ञा 3.1.93 कृदतिङ् ।, 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

सुयुज् 6.1.67 वेरपृक्तस्य । ~ लोपः

### [विधिसूत्रम्] 8.2.30 चोः कुः । ~ झलि पदस्य् आन्ते च

चवर्ग is replaced by कवर्ग when followed by झल् or at the end of पद.



चोः <sup>6/1</sup> कुः <sup>1/1</sup> । ~ झलि <sup>7/1</sup> पदस्य <sup>6/1</sup> अन्ते <sup>7/1</sup> च <sup>0</sup>

2 words in the सूत्र; 4 words as अनुवृत्ति

- चोः 6/1 – चवर्ग; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- कुः 1/1 – This is आदेश, आदेश is decided either by 1.1.50 स्थानेऽन्तरतमः। or 1.3.10 यथासंख्यमनुदेशः समानाम् ।<sup>9</sup>
- झलि 7/1 – From 8.2.26 झलो झलि। प्रत्याहारः झल्; in परसप्तमी.
- पदस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 8.1.16 पदस्य।; in सम्बन्धे षष्ठी to अन्ते.
- अन्ते 7/1 – From 8.2.29 स्कोः संयोगाद्योरन्ते च।; in अधिकरणे सप्तमी.
- च 0 – From 8.2.29 स्कोः संयोगाद्योरन्ते च।; connecting झलि and पदस्य अन्ते.

<sup>9</sup>[B] सुयुज्-शब्दे जकारस्य कुत्वं गकारः, घोषसंवारनादाल्पप्राणसाम्याद् यथासंख्यसूत्राच्चेति भावः ।

[LSK] चवर्गस्य<sup>6/1</sup> कवर्गः<sup>1/1</sup> स्यात्<sup>III/1</sup> झलि<sup>7/1</sup> पद-अन्ते<sup>7/1</sup> च<sup>0</sup> ।

कवर्ग is the substitute for चवर्ग when झल् follows, or at the end of पद.

[LSK] सुयुक्<sup>1/1</sup>, सुयुग्<sup>1/1</sup> ।

सुयुज् + सुँ

सुयुज् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्वपृक्तं हल् । ~ लोपः

सुयुग् 8.2.30 चोः कुः । ~ झलि पदस्य अन्ते

सुयुक् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ चर् झलाम्

[LSK] सुयुजौ<sup>1/2</sup> । सुयुजः<sup>1/3</sup> ।

[LSK] सुयुग्भ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

युज् + भ्याम्

युग् + भ्याम् 8.2.30 चोः कुः । ~ झलि पदस्य अन्ते

सुयुज् + सुप्<sup>7/3</sup>

सुयुग् + सु 8.2.30 चोः कुः । ~ झलि पदस्य अन्ते

सुयुग् + घु 8.3.59 आदेश-प्रत्यययोः । ~ इणकोः सः मूर्धन्यः

सुयुक् + घु 8.4.55 खरि च । ~ चर् झलाम्

### Declension of सुयुज् (ज-पुं-2 #2)

किप्-प्रत्यय-अन्तः समासे सुयुज्-शब्दः

|   | एकवचनम्                                 | द्विवचनम्           | बहुवचनम्                        |
|---|---|---------------------|---------------------------------|
| 1 | सुयुक्/सुयुग्<br>6.1.68, 8.2.30, 8.4.56 | सुयुजौ              | सुयुजः                          |
| S | same as above                           | same as above       | same as above                   |
| 2 | सुयुजम्                                 | same as above       | same as above                   |
| 3 | सुयुजा                                  | सुयुग्भ्याम् 8.2.30 | सुयुग्भिः 8.2.30                |
| 4 | सुयुजे                                  | same as above       | सुयुग्भ्यः 8.2.30               |
| 5 | सुयुजः                                  | same as above       | same as above                   |
| 6 | same as above                           | सुयुजोः             | सुयुजाम्                        |
| 7 | सुयुजि                                  | same as above       | सुयुक्षु 8.2.30, 8.3.59, 8.4.55 |

ज-कारान्त-पूर्लिङ्गः (3) खञ्ज

खजिँ वैकल्ये (1P) to limp

ख न् ज् 7.1.58 इदितो नुम् धातोः ।<sup>10</sup>

खं ज् 8.3.24 नश्चापदान्तस्य झलि ।

खञ्ज 8.4.58 अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः ।

खञ्ज + किप् 3.2.76 किप् च ।

प्रातिपदिकसंज्ञा 3.1.93 कृदतिङ् ।, 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

खञ्ज 6.1.67 वेरपृक्तस्य । ~ लोपः

[LSK] खन्<sup>1/1</sup>।

खञ्ज + सुँ<sup>1/1</sup>

खञ्ज 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

खञ्ज 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः । ~ पदस्य

खन् (प०) निमित्तापाये नैमित्तिकास्याप्यपायः ।

Because 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः। is असिद्ध, 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य। does not take place.

[LSK] खञ्जौ<sup>1/2</sup> ।

खञ्ज + औ

[LSK] खन्भ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

खञ्ज + भ्याम्

खञ्ज + भ्याम् 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः । ~ पदस्य

खन् + भ्याम् (प०) निमित्तापाये नैमित्तिकास्याप्यपायः ।

Because 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः। is असिद्ध, 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य। does not take place.

<sup>10</sup>[K] धातुग्रहणं चेह क्रियते – धातूपदेशकाल एव नुमागमो यथा स्यादित्येवमर्थम् ।

खञ्ज् + सुप्

खञ् + सु 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः । ~ पदस्य

खन् + सु (प०) निमित्तापाये नैमित्तिकास्याप्यपायः ।

खन् + ध् सु 8.3.30 नश्च । ~ सि धुट् वा

खन् + त् सु 8.4.55 खरि च । ~ चर् झलाम्

पक्षे

खन्सु

### Declension of खञ्ज् (ज-पुं-3)

|   | एकवचनम्            | द्विवचनम्        | बहुवचनम्                     |
|---|--------------------|------------------|------------------------------|
| 1 | खन् 6.1.68, 8.2.23 | खञ्जौ            | खञ्जः                        |
| S | same as above      | same as above    | same as above                |
| 2 | खञ्जम्             | same as above    | same as above                |
| 3 | खञ्जा              | खन्भ्याम् 8.2.23 | खन्भिः 8.2.23                |
| 4 | खञ्जे              | same as above    | खन्भ्यः 8.2.23               |
| 5 | खञ्जः              | same as above    | same as above                |
| 6 | same as above      | खञ्जोः           | खञ्जाम्                      |
| 7 | खञ्जि              | same as above    | खन्त्सु/खन्सु 8.2.23, 8.3.30 |

ज-कारान्त-पूर्लिङ्गः (4) राज

राज् दीप्तौ (1U) to shine

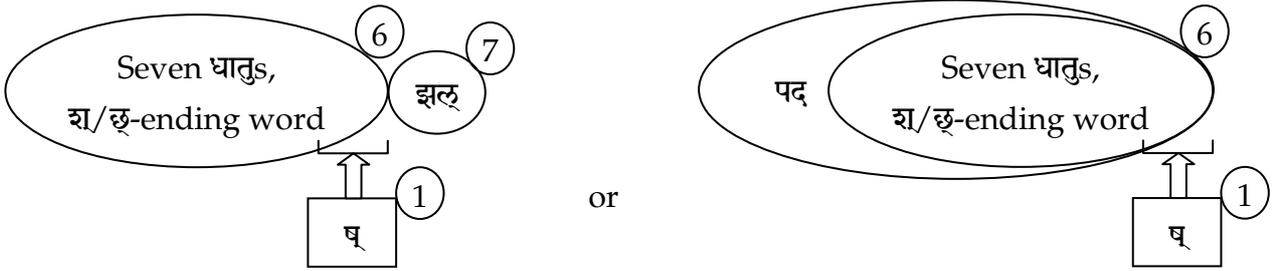
राज् + क्विप् 3.2.76 क्विप् च ।

प्रातिपदिकसंज्ञा 3.1.93 कृदतिङ् ।, 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

राज् 6.1.67 वेरपृक्तस्य । ~ लोपः

[विधिसूत्रम्] 8.2.36 व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

ष-takes place at the end of व्रश्च, भ्रस्ज, सृज, मृज, यज, राज, भाज् धातुs, and श/छ्-ending word, when they are followed by झल्, or at the end of पद.



व्रश्च-भ्रस्ज-सृज-मृज-यज-राज-भ्राज-च्छ-शाम्<sup>6/3</sup> षः<sup>1/1</sup> । ~ झलि<sup>7/1</sup> पदस्य<sup>6/1</sup> अन्ते<sup>7/1</sup> च<sup>0</sup>

2 words in the सूत्र; 4 words as अनुवृत्ति

- व्रश्च-भ्रस्ज-सृज-मृज-यज-राज-भ्राज-च्छ-शाम्<sup>6/3</sup> – Seven धातुs (व्रश्च, भ्रस्ज, सृज, मृज, यज, राज, भाज) and 2 letters (छ्, श) are compounded in इतरेतरद्वन्द्व; in स्थानेयोगा षष्ठी. The अ after each item is for उच्चारण. Since अष्टाध्यायी is शब्द-अनुशासनम्, the word शब्दस्वरूपम् is अधिकार through the entire अष्टाध्यायी. This word is adjective शब्दस्वरूपम्, and with तदन्तविधि it results in “words ending with व्रश्च etc.”.
- षः 1/1 – This is आदेश. The अ after ष is उच्चारणार्थ.
- झलि 7/1 – From 8.2.26 झलो झलि।. प्रत्याहार झल्; in परसप्तमी.
- पदस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 8.1.16 पदस्य।; in सम्बन्धे षष्ठी to अन्ते.
- अन्ते 7/1 – From 8.2.29 स्कोः संयोगाद्योरन्ते च।; in अधिकरणे सप्तमी.
- च 0 – From 8.2.29 स्कोः संयोगाद्योरन्ते च।; connecting झलि and पदस्य अन्ते.

[LSK] झलि<sup>7/1</sup> पद-अन्ते<sup>7/1</sup> च<sup>0</sup> ।

ष is the substitute for the last letter of व्रश्च, भ्रस्ज, सृज, मृज, यज, राज्, भाज् धातुs, and श/छ्- ending word, when they are followed by झल्, or at the end of पद.

[LSK] राट्<sup>1/1</sup>, राड्<sup>1/1</sup> ।

राज् + सुँ<sup>1/1</sup>

राज् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

राष् 8.2.36 व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

राड् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

राट् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ चर् झलाम्

[LSK] राजौ<sup>1/2</sup> । राजः<sup>1/3</sup> ।

[LSK] राड्भ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

राज् + भ्याम्

राष् + भ्याम् 8.2.36 व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

राड् + भ्याम् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

### Declension of राज् (ज-पुं-4)

|   | एकवचनम्                                  | द्विवचनम्                 | बहुवचनम्                                     |
|---|--|---------------------------|--|
| 1 | राट्/राड् 6.1.68, 8.2.36, 8.2.39, 8.4.56 | राजौ                      | राजः   |
| 5 | same as above                            | same as above             | same as above                                |
| 2 | राजम्                                    | same as above             | same as above                                |
| 3 | राजा                                     | राड्भ्याम् 8.2.36, 8.2.39 | राड्भिः 8.2.36, 8.2.39                       |
| 4 | राजे                                     | same as above             | राड्भ्यः 8.2.36, 8.2.39                      |
| 5 | राजः                                     | same as above             | same as above                                |
| 6 | same as above                            | राजोः                     | राजाम्                                       |
| 7 | राजि                                     | same as above             | राट्सु/राट्सु 8.2.36, 8.2.39, 8.3.29, 8.4.55 |

[LSK] एवम्<sup>0</sup> विभ्राट्<sup>1/1</sup>, देवेट्<sup>1/1</sup>, विश्वसृट्<sup>1/1</sup> ॥

In this manner, these words decline like राज्.

विभ्राजते इति विभ्राट् । One who shines particularly.

भ्राज् दीप्तौ (1A) to shine

वि + भ्राज् + क्तिप्

विभ्राज्

विभ्राज् + सुँ

विभ्राष् 6.1.68, 8.2.36 व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

विभ्राड् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

विभ्राट् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ चर् झलाम्

देवान् यजते इति देवेट् । One who worships devas.

यज् देवपूजासङ्गतिकरनदानेषु (1A) to worship, etc.

देव + आम् + यज् + क्तिप्

देवेज्

विश्वं सृजति इति विश्वसृट् । One who creates universe.

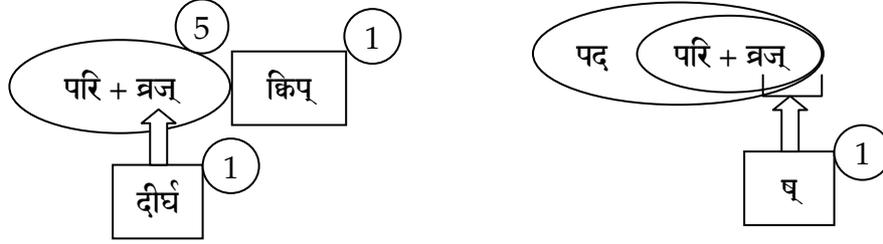
विश्व + ङस् + सृज् + क्तिप्

विश्वसृज्

Side note: In the sūtra 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः ।, the word किन्-प्रत्यय is a बहुव्रीहिसमास denoting धातु which can take किन्-प्रत्यय, by sūtras from 3.2.58 to 3.2.60. As per 3.2.59 ऋत्विग्दधृक्स्त्रिद्गुष्णिग् अञ्चुयुजिक्रुञ्चां च । ~ किन्, यज् and सृज् take किन्-प्रत्यय. Because of this, even in the case where they take क्तिप्-प्रत्यय, they are called किन्-प्रत्यय. Thus, 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः । should be applied after 8.2.36 and 8.2.39. However, in महाभाष्यकार's प्रयोग, "विश्वसृड्भ्याम्" and "उपयट्काम्यति" are seen. These are the ज्ञापकs for non-application of 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः ।.

## (उणादि) 2.60 परौ ब्रजेः षः पदान्ते । ~ क्तिप् दीर्घः

This sūtra has three कार्यs: 1. क्तिप्-प्रत्यय is suffixed to ब्रज्-धातु with परि उपपद. 2. दीर्घ to the ब्रज्-धातु. 3. ष-आदेश takes place at the end of पद.



परौ<sup>7/1</sup> ब्रजेः<sup>5/1</sup> षः<sup>1/1</sup> पदान्ते<sup>7/1</sup> । ~ क्तिप्<sup>1/1</sup> दीर्घः<sup>1/1</sup>

4 words in the सूत्र; 2 words as अनुवृत्ति

- परौ 7/1 – प्रातिपदिक परि; in परसप्तमी by 3.1.92 तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्।
- ब्रजेः 5/1 – ब्रज्-धातु with इक् धातुनिर्देशे; in दिग्योगे पञ्चमी to 3.1.2 परश्च।
- षः 1/1 – This is आदेश. The अ after ष is for उच्चारण.
- पदान्ते 7/1 – पदस्य अन्तः पदान्तः (6T)।; in अधिकरणे सप्तमी.
- दीर्घः 1/1 – This is आदेश. Its स्थानी is decided by 1.2.28 अचश्च। with स्थानेयोगा षष्ठी.
- क्तिप् 1/1 – This is प्रत्यय.

[LSK] परिव्राट्<sup>1/1</sup> ।

परि + ब्रज् + क्तिप् (उ०) 2.60 परौ ब्रजेः षः पदान्ते । ~ क्तिप् दीर्घः

परि + ब्राज् + क्तिप् (उ०) 2.60 परौ ब्रजेः षः पदान्ते । ~ क्तिप् दीर्घः

कृत्-संज्ञा for उणादि क्तिप्-प्रत्यय by 3.1.93 कृदतिङ् । with 3.3.1 उणादयो बहुलम्।

प्रातिपदिकसंज्ञा 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

परिव्राज् 6.1.67 वेरपृक्तस्य । ~ लोपः

परिव्राज् + सुँ

परिव्राज् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

परिव्राष् (उ०) 2.60 परौ ब्रजेः षः पदान्ते । ~ क्तिप्

परिव्राड् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

परिव्राट् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ चर् झलाम्

[LSK] परिव्राजौ<sup>1/2</sup> । परिव्राड्भ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

The entire declension is like राज्.

ज-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (5) विश्वराज्

विश्वस्मिन् राजते इति विश्वाराट् । One who shines everywhere.

राज् दीप्तौ (1A) to shine

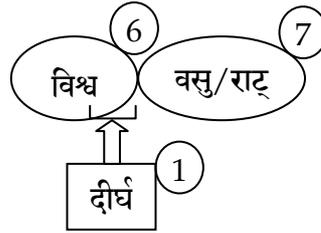
विश्व + डि + राज् + क्तिप्

विश्वराज्

विश्वराज् (lord of the universe) is made special by the next sūtra.

## [विधिसूत्रम्] 6.3.128 विश्वस्य वसुराटोः । ~ दीर्घः

विश्व is elongated at the end when वसु or राट् follows.



विश्वस्य<sup>6/1</sup> वसु-राटोः<sup>7/2</sup> । ~ दीर्घः<sup>1/1</sup>

2 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- विश्वस्य 6/1 – प्रातिपदिक विश्व; in स्थानेयोगा षष्ठी, with 1.1.52 अलोऽन्त्यस्य ।
- वसु-राटोः 7/2 – वसुः च राट् च वसुराटौ (ID), तयोः।; in परसप्तमी.
- दीर्घः 1/1 – From 6.3.111 ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः।. This is आदेश.

[LSK] विश्व-शब्दस्य<sup>6/1</sup> दीर्घः<sup>1/1</sup> अन्त-आदेशः<sup>1/1</sup> स्यात्<sup>III/1</sup> वसौ<sup>7/1</sup> राट्-शब्दे<sup>7/1</sup> च<sup>0</sup> परे<sup>7/1</sup> ।

दीर्घ is the substitute in the place of last letter of विश्व when वसु or राट् follows.

“राट्” in the sūtra represents पदान्त. Thus, where अङ्ग is termed पद, दीर्घ is applied.

[LSK] विश्वाराट्<sup>1/1</sup>, विश्वाराड्<sup>1/1</sup> ।

विश्वराज् + सुँ

विश्वराज् 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

विश्वराष् 8.2.36 व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

विश्वराड् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

विश्वराट् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ चर् झलाम्

विश्वाराट् 6.3.128 विश्वस्य वसुराटोः । ~ दीर्घः

[LSK] विश्वराजौ<sup>1/2</sup> ।

When the अङ्ग does not get पद status, दीर्घ does not happen.

[LSK] विश्वाराड्भ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

Even when the form “राट्” is not seen, when अङ्ग is termed पद, दीर्घ is applied.

### Declension of विश्वराज् (ज्-पुं-5)

|   | एकवचनम्   | द्विवचनम्                                   | बहुवचनम्  |
|---|---|---|---|
| 1 | विश्वाराट्/विश्वाराड्<br>6.3.128, 6.1.68,<br>8.2.36, 8.2.39, 8.4.56 | विश्वराजौ                                   | विश्वराजः   |
| 5 | same as above   | same as above                               | same as above   |
| 2 | विश्वराजम्  | same as above                               | same as above   |
| 3 | विश्वराजा   | विश्वाराड्भ्याम्<br>6.3.128, 8.2.36, 8.2.39 | विश्वाराड्भिः<br>6.3.128, 8.2.36, 8.2.39                                |
| 4 | विश्वराजे   | same as above                               | विश्वाराड्भ्यः<br>6.3.128, 8.2.36, 8.2.39                               |
| 5 | विश्वराजः   | same as above                               | same as above   |
| 6 | same as above   | विश्वराजोः                                  | विश्वराजाम्   |
| 7 | विश्वराजि   | same as above                               | विश्वाराट्सु/विश्वाराट्सु<br>6.3.128, 8.2.36, 8.2.39,<br>8.3.29, 8.4.55 |

ज-कारान्त-पुंलिङ्गः (6) भृस्ज्

भृस्जँ पाके (6U) to fry

भृस्ज् + क्किप् 3.2.76 क्किप् च ।

भृ + अस्ज् 6.1.16 ग्रहिय्यावयिव्यधिवधिविचति वृश्चति पृच्छतिभृज्जतीनां डिति च । ~ सम्प्रसारणम्

भृस्ज् 6.1.108 सम्प्रसारणाच्च । ~ पूर्वरूपम्

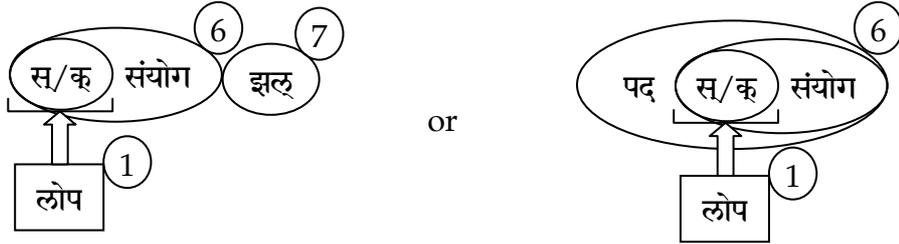
भृस्ज् + सुँ<sup>1/1</sup>

भृस्ज् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

Now, 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः। is प्राप्त. Then the next sūtra comes.

[विधिसूत्रम्] 8.2.29 स्कोः संयोगाद्योरते च । ~ लोपः झलि पदस्य

There is elision of स/क् at the beginning of conjunct consonant which is at the end of पद or when झल् follows.

स्कोः<sup>6/2</sup> संयोगाद्योः<sup>6/2</sup> अन्ते<sup>7/1</sup> च<sup>0</sup> । ~ लोपः<sup>1/1</sup> झलि<sup>7/1</sup> पदस्य<sup>6/1</sup>

4 words in the सूत्र; 3 words as अनुवृत्ति

- स्कोः 6/2 – स् च क् च स्कौ (ID), तयोः।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- संयोगाद्योः 6/2 – संयोगस्य आदी संयोगादी (6T), तयोः।; This is adjective to स्कोः.
- अन्ते 7/1 – In अधिकरणे सप्तमी to संयोग, a part of समास.
- च 0 – Connecting झलि and पदस्य अन्ते.
- लोपः 1/1 – From 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः।. This is आदेश.
- झलि 7/1 – From 8.2.26 झलो झलि।. प्रत्याहार झल्; in परसप्तमी.
- पदस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 8.1.16 पदस्य।; in सम्बन्धे षष्ठी to अन्ते.

[LSK] झलि<sup>7/1</sup> पदान्ते<sup>7/1</sup> च<sup>0</sup> यः<sup>1/1</sup> संयोगः<sup>1/1</sup> तद्-आद्योः<sup>6/2</sup> स्कोः<sup>6/2</sup> लोपः<sup>1/1</sup> ।

There is लोप for स/क् at the beginning of संयोग which is followed by झल् or at the end of पद.

[LSK] भृट्<sup>1/1</sup> ।

भृस्ज् + सुँ

भृस्ज् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

भृज् 8.2.29 स्कोः संयोगाद्योरन्ते च ।

भृष् 8.2.36 व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

भृङ् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

भृट् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ चर् झलाम्

[LSK] सस्य<sup>6/1</sup> श्रुत्वेन<sup>3/1</sup> शः<sup>1/1</sup> । “झलां जस् झशि (8.4.53)” इति<sup>0</sup> शस्य<sup>6/1</sup> जः<sup>1/1</sup> । भृज्जौ<sup>1/2</sup> ।

भृस्ज् + औ

भृश् ज् + औ 8.4.40 स्तोः श्रुना श्रुः ।

भृज् ज् + औ 8.4.53 झलां जश् झशि ।

भृज्जौ

[LSK] भृङ्भ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

भृस्ज् + भ्याम्

भृज् + भ्याम् 8.2.29 स्कोः संयोगाद्योरन्ते च ।

भृष् + भ्याम् 8.2.36 व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

भृङ् + भ्याम् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

### Declension of भृस्ज् (ज्-पुं-6)

|   | एकवचनम्   | द्विवचनम्                 | बहुवचनम्  |
|---|---|---------------------------|---|
| 1 | भृट्/भृङ् 6.1.68, 8.2.29,<br>8.2.36, 8.2.39, 8.4.56 | भृज्जौ 8.4.40, 8.4.53     | भृज्जः 8.4.40, 8.4.53                                   |
| S | same as above                                       | same as above             | same as above   |
| 2 | भृज्जम् 8.4.40, 8.4.53                              | same as above             | same as above   |
| 3 | भृज्जा 8.4.40, 8.4.53                               | भृङ्भ्याम् 8.2.36, 8.2.39 | भृङ्भिः 8.2.36, 8.2.39                                  |
| 4 | भृज्जे 8.4.40, 8.4.53                               | same as above             | भृङ्भ्यः 8.2.36, 8.2.39                                 |
| 5 | भृज्जः 8.4.40, 8.4.53                               | same as above             | same as above   |
| 6 | same as above                                       | भृज्जोः 8.4.40, 8.4.53    | भृज्जाम् 8.4.40, 8.4.53                                 |
| 7 | भृज्जि 8.4.40, 8.4.53                               | same as above             | भृट्सु/भृङ्सु 8.2.29, 8.2.36,<br>8.2.39, 8.3.29, 8.4.55 |

द-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (1) त्यद्

त्यद् (that) is the first member of त्यदादिगण in सर्वादिगण.

[LSK] त्यदादि-अत्वम्<sup>1/1</sup> पररूपत्वम्<sup>1/1</sup> च<sup>0</sup> ॥

त्यद् + सुँ<sup>1/1</sup>

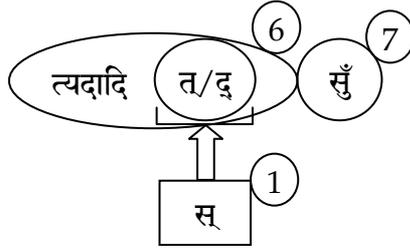
त्य अ + स 7.2.102 त्यदादीनामः ।

त्य + स 6.1.97 अतो गुणे ।

Continue to the next sūtra.

[विधिसूत्रम्] 7.2.106 तदोः सः सावनन्त्ययोः । ~ त्यदादीनाम्

When सुँ follows, of त्यदादि गण, त/द् which is not at the end is replaced by स.



तदोः<sup>6/2</sup> सः<sup>1/1</sup> सौ<sup>7/1</sup> अनन्त्ययोः<sup>6/2</sup> । ~ त्यदादीनाम्<sup>6/3</sup>

4 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- तदोः 6/2 – त च द् च तदौ (ID), तयोः।; in स्थानेयोगा षष्ठी. अ after त् is उच्चारणार्थ.
- सः 1/1 – This is आदेश. The अ after स is उच्चारणार्थ.
- सौ 7/1 – प्रातिपदिक is सुँ; in परसप्तमी.
- अनन्त्ययोः 6/2 – अन्ते भवः अन्त्यः the last । न अन्त्यौ इति अनन्त्यौ (NT), तयोः।; This is adjective to तदोः.
- त्यदादीनाम्<sup>6/3</sup> – From 7.2.102 त्यदादीनामः।; सम्बन्धे षष्ठी to तदोः.

[LSK] त्यदादीनाम्<sup>6/3</sup> तकार-दकारयोः<sup>6/2</sup> अनन्त्ययोः<sup>6/2</sup> सः<sup>1/1</sup> स्यात्<sup>III/1</sup> सौ<sup>7/1</sup>।

स is the substitute in the place of त/स् of त्यदादि which is not at the end.

[LSK] स्यः<sup>1/1</sup> ।

त्य + स 7.2.102 त्यदादीनामः।, 6.1.97 अतो गुणे ।

स्य + स 7.2.106 तदोः सः सावनन्त्ययोः । ~ त्यदादीनाम्

स्यः 8.2.66, 8.3.15

[LSK] त्यौ<sup>1/2</sup> ।

त्यद् + औ

त्य अ + औ 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

त्य + औ 6.1.97 अतो गुणे । ~ पररूपम्

त्यौ 6.1.88 वृद्धिरेचि । after negating 6.1.102 by 6.1.104.

[LSK] त्ये<sup>1/3</sup> ॥

त्यद् + जस्

त्य अ + अस् 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

त्य + अस् 6.1.97 अतो गुणे । ~ पररूपम्

त्य + शी 7.1.17 जसः शी । ~ सर्वनाम्नः अतः

त्ये 6.1.87 आद्गुणः ।

### Declension of त्यद् (द्-पुं-1)

दकारान्त-सर्वनाम-त्यदादिगण-शब्दः

|   | एकवचनम्                                  | द्विवचनम्                              | बहुवचनम्  |
|---|--|--|---|
| 1 | स्यः 7.2.102, 6.1.97,<br>7.2.106         | त्यौ 7.2.102, 6.1.97,<br>6.1.88        | त्यौ 7.2.102, 6.1.97,<br>7.1.17, 6.1.87                 |
| S |  |  |   |
| 2 | त्यम् 7.2.102, 6.1.97,<br>6.1.107        | same as above                          | त्यान् 7.2.102, 6.1.97,<br>6.1.102, 6.1.103             |
| 3 | त्येन 7.2.102, 6.1.97,<br>7.1.12, 6.1.87 | त्याभ्याम् 7.2.102, 6.1.97,<br>7.3.102 | त्यैः 7.2.102, 6.1.97,<br>7.1.9                         |
| 4 | त्यस्मै 7.2.102, 6.1.97,<br>7.1.14       | same as above                          | त्येभ्यः 7.2.102, 6.1.97,<br>7.3.103                    |
| 5 | त्यस्मात् 7.2.102, 6.1.97,<br>7.1.15     | same as above                          | same as above   |
| 6 | त्यस्य 7.2.102, 6.1.97,<br>7.1.12        | त्ययोः 7.2.102, 6.1.97,<br>7.3.104     | त्येषाम् 7.2.102, 6.1.97,<br>7.1.52, 7.3.103,<br>8.3.59 |
| 7 | त्यस्मिन् 7.2.102, 6.1.97,<br>7.1.15     | same as above                          | त्येषु 7.2.102, 6.1.97,<br>7.3.103, 8.3.59              |

Other than 1/1, the entire declension is like सर्व, after 7.2.102 and 6.1.97.

In the same manner, तद्, यद्, एतद् decline like सर्व after getting अ-आदेश at the end.

[LSK] सः<sup>1/1</sup> । तौ<sup>1/2</sup> । ते<sup>1/3</sup> ॥

तद् + सुँ

त अ + स् 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

त + स् 6.1.97 अतो गुणे । ~ पररूपम्

स + स् 7.2.106 तदोः सः सावनन्त्ययोः । ~ त्यदादीनाम्

सः 8.2.66, 8.3.15

### Declension of तद् (द्व-पुं-2)

|   | एकवचनम् | द्विवचनम्     | बहुवचनम्      |
|---|---------|---------------|---------------|
| 1 | सः      | तौ            | ते            |
| S | /       |               |               |
| 2 | तम्     | same as above | तान्          |
| 3 | तेन     | ताभ्याम्      | तैः           |
| 4 | तस्मै   | same as above | तेभ्यः        |
| 5 | तस्मात् | same as above | same as above |
| 6 | तस्य    | तयोः          | तेषाम्        |
| 7 | तस्मिन् | same as above | तेषु          |

[LSK] यः<sup>1/1</sup> । यौ<sup>1/2</sup> । ये<sup>1/3</sup> ॥

यद् + सुँ

य अ + स् 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

य + स् 6.1.97 अतो गुणे । ~ पररूपम्

यः 8.2.66, 8.3.15

[LSK] एषः<sup>1/1</sup> | एतौ<sup>1/2</sup> | एते<sup>1/3</sup> ॥

एतद् + सुँ

एत अ + स् 7.2.102 त्यदादीनामः। ~ विभक्तौ

एत + स् 6.1.97 अतो गुणे। ~ पररूपम्

एस् + स् 7.2.106 तदोः सः सावनन्त्ययोः। ~ त्यदादीनाम्

एष + स् 8.3.59 आदेश-प्रत्यययोः। ~ इणकोः सः मूर्धन्यः

एषः 8.2.66, 8.3.15

In अन्वादेश, एतद्-शब्द takes एन-आदेश by 2.4.34 द्वितीयाटौस्स्वेनः। ~ इदमः एतदः अन्वादेशे.

एतद् + अम्

एन + अम् 2.4.34 द्वितीयाटौस्स्वेनः। ~ इदमः एतदः अन्वादेशे

एनम् 6.1.107 अमि पूर्वः। ~ अकः पूर्वपरयोः एकः संहितायाम्

### Declension of एतद् in अन्वादेश (द्व-पुं-2-1)

|   | एकवचनम्     | द्विवचनम्     | बहुवचनम्      |
|---|-------------|---------------|---------------|
| 1 | एषः         | एतौ           | एते           |
| S |             |               |               |
| 2 | एनम् 2.4.34 | एनौ 2.4.34    | एनान् 2.4.34  |
| 3 | एनेन 2.4.34 | एताभ्याम्     | एतैः          |
| 4 | एतस्मै      | same as above | एतेभ्यः       |
| 5 | एतस्मात्    | same as above | same as above |
| 6 | एतस्य       | एनयोः 2.4.34  | एतेषाम्       |
| 7 | एतस्मिन्    | same as above | एतेषु         |

द-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (2) युष्मद्, अस्मद्

युष्मद् (you) and अस्मद् (I, we) share the same sūtras for the entire declension.

The declension of युष्मद् and अस्मद् is understood well when divided into three parts.

युष्म/अस्म (A) + अद् (B) + सुप्-प्रत्यय (C)

Part (A): Up to “म्” of the प्रातिपदिक

This part is modified by the sūtras 7.2.91 to 98.

युष्मदस्मदोः<sup>6/2</sup> मपर्यन्तस्य<sup>6/1</sup> (of युष्मद् and अस्मद्, for the portion up to म्) are the अनुवृत्तिs from 7.2.86 and 7.2.91 in this section.

Part (B): The rest of the प्रातिपदिक

This part is modified by the sūtras 7.2.86 to 90.

युष्मदस्मदोः<sup>6/2</sup> (of युष्मद् and अस्मद्) is the अनुवृत्ति from 7.2.86.

From 7.2.86 to 89, पर-निमित्त (the condition which follows) is अनादेशे<sup>7/1</sup> (विभक्ति which is not modified), द्वितीयायाम्<sup>7/1</sup> (2/1, 2/2, 2/3), प्रथमायाः<sup>6/1</sup> द्विवचने<sup>7/1</sup> (1/2). In sūtra 7.2.90, शेषे<sup>7/1</sup> (the rest of विभक्ति) is पर-निमित्त.

The last letter is substituted by 1.1.52 अलोऽन्त्यस्य।

However, in लघुसिद्धान्तकौमुदी, शेषे<sup>7/1</sup> of 7.2.90 शेषे लोपः। is explained as टि, the remainder of युष्मद् and अस्मद् after taking म-पर्यन्त off. This explanation is for easy understanding for the beginners.

Part (C): प्रत्यय

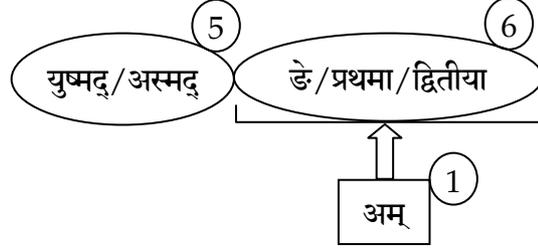
The suffix is modified by the sūtras 7.1.27 to 33.

युष्मदस्मद्भ्याम्<sup>5/2</sup> (after युष्मद् and अस्मद्) is the अनुवृत्ति from 7.1.27 in this section.

In 1/1 –

[विधिसूत्रम्] 7.1.28 डेप्रथमयोरम् । ~ युष्मदस्मद्भ्याम्

After युष्मद् and अस्मद्, डे, प्रथमा and द्वितीया विभक्ति are replaced by अम्.



डेः<sup>6/1</sup> प्रथमयोः<sup>6/2</sup> अम्<sup>1/1</sup> । ~ युष्मदस्मद्भ्याम्<sup>5/2</sup>

3 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

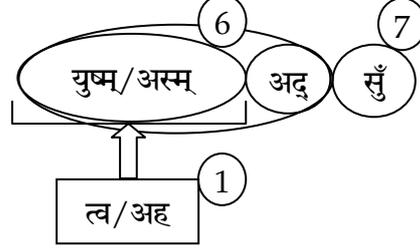
- डे 6/1 – प्रातिपदिक डे (चतुर्थी विभक्तिः एकवचनम्) which is लुप्त-षष्ठी-विभक्ति-अन्त; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- प्रथमयोः 6/2 – प्रथमा च प्रथमा च प्रथमे (ID), तयोः।; in स्थानेयोगा षष्ठी. The second प्रथमा indicates द्वितीयाविभक्ति.
- अम् 1/1 – This is आदेश. म् is not इत् by getting विभक्तित्व by स्थानिवद्भाव.
- युष्मदस्मद्भ्याम् 5/2 – From 7.1.27 युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश।; in पूर्वपञ्चमी.

[LSK] युष्मदस्मद्भ्याम्<sup>5/2</sup> परस्य<sup>6/1</sup> “डे” इति<sup>0</sup> एतस्य<sup>6/1</sup> प्रथमा-द्वितीययोः<sup>6/2</sup> च<sup>0</sup> अम्-आदेशः<sup>1/1</sup> ॥

अम् is the substitute for डे/प्रथमा/द्वितीया विभक्ति when युष्मद् or अस्मद् precedes.

[विधिसूत्रम्] 7.2.94 त्वाहौ सौ । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तस्य

The portion up to म् of युष्मद् and अस्मद् are replaced by त्व and अह, respectively, when सुँ follows.



त्वाहौ<sup>1/2</sup> सौ<sup>7/1</sup> । ~ युष्मदस्मदोः<sup>6/2</sup> मपर्यन्तस्य<sup>6/1</sup>

2 words in the सूत्र; 2 words as अनुवृत्ति

- त्वाहौ 1/2 – त्वः च अहः च त्वाहौ (ID) ।; this is आदेश. 1.1.155 अनेकालिशत् सर्वस्य। and 1.3.10 यथासङ्घमनुदेशः समानाम् । are used.
- सौ 7/1 – प्रातिपदिक सुँ; in परसप्तमी.
- युष्मदस्मदोः 6/2 – From 7.2.86 युष्मदस्मदोरनादेशे।; in सम्बन्धे षष्ठी to मपर्यन्तस्य.
- मपर्यन्तस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 7.2.91 मपर्यन्तस्य।; मः पर्यन्तः यस्य मपर्यन्तः (116B), तस्य।; in स्थानेयोगा षष्ठी.

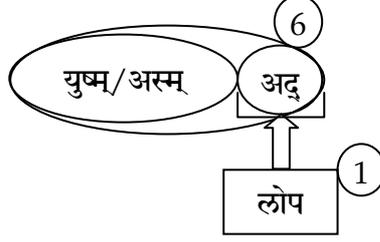
[LSK] अनयोः<sup>6/2</sup> मपर्यन्तस्य<sup>6/1</sup> त्वाहौ<sup>1/2</sup> आदेशौ<sup>1/2</sup> स्तः<sup>III/2</sup> ॥

त्व and अह are the respective substitutes for the portion up to म् of युष्मद् and अस्मद् when सुँ follows.

This is अपवाद to त्व/म by 7.2.97 त्वमावेकवचने । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तस्य विभक्तौ.

[विधिसूत्रम्] 7.2.90 शेषे लोपः । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तात्

टि part of युष्मद् and अस्मद् is elided.



शेषे<sup>7/1</sup> लोपः<sup>1/1</sup> । ~ युष्मदस्मदोः<sup>6/2</sup> मपर्यन्तात्<sup>5/1</sup>

2 words in the सूत्र; 2 words as अनुवृत्ति

- शेषे 7/1 – शेष, remaining part of युष्मद् and अस्मद्; in अधिकरणे सप्तमी in the sense of स्थानेयोगा षष्ठी.
- लोपः 1/1 – This is आदेश.
- युष्मदस्मदोः 6/2 – From 7.2.86 युष्मदस्मदोरनादेशे।; in सम्बन्धे षष्ठी to मपर्यन्तस्य.
- मपर्यन्तात् 6/1 – From अधिकारसूत्र 7.2.91 मपर्यन्तस्य।; मः पर्यन्तः यस्य मपर्यन्तः (116B), तस्य।; in विभक्ते पञ्चमी to शेषे.

[LSK] एतयोः<sup>6/2</sup> टि-लोपः<sup>1/1</sup> ।

There is elision of टि of युष्मद् and अस्मद्.

[LSK] त्वम्<sup>1/1</sup> । अहम्<sup>1/1</sup> ॥

युष्मद् + सुँ      अस्मद् + सुँ

युष्मद् + अम्      अस्मद् + अम्

त्व अद् + अम्      अह अद् + अम्

त्व + अम्      अह + अम्

त्वम्      अहम्

7.1.28 डेप्रथमयोरम् । ~ युष्मदस्मद्भ्याम्

7.2.94 त्वाहौ सौ । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तस्य

7.2.90 शेषे लोपः । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तात्

6.1.107 अमि पूर्वः। ~ अकः पूर्वपरयोः एकः संहितायाम्

Here is another interpretation of this sūtra by सिद्धान्तकौमुदी, which is more authentic to the intention of सूत्रकार.

[SK] आत्व-यत्व-निमित्त-इतर-विभक्तौ<sup>7/1</sup> परतः<sup>0</sup> युष्मदस्मदोः<sup>6/2</sup> अन्त्यस्य<sup>6/1</sup> लोपः<sup>1/1</sup> स्यात्<sup>III/1</sup> ।

There is elision of the last letter of युष्मद् and अस्मद् when विभक्ति other than the cause for आ (7.2.86 to 7.2.88) and य् (7.2.89) follows.

This sūtra 7.2.90 शेषे लोपः। comes at the end of the section starting from 7.2.86 युष्मदस्मदोरनादेशे।. शेष here means प्रत्ययस्य which have not been told in the previous sūtras.

The प्रत्ययस्य which have been told were अनादेश, that which is not आदेश, द्वितीया, and प्रथमा द्विवचनम्. These are निमित्तस्य for आत्व and यत्व. शेष here therefore means any other प्रत्ययस्य, namely, that which is आदेश, but not 2<sup>nd</sup> case or 1/2.

To see which विभक्तिस्य are to be called शेष here in this sūtra, refer to “Summary of the section of युष्मद् and अस्मद्” which comes at the end of this section.

लघुसिद्धान्तकौमुदीकार introduced शेष as टि for temporary understanding for the beginners who are following रूपसिद्धि method, rather than सूत्रक्रम.

In this interpretation, 1.1.52 अलोऽन्त्यस्य । is used for लोप. Then there is a need for an extra step to elide extra अ by 6.1.97 अतो गुणे। ~ पररूपम्, 6.1.107 अमि पूर्वः।, etc. For example –

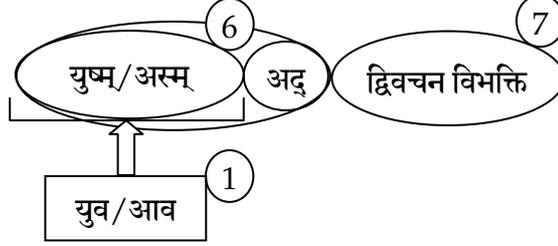
|               |              |  |
|---------------|--------------|--|
| युष्मद् + सुँ | अस्मद् + सुँ |  |
| युष्मद् + अम् | अस्मद् + अम् | 7.1.28 डेप्रथमयोरम् । ~ युष्मदस्मद्भ्याम्                        |
| त्व अद् + अम् | अह अद् + अम् | 7.2.94 त्वाहौ सौ । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तस्य                    |
| त्वद् + अम्   | अहद् + अम्   | 6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम् |
| त्व + अम्     | अह + अम्     | 7.2.90 शेषे लोपः । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तात्                    |
| त्वम्         | अहम्         | 6.1.107 अमि पूर्वः। ~ अकः पूर्वपरयोः एकः संहितायाम्              |

Wherever 7.2.90 शेषे लोपः। is applicable, that means, when modified सुप्-प्रत्यय other than 2<sup>nd</sup> case or 1/2 follows, these extra steps are required if सिद्धान्तकौमुदी interpretation is taken.

In 1/2 –

[विधिसूत्रम्] 7.2.92 युवावौ द्विवचने । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तस्य विभक्तौ

The portion up to म् of युष्मद् and अस्मद् is replaced by युव and आव, respectively, when द्विवचन विभक्ति follows.



युवावौ<sup>1/2</sup> द्विवचने<sup>7/1</sup> । ~ युष्मदस्मदोः<sup>6/2</sup> मपर्यन्तस्य<sup>6/1</sup> विभक्तौ<sup>7/1</sup>

2 words in the सूत्र; 3 words as अनुवृत्ति

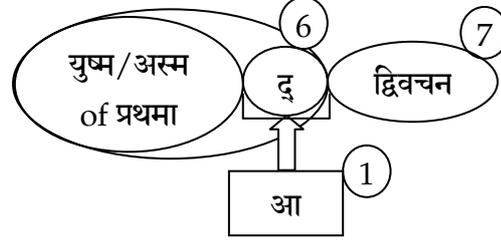
- युवावौ 1/2 – युवः च आवः च युवावौ (ID) ।; this is आदेश. 1.1.155 अनेकाल्शिात् सर्वस्य। and 1.3.10 यथासङ्घमनुदेशः समानाम् । are used.
- द्विवचने 7/1 – द्विवचन-संज्ञक सुप्-प्रत्ययस, namely औ, औट्, भ्याम्, ओस; in परसप्तमी.
- युष्मदस्मदोः 6/2 – From 7.2.86 युष्मदस्मदोरनादेशे।; in सम्बन्धे षष्ठी to मपर्यन्तस्य.
- मपर्यन्तस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 7.2.91 मपर्यन्तस्य।; मः पर्यन्तः यस्य मपर्यन्तः (116B), तस्य।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- विभक्तौ 7/1 – From अष्टन आ विभक्तौ ।; in परसप्तमी.

[LSK] द्वयोः<sup>6/2</sup> उक्तौ<sup>7/1</sup> अनयोः<sup>6/2</sup> मपर्यन्तस्य<sup>6/1</sup> युवावौ<sup>1/2</sup> स्तः<sup>III/2</sup> विभक्तौ<sup>7/1</sup> ॥

When dual is mentioned (in dual), युव and आव are the respective substitutes for the portion up to म् of युष्मद् and अस्मद् when विभक्ति follows.

[विधिसूत्रम्] 7.2.88 प्रथमायाश्च द्विवचने भाषायाम् । ~ युष्मदस्मदोः आ

In the non-Vedic language, आ takes place at the end of युष्मद् and अस्मद् of 1<sup>st</sup> case in dual.



प्रथमायाः 6/1 च<sup>0</sup> द्विवचने<sup>7/1</sup> भाषायाम्<sup>7/1</sup> । ~ युष्मदस्मदोः 6/2 आ<sup>1/1</sup>

4 words in the सूत्र; 2 words as अनुवृत्ति

- प्रथमायाः 6/1 – प्रथमा विभक्ति; in सम्बन्धे षष्ठी to युष्मदस्मदोः.
- च 0 – Connection with previous sūtra.
- द्विवचने 7/1 – द्विवचन-संज्ञक सुप्-प्रत्ययः, namely, only औ, because of प्रथमायाः; in परसप्तमी.
- भाषायाम् 7/1 – प्रातिपदिक is भाषा, indication of non-Vedic language; in विषयसप्तमी. If it is in Veda, the forms are युवम् and आवम्.
- युष्मदस्मदोः 6/2 – From 7.2.86 युष्मदस्मदोरनादेशे; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- आ 1/1 – From अष्टन आ विभक्तौ ; this is आदेश. 1.1.52 अलोऽन्त्यस्य । is used.

[LSK] औडि<sup>7/1</sup> एतयोः<sup>6/2</sup> आत्वम्<sup>1/1</sup> लोके<sup>7/1</sup> ।

आ is the substitute for the last letter of युष्मद् and अस्मद् of 1<sup>st</sup> case in dual.

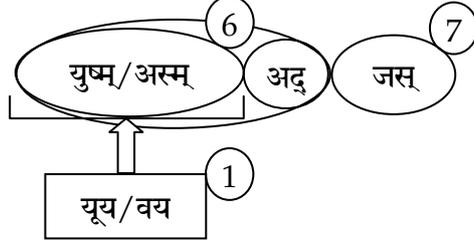
[LSK] युवाम्<sup>1/2</sup> । आवाम्<sup>1/2</sup> ॥

|               |              |  |
|---------------|--------------|--|
| युष्मद् + औ   | अस्मद् + औ   |  |
| युष्मद् + अम् | अस्मद् + अम् | 7.1.28 डेप्रथमयोरम् । ~ युष्मदस्मद्भ्याम्                        |
| युव अद् + अम् | आव अद् + अम् | 7.2.92 युवावौ द्विवचने । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तस्य विभक्तौ      |
| युवद् + अम्   | आवद् + अम्   | 6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम् |
| युव आ + अम्   | आव आ + अम्   | 7.2.88 प्रथमायाश्च द्विवचने भाषायाम् । ~ युष्मदस्मदोः आ          |
| युवा + अम्    | आवा + अम्    | 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः । ~ एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्          |
| युवाम्        | आवाम्        | 6.1.107 अमि पूर्वः । ~ अकः पूर्वपरयोः एकः संहितायाम्             |

In 1/3 –

[विधिसूत्रम्] 7.2.93 यूयवयौ जसि । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तस्य

The portion up to म् of युष्मद् and अस्मद् is replaced by यूय and वय, respectively, when जस् follows.



यूयवयौ<sup>1/2</sup> जसि<sup>7/1</sup> । ~ युष्मदस्मदोः<sup>6/2</sup> मपर्यन्तस्य<sup>6/1</sup>

2 words in the सूत्र; 2 words as अनुवृत्ति

- यूयवयौ 1/2 – यूयः च वयः च युवावौ (ID) ।; this is आदेश. 1.1.155 अनेकाल्शिात् सर्वस्य। and 1.3.10 यथासङ्घमनुदेशः समानाम् । are used.
- जसि 7/1 – जस्-प्रत्यय; in परसप्तमी.
- युष्मदस्मदोः 6/2 – From 7.2.86 युष्मदस्मदोरनादेशे।; in सम्बन्धे षष्ठी to मपर्यन्तस्य.
- मपर्यन्तस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 7.2.91 मपर्यन्तस्य।; मः पर्यन्तः यस्य मपर्यन्तः (116B), तस्य।; in स्थानेयोगा षष्ठी.

[LSK] अनयोः<sup>6/2</sup> मपर्यन्तस्य<sup>6/1</sup> ।

यूय and वय are the respective substitutes for the portion up to म् of युष्मद् and अस्मद् when जस् follows.

[LSK] यूयम्<sup>1/3</sup> । वयम्<sup>1/3</sup> ॥

युष्मद् + जस्      अस्मद् + जस्

युष्मद् + अम्      अस्मद् + अम्

यूय अद् + अम्      वय अद् + अम्

यूयद् + अम्      वयद् + अम्

यूय + अम्      वय + अम्

यूयम्      वयम्

7.1.28 डेप्रथमयोरम् । ~ युष्मदस्मद्भ्याम्

7.2.93 यूयवयौ जसि । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तस्य

6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

7.2.90 शेषे लोपः । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तात्

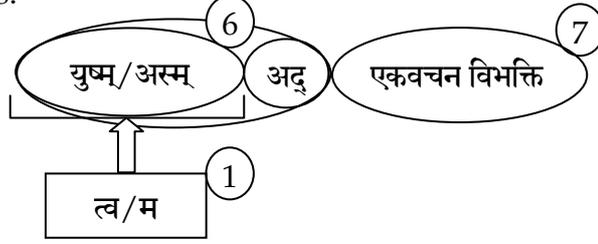
प्रत्यय is आदेश other than 2<sup>nd</sup> case or 1/2.

6.1.107 अमि पूर्वः। ~ अकः पूर्वपरयोः एकः संहितायाम्

In 2/1 –

[विधिसूत्रम्] 7.2.97 त्वमावेकवचने । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तस्य विभक्तौ

The portion up to म् of युष्मद् and अस्मद् is replaced by त्व and म, respectively, when एकवचन विभक्ति follows.



त्वमौ<sup>1/2</sup> एकवचने<sup>7/1</sup> । ~ युष्मदस्मदोः<sup>6/2</sup> मपर्यन्तस्य<sup>6/1</sup> विभक्तौ<sup>7/1</sup>

2 words in the सूत्र; 3 words as अनुवृत्ति

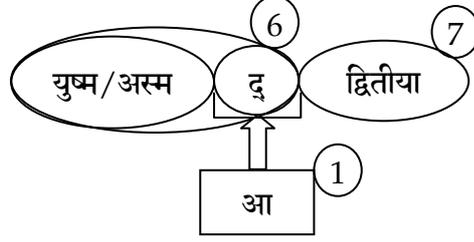
- त्वमौ 1/2 – त्वः च मः च त्वमौ (ID) ।; this is आदेश. 1.1.155 अनेकाल्शिात् सर्वस्य। and 1.3.10 यथासङ्घमनुदेशः समानाम् । are used.
- एकवचने 7/1 – एववचन-संज्ञक सुप्-प्रत्ययः, except for सुँ because of 7.2.94 त्वाहौ सौ ।, namely, अम्, टा, डे, डसिँ, डस्, and डि; in परसप्तमी.
- युष्मदस्मदोः 6/2 – From 7.2.86 युष्मदस्मदोरनादेशे।; in सम्बन्धे षष्ठी to मपर्यन्तस्य.
- मपर्यन्तस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 7.2.91 मपर्यन्तस्य।; मः पर्यन्तः यस्य मपर्यन्तः (116B), तस्य।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- विभक्तौ 7/1 – From अष्टन आ विभक्तौ ।; in परसप्तमी.

[LSK] एकस्य<sup>6/1</sup> उक्तौ<sup>7/1</sup> अनयोः<sup>6/2</sup> मपर्यन्तस्य<sup>6/1</sup> त्वमौ<sup>1/2</sup> स्तः<sup>III/2</sup> विभक्तौ<sup>7/1</sup> ॥

When singular is mentioned (in singular), त्व and म are the respective substitutes for the portion up to म् of युष्मद् and अस्मद् when एकवचन विभक्ति follows.

[विधिसूत्रम्] 7.2.87 द्वितीयायाञ्च । ~ युष्मदस्मदोः आ

आ takes place at the end of युष्मद् and अस्मद् in 2<sup>nd</sup> case.



द्वितीयायाम्<sup>7/1</sup> च<sup>0</sup> । ~ युष्मदस्मदोः<sup>6/2</sup> आ<sup>1/1</sup>

2 words in the सूत्र; 2 words as अनुवृत्ति

- द्वितीयायाम्<sup>7/1</sup> – द्वितीया-संज्ञक सुप्-प्रत्ययस, namely, only अम्, औट्, and शस्; in परसप्तमी.
- च<sup>0</sup> – Connection with previous sūtra.
- युष्मदस्मदोः<sup>6/2</sup> – From 7.2.86 युष्मदस्मदोरनादेशे।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- आ<sup>1/1</sup> – From अष्टन आ विभक्तौ ।; this is आदेश. 1.1.52 अलोऽन्त्यस्य। is used.

[LSK] अनयोः<sup>6/2</sup> आत्<sup>1/1</sup> स्यात्<sup>III/1</sup>।

आ is the substitute for the last letter of युष्मद् and अस्मद् in 2<sup>nd</sup> case.

[LSK] त्वाम्<sup>2/1</sup> । माम्<sup>2/1</sup> ॥

युष्मद् + अम्      अस्मद् + अम्

युष्मद् + अम्      अस्मद् + अम्

त्व अद् + अम्      म अद् + अम्

त्वद् + अम्      मद् + अम्

त्व आ + अम्      म आ + अम्

त्वा + अम्      मा + अम्

त्वाम्      माम्

7.1.28 डेप्रथमयोरम् । ~ युष्मदस्मद्भ्याम्

7.2.97 त्वमावेकवचने । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तस्य विभक्तौ

6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

7.2.87 द्वितीयायाञ्च । ~ युष्मदस्मदोः आ

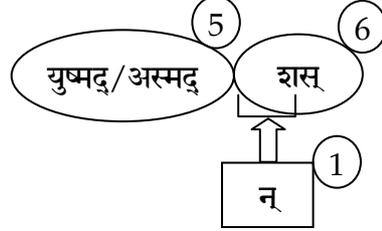
6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः । ~ एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

6.1.107 अमि पूर्वः। ~ अकः पूर्वपरयोः एकः संहितायाम्

In 2/3 – This is अपवाद to अम् by 7.1.28 डेप्रथमयोरम् । ~ युष्मदस्मद्भ्याम्.

[विधिसूत्रम्] 7.1.29 शसो न । ~ युष्मदस्मद्भ्याम्

After युष्मद् and अस्मद्, डे, the first letter of शस् is replaced by न्.



शसः 6/1 न 1/1 । ~ युष्मदस्मद्भ्याम् 5/2

2 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- शसः 6/1 – प्रातिपदिक शस् (द्वितीया विभक्तिः बहुवचनम्); in स्थानेयोगा षष्ठी.

Because the निमित्त is told by 5<sup>th</sup> case by 1.1.57 तस्मादित्युत्तरस्य।, 1.1.54 आदेः परस्य। is the परिभाषा to decide which letter is to be replaced. Thus अ, the first letter of अस्, is replaced.

- न 1/1 – This is आदेश. अ after न् is उच्चारणार्थ. विभक्ति is लुप्त.
- युष्मदस्मद्भ्याम् 5/2 – From 7.1.27 युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश्।; in पूर्वपञ्चमी.

[LSK] आभ्याम् 5/2 शसः 6/1 नः 1/1 स्यात् III/1।

न् is the substitute for the first letter of शस् when युष्मद्/अस्मद् precedes.

[LSK] अमः 6/1 अपवादः 1/1 ।

This sūtra is अपवाद, exception, to 7.1.28 डेप्रथमयोरम् । ~ युष्मदस्मद्भ्याम्.

[LSK] “आदेः परस्य (1.1.54)” ।

By परिभाषा 1.1.54 आदेः परस्य।, the substitute comes in the place of the first letter of what is told in the 6<sup>th</sup> case.

[LSK] “संयोगान्तस्य लोपः (8.2.23)” । युष्मान् 2/3 । अस्मान् 2/3 ॥

युष्मद् + शस्      अस्मद् + शस्

युष्मद् + न्स्      अस्मद् + न्स्

युष्म आ + न्स्      अस्म आ + न्स्

युष्मा + न्स्      अस्मा + अम्

युष्मान्      अस्मान्

7.1.29 शसो न । ~ युष्मदस्मद्भ्याम्, with 1.1.54 आदेः परस्य।

7.2.87 द्वितीयायाञ्च । ~ युष्मदस्मदोः आ

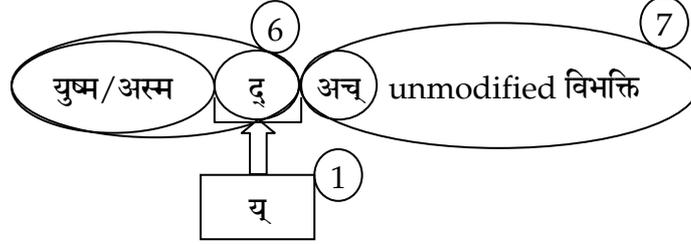
6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः । ~ एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः। ~ पदस्य

In 3/1 – This is अपवाद to 7.2.86 युष्मदस्मदोरनादेशे । ~ आ विभक्तौ.

[विधिसूत्रम्] 7.2.89 योऽचि । ~ युष्मदस्मदोः अनादेशे विभक्तौ

य् takes place at the end of युष्मद् and अस्मद् when vowel-beginning unmodified विभक्ति follows.



यः 1/1 अचि 7/1 । ~ युष्मदस्मदोः 6/2 अनादेशे 7/1 विभक्तौ 7/1

2 words in the सूत्र; 3 words as अनुवृत्ति

- यः 1/1 – The अ after य् is उच्चारणार्थ. This is आदेश. 1.1.52 अलोऽन्त्यस्य । is used.
- अचि 7/1 – This is अल्-ग्रहण, mentioning of letter, and adjective to अनादेशे in 7<sup>th</sup> case. Thus तदादिविधि is applied and results in “अजादौ अनादेशे”.
- युष्मदस्मदोः 6/2 – From 7.2.86 युष्मदस्मदोरनादेशे।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- अनादेशे 7/1 – From 7.2.86 युष्मदस्मदोरनादेशे।; in परसप्तमी. न आदेशः अनादेशः (NT), तस्मिन् ।. This is adjective to विभक्तौ.
- विभक्तौ 7/1 – From अष्टन आ विभक्तौ ।; in परसप्तमी.

[LSK] अनयोः 6/2 यकार-आदेशः 1/1 स्यात् III/1 अनादेशे 7/1 अजादौ 7/1 परतः 0 ।

य् is the substitute for the last letter of युष्मद् and अस्मद् when अच्-beginning विभक्ति which is not आदेश follows.

[LSK] त्वया 3/1 । मया 3/1 ॥

युष्मद् + टा      अस्मद् + टा

त्व अद् + आ      म अद् + आ

7.2.97 त्वमावेकवचने । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तस्य विभक्तौ

त्वद् + आ      मद् + आ

6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

त्वय् + आ      मय् + आ

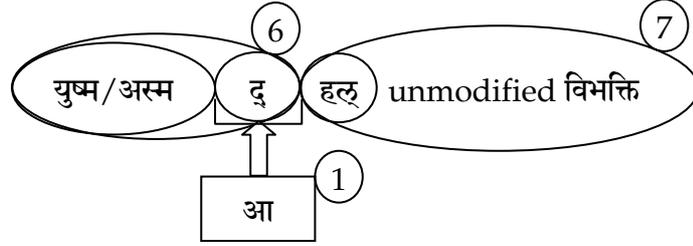
7.2.89 योऽचि । ~ युष्मदस्मदोः अनादेशे विभक्तौ

त्वया      मया

In 3/2, 4/2, 5/2 –

[विधिसूत्रम्] 7.2.86 युष्मदस्मदोरनादेशे । ~ आ विभक्तौ

आ takes place at the end of युष्मद् and अस्मद् when consonant-beginning unmodified विभक्ति follows.



युष्मदस्मदोः 6/2 अनादेशे 7/1 । ~ आ 1/1 विभक्तौ 7/1

2 words in the सूत्र; 2 words as अनुवृत्ति

- युष्मदस्मदोः 6/2 – युष्मद् च अस्मद् च युष्मदस्मदौ (ID), तयोः।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- अनादेशे 7/1 – न आदेशः अनादेशः (NT), तस्मिन् ।. This is adjective to विभक्तौ.
- आ 1/1 – From अष्टन आ विभक्तौ ।; this is आदेश. 1.1.52 अलोऽन्त्यस्य । is used.
- विभक्तौ 7/1 – From अष्टन आ विभक्तौ ।; in परसप्तमी.

[LSK] अनयोः 6/2 आत् 1/1 स्यात् III/1 अनादेशे 7/1 हलादौ 7/1 विभक्तौ 7/1 ।

आ is the substitute for the last letter of युष्मद् and अस्मद् when हल्-beginning विभक्ति which is not आदेश follows.

[LSK] युवाभ्याम् 3/2 । आवाभ्याम् 3/2 ॥

युष्मद् + भ्याम्    अस्मद् + भ्याम्

युव अद् + भ्याम्    आव अद् + भ्याम्

युवद् + भ्याम्    आवद् + भ्याम्

युव आ + भ्याम्    आव आ + भ्याम्

युवाभ्याम्    आवाभ्याम्

7.2.92 युवावौ द्विवचने । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तस्य विभक्तौ

6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

7.2.86 युष्मदस्मदोरनादेशे । ~ आ विभक्तौ

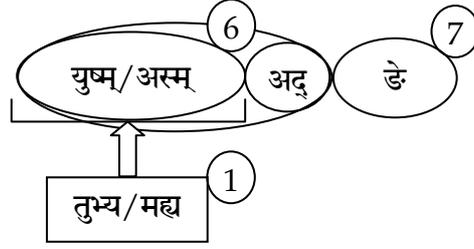
6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः । ~ एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

Note that हलि can be brought from 7.2.85 रायो हलि । ~ आ विभक्तौ. However, by अपवाद् 7.2.89 योऽचि । ~ युष्मदस्मदोः अनादेशे विभक्तौ, अजादि विभक्ति take य्, instead of आ. Then, आ becomes आदेश only for हलादि विभक्ति. Thus हलि is not really necessary when सूत्रक्रम is considered.

In 4/1 – This is अपवाद to त्व/म by 7.2.97 त्वमावेकवचने । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तस्य विभक्तौ.

### [विधिसूत्रम्] 7.2.95 तुभ्यमह्यौ डयि । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तस्य

The portion up to म् of युष्मद् and अस्मद् is replaced by तुभ्य and मह्य, respectively, when डि follows.



तुभ्यमह्यौ<sup>1/2</sup> डयि<sup>7/1</sup> । ~ युष्मदस्मदोः<sup>6/2</sup> मपर्यन्तस्य<sup>6/1</sup>

2 words in the सूत्र; 2 words as अनुवृत्ति

- तुभ्यमह्यौ 1/2 – तुभ्यः च मह्यः च तुभ्यमह्यौ (ID) ।; this is आदेश. 1.1.155 अनेकाल्शिात् सर्वस्य। and 1.3.10 यथासङ्घमनुदेशः समानाम् । are used.
- डयि 7/1 – डे-प्रत्यय; in परसप्तमी.
- युष्मदस्मदोः 6/2 – From 7.2.86 युष्मदस्मदोरनादेशे।; in सम्बन्धे षष्ठी to मपर्यन्तस्य.
- मपर्यन्तस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 7.2.91 मपर्यन्तस्य।; मः पर्यन्तः यस्य मपर्यन्तः (116B), तस्य।; in स्थानेयोगा षष्ठी.

[LSK] अनयोः<sup>6/2</sup> मपर्यन्तस्य<sup>6/1</sup> ।

तुभ्य and मह्य are the respective substitutes for the portion up to म् of युष्मद् and अस्मद् when डे follows.

[LSK] टि-लोपः<sup>1/1</sup>। तुभ्यम्<sup>4/1</sup> । मह्यम्<sup>4/1</sup> ॥

युष्मद् + डे      अस्मद् + डे

युष्मद् + अम्      अस्मद् + अम्      7.1.28 डेप्रथमयोरम् । ~ युष्मदस्मद्भ्याम्

तुभ्य अद् + अम्      मह्य अद् + अम्      7.2.95 तुभ्यमह्यौ डयि । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तस्य

तुभ्यद् + अम्      मह्यद् + अम्      6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

तुभ्य + अम्      मह्य + अम्      7.2.90 शेषे लोपः । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तात्

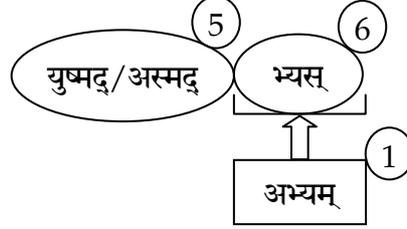
प्रत्यय is आदेश other than 2<sup>nd</sup> case or 1/2.

तुभ्यम्      मह्यम्      6.1.107 अमि पूर्वः। ~ अकः पूर्वपरयोः एकः संहितायाम्

In 4/3 –

[विधिसूत्रम्] 7.1.30 भ्यसोऽभ्यम् । ~ युष्मदस्मद्भ्याम्

After युष्मद् and अस्मद्, भ्यस् is replaced by अभ्यम्.



भ्यसः 6/1 अभ्यम् 1/1 । ~ युष्मदस्मद्भ्याम् 5/2

2 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- भ्यसः 6/1 – प्रातिपदिक भ्यस् (4/3, 5/3); in स्थानेयोगा षष्ठी.
- अभ्यम् 1/1 – This is आदेश. Being अनेकाल्, 1.1.55 अनेकाल्शित्सर्वस्य। is applied, by negating 1.1.54 आदेः परस्य।.
- युष्मदस्मद्भ्याम् 5/2 – From 7.1.27 युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश।; in पूर्वपञ्चमी.

[LSK] आभ्याम् 5/2 परस्य 6/1।

अभ्यम् is the substitute for भ्यस् when युष्मद्/अस्मद् precedes.

[LSK] युष्मभ्यम् 4/3 । अस्मभ्यम् 4/3 ॥

युष्मद् + भ्यस्    अस्मद् + भ्यस्

युष्मद् + अभ्यम्    अस्मद् + अभ्यम्

युष्म + अभ्यम्    अस्म + अभ्यम्

7.1.30 भ्यसोऽभ्यम् । ~ युष्मदस्मद्भ्याम्

7.2.90 शेषे लोपः । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तात्

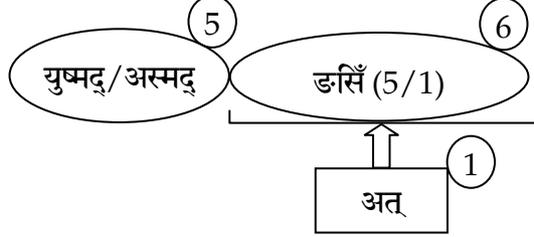
प्रत्यय is आदेश other than 2<sup>nd</sup> case or 1/2.

युष्मभ्यम्    अस्मभ्यम्

In 5/1 –

[विधिसूत्रम्] 7.1.32 एकवचनस्य च । ~ युष्मदस्मद्भ्याम् पञ्चम्याः अत्

After युष्मद् and अस्मद्, ङसिँ (5<sup>th</sup> case singular) is also replaced by अत्.



एकवचनस्य<sup>6/1</sup> च<sup>0</sup> । ~ युष्मदस्मद्भ्याम्<sup>5/2</sup> पञ्चम्याः<sup>6/1</sup> अत्<sup>1/1</sup>

2 words in the सूत्र; 3 words as अनुवृत्ति

- एकवचनस्य 6/1 – एकवचन-संज्ञक-विभक्ति; in स्थानेयोगा षष्ठी. With पञ्चम्याः, it is determined as ङसिँ.
- च 0 – Connecting with previous sūtra to bring अत्.
- युष्मदस्मद्भ्याम् 5/2 – From 7.1.27 युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश।; in पूर्वपञ्चमी.
- पञ्चम्याः 6/1 – From 7.1.31 पञ्चम्या अत् ।; पञ्चमी विभक्ति; in सम्बन्धे षष्ठी to एकवचनस्य.
- अत् 1/1 – From 7.1.31 पञ्चम्या अत् ।; this is आदेश. Being अनेकाल्, 1.1.55 अनेकाल्शिखित्सर्वस्य। is applied, by negating 1.1.54 आदेः परस्य।.

[LSK] आभ्याम्<sup>5/2</sup> ङसेः<sup>6/1</sup> अत्<sup>1/1</sup>।

अत् is the substitute for भ्यस् of 5<sup>th</sup> case when युष्मद्/अस्मद् precedes.

[LSK] त्वत्<sup>5/1</sup> । मत्<sup>5/1</sup> ॥

युष्मद् + ङसिँ    अस्मद् + ङसिँ

युष्मद् + अत्    अस्मद् + अत्

त्व अद् + अत्    म अद् + अत्

त्वद् + अत्    मद् + अत्

त्व + अत्    म + अत्

7.1.32 एकवचनस्य च । ~ युष्मदस्मद्भ्याम् पञ्चम्याः अत्

7.2.97 त्वमावेकवचने । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तस्य विभक्तौ

6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

7.2.90 शेषे लोपः । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तात्

प्रत्यय is आदेश other than 2<sup>nd</sup> case or 1/2.

त्वत्    मत्

6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

त्वद्    मद्

8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

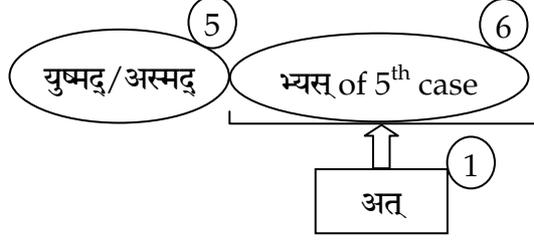
त्वत्    मत्

8.4.56 वाऽवसाने । ~ चर् झलाम्

In 5/3 – This is अपवाद to अभ्यम् by 7.1.30 भ्यसोऽभ्यम् । ~ युष्मदस्मद्भ्याम्.

[विधिसूत्रम्] 7.1.31 पञ्चम्या अत् । ~ युष्मदस्मद्भ्याम् भ्यसः

After युष्मद् and अस्मद्, भ्यस् of 5<sup>th</sup> case is replaced by अत्.



पञ्चम्याः 6/1 अत् 1/1 । ~ युष्मदस्मद्भ्याम् 5/2 भ्यसः 6/1

2 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- पञ्चम्याः 6/1 – पञ्चमी विभक्ति; in सम्बन्धे षष्ठी to भ्यसः.
- अत् 1/1 – This is आदेश. Being अनेकाल्, 1.1.55 अनेकाल्शित्सर्वस्य। is applied, by negating 1.1.54 आदेः परस्य।.
- भ्यसः 6/1 – प्रातिपदिक भ्यस् (4/3, 5/3); in स्थानेयोगा षष्ठी.
- युष्मदस्मद्भ्याम् 5/2 – From 7.1.27 युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश्।; in पूर्वपञ्चमी.

[LSK] आभ्याम् 5/2 पञ्चम्याः 6/1 भ्यसः 6/1 अत् 1/1 स्यात् III/1 ।

अत् is the substitute for भ्यस् of 5<sup>th</sup> case when युष्मद्/अस्मद् precedes.

[LSK] युष्मत् 5/3 । अस्मत् 5/3 ॥

युष्मद् + भ्यस्    अस्मद् + भ्यस्

युष्मद् + अत्    अस्मद् + अत्

युष्म + अत्    अस्म + अत्

युष्मत्    अस्मत्

युष्मद्    अस्मद्

युष्मत्    अस्मत्

7.1.31 पञ्चम्या अत् । ~ युष्मदस्मद्भ्याम् भ्यसः

7.2.90 शेषे लोपः । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तात्

प्रत्यय is आदेश other than 2<sup>nd</sup> case or 1/2.

6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

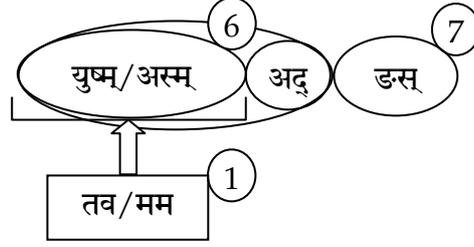
8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

8.4.56 वाऽवसाने । ~ चर् झलाम्

In 6/1 – This is अपवाद to त्व/म by 7.2.97 त्वमावेकवचने । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तस्य विभक्तौ.

[विधिसूत्रम्] 7.2.96 तवममौ ङसि । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तस्य

The portion up to म् of युष्मद् and अस्मद् is replaced by तव and मम, respectively, when ङस् follows.



तवममौ<sup>1/2</sup> ङसि<sup>7/1</sup> । ~ युष्मदस्मदोः<sup>6/2</sup> मपर्यन्तस्य<sup>6/1</sup>

2 words in the सूत्र; 2 words as अनुवृत्ति

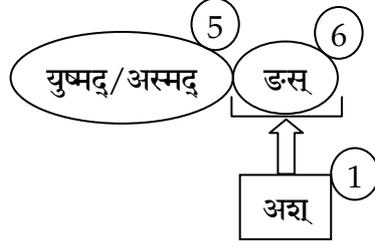
- तव-ममौ 1/2 – तवः च ममः च तुभ्यमहौ (ID) ।; this is आदेश. 1.1.155 अनेकाल्लिशत् सर्वस्य। and 1.3.10 यथासङ्घमनुदेशः समानाम् । are used.
- ङसि 7/1 – ङस्-प्रत्यय (6/1); in परसप्तमी.
- युष्मदस्मदोः 6/2 – From 7.2.86 युष्मदस्मदोरनादेशे।; in सम्बन्धे षष्ठी to मपर्यन्तस्य.
- मपर्यन्तस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 7.2.91 मपर्यन्तस्य।; मः पर्यन्तः यस्य मपर्यन्तः (116B), तस्य।; in स्थानेयोगा षष्ठी.

[LSK] अनयोः<sup>6/2</sup> मपर्यन्तस्य<sup>6/1</sup> तव-ममौ<sup>1/2</sup> स्तः<sup>III/2</sup> ङसि<sup>7/1</sup> ॥

तव and मम are the respective substitutes for the portion up to म् of युष्मद् and अस्मद् when ङस् follows.

## [विधिसूत्रम्] 7.1.27 युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश् ।

After युष्मद् and अस्मद्, ङस् is replaced by अश्.



युष्मदस्मद्भ्याम्<sup>5/2</sup> ङसोः<sup>6/1</sup> अश्<sup>1/1</sup> ।

3 words in the सूत्र; no अनुवृत्ति is required.

- युष्मदस्मद्भ्याम् 5/2 – In पूर्वपञ्चमी.
- ङसोः 6/1 – प्रातिपदिक ङस् (6/1); in स्थानेयोगा षष्ठी.
- अश् 1/1 – This is आदेश. श् is इत् by 1.3.3 हलन्त्यम्।. Being शित, the whole suffix is replaced by अश् by 1.1.55 अनेकाल्शित्सर्वस्य।.

[LSK] तव<sup>6/1</sup> । मम<sup>6/1</sup> ॥

युष्मद् + ङस्    अस्मद् + ङस्

तव अद् + ङस्    मम अद् + ङस्

तवद् + ङस्    ममद् + ङस्

तवद् + अ    ममद् + अ

तव + अ    मम + अ

तव    मम

7.2.96 तवममौ ङसि । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तस्य

6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

7.1.27 युष्मस्मद्भ्यां ङसोऽश् ।

7.2.90 शेषे लोपः । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तात्

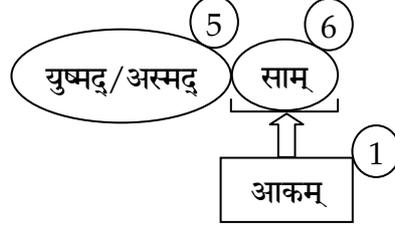
प्रत्यय is आदेश other than 2<sup>nd</sup> case or 1/2.

6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

In 6/3 –

[विधिसूत्रम्] 7.1.33 साम आकम् । ~ युष्मदस्मद्भ्याम्

After युष्मद् and अस्मद्, साम् (6/3) is replaced by आकम्.



साम्: <sup>6/1</sup> आकम् <sup>1/1</sup> । ~ युष्मदस्मद्भ्याम् <sup>5/2</sup>

2 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- साम्: 6/1 – प्रातिपदिक is साम् (6/3); in स्थानेयोगा षष्ठी.

साम् is आम् सुप्-प्रत्यय with सुट्-आगम, which will not come after युष्मद्/अस्मद्. The form साम् indicates that सुट्-आगम should be avoided.

- आकम् 1/1 – This is आदेश. Being अनेकाल्, 1.1.55 अनेकाल्शिात्सर्वस्य। is applied, by negating 1.1.54 आदेः परस्य।.
- युष्मदस्मद्भ्याम् 5/2 – From 7.1.27 युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश।; in पूर्वपञ्चमी.

[LSK] आभ्याम् <sup>5/2</sup> परस्य <sup>6/1</sup> साम्: <sup>6/1</sup> आकम् <sup>1/1</sup> स्यात् <sup>III/1</sup>।

आकम् is the substitute for साम् when युष्मद्/अस्मद् precedes.

[LSK] युष्माकम् <sup>6/3</sup> । अस्माकम् <sup>6/3</sup> ।

युष्मद् + ङसिँ अस्मद् + ङसिँ

युष्मद् + आकम् अस्मद् + आकम् 7.1.33 साम आकम् । ~ युष्मदस्मद्भ्याम्

युष्म + आकम् अस्म + आकम् 7.2.90 शेषे लोपः । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तात्

प्रत्यय is आदेश other than 2<sup>nd</sup> case or 1/2.

युष्माकम् अस्माकम् 6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

[LSK] त्वयि<sup>7/1</sup> । मयि<sup>7/1</sup> ।

युष्मद् + ङि अस्मद् + ङि

त्व अद् + इ म अद् + इ

त्वद् + इ मद् + इ

त्वय् + इ मय् + इ

त्वयि मयि

7.2.97 त्वमावेकवचने । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तस्य विभक्तौ

6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

7.2.89 योऽचि । ~ युष्मदस्मदोः अनादेशे विभक्तौ

[LSK] युवयोः<sup>7/2</sup> । आवयोः<sup>7/2</sup> ।

युष्मद् + ओस् अस्मद् + ओस्

युव अद् + ओस् आव अद् + ओस्

युवद् + ओस् आवद् + ओस्

युवय् + ओस् आवय् + ओस्

युवयोः आवयोः

7.2.92 युवावौ द्विवचने । ~ युष्मदस्मदोः मपर्यन्तस्य विभक्तौ

6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

7.2.89 योऽचि । ~ युष्मदस्मदोः अनादेशे विभक्तौ

8.2.66, 8.3.15

[LSK] युष्मासु<sup>7/3</sup> । अस्मासु<sup>7/3</sup> ॥

युष्मद् + सुप् अस्मद् + सुप्

युष्म आ + सु अस्म आ + सु

युष्मा + सु अस्मा + सु

युष्मासु अस्मासु

7.2.86 युष्मदस्मदोरनादेशे । ~ आ विभक्तौ

6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः । ~ एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

Summary of declension of युष्मद्/अस्मद् (द्-पुं-3) by the part

|   | एकवचनम्          |        |        | द्विवचनम्              |        |        | बहुवचनम्               |        |        |
|---|------------------|--------|--------|------------------------|--------|--------|------------------------|--------|--------|
| 1 | त्वम् / अहम्     |        |        | युवाम् / आवाम्         |        |        | यूयम् / वयम्           |        |        |
|   | त्व/अह           | -      | अम्    | युव/आव                 | आ      | अम्    | यूय/वय                 | -      | अम्    |
|   | 7.2.94           | 7.2.90 | 7.1.28 | 7.2.92                 | 7.2.88 | 7.1.28 | 7.2.93                 | 7.2.90 | 7.1.28 |
| 2 | त्वाम् / माम्    |        |        | युवाम् / आवाम्         |        |        | युष्मान् / अस्मान्     |        |        |
|   | त्व/म            | आ      | अम्    | युव/आव                 | आ      | अम्    | युष्म/अस्म             | आ      | न्     |
|   | 7.2.97           | 7.2.87 | 7.1.28 | 7.2.92                 | 7.2.87 | 7.1.28 |                        | 7.2.87 | 7.1.29 |
| 3 | त्वया / मया      |        |        | युवाभ्याम् / आवाभ्याम् |        |        | युष्माभिः / अस्माभिः   |        |        |
|   | त्व/म            | य्     | आ      | युव/आव                 | आ      | भ्याम् | युष्म/अस्म             | आ      | भिस्   |
|   | 7.2.97           | 7.2.89 |        | 7.2.92                 | 7.2.86 |        |                        | 7.2.86 |        |
| 4 | तुभ्यम् / मह्यम् |        |        | same as above          |        |        | युष्मभ्यम् / अस्मभ्यम् |        |        |
|   | तुभ्य/मह्य       | -      | अम्    |                        |        |        | युष्म/अस्म             | -      | भ्यम्  |
|   | 7.2.95           | 7.2.90 | 7.1.28 |                        |        |        |                        | 7.2.90 | 7.1.30 |
| 5 | त्वत् / मत्      |        |        | same as above          |        |        | युष्मत् / अस्मत्       |        |        |
|   | त्व/म            | -      | अत्    |                        |        |        | युष्म/अस्म             | -      | अत्    |
|   | 7.2.97           | 7.2.90 | 7.1.32 |                        |        |        |                        | 7.2.90 | 7.1.31 |
| 6 | तव / मम          |        |        | युवयोः / आवयोः         |        |        | युष्माकम् / अस्माकम्   |        |        |
|   | तव/मम            | -      | अ      | युव/आव                 | य्     | ओस्    | युष्म/अस्म             | -      | आकम्   |
|   | 7.2.96           | 7.2.90 | 7.1.27 | 7.2.92                 | 7.2.89 |        |                        | 7.2.90 | 7.1.33 |
| 7 | त्वयि / मयि      |        |        | same as above          |        |        | युष्मासु/ अस्मासु      |        |        |
|   | त्व/म            | य्     |        |                        |        |        | युष्म/अस्म             | आ      | सु     |
|   | 7.2.97           | 7.2.89 |        |                        |        |        |                        | 7.2.86 |        |

## Summary of the section of युष्मद् and अस्मद्

Part (C): आदेश for प्रत्यय after युष्मद् and अस्मद्

|   | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---------|-----------|----------|
| 1 | 7.1.28  | 7.1.28    | 7.1.28   |
| 2 | 7.1.28  | 7.1.28    | 7.1.29   |
| 3 |         |           |          |
| 4 | 7.1.28  |           | 7.1.30   |
| 5 | 7.1.32  |           | 7.1.31   |
| 6 | 7.1.27  |           | 7.1.33   |
| 7 |         |           |          |

The light shaded area indicates उत्सर्ग.

The dark shaded area indicates अपवाद.

अश् for 6/1

7.1.27 युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश्।

अम् for 4/1 and 1<sup>st</sup>, 2<sup>nd</sup> case

7.1.28 ङेप्रथमयोरम् ।

न् for 2/3 (अपवाद to previous)

7.1.29 शसो न ।

अभ्यस् for भ्यस् (4/3, 5/3)

7.1.30 भ्यसोऽभ्यम् ।

अत् for भ्यस् (5/3) (अपवाद to previous)

7.1.31 पञ्चम्या अत् । ~ भ्यसः

अत् for 5/1

7.1.32 एकवचनस्य च । ~ पञ्चम्याः अत्

आकम् for 6/3

7.1.33 साम आकम् ।

Part (B): आदेश for the last letter of युष्मद् and अस्मद्

|   | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---------|-----------|----------|
| 1 | -       | आ         | -        |
| 2 | आ       | आ         | आ        |
| 3 | य्      | आ         | आ        |
| 4 | -       | आ         | -        |
| 5 | -       | आ         | -        |
| 6 | -       | य्        | -        |
| 7 | य्      | य्        | आ        |

The dark shaded area indicates that it is followed by प्रत्यय which is modified by आदेश.

The light shaded area indicates that it is followed by अजादि अनादेश.

|  |  |
|--|--|
| आ when unmodified प्रत्यय follows              | 7.2.86 युष्मदस्मदोरनादेशे । ~ आ विभक्तौ    |
| आ when 2 <sup>nd</sup> case (modified) follows | 7.2.87 द्वितीयायाञ्च । ~ आ                 |
| आ when 1/2 (modified) follows                  | 7.2.88 प्रथमायाश्च द्विवचने भाषायाम् । ~ आ |
| य् when अजादि unmodified प्रत्यय follows       | 7.2.89 योऽचि । ~ अनादेशे विभक्तौ           |
| लोप when प्रत्यय other than above follows      | 7.2.90 शेषे लोपः ।                         |

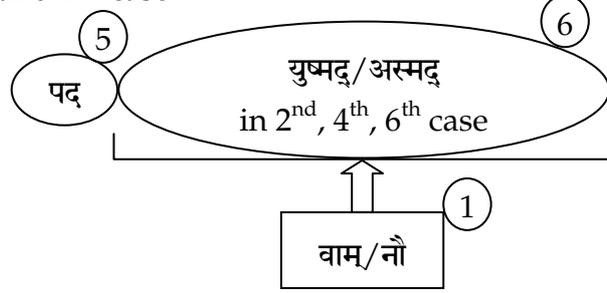
Part (A): आदेश for the portion ending with म of युष्मद् and अस्मद्

|   | एकवचनम्    | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|------------|-----------|----------|
| 1 | त्व/अह     | युव/आव    | यूय/वय   |
| 2 | त्व/म      | युव/आव    |          |
| 3 | त्व/म      | युव/आव    |          |
| 4 | तुभ्य/मह्य | युव/आव    |          |
| 5 | त्व/म      | युव/आव    |          |
| 6 | तव/मम      | युव/आव    |          |
| 7 | त्व/म      | युव/आव    |          |

|   |                          |
|---|--------------------------|
| युव/आव in dual                                | 7.2.92 युवावौ द्विवचने । |
| यूय/वय when 1/3 follows                       | 7.2.93 यूयवयौ जसि ।      |
| त्व/अह when 1/1 follows (अपवाद to 7.2.97)     | 7.2.94 त्वाहौ सौ ।       |
| तुभ्य/मह्य when 4/1 follows (अपवाद to 7.2.97) | 7.2.95 तुभ्यमह्यौ ङयि ।  |
| तव/मम when 6/1 follows (अपवाद to 7.2.97)      | 7.2.96 तवममौ ङसि ।       |
| त्व/म in singular                             | 7.2.97 त्वमावेकवचने ।    |

[विधिसूत्रम्] 8.1.20 युष्मद्-अस्मद्-वाम्-नौ । ~ पदात् अपादादौ

After पद, not at the beginning of a quarter, युष्मद् and अस्मद् are replaced by वाम् and नौ, respectively, in 6<sup>th</sup>, 4<sup>th</sup>, and 2<sup>nd</sup> case.



युष्मद्-अस्मद्-वाम्-नौ 6/2 षष्ठी-चतुर्थी-द्वितीया-स्थयोः 6/2 वाम्-नौ 1/2 । ~ पदात् 5/1 अपादादौ 7/1

3 words in the सूत्र; 2 words as अनुवृत्ति

- युष्मद्-अस्मद्-वाम्-नौ 6/2 – In स्थानेयोगा षष्ठी.
- षष्ठी-चतुर्थी-द्वितीया-स्थयोः 6/2 – Adjective to युष्मद्-अस्मद्-वाम्-नौ.
- वाम्-नौ 1/2 – वाम् च नौ च वांनावौ (ID) ।; this is आदेश. 1.1.55 अनेकाल्शिात्सर्वस्य । and 1.3.10 यथासङ्गमनुदेशः समानाम् । are used.
- पदात् 5/1 – From अधिकारसूत्र 8.1.17; in पूर्वपञ्चमी.
- अपादादौ 7/1 – From अधिकारसूत्र 8.1.18 अनुदात्तं सर्वमपादादौ ।; in अधिकरणे सप्तमी.

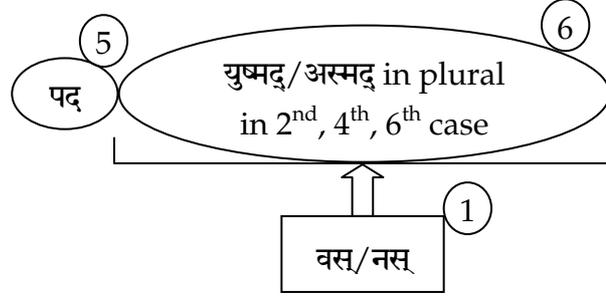
[LSK] पदात् 5/1 परयोः 6/2 अपादादौ 7/1 स्थितयोः 6/2 षष्ठादि-विशिष्टयोः 6/2 “वाम् नौ” इति<sup>0</sup> आदेशौ 1/2 स्तः III/2 ॥

वाम् and नौ are the respective substitutes for युष्मद् and अस्मद् which are in 6<sup>th</sup>, 4<sup>th</sup>, and 2<sup>nd</sup> case after another पद, but not at the beginning of quarter.

|   | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---------|-----------|----------|
| 1 |         |           |          |
| 2 | वाम्/नौ | वाम्/नौ   | वाम्/नौ  |
| 3 |         |           |          |
| 4 | वाम्/नौ | वाम्/नौ   | वाम्/नौ  |
| 5 |         |           |          |
| 6 | वाम्/नौ | वाम्/नौ   | वाम्/नौ  |
| 7 |         |           |          |

[विधिसूत्रम्] 8.1.21 बहुवचनस्य वस्त्रसौ । ~ युषदस्मदोः षष्ठीचतुर्थीद्वितीयास्थयोः पदात् अपादादौ

After पद, not at the beginning of a quarter, युष्मद् and अस्मद् in 6<sup>th</sup>, 4<sup>th</sup>, and 2<sup>nd</sup> case in plural are replaced by वस् and नस्, respectively.



बहुवचनस्य 6/1 वस्-नसौ 1/2 । ~ युषदस्मदोः 6/2 षष्ठी-चतुर्थी-द्वितीया-स्थयोः 6/2 पदात् 5/1 अपादादौ 7/1

2 words in the सूत्र; 4 words as अनुवृत्ति

- बहुवचनस्य 6/1 – Adjective to युष्मदस्मदोः.
- वस्-नसौ 1/2 – वस् च नस् च वस्त्रसौ (ID) ।; this is आदेश. 1.1.55 अनेकाल्शिात्सर्वस्य । and 1.3.10 यथासङ्घमनुदेशः समानाम् । are used.
- युष्मदस्मदोः 6/2 – From 8.1.20 युषदस्मदोः षष्ठीचतुर्थीद्वितीयास्थयोर्वानावौ ।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- षष्ठी-चतुर्थी-द्वितीया-स्थयोः 6/2 – From the previous sūtra; adjective to युष्मदस्मदोः.

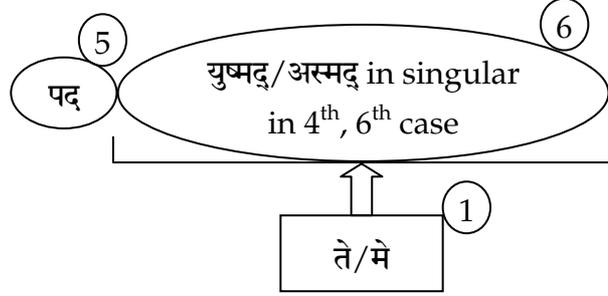
[LSK] उक्तविधयोः 6/2 अनयोः 6/2 षष्ठ्यादि-बहुवचन-अन्तयोः 6/2 वस्-नसौ 1/2 स्तः III/2 ॥

वस् and नस् are the respective substitutes for युष्मद् and अस्मद् whose conditions were already told, and ending with 6<sup>th</sup>, 4<sup>th</sup>, and 2<sup>nd</sup> case बहुवचन-प्रत्यय.

|   | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---------|-----------|----------|
| 1 |         |           |          |
| 2 | वाम्/नौ | वाम्/नौ   | वस्/नस्  |
| 3 |         |           |          |
| 4 | वाम्/नौ | वाम्/नौ   | वस्/नस्  |
| 5 |         |           |          |
| 6 | वाम्/नौ | वाम्/नौ   | वस्/नस्  |
| 7 |         |           |          |

[विधिसूत्रम्] 8.1.22 तेमयावेकवचनस्य । ~ युष्मदस्मदोः षष्ठीचतुर्थीद्वितीयास्थयोः पदात् अपादादौ

After पद, not at the beginning of a quarter, युष्मद् and अस्मद् in 6<sup>th</sup> and 4<sup>th</sup> case in singular are replaced by ते and मे, respectively.



ते-मयौ<sup>1/2</sup> एकवचनस्य<sup>6/1</sup> । ~ युष्मदस्मदोः<sup>6/2</sup> षष्ठी-चतुर्थी-द्वितीया-स्थयोः<sup>6/2</sup> पदात्<sup>5/1</sup> अपादादौ<sup>7/1</sup>

2 words in the सूत्र; 2 words as अनुवृत्ति

- ते-मयौ 1/2 – ते च मे च तेमयौ (ID) ।; this is आदेश. 1.1.55 अनेकाल्शित्सर्वस्य । and 1.3.10 यथासङ्ख्यमनुदेशः समानाम् । are used.
- एकवचनस्य 6/1 – Adjective to युष्मदस्मदोः.

[LSK] उक्तविधयोः<sup>6/2</sup> अनयोः<sup>6/2</sup> षष्ठी-चतुर्थी-एकवचन-अन्तयोः<sup>6/2</sup> “ते मे” एतौ<sup>1/2</sup> स्तः<sup>III/2</sup> ॥

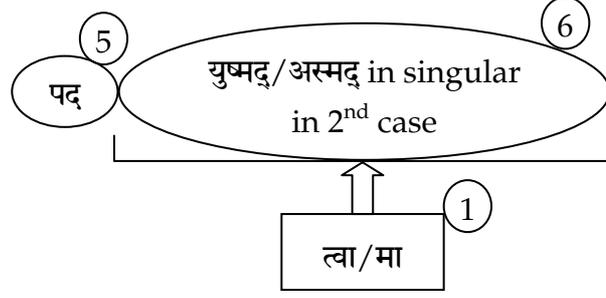
ते and मे are the respective substitutes for युष्मद् and अस्मद् whose conditions were already told, and ending with 6<sup>th</sup> and 4<sup>th</sup> case एकवचन-प्रत्यय.

|   | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---------|-----------|----------|
| 1 |         |           |          |
| 2 | वाम्/नौ | वाम्/नौ   | वस्/नस्  |
| 3 |         |           |          |
| 4 | ते/मे   | वाम्/नौ   | वस्/नस्  |
| 5 |         |           |          |
| 6 | ते/मे   | वाम्/नौ   | वस्/नस्  |
| 7 |         |           |          |

[विधिसूत्रम्] 8.1.23 त्वामौ द्वितीयायाः । ~ युष्मदस्मदोः षष्ठीचतुर्थीद्वितीयास्थयोः पदात्

अपादादौ एकवचनस्य

After पद, not at the beginning of a quarter, युष्मद् and अस्मद् in 6<sup>th</sup> and 4<sup>th</sup> case in singular are replaced by त्वा and मा, respectively.



त्वा-मौ<sup>1/2</sup> द्वितीयायाः<sup>6/1</sup> । ~ युष्मदस्मदोः<sup>6/2</sup> षष्ठी-चतुर्थी-द्वितीया-स्थयोः<sup>6/2</sup> पदात्<sup>5/1</sup> अपादादौ<sup>7/1</sup> एकवचनस्य<sup>6/1</sup>  
एकवचनस्य<sup>6/1</sup>

2 words in the सूत्र; 6 words as अनुवृत्ति

- त्वा-मौ 1/2 – त्वा च मा च त्वामौ (ID) ।; this is आदेश. 1.1.55 अनेकाल्शिात्सर्वस्य । and 1.3.10 यथासङ्घमनुदेशः समानाम् । are used.
- द्वितीयायाः 6/1 – Adjective to युष्मदस्मदोः.
- एकवचनस्य 6/1 – From the previous sūtra; adjective to युष्मदस्मदोः.

[LSK] द्वितीया-एकवचन-अन्तयोः<sup>6/2</sup> “त्वा मा” इति<sup>0</sup> आदेशौ<sup>1/2</sup> स्तः<sup>III/2</sup> ॥

त्वा and मा are the respective substitutes for युष्मद् and अस्मद् ending with 2<sup>nd</sup> case एकवचन-प्रत्यय.

|   | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---------|-----------|----------|
| 1 |         |           |          |
| 2 | त्वा/मा | वाम्/नौ   | वस/नस्   |
| 3 |         |           |          |
| 4 | ते/मे   | वाम्/नौ   | वस/नस्   |
| 5 |         |           |          |
| 6 | ते/मे   | वाम्/नौ   | वस/नस्   |
| 7 |         |           |          |

The following is a verse which contains all the alternative forms of युष्मद् and अस्मद्.

[LSK]

श्रीशस्त्वावतु मापीह दत्तात्ते मेऽपि शर्म सः ।

स्वामी ते मेऽपि स हरिः पातु वामपि नौ विभुः ॥

सुखं वां नौ ददात्वीशः पतिर्वामपि नौ हरिः ।

सोऽव्याद्धो नः शिवम् वो नो दद्यात् सेव्योऽत्र वः स नः ॥

[पदच्छेदः]

श्रीशः<sup>1/1</sup> त्वा<sup>2/1</sup> अवतु<sup>III/1</sup> मा<sup>2/1</sup> अपि<sup>0</sup> इह<sup>0</sup> दत्तात्<sup>III/1</sup> ते<sup>4/1</sup> मे<sup>4/1</sup> अपि<sup>0</sup> शर्म<sup>2/1</sup> सः<sup>1/1</sup> ।

स्वामी<sup>1/1</sup> ते<sup>6/1</sup> मे<sup>6/1</sup> अपि<sup>0</sup> सः<sup>1/1</sup> हरिः<sup>1/1</sup> पातु<sup>III/1</sup> वाम्<sup>2/3</sup> अपि<sup>0</sup> नौ<sup>2/3</sup> विभुः<sup>1/1</sup> ॥

सुखम्<sup>2/1</sup> वाम्<sup>4/2</sup> नौ<sup>4/2</sup> ददातु<sup>III/1</sup> ईशः<sup>1/1</sup> पतिः<sup>1/1</sup> वाम्<sup>2/2</sup> अपि<sup>0</sup> नौ<sup>2/2</sup> हरिः<sup>1/1</sup> ।

सः<sup>1/1</sup> अव्यात्<sup>III/1</sup> वः<sup>2/3</sup> नः<sup>2/3</sup> शिवम्<sup>2/1</sup> वः<sup>4/3</sup> नः<sup>4/3</sup> दद्यात्<sup>III/1</sup> सेव्यः<sup>1/1</sup> अत्र<sup>0</sup> वः<sup>6/3</sup> सः<sup>1/1</sup> नः<sup>6/3</sup> ॥

[अन्वयः]

श्रीशः<sup>1/1</sup> त्वा<sup>2/1</sup> (त्वाम्<sup>2/1</sup>) मा<sup>2/1</sup> (माम्<sup>2/1</sup>) अपि<sup>0</sup> अवतु<sup>III/1</sup> ।

May Śrīśa (Viṣṇu) protect you and me.

सः<sup>1/1</sup> इह<sup>0</sup> ते<sup>4/1</sup> (तुभ्यम्<sup>4/1</sup>) मे<sup>4/1</sup> (मह्यम्<sup>4/1</sup>) अपि<sup>0</sup> शर्म<sup>2/1</sup> दत्तात्<sup>III/1</sup> ।

May he give happiness for you and me here.

सः<sup>1/1</sup> हरिः<sup>1/1</sup> ते<sup>6/1</sup> (तव<sup>6/1</sup>) मे<sup>6/1</sup> (मम<sup>6/1</sup>) अपि<sup>0</sup> स्वामी<sup>1/1</sup> ।

That Hari is your lord, as well as my lord.

विभुः<sup>1/1</sup> वाम्<sup>2/2</sup> (युवाम्<sup>2/2</sup>) नौ<sup>2/2</sup> (आवाम्<sup>2/2</sup>) अपि<sup>0</sup> पातु<sup>III/1</sup> ॥

May the lord protect you two and us.

ईशः<sup>1/1</sup> वाम्<sup>4/2</sup> (युवाभ्याम्<sup>4/2</sup>) नौ<sup>4/2</sup> (आवाभ्याम्<sup>4/2</sup>) सुखम्<sup>2/1</sup> ददातु<sup>III/1</sup> ।

May the lord give you and us happiness.

हरिः<sup>1/1</sup> वाम्<sup>6/2</sup> (युवयोः<sup>6/2</sup>) नौ<sup>6/2</sup> (आवयोः<sup>6/2</sup>) अपि<sup>0</sup> पतिः<sup>1/1</sup> ।

Hari is the lord of you two and us.

सः<sup>1/1</sup> वः<sup>2/3</sup> (युष्मान्<sup>2/3</sup>) नः<sup>2/3</sup> (अस्मान्<sup>2/3</sup>) अव्यात्<sup>III/1</sup> ।

May he protect you and us.

(सः<sup>1/1</sup>) वः<sup>4/3</sup> (युष्मभ्यम्<sup>4/3</sup>) नः<sup>4/3</sup> (अस्मभ्यम्<sup>4/3</sup>) शिवम्<sup>2/1</sup> दद्यात्<sup>III/1</sup> ।

May he give auspiciousness for you and us.

सः<sup>1/1</sup> अत्र<sup>0</sup> वः<sup>6/3</sup> (युष्माकम्<sup>6/3</sup>) नः<sup>6/3</sup> (अस्माकम्<sup>6/3</sup>) सेव्यः<sup>1/1</sup> ॥

He is your and our master.

## (वार्तिकम्) एकवाक्ये युष्मदस्मदादेशा वक्तव्याः ।

Of these आदेशs for युष्मद् and अस्मद्, the conditions (after पद and not at the beginning of पाद) are applicable in one वाक्य.

एकवाक्ये<sup>7/1</sup> युष्मदस्मद्-आदेशाः<sup>1/3</sup> वक्तव्याः<sup>1/3</sup> ।

3 words in the वार्तिक

- एकवाक्ये 7/1 – एकं वाक्यम् एकवाक्यम् (KT), तस्मिन्।; in अधिकरणे सप्तमी.
- युष्मदस्मद्-आदेशाः 1/3 – युष्मदस्मदोः आदेशाः (6T)।; namely, त्वा, मा, etc.
- वक्तव्याः 1/3 – This has to be said.

[LSK] एक-तिङ्<sup>1/1</sup> वाक्यम्<sup>1/1</sup> ।

The definition of वाक्य is: that which has one verb.

एकम्<sup>1/1</sup> तिङ्<sup>1/1</sup> = तिङन्तपदम्<sup>1/1</sup> यस्मिन्<sup>7/1</sup> वाक्ये<sup>7/1</sup> एकतिङ्<sup>1/1</sup> = वाक्यम्<sup>1/1</sup>

[LSK] ओदनम्<sup>2/1</sup> पच<sup>II/1</sup> तव<sup>6/1</sup> भविष्यति<sup>III/1</sup> ।

Cook rice. It will become yours.

Here, ओदनम्<sup>2/1</sup> पच<sup>II/1</sup>। is one sentence, and तव<sup>6/1</sup> भविष्यति<sup>III/1</sup>। is another, according to the definition of वाक्य, which is एक-तिङ्. Because of this, तव is not considered to be preceded by पद. Thus आदेश for युष्मद्/अस्मद् does not take place.

## (वार्तिकम्) एते वान्नावादयोऽनन्वादेशे वा वक्तव्याः ।

These आदेशs for युष्मद् and अस्मद्, such as वाम्, नौ, are optional when it is not अनन्वादेश. (It is compulsory when it is अनन्वादेश.)

एते<sup>1/3</sup> वाम्-नौ-आदयः<sup>1/3</sup> अनन्वादेशे<sup>7/1</sup> वा<sup>0</sup> वक्तव्याः<sup>1/3</sup> ।

5 words in the वार्तिक

- एते 1/3 – These;
- वाम्-नौ-आदयः 1/3 – आदेशs for युष्मद् and अस्मद्.
- अनन्वादेशे 7/1 – न अनन्वादेशः अनन्वादेशः (NT), तस्मिन्।; in विषयसप्तमी.
- वा 0 – These आदेशs are optional.
- वक्तव्याः 1/3 – This has to be said.

[LSK] अनन्वादेशे<sup>7/1</sup> तु<sup>0</sup> नित्यम्<sup>0</sup> स्युः<sup>III/3</sup> ।

The implication is that it is compulsory in अनन्वादेश.

[LSK] धाता<sup>1/1</sup> ते<sup>6/1</sup> भक्तः<sup>1/1</sup> अस्ति<sup>III/1</sup>, धाता<sup>1/1</sup> तव<sup>6/1</sup> भक्तः<sup>1/1</sup> अस्ति<sup>III/1</sup> वा<sup>0</sup> ।

Brahmā is your devotee. The form of युष्मद् in 6/1 is optional.

[LSK] तस्मै<sup>4/1</sup> ते<sup>4/1</sup> नमः<sup>0</sup> इति<sup>0</sup> एव<sup>0</sup> ।

For him, to you, my salutations. The form of युष्मद् in 4/1 is not optional because it is अनन्वादेश.

द-कारान्त-पुंल्लिङ्गः (3) सुपाद्

शोभनौ पादौ यस्य सः सुपात् ।

सु + पाद् + औ 2.2.24 अनेकमन्यपदार्थे । ~ बहुव्रीहिः समासः

प्रातिपदिक-संज्ञा by 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

सु + पाद् 2.4.71 सुपो धातुप्रातिपदिकयोः । ~ लुक्

सुपाद् 5.4.140 सङ्ख्यासुपूर्वस्य । ~ पादस्य लोपः

[LSK] सुपात्<sup>1/1</sup>, सुपाद्<sup>1/1</sup>।

सुपाद् + सुँ

सुपाद् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

सुपात् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ चर् झलाम्

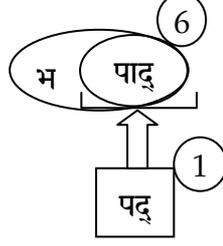
[LSK] सुपादौ<sup>1/2</sup>।

## Declension of सुपाद् (द-पुं-3)

|   | एकवचनम्       | द्विवचनम्      | बहुवचनम्        |
|---|---------------|----------------|-----------------|
| 1 | सुपात्/सुपाद् | सुपादौ         | सुपादः          |
| S | same as above | same as above  | same as above   |
| 2 | सुपादम्       | same as above  | सुपदः 6.4.130   |
| 3 | सुपदा 6.4.130 | सुपाद्भ्याम्   | सुपाद्भिः       |
| 4 | सुपदे 6.4.130 | same as above  | सुपाद्भ्यः      |
| 5 | सुपदः 6.4.130 | same as above  | same as above   |
| 6 | same as above | सुपदोः 6.4.130 | सुपदाम् 6.4.130 |
| 7 | सुपदि 6.4.130 | same as above  | सुपात्सुः       |

[विधिसूत्रम्] 6.4.130 पादः पत् । ~ भस्य

पद् is the substitute for पाद् of पाद्-ending भ-संज्ञक-अङ्ग.



पादः<sup>6/1</sup> पत्<sup>1/1</sup> । ~ भस्य<sup>6/1</sup>

2 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- पादः 6/1 – प्रातिपदिक is पाद्; तदन्तविधि is applied with भस्य, and it is understood as “पाद्-ending भ”.
- पत् 1/1 – प्रातिपदिक is पद्; this is आदेश. Note that the substitute is ढ्-ending.
- भस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 6.4.129 भस्य।; in स्थानेयोगा षष्ठी.

[LSK] पाद्-शब्द-अन्तम्<sup>1/1</sup> यत्<sup>1/1</sup> अङ्गम्<sup>1/1</sup> भम्<sup>1/1</sup> तद्-अवयवस्य<sup>6/1</sup> पाद्-शब्दस्य<sup>6/1</sup> पद्-आदेशः<sup>1/1</sup> ॥

पद् is the substitute for पाद् of भ-संज्ञक अङ्ग which ends with पाद्.

To replace only the “पाद्” part, not the entire भ portion, परिभाषा “निर्दिष्यमानास्यादेशा भवन्ति” (the substitute is only for the portion mentioned in the sūtra is used.

[LSK] सुपदः<sup>2/3</sup>।

सुपाद् + शस्

सुपद् + अस्

6.4.130 पादः पत् । ~ भस्य, with the help of (प०) निर्दिष्यमानास्यादेशा भवन्ति।

सुपदः

8.2.66, 8.3.15

[LSK] सुपदा<sup>3/1</sup>।

सुपाद् + टा

सुपद् + आ

6.4.130 पादः पत् । ~ भस्य

सुपदा

[LSK] सुपाद्भ्याम्<sup>3/2</sup>॥

सुपाद् + भ्याम्

सुपाद्भ्याम्

8.2.39, 8.4.53

थ-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (1) अग्निमथ

अग्निं मश्नाति इति अग्निमत् । That which makes fire.

मन्थं विलोडने (9P) to churn, to agitate

अग्नि + डस् + मन्थ् + क्तिप्

प्रातिपदिक-संज्ञा by 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

अग्नि + मन्थ् 2.4.71 सुपो धातुप्रातिपदिकयोः । ~ लुक्

अग्नि + मथ् 6.4.24 अनदितां हल पधायाः किङ्कति । ~ न लोपः अङ्गस्य

[LSK] अग्निमत्<sup>1/1</sup>, अग्निमद्<sup>1/1</sup>।

अग्निमथ् + सुँ

अग्निमथ् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्वपृक्तं हल् । ~ लोपः

अग्निमद् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

अग्निमत् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ चर् झलाम्

[LSK] अग्निमथौ<sup>1/2</sup> । अग्निमथः<sup>1/3</sup> ॥

## Declension of सुपाद् (थ-पुँ-1)

|   | एकवचनम्                          | द्विवचनम्             | बहुवचनम्                   |
|---|----------------------------------|-----------------------|----------------------------|
| 1 | अग्निमत्/अग्निमद् 8.2.39, 8.4.56 | अग्निमथौ              | अग्निमथः                   |
| 5 | same as above                    | same as above         | same as above              |
| 2 | अग्निमथम्                        | same as above         | same as above              |
| 3 | अग्निमथा                         | अग्निमद्भ्याम् 8.2.39 | अग्निमद्भिः 8.2.39         |
| 4 | अग्निमथे                         | same as above         | अग्निमद्भ्यः 8.2.39        |
| 5 | अग्निमथः                         | same as above         | same as above              |
| 6 | same as above                    | अग्निमथोः             | अग्निमथाम्                 |
| 7 | अग्निमथि                         | same as above         | अग्निमत्सुः 8.2.39, 8.4.55 |

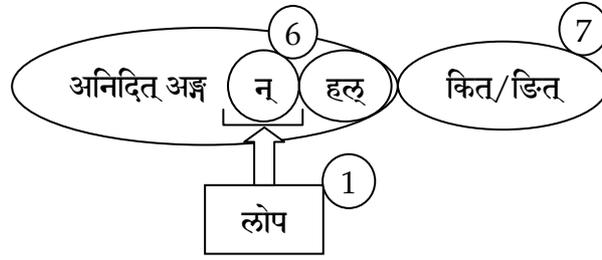
## च-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (1) प्राच्

The meanings of प्राच् are fourfold: 1. पूर्वदिक्, 2. पूर्वदेशः, 3. पूर्वकालः, 4. पूर्वस्मिन् भवः. It is a synonym to प्राचीन.

To derive this word, the next sūtra is required.

### [विधिसूत्रम्] 6.4.24 अनिदितां हल उपधायाः किङिति । ~ न लोपः अङ्गस्य

There is elision of न् which is उपधा of हल्-ending अनिदित् (that whose इत् is not इ) अङ्ग when कित् or ङित् follows.



अनिदिताम्<sup>6/3</sup> हलः<sup>6/1</sup> उपधायाः<sup>6/1</sup> किङिति<sup>7/1</sup> । ~ न<sup>6/1</sup> लोपः<sup>1/1</sup> अङ्गस्य<sup>6/1</sup>

4 words in the सूत्र; 3 words as अनुवृत्ति

- अनिदिताम्<sup>6/3</sup> – इत् इत् यस्य सह इदित् (116B)। न इदित् अनिदित् (NT), तेषाम् ।; This is adjective to अङ्गस्य.
- हलः<sup>6/1</sup> – प्रत्याहारः हल्; this is विशेषण to अङ्गस्य. With तदन्तविधि, it is understood as: “हलन्तस्य अङ्गस्य”.
- उपधायाः<sup>6/1</sup> – In स्थानेयोगा षष्ठी.
- किङिति<sup>7/1</sup> – क् च ङ् च् कङौ (ID)। कङौ इतौ यस्य सः किङित् (116B), तस्मिन् ।; in परसप्तमी.
- न<sup>6/1</sup> – From 6.4.23 शान्नलोपः।; in लुप्तषष्ठी; प्रातिपदिक is न. अ after न् is उच्चारणार्थ.
- लोपः<sup>1/1</sup> – From 6.4.23 शान्नलोपः।; this is आदेश.
- अङ्गस्य<sup>6/1</sup> – From अधिकारसूत्र 6.4.1 अङ्गस्य ।; in सम्बन्ध षष्ठी to उपधायाः.

[LSK] हल्-अन्तानाम्<sup>6/3</sup> अनिदिताम्<sup>6/3</sup> अङ्गानाम्<sup>6/3</sup> उपधायाः<sup>6/1</sup> नस्य<sup>6/1</sup> लोपः<sup>1/1</sup> किति<sup>7/1</sup> ङिति<sup>7/1</sup> ।

There is elision of न् which is उपधा of हल्-ending non-इदित् अङ्ग when कित् or ङित् follows.

Note the वचनविपरिणाम for हल्-अन्तानाम्<sup>6/3</sup> and अङ्गानाम्<sup>6/3</sup> to match with अनिदिताम्<sup>6/3</sup>.

प्रकर्षेण अञ्चति ।

अञ्चुं गतिपूजनयोः (1U) to go, to worship

Here अञ्चुं-धातु in the sense of गति is used. If it were in the sense of पूजा, the declension would be different.

प्र + अञ्च + क्तिन् 3.2.59 ऋत्विग्दधृक्स्त्रिगिदगुष्णिग् अञ्चयुजिकुञ्चां च । ~ क्तिन्

प्र + अच् 6.4.24 अनदितां हल उपधायाः विडति । ~ न लोपः अङ्गस्य

The ञ् is considered to be न्.<sup>11</sup>

Note that the sandhi between the उपसर्ग and प्रातिपदिक can be done later for the sake of 6.4.138 अचः । etc. (Ref. Bh 1-441 टिप्पणी 2)

[LSK] नुम्<sup>1/1</sup> । “संयोगान्तस्य लोपः (8.2.23)” । नस्य<sup>6/1</sup> कुत्वेन<sup>3/1</sup> डः<sup>1/1</sup> । प्राङ्<sup>1/1</sup> ।

प्र + अच् + सुँ

प्र + अ न् च् + स् 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थाने चाधातोः । ~ नुम्

प्र + अ न् च् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्वपृक्तं हल् । ~ लोपः

प्र + अ न् 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः । ~ पदस्य

प्र + अ ङ् 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः । ~ पदस्य अन्ते

with 1.1.52 अलोऽन्त्यस्य । and 1.1.50 स्थानेऽन्तरतमः ।

प्राङ् 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः ।

[LSK] प्राञ्चौ<sup>1/2</sup> । प्राञ्चः<sup>1/3</sup> ॥

प्र + अच् + औ

प्र + अ न् च् + औ 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थाने चाधातोः । ~ नुम्

प्र + अं च् + औ 8.3.24 नश्चापदान्तस्य झलि । ~ अनुस्वारः

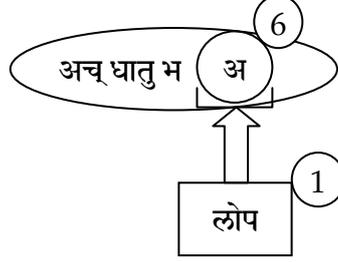
प्र + अ ञ् च् + औ 8.4.58 अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः ।

प्राञ्चौ 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः ।

<sup>11</sup> There is a śloka in [Bh] 2-249. नकारजावनुस्वारपञ्चमौ झलि धातुषु । ... which means: झलि परे अनुस्वार-पञ्चमौ नकारजौ मन्तव्यौ । In धातुs, अनुस्वार and nasal, which are followed by झल्, are considered to be born of न्.

[विधिसूत्रम्] 6.4.138 अचः । ~ अत् लोपः भस्य अङ्गस्य

There is elision of अ of भ-संज्ञक अङ्ग which is अच्-धातु of which न् is elided.



अचः 6/1 । ~ अत् 6/1 लोपः 1/1 भस्य 6/1 अङ्गस्य 6/1

1 word in the सूत्र; 4 words as अनुवृत्ति

- अचः 6/1 – अच्-धातु with न् (ञ) elided; in सम्बन्धे षष्ठी to अत्.
- अत् 6/1 – From 6.4.134 अल्लोपोऽनः ।; short अ; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- लोपः 1/1 – From 6.4.134 अल्लोपोऽनः ।; this is आदेश.
- भस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 6.4.129 भस्य ।.
- अङ्गस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 6.4.1 अङ्गस्य ।.

[LSK] लुप्त-नकारस्य 6/1 अञ्चतेः 6/1 भस्य 6/1 अकारस्य 6/1 लोपः 1/1 ॥

There is elision of अ of भ-संज्ञक अङ्ग which is अच्-धातु with न्-लोप.

[K] अचः 6/1 इति 0 अयम् 1/1 अञ्चतिः 1/1 लुप्त-नकारः 1/1 गृह्यते III/1, तदन्तस्य 6/1 भस्य 6/1 अकारस्य 6/1 लोपः 1/1 भवति III/1 ॥

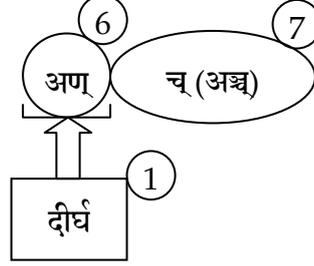
There is elision of अ of भ-संज्ञक अङ्ग which ends with अच्-धातु with न्-लोप.

प्र + अच् + शस्

प्र + च् + अस् 6.4.138 अचः । ~ अत् लोपः भस्य अङ्गस्य

## [विधिसूत्रम्] 6.3.138 चौ । ~ पूर्वस्य अणः दीर्घः

There is elongation of अण् when अच्-धातु, of which अ and न् are elided, is following.



चौ<sup>7/1</sup> । ~ पूर्वस्य<sup>6/1</sup> अणः<sup>6/1</sup> दीर्घः<sup>1/1</sup> ।

1 word in the सूत्र; 3 words as अनुवृत्ति

- चौ 7/1 – प्रातिपदिक is चु. It indicates अच्-धातु after elision of अ and न् (च); in परसप्तमी.
- पूर्वस्य 6/1 – From 6.3.111 ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- अणः 6/1 – From 6.3.111 ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः।; अवर्ण इवर्ण and उवर्ण are indicated; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- दीर्घः 1/1 – From 6.3.111 ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः।; this is आदेश. परिभाषा 1.1.50 स्थानेऽन्तरतमः। is required.

[LSK] लुप्त-अकार-नकारे<sup>7/1</sup> अच्चतौ<sup>7/1</sup> परे<sup>7/1</sup> पूर्वस्य<sup>6/1</sup> अणः<sup>6/1</sup> दीर्घः<sup>1/1</sup> ।

दीर्घः is the substitute in the place of अण्, which is before अच्-धातु with अ and न् elided.

[LSK] प्राचः<sup>2/3</sup> । प्राचा<sup>3/1</sup> ।

प्र + अच् + शस्

प्र + च् + अस् 6.4.138 अचः । ~ अत् लोपः भस्य अङ्गस्य

प्रा + च् + अस् 6.3.138 चौ । ~ पूर्वस्य अणः दीर्घः

प्राचः 8.2.66, 8.3.15

[LSK] प्राग्भ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

प्र + अच् + भ्याम्

प्र + अक् + भ्याम् 8.2.30 चोः कुः । ~ झलि पदस्य अन्ते

प्र + अग् + भ्याम् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

प्राग्भ्याम्

Declension of प्राच् (च्-पुं-1)

गति-अर्थ-प्र-उपपद-अञ्चु-धातु-अन्त-शब्दः

|   | एकवचनम्  | द्विवचनम्  | बहुवचनम्   |
|---|--|--|--|
| 1 | प्र + अच् + सुँ<br>प्र + अन्च् + स् 7.1.70<br>प्र + अन्च् 6.1.68<br>प्र + अन् 8.2.23<br>प्र + अङ् 8.2.62<br>प्राङ् 6.1.101 | प्र + अच् + औ<br>प्र + अन्च् + औ 7.1.70<br>प्र + अंच् + औ 8.3.24<br>प्र + अञ्च् + औ 8.4.58<br>प्राञ्चौ 6.1.101 | प्र + अच् + जस्<br>प्र + अन्च् + अस् 7.1.70<br>प्र + अंच् + अस् 8.3.24<br>प्र + अञ्च् + अस् 8.4.58<br>प्राञ्चः 6.1.101 |
| S | same as above  | same as above  | same as above  |
| 2 | प्र + अच् + अम्<br>प्र + अन्च् + अम् 7.1.70<br>प्र + अंच् + अम् 8.3.24<br>प्र + अञ्च् + अम् 8.4.58<br>प्राञ्चम् 6.1.101    | same as above  | प्र + अच् + शस्<br>प्र + च् + अस् 6.4.138<br>प्रा + च् + अस् 6.3.138<br>प्राचस् 6.1.101<br>प्राचः 8.2.66, 8.3.15       |
| 3 | प्र + अच् + टा<br>प्र + च् + आ 6.4.138<br>प्रा + च् + आ 6.3.138<br>प्राचा 6.1.101  | प्र + अच् + भ्याम्<br>प्र + अक् + भ्याम् 8.2.30<br>प्र + अग् + भ्याम् 8.2.39<br>प्राग्भ्याम्                   | प्र + अच् + भिस्<br>प्र + अक् + भिस् 8.2.30<br>प्र + अग् + भिस् 8.2.39<br>प्राग्भिः 8.2.66, 8.3.15                     |
| 4 | प्र + अच् + डे<br>प्र + च् + ए 6.4.138<br>प्रा + च् + ए 6.3.138<br>प्राचे 6.1.101  | same as above  | प्र + अच् + भ्यस्<br>प्र + अक् + भ्यस् 8.2.30<br>प्र + अग् + भ्यस् 8.2.39<br>प्राग्भ्यः 8.2.66, 8.3.15                 |
| 5 | प्र + अच् + डसिँ<br>प्र + च् + अस् 6.4.138<br>प्रा + च् + अस् 6.3.138<br>प्राचः 6.1.101, 8.2.66, 8.3.15                    | same as above  | same as above  |
| 6 | same as above  | प्र + अच् + ओस्<br>प्र + च् + ओस् 6.4.138<br>प्रा + च् + ओस् 6.3.138<br>प्राचोः 6.1.101, 8.2.66, 8.3.15        | प्र + अच् + आम्<br>प्र + च् + आम् 6.4.138<br>प्रा + च् + आम् 6.3.138<br>प्राचाम् 6.1.101                               |
| 7 | प्र + अच् + डि<br>प्र + च् + इ 6.4.138<br>प्रा + च् + इ 6.3.138<br>प्राचि 6.1.101  | same as above  | प्र + अच् + सुप्<br>प्र + अक् + सु 8.2.30<br>प्र + अग् + सु 8.2.39<br>प्र + अग् + षु 8.3.59<br>प्राक्षु 8.4.55         |

The क्तिन्-प्रत्यय-ending अञ्चु-धातु word प्रत्यच् (western) declines in the same manner.

|                       |   |
|-----------------------|---|
| प्रति + अञ्च + क्तिन् | 3.2.59 ऋत्विग्दधृक्स्त्रिग्दिग्गुष्णिग् अञ्चुयुजिकुञ्चां च । ~ क्तिन् |
| प्रति + अच्           | 6.4.24 अनिदितां हल उपधायाः विडति । ~ न लोपः अङ्गस्य                   |

[LSK] प्रत्यङ्<sup>1/1</sup> ।

|                      |  |
|----------------------|--|
| प्रति + अच् + सुँ    |  |
| प्रति + अ न् च् + स् | 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थाने चाधातोः । ~ नुम्          |
| प्रति + अ न् च्      | 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्वपृक्तं हल् । ~ लोपः |
| प्रति + अ न्         | 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः । ~ पदस्य                     |
| प्रति + अ ङ्         | 8.2.62 क्तिन्प्रत्ययस्य कुः । ~ पदस्य अन्ते            |
| प्रत्यङ्             | 6.1.77 इको यणचि । ~ संहितायाम्                         |

[LSK] प्रत्यञ्चौ<sup>1/2</sup> ।

|                     |   |
|---------------------|---|
| प्रति + अच् + औ     |   |
| प्रति + अ न् च् + औ | 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थाने चाधातोः । ~ नुम् |
| प्रति + अं च् + औ   | 8.3.24 नश्चापदान्तस्य झलि । ~ अनुस्वारः       |
| प्रति + अ ञ् च् + औ | 8.4.58 अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः ।             |
| प्रत्यञ्चौ          | 6.1.77 इको यणचि । ~ संहितायाम्                |

[LSK] प्रतीचः<sup>2/3</sup> ।

|                   |                                       |
|-------------------|---------------------------------------|
| प्रति + अच् + शस् |                                       |
| प्रति + च् + अस्  | 6.4.138 अचः । ~ अत् लोपः भस्य अङ्गस्य |
| प्रती + च् + अस्  | 6.3.138 चौ । ~ पूर्वस्य अणः दीर्घः    |
| प्रतीचः           | 8.2.66, 8.3.15                        |

[LSK] प्रत्यग्भ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

|                      |                                    |
|----------------------|------------------------------------|
| प्रति + अच् + भ्याम् |                                    |
| प्रति + अक् + भ्याम् | 8.2.30 चोः कुः । ~ झलि पदस्य अन्ते |
| प्रति + अग् + भ्याम् | 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य     |
| प्रत्यग्भ्याम्       |                                    |

प्रति + अच् + सुप्<sup>7/3</sup>

प्रति + अक् + सु 8.2.30 चोः कुः । ~ झलि पदस्य अन्ते

प्रति + अग् + सु 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

प्रति + अग् + षु 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः । ~ इण्कोः मूर्धन्यः

प्रति + अक् + षु 8.4.55 खरि च । ~ झलां चर्

प्रत्यक्षु 6.1.77 इको यणचि । ~ संहितायाम्

### Declension of प्रत्यच् (च-पुं-1)

गति-अर्थ-प्रति-उपपद-अञ्चु-धातु-अन्त-शब्दः

|   | एकवचनम्  | द्विवचनम्                                    | बहुवचनम्   |
|---|--|--|--|
| 1 | प्रत्यङ् 7.1.70, 6.1.68, 8.2.23,<br>8.2.62, 6.1.77 | प्रत्यञ्चौ 7.1.70, 8.3.24,<br>8.4.58, 6.1.77 | प्रत्यञ्चः 7.1.70, 8.3.24, 6.1.77,<br>8.4.58, 8.2.66, 8.3.15 |
| S | same as above                                      | same as above                                | same as above  |
| 2 | प्रत्यञ्चम् 7.1.70, 8.3.24,<br>8.4.58, 6.1.77      | same as above                                | प्रतीचः 6.4.138, 6.3.138,<br>8.2.66, 8.3.15                  |
| 3 | प्रतीचा 6.4.138, 6.3.138                           | प्रत्यग्भ्याम् 8.2.30, 8.2.39                | प्रत्यग्भिः 8.2.30, 8.2.39<br>8.2.66, 8.3.15                 |
| 4 | प्रतीचे 6.4.138, 6.3.138                           | same as above                                | प्रत्यग्भ्यः 8.2.30, 8.2.39<br>8.2.66, 8.3.15                |
| 5 | प्रतीचः 6.4.138, 6.3.138<br>8.2.66, 8.3.15         | same as above                                | same as above  |
| 6 | same as above                                      | प्रतीचोः 6.4.138, 6.3.138,<br>8.2.66, 8.3.15 | प्रतीचाम् 6.4.138, 6.3.138                                   |
| 7 | प्रतीचि 6.4.138, 6.3.138                           | same as above                                | प्रत्यक्षु 8.2.30, 8.2.39,<br>8.3.59, 8.4.55                 |

च-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (2) उदच

उचच (northern) has a special sūtra for itself.

|                   |  |
|-------------------|--|
| उद् + अञ्च + किन् | 3.2.59 ऋत्विग्दधृक्स्त्रिग्दिगुष्णिग् अञ्चयुजिकुञ्चां च । ~ किन् |
| उद् + अच          | 6.4.24 अनिदितां हल उपधायाः किडति । ~ न लोपः अङ्गस्य              |

[LSK] उदङ्<sup>1/1</sup> ।

उद् + अच + सुँ

उद् + अ न् च् + स् 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थाने चाधातोः । ~ नुम्

उद् + अ न् च् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

उद् + अ न् 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः । ~ पदस्य

उद् + अ ङ् 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः । ~ पदस्य अन्ते

[LSK] उदञ्चौ<sup>1/2</sup> ॥

उद् + अच + औ

उद् + अ न् च् + औ 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थाने चाधातोः । ~ नुम्

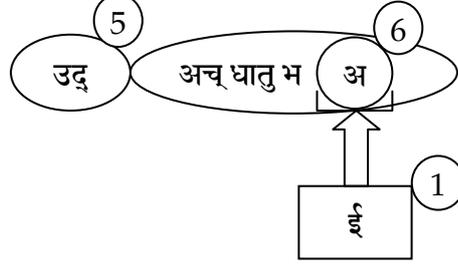
उद् + अं च् + औ 8.3.24 नश्चापदान्तस्य झलि । ~ अनुस्वारः

उद् + अ ञ् च् + औ 8.4.58 अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः ।

In भ, the next sūtra is अपवाद for 6.4.138 अचः । ~ अत् लोपः भस्य अङ्गस्य.

[विधिसूत्रम्] 6.4.139 उद् ईत् । ~ अचः अत् भस्य अङ्गस्य

There is elision of अ of भ-संज्ञक अङ्ग which is अच्-धातु of which न् is elided when उद् is preceding.



उद्ः<sup>5/1</sup> ईत्<sup>1/1</sup> । ~ अचः<sup>6/1</sup> अत्<sup>6/1</sup> भस्य<sup>6/1</sup> अङ्गस्य<sup>6/1</sup>

2 words in the सूत्र; 4 words as अनुवृत्ति

- उद्ः 5/1 – उपसर्ग उद्; in पूर्वपञ्चमी.
- ईत् 1/1 – This is आदेश. त् after ई is for clarification.
- अचः 6/1 – From 6.4.137 अचः।; अच्-धातु with न् (ञ) elided; in सम्बन्धे षष्ठी to अत्.
- अत् 6/1 – From 6.4.134 अल्लोपोऽनः।; short अ; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- भस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 6.4.129 भस्य।.
- अङ्गस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 6.4.1 अङ्गस्य।.

[LSK] उद्-शब्दात्<sup>5/1</sup> परस्य<sup>6/1</sup> लुप्त-नकारस्य<sup>6/1</sup> अञ्चतेः<sup>6/1</sup> भस्य<sup>6/1</sup> अकारस्य<sup>6/1</sup> ईत्<sup>1/1</sup> ।

ई is the substitute in the place of अ of भ-संज्ञक अङ्ग which is अच्-धातु with न्-लोप, when उद् is preceding.

[LSK] उदीचः<sup>2/3</sup> । उदीचा<sup>3/1</sup> ।

उद् + अच् + शस्

उद् + ईच् + अस् 6.4.139 उद् ईत् । ~ अचः अत् भस्य अङ्गस्य

उदीचः 8.2.66, 8.3.15

[LSK] उदग्भ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

उद् + अच् + भ्याम्

उद् + अक् + भ्याम् 8.2.30 चोः कुः । ~ झलि पदस्य अन्ते

उद् + अग् + भ्याम् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

उदग्भ्याम्

Declension of उदच् (च-पुं-2)

गति-अर्थ-उद्-उपपद-अञ्चु-धातु-अन्त-शब्दः

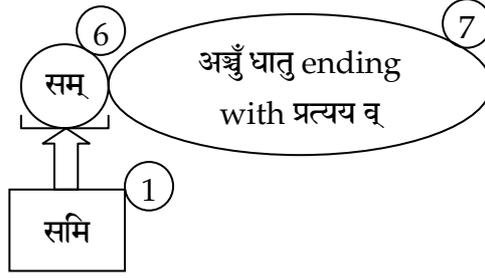
|   | एकवचनम्                                  | द्विवचनम्                                 | बहुवचनम्   |
|---|--|---|--|
| 1 | उदङ् 7.1.70, 6.1.68, 8.2.23,<br>8.2.62   | उदञ्चौ 7.1.70, 8.3.24,<br>8.4.58          | उदञ्चः 7.1.70, 8.3.24, 8.4.58,<br>8.2.66, 8.3.15 |
| S | same as above                            | same as above                             | same as above                                    |
| 2 | उदञ्चम् 7.1.70, 8.3.24,<br>8.4.58        | same as above                             | उदीचः <u>6.4.139</u> , 8.2.66,<br>8.3.15         |
| 3 | उदीचा <u>6.4.139</u>                     | उदग्भ्याम् 8.2.30, 8.2.39                 | उदग्भिः 8.2.30, 8.2.39<br>8.2.66, 8.3.15         |
| 4 | उदीचे <u>6.4.139</u>                     | same as above                             | उदग्भ्यः 8.2.30, 8.2.39<br>8.2.66, 8.3.15        |
| 5 | उदीचः <u>6.4.139</u> , 8.2.66,<br>8.3.15 | same as above                             | same as above                                    |
| 6 | same as above                            | उदीचोः <u>6.4.139</u> ,<br>8.2.66, 8.3.15 | उदीचाम् <u>6.4.139</u>                           |
| 7 | उदीचि <u>6.4.139</u>                     | same as above                             | उदक्षु 8.2.30, 8.2.39,<br>8.3.59, 8.4.55         |

च-कारान्त-पुंलिङ्गः (3) सम्यच्

To derive a word सम्यच् (proper), it requires a special sūtra for itself.

[विधिसूत्रम्] 6.3.93 समः समि । ~ वप्रत्यये अञ्चतौ

सम् followed by अञ्च-धातु ending with व-प्रत्यय (प्रत्यय which is व) is replaced by समि.



समः<sup>6/1</sup> समि<sup>1/1</sup> । ~ वप्रत्यये<sup>7/1</sup> अञ्चतौ<sup>7/1</sup>

2 words in the सूत्र; 2 words as अनुवृत्ति

- समः 6/1 – प्रातिपदिक is सम्, a member of प्रातिगण; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- समि 1/1 – This is आदेश. Being अनेकाल्, it replaces all the letters by 1.1.55 अनेकाल्शिात्सर्वस्य।
- वप्रत्यये 7/1 – From 6.3.92 विष्वग्देवयोश्च टेरञ्चतावप्रत्यये।; in परसप्तमी.

वः प्रत्ययः यस्मात् सः वप्रत्ययः (115B) धातुः, तस्मिन् । That after which suffix is व, indicating धातु. अ after व is for pronunciation.

There is another reading: अप्रत्यये – In this reading, अविद्यमानः प्रत्ययः यस्मात् । धातु after which zero प्रत्यय (क्विप्, क्विन्, etc.) follows.

- अञ्चतौ 7/1 – From 6.3.92 विष्वग्देवयोश्च टेरञ्चतावप्रत्यये।; अञ्चुं-धातु with शितप् धातुनिर्देशे; in परसप्तमी.

[LSK] व-प्रत्यय-अन्ते<sup>7/1</sup> अञ्चतौ<sup>7/1</sup> ।

समि is the substitute in the place of सम्, when followed by अञ्च-धातु with व-प्रत्यय.

सम् + अञ्च + क्विन् 3.2.59 ऋत्विग्दधृक्स्त्रिग्दिगुष्णिग् अञ्चयुजिक्रुञ्चां च । ~ क्विन्

सम् + अच् 6.4.24 अनिदितां हल उपधायाः किङिति । ~ न लोपः अङ्गस्य

समि + अच् 6.3.93 समः समि । ~ वप्रत्यये अञ्चतौ

[LSK] सम्यङ्<sup>1/1</sup> ।

|   |  |
|---|--|
| समि + अच् + सुँ                                     |  |
| समि + अ न् च् + स्                                  | 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थाने चाधातोः । ~ नुम्          |
| समि + अ न् च्                                       | 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः |
| समि + अ न्  | 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः । ~ पदस्य                     |
| समि + अ ङ्  | 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः । ~ पदस्य अन्ते              |
| सम्यङ्  | 6.1.77 इको यणचि । ~ संहितायाम्                         |
| [LSK] सम्यञ्चौ <sup>1/2</sup> ।                     |  |
| समि + अच् + औ                                       |  |
| समि + अ न् च् + औ                                   | 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थाने चाधातोः । ~ नुम्          |
| समि + अं च् + औ                                     | 8.3.24 नश्चापदान्तस्य झलि । ~ अनुस्वारः                |
| समि + अ ञ् च् + औ                                   | 8.4.58 अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः ।                      |
| सम्यञ्चौ  | 6.1.77 इको यणचि । ~ संहितायाम्                         |
| [LSK] समीचः <sup>2/3</sup> । समीचा <sup>3/1</sup> । |  |
| समि + अच् + शस्                                     |  |
| समि + च् + अस्                                      | 6.4.138 अचः । ~ अत् लोपः भस्य अङ्गस्य                  |
| समी + च् + अस्                                      | 6.3.138 चौ । ~ पूर्वस्य अणः दीर्घः                     |
| समीचः   | 8.2.66, 8.3.15   |
| [LSK] सम्यग्भ्याम् <sup>3/2</sup> ॥                 |  |
| समि + अच् + भ्याम्                                  |  |
| समि + अक् + भ्याम्                                  | 8.2.30 चोः कुः । ~ झलि पदस्य अन्ते                     |
| समि + अग् + भ्याम्                                  | 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य                         |
| सम्यग्भ्याम्  | 6.1.77 इको यणचि । ~ संहितायाम्                         |

Declension of सम्यच् (च्-पुं-3)

गति-अर्थ-सम्-उपपद-अञ्चु-धातु-अन्त-शब्दः

|   | एकवचनम्  | द्विवचनम्                                  | बहुवचनम्   |
|---|--|--|--|
| 1 | सम्यङ् 7.1.70, 6.1.68, 8.2.23,<br>8.2.62, 6.1.77 | सम्यञ्चौ 7.1.70, 8.3.24,<br>8.4.58, 6.1.77 | सम्यञ्चः 7.1.70, 8.3.24, 6.1.77,<br>8.4.58, 8.2.66, 8.3.15 |
| 5 | same as above                                    | same as above                              | same as above  |
| 2 | सम्यञ्चम् 7.1.70, 8.3.24,<br>8.4.58, 6.1.77      | same as above                              | समीचः 6.4.138, 6.3.138,<br>8.2.66, 8.3.15                  |
| 3 | समीचा 6.4.138, 6.3.138                           | सम्यग्भ्याम् 8.2.30, 8.2.39                | सम्यग्भिः 8.2.30, 8.2.39<br>8.2.66, 8.3.15                 |
| 4 | समीचे 6.4.138, 6.3.138                           | same as above                              | सम्यग्भ्यः 8.2.30, 8.2.39<br>8.2.66, 8.3.15                |
| 5 | समीचः 6.4.138, 6.3.138<br>8.2.66, 8.3.15         | same as above                              | same as above  |
| 6 | same as above                                    | समीचोः 6.4.138, 6.3.138,<br>8.2.66, 8.3.15 | समीचाम् 6.4.138, 6.3.138                                   |
| 7 | समीचि 6.4.138, 6.3.138                           | same as above                              | सम्यक्षु 8.2.30, 8.2.39,<br>8.3.59, 8.4.55                 |

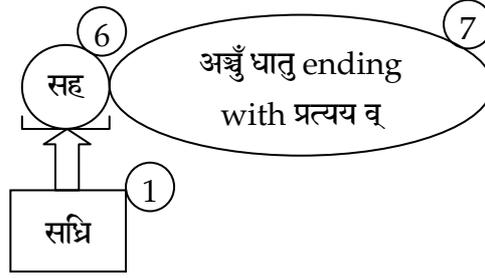
The entire declension is like प्रत्यच्.

च-कारान्त-पुंलिङ्गः (4) सध्यच्

To derive a word सध्यच् (accompanying), it requires a special sūtra for itself.

[विधिसूत्रम्] 6.3.95 सहस्य सध्निः । ~ वप्रत्यये अञ्चतौ

सह followed by अञ्च-धातु ending with व-प्रत्यय (प्रत्यय which is व) is replaced by सध्नि .



सहस्य<sup>6/1</sup> सध्नि<sup>1/1</sup> । ~ वप्रत्यये<sup>7/1</sup> अञ्चतौ<sup>7/1</sup>

2 words in the सूत्र; 2 words as अनुवृत्ति

- सहस्य 6/1 – In स्थानेयोगा षष्ठी.
- सध्नि 1/1 – This is आदेश. Being अनेकाल्, it replaces all the letters by 1.1.55 अनेकाल्शिात्सर्वस्य।.
- वप्रत्यये 7/1 – From 6.3.92 विष्वग्देवयोश्च टेरद्वञ्चतावप्रत्यये।; in परसप्तमी.
- अञ्चतौ 7/1 – From 6.3.92 विष्वग्देवयोश्च टेरद्वञ्चतावप्रत्यये।; अञ्चुं-धातु with शितप् धातुनिर्देशे; in परसप्तमी.

[LSK] तथा<sup>0</sup> ।

Likewise (as 6.3.93 समः समि।), सध्नि is the substitute in the place of सह, when followed by अञ्च-धातु with व प्रत्यय.

सह + अञ्च + किन् 3.2.59 ऋत्विग्दधृक्स्त्रग्दिगुष्णिग् अञ्चयुजिक्रुञ्चां च । ~ किन्

सह + अच् 6.4.24 अनदितां हल उपधायाः किडति । ~ न लोपः अङ्गस्य

सध्नि + अच् 6.3.95 सहस्य सध्निः । ~ वप्रत्यये अञ्चतौ

[LSK] सध्चङ्<sup>1/1</sup> ॥

सध्चि + अच् + सुँ

सध्चि + अ न् च् + स् 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थाने चाधातोः । ~ नुम्

सध्चि + अ न् च् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

सध्चि + अ न् 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः । ~ पदस्य

सध्चि + अ ङ् 8.2.62 किन्त्रत्यस्य कुः । ~ पदस्य अन्ते

सध्चङ् 6.1.77 इको यणचि । ~ संहितायाम्

### Declension of सध्च (च-पुं-4)

गति-अर्थ-सह-उपपद-अञ्चु-धातु-अन्त-शब्दः

|   | एकवचनम्  | द्विवचनम्                                      | बहुवचनम्   |
|---|--|--|--|
| 1 | सध्चङ् 7.1.70, 6.1.68, 8.2.23,<br>8.2.62, 6.1.77 | सध्चञ्चौ 7.1.70, 8.3.24,<br>8.4.58, 6.1.77     | सध्चञ्चः 7.1.70, 8.3.24, 6.1.77,<br>8.4.58, 8.2.66, 8.3.15 |
| S | same as above                                    | same as above                                  | same as above  |
| 2 | सध्चञ्चम् 7.1.70, 8.3.24,<br>8.4.58, 6.1.77      | same as above                                  | सध्च्रीचः 6.4.138, 6.3.138,<br>8.2.66, 8.3.15              |
| 3 | सध्च्रीचा 6.4.138, 6.3.138                       | सध्चग्भ्याम् 8.2.30, 8.2.39                    | सध्चग्भिः 8.2.30, 8.2.39<br>8.2.66, 8.3.15                 |
| 4 | सध्च्रीचे 6.4.138, 6.3.138                       | same as above                                  | सध्चग्भ्यः 8.2.30, 8.2.39<br>8.2.66, 8.3.15                |
| 5 | सध्च्रीचः 6.4.138, 6.3.138<br>8.2.66, 8.3.15     | same as above                                  | same as above  |
| 6 | same as above                                    | सध्च्रीचोः 6.4.138, 6.3.138,<br>8.2.66, 8.3.15 | सध्च्रीचाम् 6.4.138, 6.3.138                               |
| 7 | सध्च्रीचि 6.4.138, 6.3.138                       | same as above                                  | सध्चक्षु 8.2.30, 8.2.39,<br>8.3.59, 8.4.55                 |

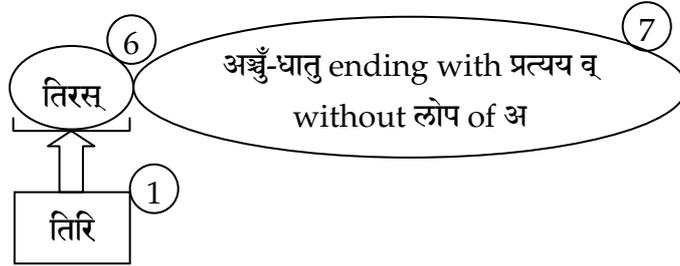
The entire declension is like प्रतीच.

च-कारान्त-पुंलिङ्गः (5) तिर्यच्

तिर्यच् (one who goes horizontally, like animals and birds) is made of तिरस् (crookedly, obliquely) as उपपद and अञ्चु-धातु with किन्.

[विधिसूत्रम्] 6.3.94 तिरसस्तिर्यलोपे । ~ वप्रत्यये अञ्चतौ

तिरस् followed by अञ्चु-धातु ending with व-प्रत्यय (प्रत्यय which is व), whose अ is not elided, is replaced by तिरि.



तिरसः<sup>6/1</sup> तिरि<sup>1/1</sup> अलोपे<sup>7/1</sup> । ~ वप्रत्यये<sup>7/1</sup> अञ्चतौ<sup>7/1</sup>

2 words in the सूत्र; 2 words as अनुवृत्ति

- तिरसः 6/1 – प्रातिपदिक is तिरस्; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- तिरि 1/1 – This is आदेश; the first case ending is लुप्त. Being अनेकाल्, it replaces all the letters by 1.1.55 अनेकाल्शिात्सर्वस्य।
- अलोपे 7/1 – अविद्यमानः लोपः यस्य सः अलोपः (NB) अञ्चु-धातुः, तस्मिन् ।; adjective to अञ्चतौ.  
अलोप indicates अञ्चु-धातु whose अ is not elided by 6.4.138 अचः। ~ अत् लोपः भस्य.
- वप्रत्यये 7/1 – From 6.3.92 विष्वग्देवयोश्च टेरद्यञ्चतावप्रत्यये।; in परसप्तमी.
- अञ्चतौ 7/1 – From 6.3.92 विष्वग्देवयोश्च टेरद्यञ्चतावप्रत्यये।; अञ्चु-धातु with शितप् धातुनिर्देशे; in परसप्तमी.

[LSK] अलुप्त-अकारे<sup>7/1</sup> अञ्चतौ<sup>7/1</sup> व-प्रत्यय-अन्ते<sup>7/1</sup> तिरसः<sup>6/1</sup> तिरि-आदेशः<sup>1/1</sup> ।

तिरि is the substitute in the place of तिरस्, when followed by अञ्च-धातु, whose अ is not elided, with व-प्रत्यय.

तिरस् + अञ्च + किन् 3.2.59 ऋत्विग्दधृक्स्त्रिग्दिगुष्णिग् अञ्चयुजिकुञ्चां च । ~ किन्

तिरस् + अच् 6.4.24 अनिदितां हल उपधायाः किडति । ~ न लोपः अङ्गस्य

तिरि + अच् 6.3.99 तिरसस्तिर्यलोपे । ~ वप्रत्यये अञ्चतौ

[LSK] तिर्यङ्<sup>1/1</sup> ।

तिरि + अच् + सुँ

तिरि + अ न् च् + स् 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थाने चाधातोः । ~ नुम्

तिरि + अ न् च् 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

तिरि + अ न् 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः । ~ पदस्य

तिरि + अ ङ् 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः । ~ पदस्य अन्ते

तिर्यङ् 6.1.77 इको यणचि । ~ संहितायाम्

[LSK] तिर्यञ्चौ<sup>1/2</sup> ।

तिरि + अच् + औ

तिरि + अ न् च् + औ 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थाने चाधातोः । ~ नुम्

तिरि + अं च् + औ 8.3.24 नश्चापदान्तस्य झलि । ~ अनुस्वारः

तिरि + अ ञ् च् + औ 8.4.58 अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः ।

तिर्यञ्चौ 6.1.77 इको यणचि । ~ संहितायाम्

[LSK] तिरश्चः<sup>2/3</sup> ।

Here with भ, अत्-लोप takes place by 6.4.138 अचः । ~ अत् लोपः भस्य, thus तिरि-आदेश by 6.3.99 तिरसस्तिर्यलोपे । ~ वप्रत्यये अञ्चतौ does not take place.

तिरस् + अच् + शस्

तिरस् + च् + अस् 6.4.138 अचः । ~ अत् लोपः भस्य अङ्गस्य

तिरश् + च् + अस् 8.4.40 स्तोः श्रुना श्रुः ।

तिरश्चः 8.2.66, 8.3.15

[LSK] तिर्यग्भ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

तिरि + अच् + भ्याम्

तिरि + अक् + भ्याम् 8.2.30 चोः कुः । ~ झलि पदस्य अन्ते

तिरि + अग् + भ्याम् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

तिर्यग्भ्याम् 6.1.77 इको यणचि । ~ संहितायाम्

## Declension of तिर्यच् (च-पुं-5)

गति-अर्थ-तिरस्-उपपद-अञ्चु-धातु-अन्त-शब्दः

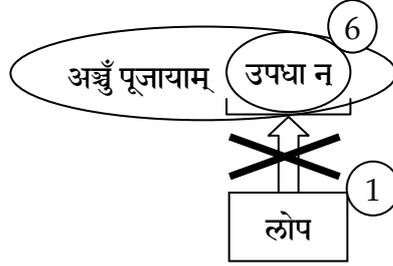
|   | एकवचनम्   | द्विवचनम्                                   | बहुवचनम्  |
|---|---|---|---|
| 1 | तिर्यङ् 7.1.70, 6.1.68, 8.2.23,<br>8.2.62, 6.1.77 | तिर्यञ्चौ 7.1.70, 8.3.24,<br>8.4.58, 6.1.77 | तिर्यञ्चः 7.1.70, 8.3.24, 6.1.77,<br>8.4.58, 8.2.66, 8.3.15 |
| 5 | same as above                                     | same as above                               | same as above   |
| 2 | तिर्यञ्चम् 7.1.70, 8.3.24,<br>8.4.58, 6.1.77      | same as above                               | तिरश्चः 6.4.138, 8.4.40,<br>8.2.66, 8.3.15                  |
| 3 | तिरश्चा 6.4.138, 8.4.40                           | तिर्यग्भ्याम् 8.2.30, 8.2.39                | तिर्यग्भिः 8.2.30, 8.2.39<br>8.2.66, 8.3.15                 |
| 4 | तिरश्चे 6.4.138, 8.4.40                           | same as above                               | तिर्यग्भ्यः 8.2.30, 8.2.39<br>8.2.66, 8.3.15                |
| 5 | तिरश्चः 6.4.138, 8.4.40<br>8.2.66, 8.3.15         | same as above                               | same as above   |
| 6 | same as above                                     | तिरश्चोः 6.4.138, 8.4.40,<br>8.2.66, 8.3.15 | तिरश्चाम् 6.4.138, 8.4.40                                   |
| 7 | तिरश्चि 6.4.138, 8.4.40                           | same as above                               | तिर्यक्षु 8.2.30, 8.2.39,<br>8.3.59, 8.4.55                 |

## च-कारान्त-पुंलिङ्गः (6) प्राच

अञ्चु-धातु has two meanings: गति to go, and पूजायाम् to worship. When the अञ्चु is used in the sense of पूजा, there is अपवाद for नलोप, which is taught in the next sūtra.

### [विधिसूत्रम्] 6.4.30 नाञ्चेः पूजायाम् । ~ उपधायाः न लोपः

There is prohibition of the elision of उपधा न-कार when अञ्चु is in the sense of worship.



न<sup>0</sup> अञ्चेः<sup>6/1</sup> पूजायाम्<sup>7/1</sup> । ~ उपधायाः<sup>6/1</sup> न<sup>6/1</sup> लोपः<sup>1/1</sup>

3 words in the सूत्र; 3 words as अनुवृत्ति

- न<sup>0</sup> – This is to negate नकार-लोप as taught in 6.4.24 अनिदितां हल उपधायाः विडति ।
- अञ्चेः 6/1 – A धातु “अञ्चु गतिपूजनयोः” with इक् धातुनिर्देश प्रत्यय; in सम्बन्ध षष्ठी to उपधायाः.
- पूजायाम् 7/1 – In the sense of worship; in विषयसप्तमी. This is one of the two meanings of the धातु “अञ्चु गतिपूजनयोः”.
- उपधायाः 6/1 – From 6.4.24 अनिदितां हल उपधायाः विडति ।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- न<sup>6/1</sup> – From 6.4.23 शान्नलोपः।; in लुप्तषष्ठी; प्रातिपदिक is न. अ after न is उच्चारणार्थ.
- लोपः 1/1 – From 6.4.23 शान्नलोपः।; this is आदेश.

[LSK] पूजा-अर्थस्य<sup>6/1</sup> अञ्चतेः<sup>6/1</sup> उपधायाः<sup>6/1</sup> नस्य<sup>6/1</sup> लोपः<sup>1/1</sup> न<sup>0</sup> ।

There is no elision of न् which is उपधा of अञ्चु-धातु in the sense of worship.

प्रकर्षेण अञ्चति पूजयति इति प्राङ् ।

प्र + अञ्च + क्तिन् 3.2.59 ऋत्विग्दधृक्स्त्रिग्दिगुष्णिग् अञ्चयुजिकृञ्चां च । ~ क्तिन्

प्र + अञ्च 6.4.24 अनिदितां हल उपधायाः विडति । ~ न लोपः अङ्गस्य is प्राप्त, but it is negated by

6.4.30 नाञ्चेः पूजायाम् । ~ उपधायाः न लोपः

[LSK] प्राङ्<sup>1/1</sup> ।

Note that 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थाने चाघातोः । ~ नुम् is not applicable here because न् did not get elided.

प्र + अञ्च + सुँ

प्र + अञ्च 6.1.68 हल्ब्याब्ब्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

प्र + अञ् 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः । ~ पदस्य

प्र + अन् (प०) निमित्तापाये नैमित्तिकस्याप्यपायः ।

प्र + अङ् 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः । ~ पदस्य अन्ते  
with 1.1.52 अलोऽन्त्यस्य । and 1.1.50 स्थानेऽन्तरतमः।

प्राङ् 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः ।

[LSK] प्राञ्चौ<sup>1/2</sup> ।

प्र + अञ्च + औ

प्राञ्चौ 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः ।

[LSK] न-लोप-अभावात्<sup>H5/1</sup> अलोपः<sup>1/1</sup> न<sup>0</sup> ।

Since there is no elision of न् for अञ्चौ, अ-लोप by 6.4.138 अचः । ~ अत् लोपः भस्य अङ्गस्य does not take place in भ.

[LSK] प्राञ्चः<sup>2/3</sup> ।

प्र + अञ्च + शस्

प्राञ्चस् 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः ।

प्राञ्चः 8.2.66, 8.3.15

[LSK] प्राङ्भ्याम्<sup>3/2</sup> ।

प्र + अञ्च + भ्याम्

प्र + अञ् + भ्याम् 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः । ~ पदस्य

प्र + अन् + भ्याम् (प०) निमित्तापाये नैमित्तिकस्याप्यपायः ।

प्र + अङ् + भ्याम् 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः । ~ पदस्य अन्ते

प्राङ्भ्याम् 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः ।

[LSK] प्राङ्क्षु<sup>7/3</sup> ।

There are three forms in 7/3.

|                     |  |
|---------------------|--|
| प्र + अञ्च + सुप्   |  |
| प्र + अञ् + सु      | 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः । ~ पदस्य               |
| प्र + अन् + सु      | (प०) निमित्तापाये नैमित्तिकस्याप्यपायः ।         |
| प्र + अङ् + सु      | 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः । ~ पदस्य अन्ते        |
| प्र + अङ् क् + सु   | 8.3.28 ङणोः कुक्कुक् शरि । ~ वा                  |
| प्र + अङ् ख् + सु   | (वा०) चयो द्वितीयाः शरि पौष्कलसादेरिति वाच्यम् । |
| प्र + अङ् ख् + षु   | 8.3.59 आदेश-प्रत्यययोः । ~ इणकोः सः मूर्धन्यः    |
| प्राङ्ख्षु          | 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः ।                      |
| द्वितीय-अभाव-पक्षे  |  |
| प्र + अङ् क् + षु   | 8.3.59 आदेश-प्रत्यययोः । ~ इणकोः सः मूर्धन्यः    |
| प्राङ्क्षु          | 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः ।                      |
| कुक्-आगम-अभाव-पक्षे |  |
| प्र + अङ् + षु      | 8.3.59 आदेश-प्रत्यययोः । ~ इणकोः सः मूर्धन्यः    |
| प्राङ्षु            |  |

[LSK] एवम्<sup>0</sup> पूजार्थे<sup>7/1</sup> प्रत्यङ्ङादयः<sup>1/3</sup> ॥

अञ्चुँ in the sense of पूजा, प्रति + अञ्चुँ + किन्, etc. decline in the same manner.

Declension of प्राच् (च-पुं-6)

पूजा-अर्थ-प्र-उपपद-अञ्चु-धातु-अन्त-शब्दः

|   | एकवचनम्   | द्विवचनम्  | बहुवचनम्   |
|---|---|--|--|
| 1 | प्र + अञ्च + सुँ<br>प्र + अञ्च 6.1.68<br>प्र + अन् 8.2.23, (प०)<br>प्र + अङ् 8.2.62<br>प्राङ् 6.1.101 | प्र + अञ्च + औ<br>प्राञ्चौ 6.1.101   | प्र + अञ्च + जस्<br>प्राञ्चस् 6.1.101<br>प्राञ्चः 8.2.66, 8.3.15   |
| S | same as above   | same as above  | same as above  |
| 2 | प्र + अञ्च + अम्<br>प्राञ्चम् 6.1.101   | same as above  | प्र + अञ्च + शस्<br>प्राञ्चस् 6.1.101<br>प्राञ्चः 8.2.66, 8.3.15   |
| 3 | प्र + अञ्च + टा<br>प्राञ्चा 6.1.101   | प्र + अञ्च + भ्याम्<br>प्र + अञ् + भ्याम् 8.2.23<br>प्र + अन् + भ्याम् (प०)<br>प्र + अङ् + भ्याम् 8.2.62<br>प्राङ्भ्याम् 6.1.101 | प्र + अञ्च + भिस्<br>प्र + अन् + भिस् 8.2.23, (प०)<br>प्र + अङ् + भिस् 8.2.62<br>प्राङ्भिस् 6.1.101<br>प्राङ्भिः 8.2.66, 8.3.15  |
| 4 | प्र + अञ्च + डे<br>प्राञ्चे 6.1.101   | same as above  | प्र + अञ्च + भ्यस्<br>प्र + अन् + भ्यस् 8.2.23, (प०)<br>प्र + अङ् + भ्यस् 8.2.62<br>प्राङ्भ्यस् 6.1.101<br>प्राङ्भ्यः 8.2.66, 8.3.15   |
| 5 | प्र + अञ्च + डसिँ<br>प्राञ्चस् 6.1.101<br>प्राञ्चः 8.2.66, 8.3.15                                     | same as above  | same as above  |
| 6 | same as above   | प्र + अच् + ओस्<br>प्राञ्चोस् 6.1.101<br>प्राञ्चोः 8.2.66, 8.3.15  | प्र + अच् + आम्<br>प्राञ्चाम् 6.1.101  |
| 7 | प्र + अच् + डि<br>प्राञ्चि 6.1.101  | same as above  | प्र + अञ्च + सुप्<br>प्र + अन् + सु 8.2.23, (प०)<br>प्र + अङ् + सु 8.2.62<br>प्र + अङ् क् + सु 8.3.23<br>प्र + अङ् ख् + सु (वा०)<br>प्राङ्खु 8.3.59, 6.1.101<br>प्राङ्क्षु 8.3.59, 6.1.101<br>प्राङ्षु 8.3.59, 6.1.101 |

Declension of प्राच् (च्-पुं-6)

पूजा-अर्थ-प्रति-उपपद-अञ्चु-धातु-अन्त-शब्दः

|   | एकवचनम्  | द्विवचनम्                                      | बहुवचनम्  |
|---|--|--|---|
| 1 | प्रत्यङ् 6.1.68, 8.2.23,<br>(प०), 8.2.62, 6.1.77 | प्रत्यञ्चौ 6.1.77                              | प्रत्यञ्चः 6.1.77,<br>8.2.66, 8.3.15  |
| S | same as above                                    | same as above                                  | same as above   |
| 2 | प्रत्यञ्चम् 6.1.77                               | same as above                                  | same as above   |
| 3 | प्रत्यञ्चा 6.1.77                                | प्रत्यङ्भ्याम् 8.2.23, (प०),<br>8.2.62, 6.1.77 | प्रत्यङ्भिः 8.2.23, (प०), 8.2.62,<br>6.1.77, 8.2.66, 8.3.15                           |
| 4 | प्रत्यञ्चे 6.1.77                                | same as above                                  | प्रत्यङ्भ्यः 8.2.23, (प०), 8.2.62,<br>6.1.77, 8.2.66, 8.3.15                          |
| 5 | प्रत्यञ्चः 6.1.77,<br>8.2.66, 8.3.15             | same as above                                  | same as above   |
| 6 | same as above                                    | प्रत्यञ्चोः 6.1.77, 8.2.66, 8.3.15             | प्रत्यञ्चाम् 6.1.77   |
| 7 | प्रत्यञ्चि 6.1.77                                | same as above                                  | प्रत्यङ्खु/प्रत्यङ्क्षु/प्रत्यङ्खु<br>8.2.23, (प०), 8.2.62, 8.3.23,<br>8.3.59, 6.1.77 |

Declension of प्राच् (च्-पुं-6)

पूजा-अर्थ-उद्-उपपद-अञ्चु-धातु-अन्त-शब्दः

|   | एकवचनम्       | द्विवचनम्     | बहुवचनम्               |
|---|---------------|---------------|------------------------|
| 1 | उदङ्          | उदञ्चौ        | उदञ्चः                 |
| S | same as above | same as above | same as above          |
| 2 | उदञ्चम्       | same as above | same as above          |
| 3 | उदञ्चा        | उदङ्भ्याम्    | उदङ्भिः                |
| 4 | उदञ्चे        | same as above | उदङ्भ्यः               |
| 5 | उदञ्चः        | same as above | same as above          |
| 6 | same as above | उदञ्चोः       | उदञ्चाम्               |
| 7 | उदञ्चि        | same as above | उदङ्खु/उदङ्क्षु/उदङ्खु |

Declension of प्राच् (च-पुं-6)

पूजा-अर्थ-सम्-उपपद-अञ्चु-धातु-अन्त-शब्दः

|   | एकवचनम्       | द्विवचनम्     | बहुवचनम्                     |
|---|---------------|---------------|------------------------------|
| 1 | सम्यङ्        | सम्यञ्चौ      | सम्यञ्चः                     |
| S | same as above | same as above | same as above                |
| 2 | सम्यञ्चम्     | same as above | same as above                |
| 3 | सम्यञ्चा      | सम्यङ्भ्याम्  | सम्यङ्भिः                    |
| 4 | सम्यञ्चे      | same as above | सम्यङ्भ्यः                   |
| 5 | सम्यञ्चः      | same as above | same as above                |
| 6 | same as above | सम्यञ्चोः     | सम्यञ्चाम्                   |
| 7 | सम्यञ्चि      | same as above | सम्यङ्खु/सम्यङ्क्षु/सम्यङ्घु |

Declension of प्राच् (च-पुं-6)

पूजा-अर्थ-सह-उपपद-अञ्चु-धातु-अन्त-शब्दः

|   | एकवचनम्       | द्विवचनम्     | बहुवचनम्                     |
|---|---------------|---------------|------------------------------|
| 1 | सध्यङ्        | सध्यञ्चौ      | सध्यञ्चः                     |
| S | same as above | same as above | same as above                |
| 2 | सध्यञ्चम्     | same as above | same as above                |
| 3 | सध्यञ्चा      | सध्यङ्भ्याम्  | सध्यङ्भिः                    |
| 4 | सध्यञ्चे      | same as above | सध्यङ्भ्यः                   |
| 5 | सध्यञ्चः      | same as above | same as above                |
| 6 | same as above | सध्यञ्चोः     | सध्यञ्चाम्                   |
| 7 | सध्यञ्चि      | same as above | सध्यङ्खु/सध्यङ्क्षु/सध्यङ्घु |

Declension of प्राच् (च्-पुं-6)

पूजा-अर्थ-सह-उपपद-अञ्चु-धातु-अन्त-शब्दः

|   | एकवचनम्       | द्विवचनम्     | बहुवचनम्                            |
|---|---------------|---------------|-------------------------------------|
| 1 | तिर्यङ्       | तिर्यञ्चौ     | तिर्यञ्चः                           |
| 5 | same as above | same as above | same as above                       |
| 2 | तिर्यञ्चम्    | same as above | same as above                       |
| 3 | तिर्यञ्चा     | तिर्यङ्भ्याम् | तिर्यङ्भिः                          |
| 4 | तिर्यञ्चे     | same as above | तिर्यङ्भ्यः                         |
| 5 | तिर्यञ्चः     | same as above | same as above                       |
| 6 | same as above | तिर्यञ्चोः    | तिर्यञ्चाम्                         |
| 7 | तिर्यञ्चि     | same as above | तिर्यङ्क्षु/तिर्यङ्क्षु/तिर्यङ्क्षु |

[LSK] कुङ्<sup>1/1</sup> | कुञ्चौ<sup>1/2</sup> | कुङ्भ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

कुञ्च (one who is crooked, egret) declines exactly like प्राच्. After suffixing किन्, the नकाल-लोप by 6.4.24 does not take place because the form is given, निपात, by the sūtra 3.2.59. कुञ्च + किन् 3.2.59 ऋत्विग्दधृक्स्त्रिग्दिगुष्णिग् अञ्चुयुजिकुञ्चां च । ~ किन्

Declension of प्राच् (च्-पुं-6)

कुञ्च-धातु-किन्-अन्त-शब्दः

|   | एकवचनम्       | द्विवचनम्     | बहुवचनम्                   |
|---|---------------|---------------|----------------------------|
| 1 | कुङ्          | कुञ्चौ        | कुञ्चः                     |
| 5 | same as above | same as above | same as above              |
| 2 | कुञ्चम्       | same as above | same as above              |
| 3 | कुञ्चा        | कुङ्भ्याम्    | कुङ्भिः                    |
| 4 | कुञ्चे        | same as above | कुङ्भ्यः                   |
| 5 | कुञ्चः        | same as above | same as above              |
| 6 | same as above | कुञ्चोः       | कुञ्चाम्                   |
| 7 | कुञ्चि        | same as above | कुङ्क्षु/कुङ्क्षु/कुङ्क्षु |

च-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (7) पयोमुच्

पयोमुक् (that which releases water, rain cloud) is the standard चवर्ग-ending प्रातिपदिक.

पयस् + डस् + मुच् + क्तिप्

पयस् + मुच् 6.1.67, 1.2.46, 2.4.71

पयरुँ + मुच् 8.2.66 ससजुषो रुँः ।

पय उ + मुच् 6.1.114 हशि च । ~ अष्टुतात् अतः रोः उत्

पयो + मुच् 6.1.87 आद्गुणः । ~ अचि एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

पयोमुच्

[LSK] पयोमुक्<sup>1/1</sup>, पयोमुग्<sup>1/1</sup> । पयोमुचौ<sup>1/2</sup>।

पयोमुच् + सुँ

पयोमुच् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

पयोमुक् 8.2.30 चोः कुः । ~ झलि पदस्य अन्ते

पयोमुग् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

पयोमुक् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ चर् झलाम्

[LSK] पयोमुग्भ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

पयोमुच् + भ्याम्

पयोमुक् + भ्याम् 8.2.30 चोः कुः । ~ झलि पदस्य अन्ते

पयोमुग् + भ्याम् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

पयोमुच् + सुप्

पयोमुक् + सु 8.2.30 चोः कुः । ~ झलि पदस्य अन्ते

पयोमुग् + सु 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

पयोमुग् + षु 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः ।

पयोमुक् + षु 8.4.55 खरि च । झलाम् चर्

पयोमुक्षु

Declension of पयोमुच् (च्-पुं-7)

|   | एकवचनम्  | द्विवचनम्                       | बहुवचनम्                                    |
|---|--|---------------------------------|---|
| 1 | पयोमुक्/पयोमुग्<br>6.1.68, 8.2.30,<br>8.2.39, 8.4.56 | पयोमुचौ                         | पयोमुचः                                     |
| 5 | same as above  | same as above                   | same as above                               |
| 2 | पयोमुचम्   | same as above                   | same as above                               |
| 3 | पयोमुचा  | पयोमुग्भ्याम्<br>8.2.30, 8.2.39 | पयोमुग्भिः 8.2.30, 8.2.39                   |
| 4 | पयोमुचे  | same as above                   | पयोमुग्भ्यः 8.2.30, 8.2.39                  |
| 5 | पयोमुचः  | same as above                   | same as above                               |
| 6 | same as above  | पयोमुचोः                        | पयोमुचाम्                                   |
| 7 | पयोमुचि  | same as above                   | पयोमुक्षु 8.2.30, 8.2.39,<br>8.3.59, 8.4.55 |

त-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (1) महत्

महत् (great) declines in three लिङ्गs.

महँ पूजायाम् (1P) to honor

मह् + अतिँ (उ०) 2.85 वर्तमाने पृषद्बृहन्महज्जगच्छतृवच्च ।

The उणादि-प्रत्यय अतिँ should be treated like शतृँ.

महत् 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

[LSK] उगित्त्वात्<sup>5/1</sup> नुमि<sup>7/1</sup> -

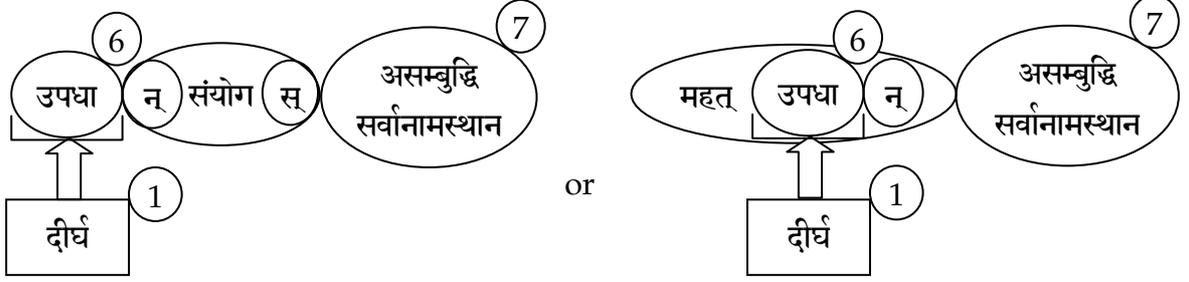
The word महत् (great) is treated like शतृँ-प्रत्यय-ending word. Thus 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थाने चाधातोः । ~ नुम् is applicable. Then the next sūtra is applicable.

महत् + सुँ<sup>1/1</sup>

मह न्त् + स् 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थाने चाधातोः । ~ नुम्

[विधिसूत्रम्] 6.4.10 सान्तमहतः संयोगस्य । ~ न उपधायाः दीर्घः असम्बुद्धौ सर्वनामस्थाने

There is दीर्घ for उपधा of न्, which is a part of स्-ending संयोग, or महत् when सर्वनामस्थान other than सम्बुद्धि follows.



सान्त<sup>6/1</sup> महतः<sup>6/1</sup> संयोगस्य<sup>6/1</sup> । ~ न<sup>6/1</sup> उपधायाः<sup>6/1</sup> दीर्घः<sup>1/1</sup> असम्बुद्धौ<sup>7/1</sup> सर्वनामस्थाने<sup>7/1</sup>

3 words in the सूत्र; 5 words as अनुवृत्ति

- सान्त 6/1 – सः अन्ते यस्य संयोगस्य सः सान्तः (116B), तस्य ।; अ after स् is for उच्चारण. This is adjective to संयोगस्य. The 6th case suffix is लुप्त.
- महतः 6/1 – प्रातिपदिक is महत्; in सम्बन्धे षष्ठी to न (नस्य).
- संयोगस्य 6/1 – प्रातिपदिक is महत्; in सम्बन्धे षष्ठी to न (नस्य).
- न 6/1 – From 6.4.7 नोपधायाः ।; in सम्बन्धे षष्ठी to उपधायाः. अ after न् is उच्चारणार्थ. षष्ठी विभक्ति is लुप्त.
- उपधायाः 6/1 – From 6.4.7 नोपधायाः ।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- दीर्घः 1/1 – From 6.3.111 ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः ।; this is आदेश.
- असम्बुद्धौ 7/1 – From 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ ।; this is adjective to सर्वनामस्थाने.
- सर्वनामस्थाने 7/1 – From 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ ।; in परसप्तमी.

[LSK] स-अन्त-संयोगस्य<sup>6/1</sup> महतः<sup>6/1</sup> च<sup>0</sup> यः<sup>1/1</sup> नकारः<sup>1/1</sup> तस्य<sup>6/1</sup> उपधायाः<sup>6/1</sup> दीर्घः<sup>1/1</sup> असम्बुद्धौ<sup>7/1</sup> सर्वनामस्थाने<sup>7/1</sup> ।

दीर्घ is the substitute in the place of उपधा of न् which belongs to स्-ending संयोग, or महत् word, when सर्वनामस्थान other than सम्बुद्धि follows.

[LSK] महान्<sup>1/1</sup> ।

महत् + सुँ

मह न् त् + स् 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थाने चाधातोः । ~ नुम्

महा न् त् + स् 6.4.10 सान्तमहतः संयोगस्य । ~ न उपधायाः दीर्घः असम्बुद्धौ सर्वनामस्थाने

महा न् त् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्वपृक्तं हल् । ~ लोपः

महा न् 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः । ~ पदस्य

महान्

[LSK] महान्तौ<sup>1/2</sup> । महान्तः<sup>1/3</sup> ।

महत् + औ

मह न् त् + औ 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थाने चाधातोः । ~ नुम्

महा न् त् + औ 6.4.10 सान्तमहतः संयोगस्य । ~ न उपधायाः दीर्घः असम्बुद्धौ सर्वनामस्थाने

महान्तौ

[LSK] हे महन्<sup>S/1</sup> ।

Since 6.4.10 सान्तमहतः संयोगस्य । is not applicable when सम्बुद्धि follows, नोपधा-दीर्घ does not take place.

महत् + सुँ

मह न् त् + स् 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थाने चाधातोः । ~ नुम्

मह न् त् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्वपृक्तं हल् । ~ लोपः

मह न् 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः । ~ पदस्य

महन्

[LSK] महद्भ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

महत् + भ्याम्

महद् + भ्याम् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

महद्भ्याम्

Declension of महत् (त्-पुं-1)

|   | एकवचनम्  | द्विवचनम्  | बहुवचनम्  |
|---|--|--|---|
| 1 | महत् + सुँ<br>मह न्त् + स् 7.1.70<br>महा न्त् + स् 6.4.10<br>महा न्त् 6.1.68<br>महान् 8.2.23 | महत् + औ<br>मह न्त् + औ 7.1.70<br>महा न्त् + औ 6.4.10<br>महान्तौ | महत् + जस्<br>मह न्त् + अस् 7.1.70<br>महा न्त् + अस् 6.4.10<br>महान्तः 8.2.66, 8.3.15 |
| 5 | महत् + सुँ<br>मह न्त् + स् 7.1.70<br>मह न्त् 6.1.68<br>महान् 8.2.23                          | same as above  | same as above   |
| 2 | महान्तम् 7.1.70, 6.4.10  | same as above  | महतः 8.2.66, 8.3.15   |
| 3 | महता   | महद्भ्याम् 8.2.39  | महद्भिः 8.2.39, 8.2.66, 8.3.15  |
| 4 | महते   | same as above  | महद्भ्यः 8.2.39, 8.2.66, 8.3.15   |
| 5 | महतः 8.2.66, 8.3.15  | same as above  | same as above   |
| 6 | same as above  | महतोः 8.2.66, 8.3.15   | महताम्  |
| 7 | महति   | same as above  | महत् + सुप्<br>महद् + सु 8.2.39<br>महत्सु 8.4.55                                      |

त-कारान्त-पुंलिङ्गः (2) धीमत

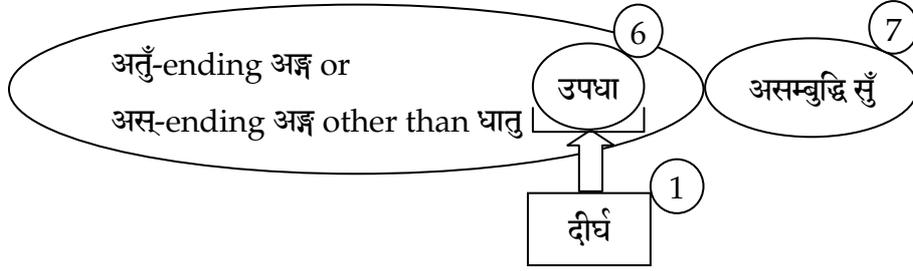
धीः अस्य अस्ति इति धीमान् । One who has intellect.

धी + सुँ + मतुप् 5.2.94 तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् ।

धीमत 1.2.46, 2.4.71

[विधिसूत्रम्] **6.4.14 अत्वसन्तस्य चाधातोः । ~ उपधायाः दीर्घः अङ्गस्य असम्बुद्धौ सौ**

उपधा-दीर्घ for अतुँ-ending अङ्ग or अस्-ending अङ्ग other than धातु when असम्बुद्धि सुँ follows.



अतुँ<sup>6/1</sup> अस्-अन्तस्य<sup>6/1</sup> च<sup>0</sup> अधातोः<sup>6/1</sup> । ~ उपधायाः<sup>6/1</sup> दीर्घः<sup>1/1</sup> अङ्गस्य<sup>6/1</sup> असम्बुद्धौ<sup>7/1</sup> सौ<sup>7/1</sup>

4 words in the सूत्र; 5 words as अनुवृत्ति

- अतुँ<sup>6/1</sup> – प्रातिपदिक is अतुँ; in 6<sup>th</sup> case which is elided. This is adjective to अङ्गस्य. With तदन्तविधि, it is understood as “of अतुँ-ending अङ्ग”.
- अस्-अन्तस्य<sup>6/1</sup> – अस् अन्ते यस्य अङ्गस्य सः (116B), तस्य।; this is also adjective to अङ्गस्य. With तदन्तविधि, it is understood as “of अस्-ending अङ्ग”.
- च<sup>0</sup> – Connecting two different conditions.
- अधातोः<sup>6/1</sup> – न धातुः अधातुः (NT), तस्य।; this is adjective only to अस्-अन्तस्य. Together it results in “that which is not धातु, ending with अस्”.
- उपधायाः<sup>6/1</sup> – From 6.4.7 नोपधायाः।; in स्थानेयोगा षष्ठी. 1.2.28 अचश्च । is not required.
- दीर्घः<sup>1/1</sup> – From 6.3.111 ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः।; this is आदेश.
- अङ्गस्य<sup>6/1</sup> – From 6.4.1 अङ्गस्य।; this is in सम्बन्धे षष्ठी to उपधायाः.
- असम्बुद्धौ<sup>7/1</sup> – From 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ।; this is adjective to सौ.
- सौ<sup>7/1</sup> – From 6.4.13 सौ च।; in परसप्तमी.

[LSK] अतुँ-अन्तस्य<sup>6/1</sup> उपधायाः<sup>6/1</sup> दीर्घः<sup>1/1</sup> धातु-भिन्न-अस्-अन्तस्य<sup>6/1</sup> च<sup>0</sup> असम्बुद्धौ<sup>7/1</sup> सौ<sup>7/1</sup> परे<sup>7/1</sup> ।

दीर्घ is the substitute in the place of उपधा of अतुँ-ending अङ्ग, or अस्-ending अङ्ग other than धातु, असम्बुद्धि सुँ follows.

[LSK] उगित्वात्<sup>5/1</sup> नुम्<sup>1/1</sup> । धीमान्<sup>1/1</sup> ।

उँ of मत्तुँप् is इत्. Thus मत्तुँप्-ending प्रातिपदिक is called उगित्. Being उगित्, नुम्-आगम takes place.

धीमत् + सुँ

धीम न्त् + स् 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थाने चाधातोः । ~ नुम्

धीमा न्त् + स् 6.4.14 अत्वसन्तस्य चाधातोः । ~ उपधायाः दीर्घः अङ्गस्य असम्बुद्धौ सौ

धीमा न्त् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

धीमा न् 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः । ~ पदस्य

धीमान्

[LSK] धीमन्तौ<sup>1/2</sup> । धीमन्तः<sup>1/3</sup> । हे धीमन्<sup>S/1</sup> ।

Here, उपधा-दीर्घ is heard only when असम्बुद्धि सुँ follows.

धीमत् + औ

धीम न्त् + औ 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थाने चाधातोः । ~ नुम्

धीमन्तौ

[LSK] शस्-आदौ<sup>7/1</sup> महद्वत्<sup>0</sup> ।

In शस् onwards, it declines like महत्.

### Declension of धीमत् (त्-पुं-2)

मत्तुँप्-अन्त-प्रातिपदिकम्

|   | एकवचनम्                                  | द्विवचनम्             | बहुवचनम्                         |
|---|--|-----------------------|----------------------------------|
| 1 | धीमान् 7.1.70, 6.4.14,<br>6.1.68, 8.2.23 | धीमन्तौ 7.1.70        | धीमन्तः 7.1.70, 8.2.66, 8.3.15   |
| S | धीमन् 7.1.70, 6.1.68,<br>8.2.23          | same as above         | same as above                    |
| 2 | धीमन्तम् 7.1.70                          | same as above         | धीमतः 8.2.66, 8.3.15             |
| 3 | धीमता                                    | धीमद्भ्याम् 8.2.39    | धीमद्भिः 8.2.39, 8.2.66, 8.3.15  |
| 4 | धीमते                                    | same as above         | धीमद्भ्यः 8.2.39, 8.2.66, 8.3.15 |
| 5 | धीमतः 8.2.66, 8.3.15                     | same as above         | same as above                    |
| 6 | same as above                            | धीमतोः 8.2.66, 8.3.15 | धीमताम्                          |
| 7 | धीमति                                    | same as above         | धीमत्सु 8.2.39, 8.4.55           |

Compared to महत्, the only difference is that the उपधा-दीर्घ takes place only in 1/1 by 6.4.14.

त-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (3) भवतुँ

भवत् (revered you) is the second to last item in सर्वादिगण. This is a pronoun used to address a person in front of the speaker with respect. प्रथम-पुरुष-संज्ञक-प्रत्ययs are used for verbs corresponding to भवतुँ.

भा दीप्तौ (2P) to shine

भा + डवतुँ (उ०) 1.63 भातेर्डवतुँप् ।<sup>12</sup>

भ् + अवत् डित्त्वसामर्थ्यादभस्यापि टेलोपः । This is explained below.

भवत्

[LSK] भातेः<sup>5/1</sup> डवतुः<sup>1/1</sup> ।

By the उणादिसूत्र, after भा-धातु, डवतुँ(प)-प्रत्यय is suffixed.

[LSK] डित्त्व-सामर्थ्यात्<sup>5/1</sup> अभस्य<sup>6/1</sup> अपि<sup>0</sup> टेः<sup>6/1</sup> लोपः<sup>1/1</sup> ।

By the capability of being डित्, even though the अङ्ग is not भ, there is लोप for टि part of the अङ्ग.

ड् of डवतुँप् is इत् by 1.3.7 चुटू ।, thus डवतुँप् is डित्. Being उणादिप्रत्यय which is not found in स्वादिषु, starting from 4.1.2, the अङ्ग for डवतुँप् cannot become भ. Thus 6.4.143 टेः । ~ भस्य डिति लोपः is not applicable in the case of भा + डवतुँप्. However, any kind of डित् प्रत्यय has capability to elide टि part of any अङ्ग. This is said here in this वार्तिक.

[LSK] भवान्<sup>1/1</sup> । भवन्तौ<sup>1/2</sup> । भवन्तः<sup>1/3</sup> ॥

Being अतुँ-ending word, the entire declension is the same as धीमत.

भवत् + सुँ

भव न् त् + सुँ 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थाने चाधातोः । ~ नुम्

भवा न् त् + स् 6.4.14 अत्वसन्तस्य चाधातोः । ~ उपधायाः दीर्घः अङ्गस्य असम्बुद्धौ सौ

भवा न् त् 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

भवा न् 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः । ~ पदस्य

भवान्

From the vision of 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य ।, the elision of त् by 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः । is असिद्ध, thus न् is not elided.

<sup>12</sup> In उणादिसूत्र, डवतुँप् is told. However, the पित्त्व is considered to be unnecessary.

Declension of भवत् (त्-पुं-3)

डवतुँप्-अन्त-प्रातिपदिकम्

|   | एकवचनम्                                 | द्विवचनम्            | बहुवचनम्                        |
|---|---|----------------------|---------------------------------|
| 1 | भवान् 7.1.70, 6.4.14,<br>6.1.68, 8.2.23 | भवन्तौ 7.1.70        | भवन्तः 7.1.70, 8.2.66, 8.3.15   |
| S | भवन् 7.1.70, 6.1.68,<br>8.2.23          | same as above        | same as above                   |
| 2 | भवन्तम् 7.1.70                          | same as above        | भवतः 8.2.66, 8.3.15             |
| 3 | भवता                                    | भवद्भ्याम् 8.2.39    | भवद्भिः 8.2.39, 8.2.66, 8.3.15  |
| 4 | भवते                                    | same as above        | भवद्भ्यः 8.2.39, 8.2.66, 8.3.15 |
| 5 | भवतः 8.2.66, 8.3.15                     | same as above        | same as above                   |
| 6 | same as above                           | भवतोः 8.2.66, 8.3.15 | भवताम्                          |
| 7 | भवति                                    | same as above        | भवत्सु 8.2.39, 8.4.55           |

The entire declension is the same as धीमत्.

Declension of भवत् (त्-पुं-4)

शतुँ-अन्त-प्रातिपदिकम्

|   | एकवचनम्                        | द्विवचनम्            | बहुवचनम्                        |
|---|--------------------------------|----------------------|---------------------------------|
| 1 | भवन् 7.1.70, 6.1.68,<br>8.2.23 | भवन्तौ 7.1.70        | भवन्तः 7.1.70, 8.2.66, 8.3.15   |
| S | भवन् 7.1.70, 6.1.68,<br>8.2.23 | same as above        | same as above                   |
| 2 | भवन्तम् 7.1.70                 | same as above        | भवतः 8.2.66, 8.3.15             |
| 3 | भवता                           | भवद्भ्याम् 8.2.39    | भवद्भिः 8.2.39, 8.2.66, 8.3.15  |
| 4 | भवते                           | same as above        | भवद्भ्यः 8.2.39, 8.2.66, 8.3.15 |
| 5 | भवतः 8.2.66, 8.3.15            | same as above        | same as above                   |
| 6 | same as above                  | भवतोः 8.2.66, 8.3.15 | भवताम्                          |
| 7 | भवति                           | same as above        | भवत्सु 8.2.39, 8.4.55           |

The only difference from भवतुँ is 1/1, the absence of उपधा-दीर्घ by not being अतुँ-ending word.

त-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (4) भवत्

भवत् (one who is being) is a शतृ-<sup>1</sup>-ending word. The difference from भवतुँ is that 6.4.14 अत्वसन्तस्य चाधातोः । is not applicable here.

भू सत्तायाम् (1P) to be

भू + लट् 3.2.123 वर्तमाने लट् ।

भू + शतृ 3.2.124 लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे ।

भू + शप् + अत् 3.1.68 कर्तरि शप् । ~ सार्वधातुके

भो + अ + अत् 7.3.84 सार्वधारुकार्घधातुकयोः । ~ गुणः

भव् + अ + अत् 6.1.78 एचोऽयवायावः। ~ अचि

भव् + अत् 6.1.97 अतो गुणे । ~ अपदान्तात् पररूपम् एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

भवत्

[LSK] शतृ-अन्तस्य<sup>6/1</sup> भवन्<sup>1/1</sup> ॥

By not being अतृ-<sup>1</sup>-ending word, उपधा-दीर्घ by 6.4.14 अत्वसन्तस्य चाधातोः । does not take place.

भवत् + सुँ

भव न् त् + सुँ 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थाने चाधातोः । ~ नुम्

भव न् त् 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

भव न् 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः । ~ पदस्य

भवन्

The only difference from भवतुँ is 1/1, the absence of उपधा-दीर्घ by not being अतृ-<sup>1</sup>-ending word.

## त-कारान्त-पुंलिङ्गः (5) ददत्

ददत् (one who is giving) declines without नुम्-आगम because of अभ्यस्त-संज्ञा.

डुदाञ् (3U) to give

|                |  |
|----------------|--|
| दा + लट्       | 3.2.123 वर्तमाने लट् ।                               |
| दा + शर्त्     | 3.2.124 लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे ।             |
| दा + शप् + अत् | 3.1.68 कर्तरि शप् । ~ सार्वधातुके                    |
| दा + अत्       | 2.4.75 जुहोत्यादिभ्यः श्लुः । ~ शपः                  |
| दा दा + अत्    | 6.1.10 श्लौ । ~ प्रथमस्य द्वे                        |
| द दा + अत्     | 7.4.59 ह्रस्वः । ~ अभ्यासस्य                         |
| द द् + अत्     | 6.4.112 श्राभ्यस्तयोरातः । ~ लोपः सार्वधातुके किङिति |
| ददत्           |  |

## [संज्ञासूत्रम्] 6.1.5 उभे अभ्यस्तम् । ~ द्वे

In the section of reduplication in the 6<sup>th</sup> chapter, both of the duplicated parts are together called अभ्यस्त.

उभे<sup>1/2</sup> अभ्यस्तम्<sup>1/1</sup> । ~ द्वे<sup>1/2</sup>

2 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- उभे 1/2 – Both of the duplicated parts. This is संज्ञी.
- अभ्यस्तम् 1/1 – This is संज्ञा.
- द्वे 1/2 – Duplicated parts.

[LSK] षाष्ठ-द्वित्व-प्रकरणे<sup>7/1</sup> ये<sup>1/2</sup> द्वे<sup>1/2</sup> विहिते<sup>1/2</sup> ते<sup>1/2</sup> उभे<sup>1/2</sup> समुदिते<sup>1/2</sup> अभ्यस्त-संज्ञे<sup>1/2</sup> स्तः<sup>III/2</sup> ॥

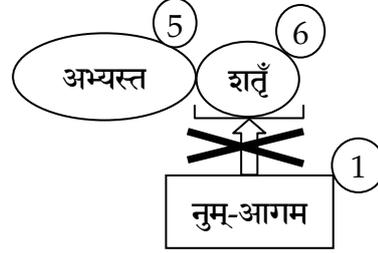
In the section of reduplication in the 6<sup>th</sup> chapter, that duplication which is ordained, both of them are together called अभ्यस्त.

There is another section of द्वे, repetition, in the 8<sup>th</sup> chapter. Here, only the one in the 6<sup>th</sup> chapter is intended.

After ए of nominal suffix in dual, sandhi does not happen by 1.1.11 ईदूदेद्विवचनं प्रगृह्यम्। and 6.1.125 प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम् ।.

[निषेधसूत्रम्] 7.1.78 नाभ्यस्ताच्छतुः । ~ नुम्

After अभ्यस्त, नुम्-आगम does not come for शतृँ.



न<sup>0</sup> अभ्यस्तात्<sup>5/1</sup> शतुः<sup>6/1</sup> । ~ नुम्<sup>1/1</sup>

3 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- न<sup>0</sup> – This is to negate नुम्.
- अभ्यस्तात्<sup>5/1</sup> – अभ्यस्त as defined in 6.1.5 उभे अभ्यस्तम्।; in पूर्वपञ्चमी.
- शतुः<sup>6/1</sup> – Suffix शतृँ; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- नुम्<sup>1/1</sup> – This is आगम.

[LSK] अभ्यस्तात्<sup>5/1</sup> परस्य<sup>6/1</sup> शतुः<sup>6/1</sup> नुम्<sup>1/1</sup> न<sup>0</sup> ।

नुम् does not come for शतृँ-प्रत्यय when अभ्यस्त precedes.

[LSK] ददत्<sup>1/1</sup>, ददद्<sup>1/1</sup> ।

ददत् + सुँ 4.1.2 स्वौजसमौड्ढस्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् । ~ ङ्याप्रातिपदिकात्

ऋँ of शतृँ is इत्. Being उगित, 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः। is प्राप्त, but negated by 7.1.78

नाभ्यस्ताच्छतुः । ~ नुम्.

ददत् 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

ददद् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

ददत् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ चर् झलाम्

[LSK] ददतौ<sup>1/2</sup> । ददतः<sup>1/3</sup> ॥

The entire declension is without नुम्-आगम.

Declension of ददत् (त्-पुं-5)

अभ्यस्त-शर्तु-अन्त-प्रातिपदिकम्

|   | एकवचनम्                             | द्विवचनम्            | बहुवचनम्                        |
|---|-------------------------------------|----------------------|---------------------------------|
| 1 | ददत्/ददद्<br>6.1.68, 8.2.39, 8.4.56 | ददतौ                 | ददतः                            |
| S | same as above                       | same as above        | same as above                   |
| 2 | ददतम्                               | same as above        | same as above                   |
| 3 | ददता                                | ददद्भ्याम् 8.2.39    | ददद्भिः 8.2.39, 8.2.66, 8.3.15  |
| 4 | ददते                                | same as above        | ददद्भ्यः 8.2.39, 8.2.66, 8.3.15 |
| 5 | ददतः 8.2.66, 8.3.15                 | same as above        | same as above                   |
| 6 | same as above                       | ददतोः 8.2.66, 8.3.15 | ददताम्                          |
| 7 | ददति                                | same as above        | ददत्सु 8.2.39, 8.4.55           |

Declension of जक्षत् (त्-पुं-5)

अभ्यस्त-शर्तु-अन्त-प्रातिपदिकम्

|   | एकवचनम्                                 | द्विवचनम्              | बहुवचनम्                          |
|---|---|------------------------|-----------------------------------|
| 1 | जक्षत्/जक्षद्<br>6.1.68, 8.2.39, 8.4.56 | जक्षतौ                 | जक्षतः                            |
| S | same as above                           | same as above          | same as above                     |
| 2 | जक्षतम्                                 | same as above          | same as above                     |
| 3 | जक्षता                                  | जक्षद्भ्याम् 8.2.39    | जक्षद्भिः 8.2.39, 8.2.66, 8.3.15  |
| 4 | जक्षते                                  | same as above          | जक्षद्भ्यः 8.2.39, 8.2.66, 8.3.15 |
| 5 | जक्षतः 8.2.66, 8.3.15                   | same as above          | same as above                     |
| 6 | same as above                           | जक्षतोः 8.2.66, 8.3.15 | जक्षताम्                          |
| 7 | जक्षति                                  | same as above          | जक्षत्सु 8.2.39, 8.4.55           |

शर्तु-ending words with other धातुs in जक्ष-इति-आदिगण, such as जाग्रत्, दरिद्रत्, शासत्, चकासत् decline in the same manner.

जक्षत् (one who is eating) also declines like ददत् because of अभ्यस्त-संज्ञा given to seven धातुs in the 2<sup>nd</sup> conjugation (अदादिगण).

जक्षँ भक्षनहसनयो (2P) to eat, to laugh

जक्ष + लट् 3.2.123 वर्तमाने लट् ।

जक्ष + शर्त् 3.2.124 लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे ।

जक्ष + शप् + अत् 3.1.68 कर्तरि शप् । ~ सार्वधातुके

जक्ष + अत् 2.4.72 अदिप्रभृतिभ्यः शपः । ~ लुक्

जक्षत् 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

अभ्यस्त-संज्ञा is also given to seven धातुs starting with जक्ष् in the 2<sup>nd</sup> conjugation by the next sūtra.

### [संज्ञासूत्रम्] 6.1.6 जक्षित्यादयः षट् । ~ अभ्यस्तम्

जक्ष-धातु and other six धातुs (seven धातुs total) are termed अभ्यस्त.

जक्ष्<sup>1/1</sup> इति-आदयः<sup>1/3</sup> षट्<sup>1/3</sup> । ~ अभ्यस्तम्<sup>1/2</sup>

3 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- जक्ष् 1/1 – जक्षँ भक्षनहसनयो (2P) to eat, to laugh
- इति-आदयः 1/3 – धातुs in the 2<sup>nd</sup> conjugation after जक्षँ; 1. जागृ to be awake, 2. दरिद्रा to be in difficulty, 3. चकासुँ to shine, 4. शासुँ to teach, 5. दीधीङ् to play, and 6. वेवीङ् to go (only in Veda); this is संज्ञी.
- षट् 1/3 – Six धातुs, not counting जक्ष् in.
- अभ्यस्तम् 1/1 – This is संज्ञा.

[LSK] षट्-धातवः<sup>1/3</sup> अन्ये<sup>1/3</sup> जक्षितिः<sup>1/1</sup> च<sup>0</sup> सप्तमः<sup>1/1</sup> एते<sup>1/3</sup> अभ्यस्त-संज्ञाः<sup>1/3</sup> स्युः<sup>III/3</sup> ।

Six धातुs and जक्ष् as seventh, these are termed अभ्यस्त.<sup>13</sup>

[LSK] जक्षत्<sup>1/1</sup>, जक्षद्<sup>1/1</sup> । जक्षतौ<sup>1/2</sup> । जक्षतः<sup>1/3</sup> ॥

The entire declension is like ददत्.

[LSK] एवम्<sup>0</sup> जाग्रत्<sup>1/1</sup> । दरिद्रत्<sup>1/1</sup> । शासत्<sup>1/1</sup> । चकासत्<sup>1/1</sup> ॥

In the same manner, other धातुs in जक्ष्-इति-आदिगण.

<sup>13</sup> Here, the word जक्षिति is made of जक्ष् with शितप् and इट्-आगम brought by 7.2.76 रुदादिभ्यः सार्वधातुके । ~ इट्, as जक्ष् belongs to रुदादिगण in अदादिगण.

**प-कारान्त-पुंलिङ्गः (1) गुप्**

गुप् गोपने (1A) to conceal

गुप् + क्तिप् 3.2.76 क्तिप् च ।

गुप् 6.1.67 वेरपृक्तस्य । ~ लोपः

[LSK] गुप्<sup>1/1</sup>, गुब्<sup>1/1</sup> । गुपौ<sup>1/2</sup> । गुपः<sup>1/3</sup> । गुब्ब्याम्<sup>3/2</sup> ॥

गुप् + सुँ

गुप् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

गुब् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

गुप् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ झलाम् चर् च

**Declension of जक्षत् (त-पुं-5)**

अभ्यस्त-शर्तु-अन्त-प्रातिपदिकम्

|   | एकवचनम्                             | द्विवचनम्            | बहुवचनम्                        |
|---|-------------------------------------|----------------------|---------------------------------|
| 1 | गुप्/गुब्<br>6.1.68, 8.2.39, 8.4.56 | गुपौ                 | गुपः 8.2.66, 8.3.15             |
| 5 | same as above                       | same as above        | same as above                   |
| 2 | गुपम्                               | same as above        | same as above                   |
| 3 | गुपा                                | गुब्ब्याम् 8.2.39    | गुब्भिः 8.2.39, 8.2.66, 8.3.15  |
| 4 | गुपे                                | same as above        | गुब्भ्यः 8.2.39, 8.2.66, 8.3.15 |
| 5 | गुपः 8.2.66, 8.3.15                 | same as above        | same as above                   |
| 6 | same as above                       | गुपोः 8.2.66, 8.3.15 | गुपाम्                          |
| 7 | गुपि                                | same as above        | गुप्सु 8.2.39, 8.4.55           |

श-कारान्त-पुंलिङ्गः (1) तादृश

तादृश (one which is similar to that)

## [विधिसूत्रम्] 3.2.60 त्यदादिषु दृशोऽनालोचने कञ्च । ~ क्तिन्

With त्यदादि as उपपद, दृश्-धातु takes क्तिन्-प्रत्यय, not in the sense of knowing.

त्यदादिषु<sup>7/3</sup> दृशः<sup>5/1</sup> अनालोचने<sup>7/1</sup> कञ्<sup>1/1</sup> च<sup>0</sup> । ~ क्तिन्<sup>1/1</sup>

5 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- त्यदादिषु 7/3 – In सर्वादिगण, a section starting from त्यद्, namely: त्यद्, तद्, यद्, एतद्, इदम्, अदस्, एक, द्वि, युष्मद्, अस्मद्, भवतुं, किम्. In उपपदसप्तमी taught by 3.1.92 तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् ।.
- दृशः 5/1 – दृशिर् प्रेक्षणे (1P) to see; in दिग्योगे पञ्चमी to परः प्रत्ययः.
- अनालोचने 7/1 – “Not in the sense of knowing”; आलोचनं ज्ञानम् knowing, न आलोचनम् अनालोचनम् (NT), तस्मिन्।; in विषयसप्तमी.<sup>14</sup>
- च 0 – This brings क्तिन्.
- क्तिन् 1/1 – From 3.2.58 स्पृशोऽनुदके क्तिन् ।; this is प्रत्यय.

The content of प्रत्यय is व् only. क् and न् are इत्. इ is for उच्चारण.

[LSK] त्यदादिषु<sup>7/3</sup> उपपदेषु<sup>7/3</sup> अनालोचन-अर्थात्<sup>5/1</sup> दृशोः<sup>5/1</sup> कञ्<sup>1/1</sup> स्यात्<sup>III/1</sup> । चात्<sup>5/1</sup> क्तिन्<sup>1/1</sup> ॥

When there are त्यदादि as उपपद, after दृश्-धातु which does not mean knowing, कञ् प्रत्यय should come. By चकार, क्तिन् can also come.

तद् + दृश् + क्तिन्            3.2.60 त्यदादिषु दृशोऽनालोचने कञ्च । ~ क्तिन् धातोः प्रत्ययः परश्च

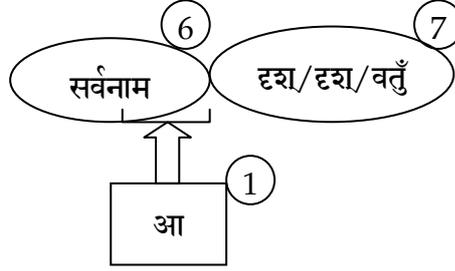
तद् + दृश्                      6.1.67 वेरपृक्तस्य । ~ लोपः

Note that this क्तिन्-प्रत्यय-ending word declines in all genders and there is no स्त्रीप्रत्यय to be attached.

<sup>14</sup> When दृश् is in the sense of knowing, अण् by 3.2.1 कर्मण्यण्। is added. तत् पश्यति इति तद्दर्शः (तद् + अम् + दृश् + अण् = तद्दर्श)

[विधिसूत्रम्] 6.3.91 आ सर्वनाम्नः । ~ दृग्दृशवतुषु

The last letter of सर्वनाम followed by दृश्, दृश, or वतुँ is replaced by आ.



आ<sup>1/1</sup> सर्वनाम्नः<sup>6/1</sup> । ~ दृग्-दृश-वतुँषु<sup>7/3</sup>

2 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- आ 1/1 – This is आदेश. It replaces the last letter by 1.1.52 अलोऽन्त्यस्य।.
- सर्वनाम्नः 6/1 – प्रातिपदिक is सर्वनामन्, defined by 1.1.27 सर्वादीनि सर्वनामानि ।, etc.; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- दृग्-दृश-वतुँषु 7/1 – From अधिकारसूत्र 6.3.89 दृग्दृशवतुषु ।; दृश् (दृश् + किन्), दृश (दृश् + कञ्), वतुँ (तद्धित-प्रत्यय told by 5.2.39 यत्तदेतेभ्यः परमाणे वतुँप्। to 5.2.41) are in इतरेतरद्वन्द्वसमास; in परसप्तमी.

[LSK] सर्वनाम्नः<sup>6/1</sup> आकारः<sup>1/1</sup> अन्त-आदेशः<sup>1/1</sup> स्यात्<sup>III/1</sup> दृग्-दृश-वतुँषु<sup>7/3</sup> ।

आ is the substitute in the place of the last letter of सर्वनाम, when followed by दृश्, दृश, and वतुँ.

[LSK] तादृक्<sup>1/1</sup>, तादृग्<sup>1/1</sup> ।

दृशिर् प्रेक्षणे (1P) to see

|                   |  |
|-------------------|--|
| तद् + दृश् + किन् | 3.2.60 त्यदादिषु दृशोऽनालोचने कञ् । ~ किन् धातोः प्रत्ययः परश्च    |
| तद् + दृश्        | 6.1.67 वेरपृक्तस्य । ~ लोपः  |
| त आ + दृश्        | 6.3.91 आ सर्वनाम्नः । ~ दृग्-दृश-वतुँषु                            |
| ता + दृश्         | 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः । ~ संहितायाम्                           |
| तादृश्            | 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्                         |
| तादृश् + सुँ      |  |
| तादृश्            | 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः             |
| तादृष्            | 8.2.36 व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः । ~ झलि पदस्य अन्ते च |
| तादृङ्            | 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य                                     |
| तादृग्            | 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः । ~ पदस्य अन्ते                          |
| तादृक्            | 8.4.56 वाऽवसाने । ~ चर् झलाम्                                      |

[LSK] तादृशौ<sup>1/2</sup> । तादृशः<sup>1/3</sup> । तादृग्भ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

तादृश् + भ्याम्

तादृष् + भ्याम् 8.2.36 व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

तादृड् + भ्याम् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

तादृग् + भ्याम् 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः । ~ पदस्य अन्ते

### Declension of तादृश् (श-पुं-1)

किन्-प्रत्यय-अन्त-दृश्-धातु-अन्त-शब्दः

|   | एकवचनम्  | द्विवचनम्                              | बहुवचनम्   |
|---|--|--|--|
| 1 | तादृक्/तादृग्<br>6.1.68, 8.2.36, 8.2.39,<br>8.2.62, 8.4.56 | तादृशौ                                 | तादृशः 8.2.66, 8.3.15                                |
| 5 | same as above  | same as above                          | same as above  |
| 2 | तादृशम्  | same as above                          | same as above  |
| 3 | तादृशा   | तादृग्भ्याम्<br>8.2.36, 8.2.39, 8.2.62 | तादृग्भिः 8.2.36, 8.2.39,<br>8.2.62, 8.2.66, 8.3.15  |
| 4 | तादृशे   | same as above                          | तादृग्भ्यः 8.2.36, 8.2.39,<br>8.2.62, 8.2.66, 8.3.15 |
| 5 | तादृशः 8.2.66, 8.3.15                                      | same as above                          | same as above  |
| 6 | same as above  | तादृशोः 8.2.66, 8.3.15                 | तादृशाम्   |
| 7 | तादृशि   | same as above                          | तादृक्षु 8.2.36, 8.2.39,<br>8.2.62, 8.3.59, 8.4.55   |

यादृश् (like which), एतादृश् (like this), त्वादृश् (like you), मादृश् (like me), अस्मादृश् (like us), युष्मादृश् (like you), भवादृश् (like respected you), कीदृश् (like what), ईदृश् (like this), etc. decline in the same manner.

When कञ् is suffixed, the declension is as अ-ending.

तद् + दृश् + कञ् 3.2.60 त्यदादिषु दृशोऽनालोचने कञ् । ~ किन् धातोः प्रत्ययः परश्च

तद् + दृश् + अ क् and ञ् are इत्स.

त आ + दृश् 6.3.91 आ सर्वनाम्नः । ~ दृग्-दृश-वर्तुषु

ता + दृश् 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः । ~ संहितायाम्

In feminine, डीप् is added to कञ्-ending word by 4.1.15. The form will be तादृशी, and declines like नदी.

## श-कारान्त-पुंलिङ्गः (2) विश

विश् (one which enters)

विशँ प्रवेशने (6P) to enter

विश् + क्तिप् 3.2.76 क्तिप् च । ~ धातोः प्रत्ययः परश्च

विश् 6.1.67 वेरपृक्तस्य । ~ लोपः

विश् 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

[LSK] “ब्रश्च...” इति<sup>0</sup> षः<sup>1/1</sup> । जश्त्व-चर्त्वे<sup>1/2</sup> । विट्<sup>1/1</sup>, विड्<sup>1/1</sup> । विशौ<sup>1/2</sup> । विशः<sup>1/3</sup> । विड्भ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

विश् + सुँ

विश् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्वपृक्तं हल् । ~ लोपः

विष् 8.2.36 ब्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

विड् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

विट् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ चर् झलाम्

### Declension of विश (श-पुं-2)

|   | एकवचनम्                                     | द्विवचनम्                 | बहुवचनम्  |
|---|---|---------------------------|---|
| 1 | विट्/विड् 6.1.68, 8.2.36,<br>8.2.39, 8.4.56 | विशौ                      | विशः 8.2.66, 8.3.15                             |
| 5 | same as above                               | same as above             | same as above                                   |
| 2 | विशम्                                       | same as above             | same as above                                   |
| 3 | विशा  | विड्भ्याम् 8.2.36, 8.2.39 | विड्भिः 8.2.36, 8.2.39,<br>8.2.66, 8.3.15       |
| 4 | विशे  | same as above             | विड्भ्यः 8.2.36, 8.2.39,<br>8.2.66, 8.3.15      |
| 5 | विशः 8.2.66, 8.3.15                         | same as above             | same as above                                   |
| 6 | same as above                               | विशोः 8.2.66, 8.3.15      | विशाम्  |
| 7 | विशि  | same as above             | विट्सु/विट्सु 8.2.36, 8.2.39,<br>8.3.29, 8.4.55 |

श-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (3) नश्

नश् (one which perishes)

णशँ अदर्शने (4P) to be lost, to perish

नश् 6.1.65 णो नः । ~ धात्वादेः

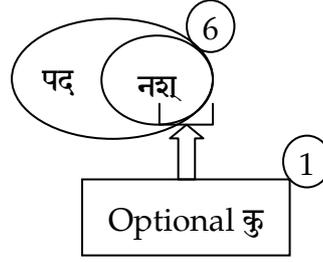
नश् + क्तिप् 3.2.76 क्तिप् च । ~ धातोः प्रत्ययः परश्च

नश् 6.1.67 वेरपृक्तस्य । ~ लोपः

नश् 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

[विधिसूत्रम्] **8.2.63 नशेर्वा । ~ कुः पदस्य अन्ते**

For नश्-धातु, कु is optional at the end of पद.



नशेः <sup>6/1</sup> वा<sup>0</sup> । ~ कुः <sup>1/1</sup> पदस्य <sup>6/1</sup> अन्ते <sup>7/1</sup>

2 words in the सूत्र; 3 words as अनुवृत्ति

- नशेः 6/1 – नश्-धातु; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- वा 0 – कुत्व is optional.
- कुः 1/1 – From 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः ।; this is आदेश. 1.1.52 अलोऽन्त्यस्य । is required.
- पदस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 8.1.16 पदस्य ।; in सम्बन्धे षष्ठी to अन्ते.
- अन्ते 7/1 – From 8.2.29 स्कोः संयोगाद्योरन्ते च ।; in अधिकरणे सप्तमी.

[LSK] नशेः <sup>6/1</sup> कवर्गः <sup>1/1</sup> अन्तादेशः <sup>1/1</sup> वा<sup>0</sup> पदान्ते <sup>7/1</sup> ।

कवर्ग is optionally the substitute in the place of the last letter of नश्-धातु, at the end of पद.

[LSK] नक्<sup>1/1</sup>, नग्<sup>1/1</sup>, नट्<sup>1/1</sup>, नड्<sup>1/1</sup> ।

नश् + सुँ

नश् 6.1.68 हल्ब्याब्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

नष् 8.2.36 ब्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

नड् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

नग् 8.2.63 नशेर्वा । ~ कुः पदस्य अन्ते

नक् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ चर् झलाम्

पक्षे

नट् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ चर् झलाम्

[LSK] नशौ<sup>1/2</sup>। नशः<sup>1/3</sup>।

[LSK] नग्भ्याम्<sup>3/2</sup>, नड्भ्याम्<sup>3/2</sup>।

नश् + भ्याम्

नष् + भ्याम् 8.2.36 ब्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

नड् + भ्याम् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

नग् + भ्याम् 8.2.63 नशेर्वा । ~ कुः पदस्य अन्ते

### Declension of नश् (श-पुं-3)

|   | एकवचनम्  | द्विवचनम्  | बहुवचनम्  |
|---|--|--|---|
| 1 | नक्/नग्/नट्/नड्<br>6.1.68, 8.2.36, 8.2.39,<br><u>8.2.63</u> , 8.4.56 | नशौ  | नशः 8.2.66, 8.3.15  |
| S | same as above  | same as above  | same as above   |
| 2 | नशम्   | same as above  | same as above   |
| 3 | नशा  | नग्भ्याम्/नड्भ्याम्<br>8.2.36, 8.2.39, <u>8.2.63</u> | नग्भिः/नड्भिः 8.2.36, 8.2.39,<br><u>8.2.63</u> , 8.2.66, 8.3.15     |
| 4 | नशे  | same as above  | नग्भ्यः/नड्भ्यः 8.2.36, 8.2.39,<br><u>8.2.63</u> , 8.2.66, 8.3.15   |
| 5 | नशः 8.2.66, 8.3.15   | same as above  | same as above   |
| 6 | same as above  | नशोः 8.2.66, 8.3.15                                  | नशाम्   |
| 7 | नशि  | same as above  | नक्षु/नट्सु/नड्सु 8.2.36, 8.2.39,<br><u>8.2.63</u> , 8.3.29, 8.4.55 |

**श-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (4) घृतस्पृश**

घृतस्पृश (one who touches the ghee) is a किन्-प्रत्यय-अन्त-प्रातिपदिक by the next sūtra.

**[विधिसूत्रम्] 3.2.58 स्पृशोऽनुदके किन् । ~ सुपि**

With सुबन्त-उपपद other than उदक, स्पृश-धातु takes किन्-प्रत्यय.

स्पृशः<sup>5/1</sup> अनुदके<sup>7/1</sup> किन्<sup>1/1</sup> । ~ सुपि<sup>7/1</sup>

3 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- स्पृशः 5/1 – स्पृशँ संस्पर्शने (6P) to touch; in दिग्योगे पञ्चमी to परः प्रत्ययः.
- अनुदके 7/1 – न उदकम् अनुदकम् (NT), तस्मिन्!; समानाधिकरण to सुपि. “सुप्-उपपद other than उदक.”<sup>15</sup>
- किन् 1/1 – This is प्रत्यय. The content of प्रत्यय is व् only. क् and न् are इत्, इ is for उच्चारण.
- सुपि 7/1 – From 3.2.4 सुपि स्थः ।. By प्रत्ययग्रहणे तदन्तग्रहणम्, सुबन्त is understood; in उपपदसप्तमी taught by 3.1.92 तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् ।.

[LSK] अनुदके<sup>7/1</sup> सुपि<sup>7/1</sup> उपपदे<sup>7/1</sup> स्पृशोः<sup>5/1</sup> किन्<sup>1/1</sup> ।

किन् is the प्रत्यय after स्पृश-धातु when there is सुबन्त as उपपद but not the word “उदक”.

[LSK] घृतस्पृक्<sup>1/1</sup>, घृतस्पृग्<sup>1/1</sup> ।

घृत + डस् + स्पृश + किन् 3.2.58 स्पृशोऽनुदके किन् । ~ सुपि

Note that घृत takes कर्मणि षष्ठी by 2.3.65 कर्तृकर्मणोः कृति। because स्पृश is कृदन्त.

घृत + डस् + स्पृश 6.1.67 वेरपृक्तस्य । ~ लोपः

घृत + स्पृश 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्, 2.4.71 सुपो धातुप्रातिपदिकयोः । ~ लुक्

घृतस्पृश

<sup>15</sup> Because of this statement of “अनुदके”, किप् also does not come. अण् by 3.2.1 कर्मण्यण् । is suffixed for उदक + स्पृश and it declines as अ-ending प्रातिपदिक.

|                |   |
|----------------|---|
| घृतस्पृश + सुँ | 4.1.2 स्वौजसमौड्ढस्ठाभ्यामिस्डेभ्याम्यस्डसिभ्याम्यस्डसोसाम्ब्योस्सुप् । ~ ङ्याप्रातिपदिकात् |
| घृतस्पृश       | 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः                                      |
| घृतस्पृष्      | 8.2.36 व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः । ~ झलि पदस्य अन्ते च                          |
| घृतस्पृङ्      | 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य  |
| घृतस्पृग्      | 8.2.62 किन्त्रत्ययस्य कुः । ~ पदस्य अन्ते   |
| घृतस्पृक्      | 8.4.56 वाऽवसाने । ~ चर् झलाम्   |

[LSK] घृतस्पृशौ<sup>1/2</sup> । घृतस्पृशः<sup>1/3</sup> ॥

### Declension of घृतस्पृश (श-पुं-4)

|   | एकवचनम्  | द्विवचनम्                                 | बहुवचनम्  |
|---|--|---|---|
| 1 | घृतस्पृक्/घृतस्पृग्<br>6.1.68, 8.2.36, 8.2.39,<br>8.2.62, 8.4.56 | घृतस्पृशौ                                 | घृतस्पृशः 8.2.66, 8.3.15                                |
| 5 | same as above  | same as above                             | same as above   |
| 2 | घृतस्पृशम्   | same as above                             | same as above   |
| 3 | घृतस्पृशा  | घृतस्पृग्भ्याम्<br>8.2.36, 8.2.39, 8.2.62 | घृतस्पृग्भिः 8.2.36, 8.2.39, 8.2.62,<br>8.2.66, 8.3.15  |
| 4 | घृतस्पृशे  | same as above                             | घृतस्पृग्भ्यः 8.2.36, 8.2.39, 8.2.62,<br>8.2.66, 8.3.15 |
| 5 | घृतस्पृशः 8.2.66, 8.3.15   | same as above                             | same as above   |
| 6 | same as above  | घृतस्पृशोः 8.2.66, 8.3.15                 | घृतस्पृशाम्   |
| 7 | घृतस्पृशि  | same as above                             | घृतस्पृक्षु 8.2.36, 8.2.39, 8.2.62,<br>8.3.59, 8.4.55   |

The entire declension is like तादृश.

**ष-कारान्त-पुंलिङ्गः (1) दधृष्**

दधृष् (one who does boldly)

जिधृषाँ प्रागल्भ्ये (5P) to be bold, to be confident

धृष् + क्तिन् 3.2.59 ऋत्विग्दधृक्स्त्रिगिदगुष्णिग् अञ्चयुजिक्रुञ्चां च । ~ क्तिन्

दधृष् The form is made as निपातनम्, irregular form

प्रातिपदिकसंज्ञा 3.1.93 कृदतिङ् ।, 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

[LSK] दधृक्<sup>1/1</sup>, दधृग्<sup>1/1</sup> ।

दधृष् + सुँ

दधृष् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्वपृक्तं हल् । ~ लोपः

दधृङ् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

दधृग् 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः । ~ पदस्य अन्ते

दधृक् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ चर् झलाम्

[LSK] दधृषौ<sup>1/2</sup> । दधृषः<sup>1/3</sup> । दधृग्भ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

दधृष् + भ्याम्

दधृङ् + भ्याम् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

दधृग् + भ्याम् 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः । ~ पदस्य अन्ते

**Declension of दधृष् (ष-पुं-1)**

|   | एकवचनम्                                       | द्विवचनम्                  | बहुवचनम्                                 |
|---|---|----------------------------|--|
| 1 | दधृक्/दधृग् 6.1.68, 8.2.39,<br>8.2.62, 8.4.56 | दधृषौ                      | दधृषः 8.2.66, 8.3.15                     |
| 5 | same as above                                 | same as above              | same as above                            |
| 2 | दधृषम्  | same as above              | same as above                            |
| 3 | दधृषा   | दधृग्भ्याम् 8.2.39, 8.2.62 | दधृग्भिः 8.2.39, 8.2.62, 8.2.66, 8.3.15  |
| 4 | दधृषे   | same as above              | दधृग्भ्यः 8.2.39, 8.2.62, 8.2.66, 8.3.15 |
| 5 | दधृषः 8.2.66, 8.3.15                          | same as above              | same as above                            |
| 6 | same as above                                 | दधृषोः 8.2.66, 8.3.15      | दधृषाम्                                  |
| 7 | दधृषि   | same as above              | दधृक्षु 8.2.39, 8.2.62, 8.3.59, 8.4.55   |

**ष-कारान्त-पुंलिङ्गः (2) रत्नमुष्**

रत्नमुष् (one who steals gem stones)

रत्नानि मुष्णाति इति रत्नमुट् ।

मुष्ँ स्तेये (9P) to steal

रत्न + आम् + मुष् + क्तिप् 3.2.76 क्तिप् च ।

[LSK] रत्नमुट्<sup>1/1</sup>, रत्नमुड्<sup>1/1</sup> ।

रत्नमुष् + सुँ

रत्नमुष् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्वपृक्तं हल् । ~ लोपः

रत्नमुड् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

रत्नमुट् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ चर् झलाम्

[LSK] रत्नमुष्ौ<sup>1/2</sup> । रत्नमुड्भ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

रत्नमुष् + भ्याम्

रत्नमुड् + भ्याम् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

**Declension of रत्नमुष् (ष-पुं-2)**

|   | एकवचनम्                                     | द्विवचनम्                 | बहुवचनम्  |
|---|---|---------------------------|---|
| 1 | रत्नमुट्/रत्नमुड्<br>6.1.68, 8.2.39, 8.4.56 | रत्नमुष्ौ                 | रत्नमुष्ः 8.2.66, 8.3.15                        |
| 5 | same as above                               | same as above             | same as above                                   |
| 2 | रत्नमुष्म्                                  | same as above             | same as above                                   |
| 3 | रत्नमुष्ठा                                  | रत्नमुड्भ्याम् 8.2.39     | रत्नमुड्भिः 8.2.39, 8.2.66, 8.3.15              |
| 4 | रत्नमुष्थे                                  | same as above             | रत्नमुड्भ्यः 8.2.39, 8.2.66, 8.3.15             |
| 5 | रत्नमुष्ः 8.2.66, 8.3.15                    | same as above             | same as above                                   |
| 6 | same as above                               | रत्नमुष्ोः 8.2.66, 8.3.15 | रत्नमुष्ाम्                                     |
| 7 | रत्नमुष्ि                                   | same as above             | रत्नमुट्सु/रत्नमुट्सु<br>8.2.39, 8.3.29, 8.4.55 |

**ष-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (3) षष्**

षष् (six) is given षट् संज्ञा by 1.1.24 षान्ता षट् । This is नित्य-बहुवचन-अन्त.

[LSK] षट्<sup>1/3, 2/3</sup>, षड्<sup>1/3, 2/3</sup> ।

षष् + जस्

षष् 7.1.22 षड्भ्यो लुक् । ~ जश्शसोः

षड् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

षट् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ चर् झलाम्

[LSK] षड्भिः<sup>3/3</sup> । षड्भ्यः<sup>4/3</sup> ।

[LSK] षण्णाम्<sup>6/3</sup> ।

षष् + आम्

षष् + नाम् 7.1.55 षट्-चतुर्भ्यश्च । ~ नुट्

षड् + नाम् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।

षट् + णाम् 8.4.41 ष्टुना ष्टुः । ~ स्तोः

Here, in the negation of ष्टुत्व by 8.4.42 न पदान्ताद्योरनाम् । along with (वा०)

अनाम्नवतिनगरीनामिति वाच्यम् ।, “नाम्” is excluded.

षण् + णाम् (वा०) प्रत्यये भाषायां नित्यम् ।, regarding 8.4.45 यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा ।

षण्णाम्

[LSK] षट्सु<sup>7/3</sup>, षट्सु<sup>7/3</sup> ॥

**Declension of षष् (ष-पुँ-3)**

|   | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम्                           |
|---|---------|-----------|------------------------------------|
| 1 |         |           | षट्/षड् 7.1.22, 8.2.39, 8.4.56     |
| 5 |         |           |                                    |
| 2 |         |           | same as above                      |
| 3 |         |           | षड्भिः 8.2.39, 8.2.66, 8.3.15      |
| 4 |         |           | षड्भ्यः 8.2.39, 8.2.66, 8.3.15     |
| 5 |         |           | same as above                      |
| 6 |         |           | षण्णाम् 7.1.55, 8.2.39, 8.4.41     |
| 7 |         |           | षट्सु/षट्सु 8.2.39, 8.3.29, 8.4.55 |

ष-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (4) पिपठिष्

पिपठिष् (one who desires to study)

पठँ व्यक्तायां वाचि (1P) to study

पठ् + सन् 3.1.7 धातोः कर्मणः समानार्तृकादिच्छायां वा । ~ सन् प्रत्ययः परश्च

पठ् + इट् स 7.2.35 आर्धधातुकस्येड् वलादेः ।

पठ् + इष 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः । ~ इणकोः सः मूर्धन्यः

पठ् पठ् + इष 6.1.9 सन्यङोः । ~ द्वे

प पठ् + इष 7.4.60 हलादिः शेषः । ~ अभ्यासस्य

पि पठ् + इष 7.4.79 सन्यतः । ~ अभ्यासस्य इत्

पिपठिष् 3.1.32 सनाद्यन्ता धातवः ।

पिपठिष् + क्विप् 3.2.76 क्विप् च ।

पिपठिष् 6.1.67 वेरपृक्तस्य । ~ लोपः

पिपठिष् 6.4.48 अतो लोपः । ~ आर्धधातुके

[LSK] रँत्वम्<sup>2/1</sup> प्रति<sup>0</sup> षत्वस्य<sup>6/1</sup> असिद्धत्वात्<sup>5/1</sup> “ससजुषो रँः (8.2.66)” इति<sup>0</sup> रँत्वम्<sup>1/1</sup> ॥

The status of being ष् (by 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः ।) is असिद्ध from the view of 8.2.66 ससजुषो रँः । Thus, ष् is considered to be the original form, स, by 8.2.66 ससजुषो रँः ।

पिपठिष् + सुँ

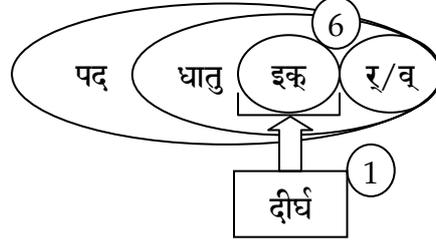
पिपठिष् 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्वपृक्तं हल् । ~ लोपः

पिपठिरँ 8.2.66 ससजुषो रँः । ~ पदस्य

To be continued with the next sūtra.

[विधिसूत्रम्] 8.2.76 वोरूपधाया दीर्घ इक्: । ~ धातोः पदस्य अन्ते

There is an elongation of इक् which is उपधा of र्/व्-ending धातु at the end of पद.



वोः 6/2 उपधायाः 6/1 दीर्घः 1/1 इक्: 6/1 । ~ धातोः 6/1 पदस्य 6/1 अन्ते 7/1

4 words in the सूत्र; 3 words as अनुवृत्ति

- वोः 6/2 – र् च व् च वोँ (ID), तयोः 1; this is adjective to धातोः. With तदन्तविधि, it results in “र्/व्-ending धातु”
- उपधायाः 6/1 – The second to last letter; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- दीर्घः 1/1 – This is आदेश.
- इक्: 6/1 – प्रत्याहारः इक्; this is समानाधिकरण to उपधायाः.
- धातोः 6/1 – From 8.2.74 सिपि धातो रुर्वा।; this is adjective to पदस्य. With तदन्तविधि, it results in “रेफ-वकार-अन्त-धातु-अन्तस्य पदस्य”.
- पदस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 8.1.16 पदस्य।; in सम्बन्धे षष्ठी to अन्ते.
- अन्ते 7/1 – From 8.2.29 स्कोः संयोगाद्योरन्ते च।; in अधिकरणे सप्तमी.

[LSK] रेफ-व-अन्तयोः 6/2 धात्वोः 6/2 उपधायाः 6/1 इक्: 6/1 दीर्घः 1/1 पदान्ते 7/1 ।

दीर्घ is the substitute in the place of उपधा इक् of र्/व्-ending धातु, which is at the end of पद.

[LSK] पिपठीः 1/1 ।

पिपठिष् + सुँ

पिपठिष् 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

पिपठिरुँ 8.2.66 ससजुषो रुँ: । ~ पदस्य

पिपठीर् 8.2.76 वोरूपधाया दीर्घ इक्: । ~ धातोः पदस्य अन्ते

पिपठीः 8.3.15 खरवसानयोर्विसर्जनीयः। ~ रः पदस्य

[LSK] पिपठिषौ 1/2 ।

पिपठिष् + औ

[LSK] पिपठीभ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

पिपठिष् + भ्याम्

पिपठिरुँ + भ्याम् 8.2.66 ससजुषो रुँः । ~ पदस्य

पिपठीर् + भ्याम् 8.2.76 वोरूपधाया दीर्घ इकः । ~ धातोः पदस्य अन्ते

पिपठिष् + सुप्<sup>7/3</sup>

पिपठिरुँ + सु 8.2.66 ससजुषो रुँः । ~ पदस्य

पिपठीर् + सु 8.2.76 वोरूपधाया दीर्घ इकः । ~ धातोः पदस्य अन्ते

पिपठीः + सु 8.3.16 रोः सुपि ।

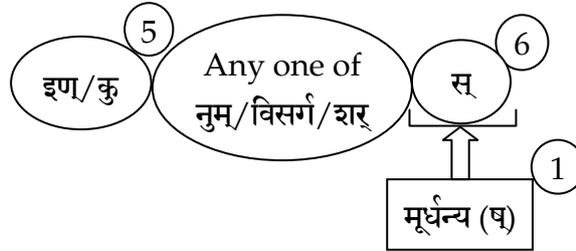
रेफ followed by सुप् can become विसर्ग only when रेफ is of रुँ.

पिपठीस् + सु 8.3.36 वा शरि । ~ विसर्जनीयस्य सः

Because of the intervention of स्, the ई cannot become निमित्त for मूर्धन्य on the स् of प्रत्यय by 8.3.59 आदेश-प्रत्यययोः । However the next sūtra gives permission for certain letters to be interventions.

[विधिसूत्रम्] 8.3.58 नुम्विसर्जनीयशर्व्यवायेऽपि । ~ इणकोः सः मूर्धन्यः

Any one of नुम्/विसर्ग/शर् can intervene between स् and इणकु for the change to मूर्धन्य.



नुम्-विसर्जनीय-शर्-व्यवाये<sup>7/1</sup> अपि<sup>0</sup> । ~ इणकोः<sup>6/1</sup> सः<sup>6/1</sup> मूर्धन्यः<sup>1/1</sup>

2 words in the सूत्र; 3 words as अनुवृत्ति

- नुम्-विसर्जनीय-शर्-व्यवाये<sup>7/1</sup>– नुम् च विसर्जनीयः च शर् च नुम्-विसर्जनीय-शरः (ID)। तेषां व्यवायः व्यवधानम् (6T), तस्मिन् ।; in सति सप्तमी.
- अपि<sup>0</sup> – “Even” if there is an intervention of नुम्/विसर्ग/शर्.
- इणकोः<sup>6/1</sup> – From अधिकारसूत्र 8.3.57 इणकोः।; इण् च कुः च इणकु (SD), तस्य।; प्रत्याहारः इण्; all vowels except अवर्ण, and ह्, य्, व्, र्, ल्; कु represents all कवर्ग; in पूर्वपञ्चमी.
- सः<sup>6/1</sup> – From 8.3.56 सहेः साडः सः।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- मूर्धन्यः<sup>1/1</sup> – This is आदेश; from अधिकारसूत्र 8.3.55 अपदान्तस्य मूर्धन्यः।.

[LSK] एतैः<sup>3/3</sup> प्रत्येकम्<sup>0</sup> व्यवधाने<sup>7/1</sup> अपि<sup>0</sup> इण्कुभ्याम्<sup>5/2</sup> परस्य<sup>6/1</sup> सस्य<sup>6/1</sup> मूर्धन्य-आदेशः<sup>1/1</sup> ।

The substitute of मूर्धन्य for स after इण्कु will take place even if there is an intervention by any one of these letters (नुम्/विसर्ग/शर).

[LSK] घृत्वेन<sup>3/1</sup> पूर्वस्य<sup>6/1</sup> षः<sup>1/1</sup> ।

After changing into मूर्धन्य, the ष becomes the cause for घृत्त्व for the स.

[LSK] पिपठीष्णु<sup>7/3</sup>, पिपठीःषु<sup>7/3</sup> ॥

पिपठीष् + सुप्

पिपठीरुँ + सु 8.2.66 ससजुषो रुँः । ~ पदस्य

पिपठीर् + सु 8.2.76 वोरूपधाया दीर्घ इकः । ~ धातोः पदस्य अन्ते

पिपठीः + सु 8.3.16 रोः सुपि ।

पिपठीस् + सु 8.3.36 वा शरि । ~ विसर्जनीयस्य सः

पिपठीस् + षु 8.3.58 नुम्बिसर्जनीयशर्षवायेऽपि । ~ मूर्धन्यः

पिपठीष् + षु 8.4.41 घृना घृः । ~ स्तोः

विसर्जनीयस्य सकार-आदेश-अभाव-पक्षे, if 8.3.36 वा शरि । is not taken,

पिपठीः + षु 8.3.58 नुम्बिसर्जनीयशर्षवायेऽपि । ~ मूर्धन्यः

#### Declension of पिपठीष् (ष-पुं-4)

|   | एकवचनम्                                  | द्विवचनम्                    | बहुवचनम्  |
|---|--|------------------------------|---|
| 1 | पिपठीः 6.1.68, 8.2.66,<br>8.2.76, 8.3.15 | पिपठीषौ                      | पिपठीषः 8.2.66, 8.3.15  |
| 5 | same as above                            | same as above                | same as above   |
| 2 | पिपठीषम्                                 | same as above                | same as above   |
| 3 | पिपठीषा                                  | पिपठीर्भ्याम् 8.2.66, 8.2.76 | पिपठीर्भिः 8.2.66, 8.2.76,<br>8.2.66, 8.3.15                            |
| 4 | पिपठीषे                                  | same as above                | पिपठीर्भ्यः 8.2.66, 8.2.76,<br>8.2.66, 8.3.15                           |
| 5 | पिपठीषः 8.2.66, 8.3.15                   | same as above                | same as above   |
| 6 | same as above                            | पिपठीषोः 8.2.66, 8.3.15      | पिपठीषाम्   |
| 7 | पिपठीषि                                  | same as above                | पिपठीःषु/पिपठीष्णु<br>8.2.66, 8.2.76, 8.3.15,<br>8.3.36, 8.3.58, 8.4.41 |

## ष-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (5) चिकीर्ष

चिकीर्ष (one who desires to do) is derived from सन्नन्त-धातु with क्तिप्, like the previous प्रातिपदिक. The difference in declension is because of the रेफ preceding the last ष. This conjunct consonants of रेफ and ष (स) brings 8.2.24 रात्सस्य ।, instead of 8.2.66 ससजुषो रूः।.

डुकृञ् करणे (8U) to do

कृ + सन् 3.1.7 धातोः कर्मणः समानकर्तृकादिच्छायां वा ।

सन् is क्तिप् by 1.2.9 इको झल् । ~ सन् क्तिप्

कृ + स 6.4.16 अज्झनगमां सनि । ~ क्तिङ्लोः क्तिङति

क्तिर् + स 7.1.100 ऋत् इद्धातोः । ~ अङ्गस्य

क्तिर् + क्तिर् + स 6.1.9 सन्यङोः ।

कि + क्तिर् + स 7.4.60 हलादि शेषः । ~ अभ्यासस्य

चि + क्तिर् + स 7.4.62 कुहोश्चुः । ~ अभ्यासस्य

चि + कीर् + स 8.2.77 हलि च । ~ वीः उपधायाः दीर्घः इकः धातोः

चि + कीर् + ष 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः ।

चिकीर्ष 3.1.32 सनाद्यन्ता धातवः ।

चिकीर्ष + क्तिप् 3.2.76 क्तिप् च ।

चिकीर्ष 6.4.48 अतो लोपः । ~ आर्धधातुके

चिकीर्ष 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

[LSK] चिकीः<sup>1/1</sup> ।

चिकीर्ष + सुँ<sup>1/1</sup>

चिकीर्ष 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

चिकीर् 8.2.24 रात् सस्य । (8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः ।) ष is असिद्ध for 8.2.24.

चिकीः 8.3.15 खरवसानयोर्विसर्जनीयः । ~ रः पदस्य

[LSK] चिकीर्षौ<sup>1/2</sup> ।

चिकीर्ष + औ

[LSK] चिकीर्भ्याम्<sup>3/2</sup> ।

चिकीर्ष + भ्याम्<sup>3/2</sup>

चिकीर् + भ्याम् 8.2.24 रात् सस्य । (8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः ।)

चिकीर्भ्याम्

[LSK] चिकीर्षु<sup>7/3</sup> ॥

चिकीर्ष + सुप्

चिकीर् + सु 8.2.24 रात् सस्य । (8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः ।)

8.3.15 खरवसानयोर्विसर्जनीयः । does not apply because of the नियम 8.3.16 रोः सुपि ।

चिकीर् + षु 8.3.59 आदेश-प्रत्यययोः । ~ इण्कोः सः मूर्धन्यः

चिकीर्षु<sup>16</sup>

### Declension of चिकीर्ष (ष-पुं-5)

|   | एकवचनम्                         | द्विवचनम्           | बहुवचनम्                           |
|---|---------------------------------|---------------------|------------------------------------|
| 1 | चिकीः 6.1.68, 8.2.24,<br>8.3.15 | चिकीर्षो            | चिकीर्षः                           |
| 5 | same as above                   | same as above       | same as above                      |
| 2 | चिकीर्षम्                       | same as above       | same as above                      |
| 3 | चिकीर्षा                        | चिकीर्भ्याम् 8.2.24 | चिकीर्भिः 8.2.24                   |
| 4 | चिकीर्षे                        | same as above       | चिकीर्भ्यः 8.2.24                  |
| 5 | चिकीर्षः                        | same as above       | same as above                      |
| 6 | same as above                   | चिकीर्षोः           | चिकीर्षाम्                         |
| 7 | चिकीर्षि                        | same as above       | चिकीर्षु 8.2.24, 8.3.16,<br>8.3.59 |

<sup>16</sup> By 8.4.49 शरोऽचि ।, द्वित्व of ष does not happen. (अचः<sup>5/1</sup> रहाभ्याम्<sup>5/2</sup> शरः<sup>6/1</sup> अचि<sup>7/1</sup> द्वे<sup>1/2</sup> न<sup>0</sup>)

## स-कारान्त-पुंलिङ्गः (1) विद्वस्

विद्वस् (learned, wise)

विदँ ज्ञाने (2P) to know

विद् + लट् 3.2.123 वर्तमाने लट् ।

विद् + शतृ 3.2.124 लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे ।

विद् + वसुँ 7.1.36 विदेः शतुर्वसुः ।

विद्वस् 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

उँ of वसुँ is इत्, thus विद्वस् is उगित्-प्रत्यय-अन्त-प्रातिपदिक.

[LSK] विद्वान्<sup>1/1</sup> ।

विद्वस् + सुँ

विद्वस् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्वपृक्तं हल् । ~ लोपः

विद्वन्स् 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थाने चाधातोः । ~ नुम्

विद्वान्स् 6.4.10 सान्तमहतः संयोगस्य । ~ न उपधायाः दीर्घः असम्बुद्धौ सर्वनामस्थाने

विद्वान् 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः ।

[LSK] विद्वान्सौ<sup>1/2</sup> ।

विद्वस् + औ

विद्वन्स् + औ 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थाने चाधातोः । ~ नुम्

विद्वान्स् + औ 6.4.10 सान्तमहतः संयोगस्य । ~ न उपधायाः दीर्घः असम्बुद्धौ सर्वनामस्थाने

विद्वान्सौ 8.3.24 नश्चापदान्तस्य झलि । ~ अनुस्वारः

[LSK] हे विद्वन्<sup>S/1</sup> ।

दीर्घ by 6.4.10 सान्तमहतः संयोगस्य । ~ न उपधायाः दीर्घः असम्बुद्धौ सर्वनामस्थाने does not happen.

विद्वस् + सुँ

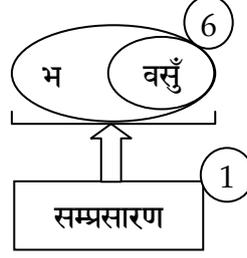
विद्वस् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्वपृक्तं हल् । ~ लोपः

विद्वन्स् 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थाने चाधातोः । ~ नुम्

विद्वान् 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः ।

[विधिसूत्रम्] 6.4.131 वसोः सम्प्रसारणम् । ~ भस्य

For वसुँ-प्रत्यय-ending भ-संज्ञक-अङ्ग, there will be सम्प्रसारणम्.



वसोः <sup>6/1</sup> सम्प्रसारणम् <sup>1/1</sup> । ~ भस्य <sup>6/1</sup>

2 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- वसोः 6/1 – प्रातिपदिक is वसुँ; तदन्तविधि with भस्य, or प्रत्ययग्रहणे तदन्तग्रहणे is applied, and it is understood as “वसुँ-ending भ”.
- सम्प्रसारणम् 1/1 – By 1.1.45 इग्यणः संप्रसारणम् ।, यण् becoming इक् is called सम्प्रसारणम्.
- भस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 6.4.129 भस्य।; in स्थानेयोगा षष्ठी.

[LSK] वसुँ-अन्तस्य <sup>6/1</sup> भस्य <sup>6/1</sup> संप्रसारणम् <sup>1/1</sup> स्यात् <sup>1/1</sup> ।

संप्रसारण is the substitute for वसुँ-ending भ-संज्ञक-अङ्ग.

[LSK] विदुषः <sup>2/3</sup>।

विद्वस् + शस्

विद् उ अस् + अस् 6.4.131 वसोः संप्रसारणम् । ~ भस्य

By 6.1.37 न सम्प्रसारणे सम्प्रसारणम् ।, it is understood that the last व् is to be modified.

विद् उस् + अस् 6.1.108 संप्रसारणाच्च । ~ अचि पूर्वः पूर्वपरयोः एकः संहितायाम्

विदुष् + अस् 8.3.59 आदेश-प्रत्यययोः । ~ इण्कोः सः मूर्धन्यः

The स् of विद्वस् is वसुँ-प्रत्यय-अवयव.

विदुषः 8.2.66, 8.3.15

[LSK] “वसुखंसु” (8.2.72) इति <sup>0</sup> विद्वद्भ्याम् <sup>3/2</sup> ॥

विद्वस् + भ्याम्

विद्वद् + भ्याम् 8.2.72 वसुखंसुध्वंस्वनडुहां दः । ~ सः पदानाम्

Declension of विद्वस् (स्-पुं-1)

वसुं-प्रत्यय-अन्त-शब्दः

|   | एकवचनम्   | द्विवचनम्   | बहुवचनम्  |
|---|---|---|---|
| 1 | विद्वस् + सुँ<br>विद्वस् 6.1.68<br>विद्वन्स् 7.1.70<br>विद्वान्स् 6.4.10<br>विद्वान् 8.2.23   | विद्वस् + औ<br>विद्वन्स् + औ 7.1.70<br>विद्वान्स् + औ 6.4.10<br>विद्वान्सौ 8.3.24 | विद्वस् + जस्<br>विद्वन्स् + अस् 7.1.70<br>विद्वान्स् + अस् 6.4.10<br>विद्वान्सस् 8.3.24<br>विद्वान्सः 8.2.66, 8.3.15 |
| S | विद्वस् + सुँ<br>विद्वस् 6.1.68<br>विद्वन्स् 7.1.70<br>विद्वान् 8.2.23                        | same as above   | same as above   |
| 2 | विद्वस् + अम्<br>विद्वन्स् + अम् 7.1.70<br>विद्वान्स् + अम् 6.4.10<br>विद्वान्सम् 8.3.24      | same as above   | विद्वस् + शस्<br>विद् उ अस् + अस् 6.4.131<br>विद् उस् + अस् 6.1.108<br>विदुष् + अस् 8.3.59<br>विदुषः 8.2.66, 8.3.15   |
| 3 | विद्वस् + टा<br>विद् उ अस् + आ 6.4.131<br>विद् उस् + आ 6.1.108<br>विदुष् + आ 8.3.59<br>विदुषा | विद्वस् + भ्याम्<br>विद्वद् + भ्याम् 8.2.72<br>विद्वद्भ्याम्                      | विद्वस् + भिस्<br>विद्वद् + भिस् 8.2.72<br>विद्वद्भिः 8.2.66, 8.3.15  |
| 4 | विदुषे  | same as above   | विद्वस् + भ्यस्<br>विद्वद् + भ्यस् 8.2.72<br>विद्वद्भ्यः 8.2.66, 8.3.15   |
| 5 | विदुषः  | same as above   | same as above   |
| 6 | विदुषः  | विदुषोः   | विदुषाम्  |
| 7 | विदुषि  | same as above   | विद्वस् + सुप्<br>विद्वद् + सु 8.2.72<br>विद्वत्सु 8.4.55   |

स-कारान्त-पुँल्लिङ्गः (2) पुंस

पुंस (man) is derived with उणादि-प्रत्यय डुम्सुँन्. Thus this is उगित् प्रातिपदिक.

पा रक्षणे (2P) to protect

पू + डुम्सुँन् (उ०) 4.179 पातेडुम्सुँन् ।

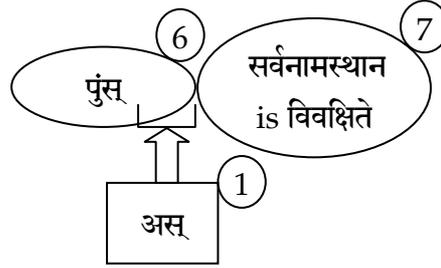
पू + उम्स् डित्वसामर्थ्याद् अभस्यापि टेलोपः ।

पुंस नश्चापदान्तस्य झलि । ~ अनुस्वारः

पुंस 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

[विधिसूत्रम्] 7.1.89 पुंसोऽसुङ् । ~ सर्वनामस्थाने

The last letter of पुंस is replaced by असुङ् when सर्वनामस्थान is intended.



पुंसः<sup>6/1</sup> असुङ्<sup>1/1</sup> । ~ सर्वनामस्थाने<sup>7/1</sup>

2 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- पुंसः 6/1 – प्रातिपदिक is पुंस; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- असुङ् 1/1 – The content is असु. The last ङ् is इत् and उ is for उच्चारण. By 1.1.53 डिच्च । ~ अलः अन्त्यस्य, only the last letter is replaced.
- सर्वनामस्थाने 7/1 – From 7.1.86 इतोऽत् सर्वनामस्थाने ।. The 7<sup>th</sup> case is considered to be विषयसप्तमी. The meaning is सर्वनामस्थानविवक्षिते (when सर्वनामस्थान is intended). This operation is to be done before सुप्-उत्पत्ति, placing सुप्, in order to avoid certain स्वर rules.

[LSK] सर्वनामस्थाने<sup>7/1</sup> विवक्षिते<sup>7/1</sup> पुंसः<sup>6/1</sup> असुङ्<sup>1/1</sup> स्यात्<sup>1/1</sup> ।

असुङ् is the substitute for the last letter of पुंस when सर्वनामस्थान is intended.

[LSK] पुमान्<sup>1/1</sup> ।

पुंस् (+ सुँ<sup>1/1</sup>) सर्वनामस्थाने विवक्षिते -

पुं + असुँङ् 7.1.89 पुंसोऽसुङ् । ~ सर्वनामस्थाने with the help of 1.1.53 ङिच् ।

पुम् + अस् (प०) निमित्तापाये नैमित्तिकस्याप्यपायः ।

पुमस्

पुमस् + सुँ<sup>1/1</sup>

पुमस् 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

पुमन्स् 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थाने चाधातोः । ~ नुम्

पुमान्स् 6.4.10 सान्तमहतः संयोगस्य । ~ न उपधायाः दीर्घः असम्बुद्धौ सर्वनामस्थाने

पुमान् 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः ।

[LSK] हे पुमन्<sup>S/1</sup> ।

दीर्घ by 6.4.10 सान्तमहतः संयोगस्य । ~ न उपधायाः दीर्घः असम्बुद्धौ सर्वनामस्थाने does not happen.

[LSK] पुमांसौ<sup>1/2</sup> ।

पुंस् (+ औ)

पुं + असुँङ् 7.1.89 पुंसोऽसुङ् । ~ सर्वनामस्थाने with the help of 1.1.53 ङिच् ।

पुम् + अस् (प०) निमित्तापाये नैमित्तिकस्याप्यपायः ।

पुमस्

पुमस् + औ<sup>1/2</sup>

पुमन्स् + औ 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थाने चाधातोः । ~ नुम्

पुमान्स् + औ 6.4.10 सान्तमहतः संयोगस्य । ~ न उपधायाः दीर्घः असम्बुद्धौ सर्वनामस्थाने

पुमांसौ 8.3.24 नश्चापदान्तस्य झलि । ~ अनुस्वारः

[LSK] पुम्याम्<sup>3/2</sup> ।

पुंस् + भ्याम्

पुं + भ्याम् 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः ।

पुम् + भ्याम् (प०) निमित्तापाये नैमित्तिकस्याप्यपायः ।

[LSK] पुंसु<sup>7/3</sup> ॥

पुंस् + सुप्

पु + सु 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः ।

पुम् + सु (प०) निमित्तापाये नैमित्तिकस्याप्यपायः ।

पुं + सु 8.3.24 नश्चापदान्तस्य झलि । ~ अनुस्वारः

Declension of पुंस् (स-पुं-2)

When सर्वनामस्थान is intended:

पुं + असुँङ् 7.1.89

पुम् + अस् (प०)

|   | एकवचनम्   | द्विवचनम्   | बहुवचनम्  |
|---|---|---|---|
| 1 | पुमस् + सुँ<br>पुमस् 6.1.68<br>पुमन्स् 7.1.70<br>पुमान्स् 6.4.10<br>पुमान् 8.2.23 | पुमस् + औ<br>पुमन्स्+ औ 7.1.70<br>पुमान्स्+ औ 6.4.10<br>पुमांसौ 8.3.24  | पुमस् + जस्<br>पुमन्स्+ अस् 7.1.70<br>पुमान्स्+ अस् 6.4.10<br>पुमांसस् 8.3.24<br>पुमांसः 8.2.66, 8.3.15                   |
| S | पुमस् + सुँ<br>पुमस् 6.1.68<br>पुमन्स् 7.1.70<br>पुमन् 8.2.23                     | same as above   | same as above   |
| 2 | पुमस् + अम्<br>पुमांसम् 7.1.70, 6.4.10, 8.3.24                                    | same as above   | पुंस् + शस्<br>पुंसः 8.2.66, 8.3.15   |
| 3 | पुंस् + टा<br>पुंसा   | पुंस् + भ्याम्<br>पुं + भ्याम् 8.2.23<br>पुम् + भ्याम् (प०)<br>पुं + भ्याम् 8.3.23<br>पुम्भ्याम्/पुंभ्याम् 8.4.59 | पुंस् + भिस्<br>पुं + भिस् 8.2.23<br>पुम् + भिस् (प०)<br>पुं + भिस् 8.3.23<br>पुम्भिः/पुंभिः 8.2.66, 8.3.15, 8.4.59       |
| 4 | पुंस् + डे<br>पुंसे   | same as above   | पुंस् + भ्यस्<br>पुं + भ्यस् 8.2.23<br>पुम् + भ्यस् (प०)<br>पुं + भ्यस् 8.3.23<br>पुम्भ्यः/पुंभ्यः 8.2.66, 8.3.15, 8.4.59 |
| 5 | पुंस् + ङसिँ<br>पुंसः 8.2.66, 8.3.15  | same as above   | same as above   |
| 6 | पुंस् + ङस्<br>पुंसः 8.2.66, 8.3.15   | पुंस् + ओस्<br>पुंसोः 8.2.66, 8.3.15  | पुंस् + आम्<br>पुंसाम्  |
| 7 | पुंस् + ङि<br>पुंसि   | same as above   | पुंस् + सुप्<br>पुं + सु 8.2.23<br>पुम् + सु (प०)<br>पुंसु 8.3.23   |

### स-कारान्त-पुंलिङ्गः (3) उशनस्

उशनस् (शुक्राचार्यः) is enumerated in 7.1.94 ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च । ~ अनङ् सौ असम्बुद्धौ.

Even though the अनङ्-आदेश does not take place when सम्बुद्धि सुँ follows, the next वार्तिक give some options.

वशँ कान्तौ (2P) to wish

वश् + कनसिँ (उ०) 4.240 वशेः कनसिँ । (वष्टि कामयते इति उशनाः, शुक्रः वारः वा ।

उ अश् + अनस् 6.1.16 ग्रहिय्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्वतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च ।

उश् + अनस् 6.1.108 संप्रसारणाच्च । ~ पूर्वरूपम्

उशनस् 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

When असम्बुद्धि सुँ follows, अनङ् (the content is अन) is the substitute in the place of the last letter with the help of 1.1.53 ङिच्च । ~ अलः अन्त्यस्य.

[LSK] “ऋदुशन” (7.1.94) इति<sup>0</sup> अनङ्<sup>1/1</sup> । उशना<sup>1/1</sup> ।

उशनस् + सुँ

उशन अन् + स् 7.1.94 ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च । ~ अनङ् सौ असम्बुद्धौ

अशनन् + स् 6.1.97 अतो गुणे । ~ पररूपम्

उशनान् + स् 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ । ~ न उपधायाः दीर्घः

उशनान् 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

उशना 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य । ~ पदस्य

[LSK] उशनसौ<sup>1/2</sup> ।

उशनस् + औ

उशनसौ

In सम्बुद्धि, there are three forms.

## (वार्तिकम्) अस्य सम्बुद्धौ वानङ्, नलोपश्च वा वाच्यः ।

For उशनस् in सम्बुद्धि, अनङ्-आदेश and नलोप are optional.

अस्य <sup>6/1</sup> सम्बुद्धौ <sup>7/1</sup> वा <sup>0</sup> अनङ् <sup>1/1</sup>, नलोपः <sup>1/1</sup> च <sup>0</sup> वा <sup>0</sup> वाच्यः <sup>1/1</sup> ।

8 words in the वार्तिक, other words are understood by the context.

- अस्य 6/1 – उसनस्-शब्दस्य.
- सम्बुद्धौ 7/1 – प्रातिपदिक is सम्बुद्धि; in परसप्तमी.
- वा 0 – Optionally; qualifying अनङ्-आदेश.
- अनङ् 1/1 – अनङ्-आदेश given by 7.1.94 ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च । ~ अनङ् सौ असम्बुद्धौ.
- नलोपः 1/1 – लोप of न् of अनङ्. By 8.2.8 न ङिसम्बुद्धोः। नलोप is prohibited, but this वार्तिक makes it optional.
- च 0 – This connects अनङ् and नलोपः.
- वा 0 – Optionally; qualifying नलोपः.
- वाच्यः 1/1 – This has to be said.

Since there are two options, there must be three optional forms. One is with अनङ् and नलोप, the other is with अनङ् and without नलोप, and another is without अनङ् and नलोप. [LSK] हे उशन<sup>S/1</sup> । This is with अनङ् and नलोप.

उशनस् + सुँ

उशन अन् + स् (वा०) अस्य सम्बुद्धौ वानङ्, नलोपश्च वा वाच्यः । for 7.1.94 ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च ।

उशनन् + स् 6.1.97 अतो गुणे । ~ पररूपम्

6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ । ~ न उपधायाः दीर्घः is not applicable

उशनन् 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

उशन (वा०) अस्य सम्बुद्धौ वानङ्, नलोपश्च वा वाच्यः । instead of 8.2.8 न ङिसम्बुद्धोः ।

[LSK] हे उशनन्<sup>S/1</sup> । This is with अनङ् and without नलोप.

[LSK] हे उशनः<sup>S/1</sup> । This is without अनङ् and नलोप.

उशनस् + सुँ

उशनस् 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

उशनः 8.2.66, 8.3.15

[LSK] हे उशनसौ<sup>S/2</sup> ।

[LSK] उशनोभ्याम्<sup>3/2</sup> ।

उशनस् + भ्याम्

उशनरुँ + भ्याम् 8.2.66 ससजुषो रुः । ~ पदस्य

उशन उ + भ्याम् 6.1.114 हशि च । ~ अप्लुतात् अतः रोः उत्

उशनो + भ्याम् 6.1.87 आद्गुणः । ~ अचि एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

उशनोभ्याम्

The same operation as नमो नमः सन्धि.

[LSK] उशनस्सु<sup>7/3</sup>, उशनःसु<sup>7/3</sup> ।

उशनस् + सुप्

उशनरुँ + सु 8.2.66 ससजुषो रुः । ~ पदस्य

उशनः + सु 8.3.16 रोः सुपि । (8.3.15 खरवसानयोर्विसर्जनीयः ।)

उशनस् + सु 8.3.36 वा शरि । ~ विसर्जनीयस्य सः

उशनस्सु/उशनःसु

Declension of उशनस् (स-पुं-3)

|   | एकवचनम्   | द्विवचनम्   | बहुवचनम्   |
|---|---|---|--|
| 1 | उशनस् + सुँ<br>उशन अन् + स् 7.1.94<br>अशनन् + स् 6.1.97<br>उशनान् + स् 6.4.8<br>उशनान् 6.1.68<br>उशाना 8.2.7                                      | उशनस् + औ<br>उशनसौ  | उशनस् + जस्<br>उशनसः 8.2.66, 8.3.15  |
| 5 | उशनस् + सुँ<br>उशन अन् + स् (वा०) अनङ्<br>उशनन् + स् 6.1.97<br>उशनन् 6.1.68<br>उशन (वा०) नलोपः<br>/उशनन् (वा०) नलोप-अभाव<br>/उशनः (वा०) अनङ्-अभाव | same as above   | same as above  |
| 2 | उशनस् + अम्<br>उशनसम्   | same as above   | same as above  |
| 3 | उशनस् + टा<br>उशनसा   | उशनस् + भ्याम्<br>उशनरुँ + भ्याम् 8.2.66<br>उशन उ + भ्याम् 6.1.114<br>उशनोभ्याम् 6.1.87 | उशनस् + भिस्<br>उशनरुँ + भिस् 8.2.66<br>उशन उ + भिस् 6.1.114<br>उशनो + भिस् 6.1.87<br>उशनोभिः 8.2.66, 8.3.15     |
| 4 | उशनस् + ङे<br>उशनसे   | same as above   | उशनस् + भ्यस्<br>उशनरुँ + भ्यस् 8.2.66<br>उशन उ + भ्यस् 6.1.114<br>उशनो + भ्यस् 6.1.87<br>उशनोभिः 8.2.66, 8.3.15 |
| 5 | उशनस् + ङसिँ<br>उशनसः 8.2.66, 8.3.15  | same as above   | same as above  |
| 6 | same as above   | उशनस् + ओस्<br>उशनसः 8.2.66, 8.3.15   | उशनस् + आम्<br>उशनसाम्   |
| 7 | उशनस् + ङि<br>उशनसि   | same as above   | उशनस् + सुप्<br>उशनरुँ + सु 8.2.66<br>उशनः + सु 8.3.16<br>उशनस् + सु 8.3.36<br>उशनस्सु/उशनःसु                    |

## स-कारान्त-पुंलिङ्गः (4) अनेहस्

अनेहस् (time) is also enumerated in 7.1.94 ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च । ~ अनङ् सौ असम्बुद्धौ

The only difference in declension from उशनस् is in सम्बुद्धि. For the rest, it declines like उशनस्.

हनँ हिंसागत्योः (2P) to injure, to go

|                    |  |
|--------------------|--|
| हन् + अस्मिँ       | (उ०) 4.225 नञि हन एह च ।                   |
| एह् + अस्          | (उ०) 4.225 नञि हन एह च ।                   |
| नञ् + एह् + अस्    | (उ०) 4.225 नञि हन एह च ।                   |
| अ + एह् + अस्      | 6.3.73 नलोपो नञः ।                         |
| अ + न् + एह् + अस् | 6.3.74 तस्मात् नुट् अचि । ~ नञः            |
| अनेहस्             | 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम् |

When असम्बुद्धि सुँ follows, अनङ् (the content is अन) is the substitute in the place of the last letter with the help of 1.1.53 ङिच्च । ~ अलः अन्त्यस्य.

[LSK] अनेहा<sup>1/1</sup> ।

अनेहस् + सुँ

अनेह अन् + स् 7.1.94 ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च । ~ अनङ् सौ असम्बुद्धौ

अनेहन् + स् 6.1.97 अतो गुणे । ~ पररूपम्

अनेहान् + स् 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ । ~ न उपधायाः दीर्घः

अनेहान् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

अनेहा 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य । ~ पदस्य

[LSK] अनेहसौ<sup>1/2</sup> ।

अनेहस् + औ

[LSK] हे अनेहः<sup>S/1</sup> ।

अनेहस् + सुँ

अनेहस् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

अनेहः 8.2.66, 8.3.15

Declension of अनेहस् (स-पुं-4)

|   | एकवचनम्   | द्विवचनम्   | बहुवचनम्  |
|---|---|---|---|
| 1 | अनेहस् + सुँ<br>अनेह अन् + स् 7.1.94<br>अनेहन् + स् 6.1.97<br>अनेहान् + स् 6.4.8<br>अनेहान् 6.1.68<br>अनेहा 8.2.7 | अनेहस् + औ<br>अनेहसौ  | अनेहस् + जस्<br>अनेहसः 8.2.66, 8.3.15   |
| S | अनेहस् + सुँ<br>अनेहस् 6.1.68<br>अनेहः 8.2.66, 8.3.15   | same as above   | same as above   |
| 2 | अनेहस् + अम्<br>अनेहसम्   | same as above   | same as above   |
| 3 | अनेहस् + टा<br>अनेहसा   | अनेहस् + भ्याम्<br>अनेहरुँ + भ्याम् 8.2.66<br>अनेह उ + भ्याम् 6.1.114<br>अनेहोभ्याम् 6.1.87 | अनेहस् + भिस्<br>अनेहरुँ + भिस् 8.2.66<br>अनेह उ + भिस् 6.1.114<br>अनेहो + भिस् 6.1.87<br>अनेहोभिः 8.2.66, 8.3.15     |
| 4 | अनेहस् + डे<br>अनेहसे   | same as above   | अनेहस् + भ्यस्<br>अनेहरुँ + भ्यस् 8.2.66<br>अनेह उ + भ्यस् 6.1.114<br>अनेहो + भ्यस् 6.1.87<br>अनेहोभिः 8.2.66, 8.3.15 |
| 5 | अनेहस् + डसिँ<br>अनेहसः 8.2.66, 8.3.15  | same as above   | same as above   |
| 6 | same as above   | अनेहस् + ओस्<br>अनेहसः 8.2.66, 8.3.15   | अनेहस् + आम्<br>अनेहसाम्  |
| 7 | अनेहस् + डि<br>अनेहसि   | same as above   | अनेहस् + सुप्<br>अनेहरुँ + सु 8.2.66<br>उशनः + सु 8.3.16<br>अनेहस् + सु 8.3.36<br>अनेहस्सु/उशनःसु                     |

It declines like उशनस, except for S/1.

स-कारान्त-पुंलिङ्गः (5) वेधस्

वेधस् (ब्रह्मा जी) is a simple स्-ending प्रातिपदिक.

डुधाञ् धारणपोषणयोः (3U) to put

वि + धा + अस्िँ (उ०) 4.226 विधाजो वेध च ।

वेध् + अस् (उ०) 4.226 विधाजो वेध च ।

वेधस् 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

उपधा-दीर्घ is seen in 1/1 only by 6.4.14 अत्वसन्तस्य चाधातोः ।.

[LSK] वेधाः<sup>1/1</sup> ।

वेधस् + सुँ<sup>1/1</sup>

वेधस् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

वेधास् 6.4.14 अत्वसन्तस्य चाधातोः । ~ उपधायाः दीर्घः अङ्गस्य असम्बुद्धौ सौ

वेधारुँ 8.2.66 ससजुषो रुः ।

वेधाः 8.3.15 खरवसानयोर्विसर्जनीयः । ~ रः पदस्य

[LSK] वेधसौ<sup>1/2</sup> ।

वेधस् + औ

[LSK] हे वेधः<sup>S/1</sup> ।

वेधस् + सुँ

वेधस् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

वेधः 8.2.66, 8.3.15

[LSK] वेधोभ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

वेधस् + भ्याम्

वेधरुँ + भ्याम् 8.2.66 ससजुषो रुः ।

वेध उ + भ्याम् 6.1.114 हशि च । ~ अष्टुतात् अतः रोः उत्

वेधो+ भ्याम् 6.1.87 आद्गुणः । ~ अचि एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

वेधोभ्याम्

वेधस् + सुप्<sup>7/3</sup>

वेधरुँ + सु 8.2.66 ससजुषो रुः ।

वेधः + सु 8.3.16 रोः सुपि । (8.3.15 खरवसानयोर्विसर्जनीयः ।)

वेधस् + सु 8.3.36 वा शरि । ~ विसर्जनीयस्य सः

Declension of वेधस् (स-पुं-5)

|   | एकवचनम्  | द्विवचनम्   | बहुवचनम्   |
|---|--|---|--|
| 1 | वेधस् + सुँ<br>वेधस् 6.1.68<br>वेधास् 6.4.14<br>वेधाः 8.2.66, 8.3.15 | वेधस् + औ<br>वेधसौ  | वेधस् + जस्<br>वेधसः 8.2.66, 8.3.15  |
| 5 | वेधस् + सुँ<br>वेधस् 6.1.68<br>वेधः 8.2.66, 8.3.15                   | same as above   | same as above  |
| 2 | वेधस् + अम्<br>वेधसम्  | same as above   | same as above  |
| 3 | वेधस् + टा<br>वेधसा  | वेधस् + भ्याम्<br>वेधरुँ + भ्याम् 8.2.66<br>वेध उ + भ्याम् 6.1.114<br>वेधोभ्याम् 6.1.87 | वेधस् + भिस्<br>वेधरुँ + भिस् 8.2.66<br>वेध उ + भिस् 6.1.114<br>वेधो + भिस् 6.1.87<br>वेधोभिः 8.2.66, 8.3.15     |
| 4 | वेधस् + डे<br>वेधसे  | same as above   | वेधस् + भ्यस्<br>वेधरुँ + भ्यस् 8.2.66<br>वेध उ + भ्यस् 6.1.114<br>वेधो + भ्यस् 6.1.87<br>वेधोभिः 8.2.66, 8.3.15 |
| 5 | वेधस् + ङसिँ<br>वेधसः 8.2.66, 8.3.15                                 | same as above   | same as above  |
| 6 | same as above  | वेधस् + ओस्<br>वेधसः 8.2.66, 8.3.15   | वेधस् + आम्<br>वेधसाम्   |
| 7 | वेधस् + डि<br>वेधसि  | same as above   | वेधस् + सुप्<br>वेधरुँ + सु 8.2.66<br>वेधः + सु 8.3.16<br>वेधस्सु/वेधःसु 8.3.36                                  |

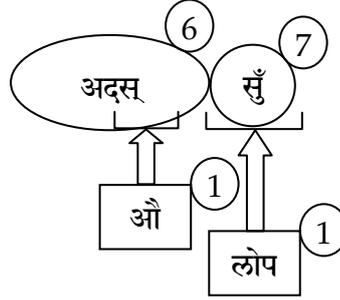
## स-कारान्त-पुंलिङ्गः (6) अदस्

अदस् (that) is सर्वनाम. Four new sūtras are to be studied with this.

The next sūtra gives अपवाद to अ-आदेश of 7.2.102 त्यदादीनामः। ~ विभक्तौ.

### [विधिसूत्रम्] 7.2.107 अदस् औ सुलोपश्च । ~ सौ

When सुँ follows, the last letter of अदस् is replaced by औ and सुँ is elided.



अदस्: <sup>6/1</sup> औ <sup>1/1</sup> सुलोप: <sup>1/1</sup> च <sup>0</sup> । ~ सौ <sup>7/1</sup>

4 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- अदस्: 6/1 – In स्थानेयोगा षष्ठी.
- औ 1/1 – This is the first आदेश. The सुप्-प्रत्यय for 1/1 is लुप्त. 1.1.52 अलोऽन्त्यस्य। is required.
- सुलोप: 1/1 – This is the second आदेश. सो: लोप: सुलोप: (6T)। the elision of सुँ.
- च 0 – This shows that there are two कार्यs.
- सौ 7/1 – From 7.2.106 तदो: स: सावनन्त्ययो: ।; in परसप्तमी.

[LSK] अदस्: <sup>6/1</sup> औ-कार: <sup>1/1</sup> अन्त-आदेश: <sup>1/1</sup> स्यात् <sup>III/1</sup> सौ <sup>7/1</sup> परे <sup>7/1</sup> सुलोप: <sup>1/1</sup> च <sup>0</sup> ।

औ is the substitute in the place of the last letter of अदस् when सुँ follows. There is also elision of सुँ.

[LSK] “तदो:” (7.2.106) इति <sup>0</sup> स: <sup>1/1</sup> । असौ <sup>1/1</sup> ।

अदस् + सुँ <sup>1/1</sup>

अद औ + स् 7.2.102 त्यदादीनामः । is प्राप्ते, 7.2.107 अदस् औ सुलोपश्च । ~ सौ

अद औ 7.2.107 अदस् औ सुलोपश्च । ~ सौ

अदौ 6.1.88 वृद्धिरेचि ।

असौ 7.2.106 तदो: स: सावनन्त्ययो: ।

From 1/2 onward, 7.2.102 त्यदादीनामः । and other common sūtras are used.

[LSK] त्यदादि-अत्वम्<sup>1/1</sup> । पररूपत्वम्<sup>1/1</sup> । वृद्धिः<sup>1/1</sup> ।

अदस् + औ<sup>1/2</sup>

अद अ + औ 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

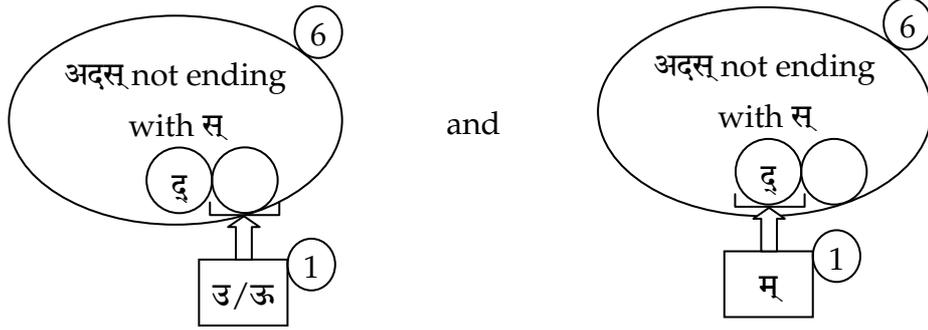
अद + औ 6.1.97 अतो गुणे । ~ पररूपम्

अदौ 6.1.88 वृद्धिरेचि ।

Continue with the next sūtra...

## [विधिसूत्रम्] 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः ।

अदस् which does not end with स् takes उ/ऊ for the letter after द्, and the द् is replaced by म्.



अदसः<sup>6/1</sup> असेः<sup>6/1</sup> दात्<sup>5/1</sup> उ<sup>1/1</sup> दः<sup>6/1</sup> मः<sup>1/1</sup> ।

6 words in the सूत्र, no word is required as अनुवृत्ति.

- अदसः 6/1 – The word अदस् in सम्बन्धषष्ठी to दात्.
- असेः 6/1 – This is adjective to अदसः . That which does not end with स्, न अस्ति सिः (= सकारः) यस्मि सः असिः (NB), तस्य । that in which there is no स्. This is to avoid नपुंसक.
- दात् 5/1 – द् in पूर्वपञ्चमी. The अ after द् is उच्चारणार्थ.
- उ 1/1 – उः च ऊः च उ (SD) । प्रातिपदिक is ऊ which becomes ह्रस्व by 1.2.47 ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य। because समाहारद्वन्द्व is neuter by 2.4.17 स नपुंसकम् । ~ द्वन्द्वः. This is आदेश. स्थानिन् is the परस्य brought by परिभाषा for दात्, सुप is लुप्त. For deciding उ or ऊ, प्रमाणतः (by the length) आन्तर्य of 1.1.50 स्थानेऽन्तरतमः । is used.
- दः 6/1 – प्रातिपदिक is द्; in स्थानेयोगा षष्ठी for म्-आदेश.
- मः 1/1 – This is आदेश. The अ after म् is उच्चारणार्थ.

[LSK] अदसः<sup>6/1</sup> असान्तस्य (NT)<sup>6/1</sup> दात्<sup>5/1</sup> परस्य<sup>6/1</sup> उद्-ऊतौ<sup>1/2</sup> स्तः<sup>III/2</sup> दस्य<sup>6/1</sup> मः<sup>1/1</sup> च<sup>0</sup> ।

उ/ऊ is the substitute for the letter after द् of अदस् which does not have स. And also, द् is replaced by म.

[LSK] आन्तरतम्यात्<sup>5/1</sup> (प्रमाणतः<sup>0</sup>) ह्रस्वस्य<sup>6/1</sup> (स्थाने<sup>7/1</sup>) उः<sup>1/1</sup> दीर्घस्य<sup>6/1</sup> (स्थाने<sup>7/1</sup>) ऊः<sup>1/1</sup> ।

By being the most similar (आन्तरतम्यम्) of 1.1.50 स्थानेऽन्तरतमः ।, उ is the आदेश for ह्रस्व and ऊ for दीर्घ from the aspect of प्रमाणतः (by the length), one of the four similarities.

[LSK] अमू<sup>1/2</sup> ।

अदस् + औ

अद अ + औ 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

अद + औ 6.1.97 अतो गुणे । ~ पररूपम्

अदौ 6.1.88 वृद्धिरेचि ।

अदू 8.2.80 अदसोऽसेर्दाद् दो मः । ~ पदस्य with the help of 1.1.50 स्थानेऽन्तरतमः । by प्रमाणतः

Since औ, the letter after द् is दीर्घ, the दीर्घ letter among उ and ऊ, which is ऊ, is taken as आदेश.

अमू 8.2.80 अदसोऽसेर्दाद् दो मः । ~ पदस्य

[LSK] जसः शी (7.1.17) । गुणः (6.1.87) ॥

अदस् + जस्<sup>1/3</sup>

अद अ + जस् 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

अद + जस् 6.1.97 अतो गुणे । ~ पररूपम्

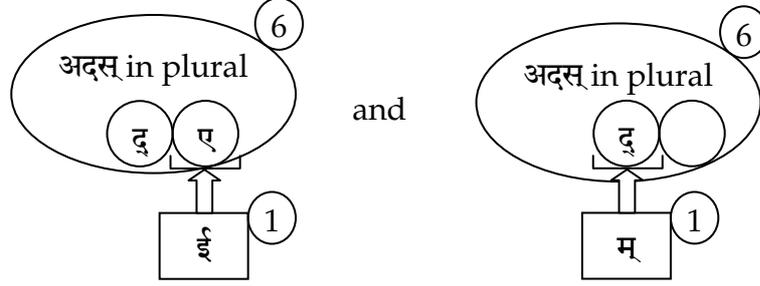
अद + शी 7.1.17 जसः शी । ~ अतः सर्वनाम्नः

अदे 6.1.87 आहुणः ।

Now, 8.2.80 अदसोऽसेर्दाद् दो मः । ~ पदस्य is applicable. The next sūtra is the अपवाद.

[विधिसूत्रम्] 8.2.81 एत ईद्वहवचने । ~ अदसः दात् दः मः

In plural, ए after द् of अदस् takes ई, and the द् is replaced by म्.



एतः 6/1 ईत् 1/1 बहुवचने 7/1 । ~ अदसः 6/1 दात् 5/1 दः 6/1 मः 1/1

3 words in the सूत्र; 3 words as अनुवृत्ति

- एतः 6/1 – प्रातिपदिक is एत; in स्थानेयोगा षष्ठी for ईत्-आदेश.
- ईत् 1/1 – This is आदेश. त् is just for clarity.
- बहुवचने 7/1 – In the sense of plural. This is not बहुवचन-संज्ञा in परसप्तमी because the ए of अदे in this stage is not followed by बहुवचन-संज्ञक-प्रत्यय.
- अदसः 6/1 – From the previous sūtra. The word अदस् in सम्बन्धषष्ठी to दात्.
- दात् 5/1 – From the previous sūtra. द् in पूर्वपञ्चमी. The अ after द् is उच्चारणार्थ.
- दः 6/1 – From the previous sūtra. Of द्. In स्थानेयोगा षष्ठी for म्-आदेश.
- मः 1/1 – From the previous sūtra. This is आदेश. The अ after म् is उच्चारणार्थ.

[LSK] अदसः 6/1 दात् 5/1 परस्य 6/1 ईत् 1/1 स्तः III/2 दस्य 6/1 च 0 मः 1/1 बहु-अर्थ-उक्तौ 7/1 ।

When plural is mentioned, ई is the substitute in the place of ए after द् of अदस्. And also, द् is replaced by म्.

[LSK] अमी 1/3 ।

अदस् + जस्

अद अ + जस् 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

अद + जस् 6.1.97 अतो गुणे । ~ पररूपम्

अद + शी 7.1.17 जसः शी । ~ अतः सर्वनाम्नः

अदे 6.1.87 आद्गुणः ।

अदी 8.2.81 एत ईद्वहवचने । ~ अदसः असेः दात् दः मः

अमी 8.2.81 एत ईद्वहवचने । ~ अदसः असेः दात् दः मः

[LSK] “पूर्वत्रासिद्धम्” (8.2.1) इति<sup>0</sup> विभक्ति-कार्यम्<sup>1/1</sup> प्राक्<sup>0</sup> पश्चात्<sup>0</sup> उत्त्व-मत्वे<sup>1/2</sup> ।

Because of 8.2.1 पूर्वत्रासिद्धम् ।, the modifications caused by विभक्ति are to be done before, then substitutions of उ and म् are to be done later.

[LSK] अमुम्<sup>2/1</sup> ।

अदस् + अम्

अद अ + अम् 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

अद + अम् 6.1.97 अतो गुणे । ~ पररूपम्

अदम् 6.1.107 अमि पूर्वः । ~ अकः

अमम् 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य

अमुम् 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य with the help of 1.1.50 स्थानेऽन्तरतमः । by प्रमाणतः

Here, there is a doubt: Does 8.2.1 पूर्वत्रासिद्धम् । give शास्त्र-असिद्धम् (सूत्र-असिद्धम्) or कार्य-असिद्धम्? The answer is शास्त्र-असिद्धम्.

If it were कार्य-असिद्धम्, sūtras in त्रिपादी would be effective. By 1.4.2 विप्रतिषेधे परं कार्यम् ।, their कार्यs, substitutions of म् and उ, would be done first. Then, from the view of 6.1.107 अमि पूर्वः ।, म् and उ would be असिद्ध, but the स्थानिनः, द् and अ, would also be gone. This situation is अनिष्ट. Thus 8.2.1 पूर्वत्रासिद्धम् । should be understood as शास्त्र-असिद्धम्.

[LSK] अमू<sup>2/2</sup> ।

[LSK] अमून्<sup>2/3</sup> ।

अदस् + शस्<sup>2/3</sup>

अद अ + अस् 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

अद + अस् 6.1.97 अतो गुणे । ~ पररूपम्

अदास् 6.1.102 प्रथमयोः पूर्वसवर्णः । ~ दीर्घः

अदान् 6.1.103 तस्माच्छसो नः पुंसि ।

अमान् 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य

अमून् 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य with the help of 1.1.50 स्थानेऽन्तरतमः । by प्रमाणतः

[LSK] मुत्वे<sup>7/1</sup> कृते<sup>7/1</sup> घिसंज्ञायाम्<sup>7/1</sup> ना-भावः<sup>1/1</sup> ॥

When म् and उ are done, घि-संज्ञा is gained for the अङ्ग, then ना-आदेश by 7.3.120 आङो नाऽस्त्रियाम् । will be there.

अदस् + टा<sup>3/1</sup>

अद अ + आ 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

अद + आ 6.1.97 अतो गुणे । ~ पररूपम्

Now, 7.1.12 टाङसिङसां इनात्स्याः । is applicable because 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । is असिद्ध. This असिद्धत्व is negated by the next sūtra.

[निषेधसूत्रम्] 8.2.3 न मु ने । ~ असिद्धः

When ना-आदेश is to be done, or has been done, त्रिपादी-कार्यस म् and उ are not असिद्ध.

न<sup>0</sup> मु<sup>1/1</sup> ने<sup>7/1</sup> । ~ असिद्धः<sup>1/1</sup>

3 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- न 0 – निषेध to असिद्धः.
- मु 1/1 – म् च उ च मु (SD)।; the substitutions which are म् and उ by 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः ।. The four members of इतरेतरद्वन्द्वसमास are connected to विधि in शेषे षष्ठी, by कर्म-अविवक्षितत्वात्.
- ने 7/1 – प्रातिपदिक is ना; in विषयसप्तमी. “When ना is to be done”
- असिद्धः 1/1 – From अधिकारसूत्र 8.2.1 पूर्वत्रासिद्धम् ।.

[LSK] ना-भावे<sup>7/1</sup> कर्तव्ये<sup>7/1</sup> कृते<sup>7/1</sup> च<sup>0</sup> मु-भावः<sup>1/1</sup> न<sup>0</sup> असिद्धः<sup>1/1</sup> ।

When the substitute of ना is required to be done, and also is already done, the substitutions which are म् and उ (by 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः ।) are not असिद्ध.

[LSK] अमुना<sup>3/1</sup> ।

अदस् + टा

अद अ + आ 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

अद + आ 6.1.97 अतो गुणे । ~ पररूपम्

अम + आ 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य

अमु + आ 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य with the help of 1.1.50 स्थानेऽन्तरतमः । by प्रमाणतः

घि-संज्ञा 1.4.7 शेषो घ्यसखि । with the help of 8.2.3 न मु ने । ~ असिद्धम्

अमु + ना 7.3.120 आडो नाऽस्त्रियाम् । ~ घेः with the help of 8.2.3 न मु ने । ~ असिद्धम्

When घि-संज्ञा (1.4.7 शेषो घ्यसखि ।) and ना (7.3.120 आडो नाऽस्त्रियाम् ।) are कर्तव्ये, the negation of असिद्ध of मु (8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः ।) is told. This is the example for “कर्तव्ये”.

Also, when दीर्घ for अदन्त-अङ्ग is to be done by 7.3.102 सुपि च ।, the negation of असिद्ध of मु (8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः ।) is told. This is the example for “कृते”.

[LSK] अमूभ्याम्<sup>3/2, 4/2, 5/2</sup> ३ । The form “अमूभ्याम्” is repeated trice in 3/2, 4/2, and 5/2.

अदस् + भ्याम्

अद अ + भ्याम् 7.2.102 त्यदादीनामः ।

अद + भ्याम् 6.1.97 अतो गुणे । ~ पररूपम्

अदा + भ्याम् 7.3.102 सुपि च । ~ दीर्घः अतः

अमा+ भ्याम् 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य

अमू+ भ्याम् 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य with the help of 1.1.50 स्थानेऽन्तरतमः । by प्रमाणतः

अमूभ्याम्

[LSK] अमीभिः<sup>3/3</sup> ।

अदस् + भिस्

अद अ + भिस् 7.2.102 त्यदादीनामः ।

अद + भिस् 6.1.97 अतो गुणे । ~ पररूपम्

ऐस् does not happen by 7.1.11 नेदमदसोरकोः । ~ अतः भिस् ऐस्

अदे + भिस् 7.3.103 बहुवचने झल्येत् । ~ सुपि अतः

अमे+ भिस् 8.2.81 एत ईद्वहुवचने । ~ अदसः असेः दात् दः मः

अमी+ भिस् 8.2.81 एत ईद्वहुवचने । ~ अदसः असेः दात् दः मः

अमीभिः 8.2.66, 8.3.15

[LSK] अमुष्मै<sup>4/1</sup> ।

अदस् + ङे

अद अ + ए 7.2.102 त्यदादीनामः ।

अद + अस् 6.1.97 अतो गुणे । ~ पररूपम्

अद + स्मै 7.1.14 सर्वनाम्नः स्मै । ~ अतः

अम + स्मै 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य

अमु + स्मै 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य with the help of 1.1.50 स्थानेऽन्तरतमः । by प्रमाणतः

अमु + घौ 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः ।

[LSK] अमीभ्यः<sup>4/3,5/3</sup> र । The form “अमीभ्यः” is repeated twice in 4/3 and 5/3.

अदस् + भ्यस्

अद अ + भ्यस् 7.2.102 त्यदादीनामः ।

अद + भ्यस् 6.1.97 अतो गुणे । ~ पररूपम्

अदे + भ्यस् 7.3.103 बहुवचने झल्येत् । ~ सुपि अतः

अमे + भ्यस् 8.2.81 एत ईद्वहुवचने । ~ अदसः असेः दात् दः मः

अमी + भ्यस् 8.2.81 एत ईद्वहुवचने । ~ अदसः असेः दात् दः मः

अमीभ्यः 8.2.66, 8.3.15

[LSK] अमुष्मात्<sup>5/1</sup> ।

अदस् + ङसिँ

अद अ + ङसिँ 7.2.102 त्यदादीनामः ।

अद + ङसिँ 6.1.97 अतो गुणे । ~ पररूपम्

अद + स्मात् 7.1.15 ङसिङ्घोः स्मात्स्मिनौ । ~ अतः सर्वनाम्नः

अम + स्मात् 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य

अमु + स्मात् 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य with the help of 1.1.50 स्थानेऽन्तरतमः । by प्रमाणतः

अमु + ष्मात् 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः ।

[LSK] अमुष्य<sup>6/1</sup> ।

अदस् + ङस्

अद अ + ङस् 7.2.102 त्यदादीनामः ।

अद + ङस् 6.1.97 अतो गुणे । ~ पररूपम्

अद + स्य 7.1.12 टाङसिङसां इनात्स्याः । ~ अतः

अम + स्य 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य

अमु + स्य 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य with the help of 1.1.50 स्थानेऽन्तरतमः । by प्रमाणतः

अमु + ष्य 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः ।

[LSK] अमुयोः<sup>6/2,7/2</sup> र । The form “अमुयोः” is repeated twice in 6/3 and 7/2.

अदस् + ओस्

अद अ + ओस् 7.2.102 त्यदादीनामः ।

अद + ओस् 6.1.97 अतो गुणे । ~ पररूपम्

अदे + ओस् 7.3.104 ओसि च । ~ एत् अतः अङ्गस्य

|                                  |   |
|----------------------------------|---|
| अदय् + ओस्                       | 6.1.78 एचोऽयवायावः। ~ अचि   |
| अमयोस्                           | 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः। ~ पदस्य   |
| अमुयोस्                          | 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः। ~ पदस्य with the help of 1.1.50 स्थानेऽन्तरतमः। by प्रमाणतः |
| अमुयोः                           | 8.2.66, 8.3.15  |
| [LSK] अमीषाम् <sup>6/3</sup> ।   |   |
| अदस् + आम्                       |   |
| अद अ + आम्                       | 7.2.102 त्यदादीनामः।  |
| अद + आम्                         | 6.1.97 अतो गुणे। ~ पररूपम्  |
| अद + स् आम्                      | 7.1.52 आमि सर्वनाम्नः सुट्। ~ आत्   |
| अदे + साम्                       | 7.3.103 बहुवचने झल्येत्। ~ सुपि अतः   |
| अमे + साम्                       | 8.2.81 एत ईद्वहुवचने। ~ अदसः असेः दात् दः मः  |
| अमी + साम्                       | 8.2.81 एत ईद्वहुवचने। ~ अदसः असेः दात् दः मः  |
| अमी + षाम्                       | 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः।  |
| अमीषाम्                          |   |
| [LSK] अमुष्मिन् <sup>7/1</sup> । |   |
| अदस् + ङि                        |   |
| अद अ + ङि                        | 7.2.102 त्यदादीनामः।  |
| अद + ङि                          | 6.1.97 अतो गुणे। ~ पररूपम्  |
| अद + स्मिन्                      | 7.1.15 ङसिञ्चोः स्मात्स्मिन्। ~ अतः सर्वनाम्नः  |
| अम + स्मिन्                      | 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः। ~ पदस्य   |
| अमु + स्मिन्                     | 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः। ~ पदस्य with the help of 1.1.50 स्थानेऽन्तरतमः। by प्रमाणतः |
| अमु + ष्मिन्                     | 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः।  |
| [LSK] अमीषु <sup>7/3</sup> ।     |   |
| अदस् + सुप् <sup>7/3</sup>       |   |
| अद अ + सु                        | 7.2.102 त्यदादीनामः।  |
| अद + सु                          | 6.1.97 अतो गुणे। ~ पररूपम्  |
| अदे + सु                         | 7.3.103 बहुवचने झल्येत्। ~ सुपि अतः   |
| अमे + सु                         | 8.2.81 एत ईद्वहुवचने। ~ अदसः असेः दात् दः मः  |
| अमी + सु                         | 8.2.81 एत ईद्वहुवचने। ~ अदसः असेः दात् दः मः  |
| अमी + षु                         | 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः।  |

## Declension of अदस् (स्-पुं-6)

|   | एकवचनम्   | द्विवचनम्  | बहुवचनम्   |
|---|---|--|--|
| 1 | असौ 7.2.107, 6.1.88,<br>7.2.106                         | अमू 7.2.102, 6.1.97,<br>6.1.88, 8.2.80                                   | अमी 7.2.102, 6.1.97,<br>7.1.17, 6.1.87,<br>8.2.81              |
| 2 | अमुम् 7.2.107, 6.1.97,<br>6.1.107, 8.2.80               | same as above  | अमून् 7.2.107, 6.1.97,<br>6.1.102, 6.1.103,<br>8.2.80          |
| 3 | अमुना 7.2.107, 6.1.97,<br>8.2.80, 7.3.120               | अमूभ्याम् 7.2.102, 6.1.97,<br>7.3.102, 8.2.80                            | अमीभिः 7.2.102, 6.1.97,<br>7.3.103, 8.2.81,<br>8.2.66, 8.3.15  |
| 4 | अमुष्मै 7.2.102, 6.1.97,<br>7.1.14, 8.2.80,<br>8.3.59   | same as above  | अमीभ्यः 7.2.102, 6.1.97,<br>7.3.103, 8.2.81,<br>8.2.66, 8.3.15 |
| 5 | अमुष्मात् 7.2.102, 6.1.97,<br>7.1.15, 8.2.80,<br>8.3.59 | same as above  | same as above  |
| 6 | अमुष्य 7.2.102, 6.1.97,<br>7.1.12, 8.2.80,<br>8.3.59    | अमुयोः 7.2.102, 6.1.97,<br>7.3.104, 6.1.78,<br>8.2.80, 8.2.66,<br>8.3.15 | अमीषाम् 7.2.102, 6.1.97,<br>7.1.52, 7.3.103,<br>8.2.81, 8.3.59 |
| 7 | अमुष्मिन् 7.2.102, 6.1.97,<br>7.1.15, 8.2.80,<br>8.3.59 | same as above  | अमीषु 7.2.102, 6.1.97,<br>7.3.103, 8.2.81,<br>8.3.59           |

इति हलन्तपुंल्लिङ्गाः ।

Thus completes the section of शब्दs ending with हल् and whose gender is masculine.

## अथ हलन्तस्त्रीलिङ्गः

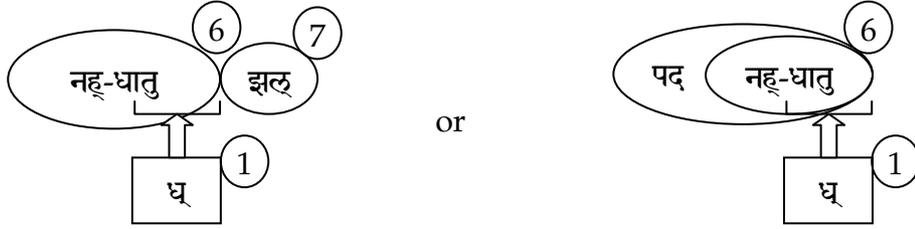
### ह-कारान्त-स्त्रीलिङ्गः (1) उपानह

उपानह् (shoe) is the first प्रातिपदिक in हलन्तस्त्रीलिङ्ग.

The next sūtra is अपवाद to 8.2.31 हो ढः ।.

### [विधिसूत्रम्] 8.2.34 नहो धः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

The last letter of नह्-धातु is replaced by ध् when followed by झल् or at the end of पद.



नहः<sup>6/1</sup> धः<sup>1/1</sup> । ~ झलि<sup>7/1</sup> पदस्य<sup>6/1</sup> अन्ते<sup>7/1</sup> च<sup>0</sup>

2 words in the सूत्र; 4 words as अनुवृत्ति

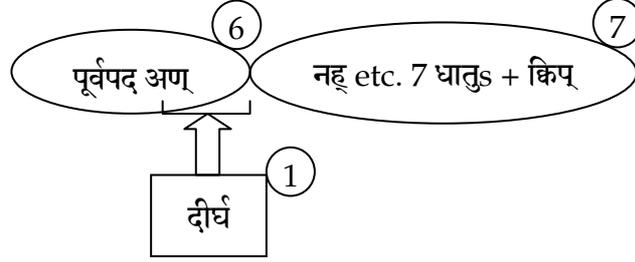
- नहः 6/1 – नह् (4U) to tie, to bind; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- धः 1/1 – The अ after ध् is उच्चारणार्थ. This is आदेश. 1.1.52 अलोऽन्त्यस्य । is required.
- झलि 7/1 – From 8.2.26 झलो झलि।. प्रत्याहार झल्; in परसप्तमी.
- पदस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 8.1.16 पदस्य।; in सम्बन्धे षष्ठी to अन्ते.
- अन्ते 7/1 – From 8.2.29 स्कोः संयोगाद्योरन्ते च।; in अधिकरणे सप्तमी.
- च 0 – From 8.2.29 स्कोः संयोगाद्योरन्ते च।; connecting झलि and पदस्य अन्ते.

[LSK] नहोः<sup>6/1</sup> हस्य<sup>6/1</sup> हः<sup>1/1</sup> स्यात्<sup>III/1</sup> झलि<sup>7/1</sup> पदान्ते<sup>7/1</sup> च<sup>0</sup> ॥

ध् is the substitute in the place of नह्-धातु when झल् follows, or at the end of पद.

[विधिसूत्रम्] 6.3.116 नहिवृतिवृषिव्यधिरुचिसहितनिषु कौ ।

When ह् or र् is elided, the अण् before the cause of that elision gets elongated.



नहि-वृति-वृषि-व्यधि-रुचि-सहि-तनिषु 7/3 कौ 7/1 । ~ पूर्वस्य 6/1 दीर्घः 1/1 अणः 6/1

2 words in the सूत्र; 3 words as अनुवृत्ति

- नहि-वृति-वृषि-व्यधि-रुचि-सहि-तनिषु 7/3 – Seven धातुs: नह्, वृत्, वृष, व्यध, रुच, सह्, and तन् are suffixed with इक् धातुनिर्देश and compounded in ID. समानाधिकरण to उत्तरपदे.
- कौ 7/1 – प्रातिपदिक is क्ति. Since क्तिन् does not come after these seven धातुs, क्तिप् is understood. With तदन्तविधि, it is understood as “क्तिप्-अन्त-धातु-उत्तरपदेषु”
- पूर्वस्य 6/1 – From 6.3.111 ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः ।.
- दीर्घः 1/1 – From 6.3.111 ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः ।; this is आदेश. परिभाषा 1.2.28 अचश्च। is required.
- अणः 6/1 - From 6.3.111 ढ्रलोपेपूर्वस्यदीर्घोऽणः ।; in स्थानेयोगा षष्ठी.

[LSK] क्तिप्-अन्तेषु 7/3 पूर्वपदस्य 6/1 दीर्घः 1/1 ।

दीर्घः is substitute in the place of अण् of पूर्वपद when these seven धातुs ending with क्तिप् are उत्तरपद.

[LSK] उपानत् 1/1, उपानद् 1/1 ।

णहँ बन्धने (4U) to tie

नह् 6.1.65 णो नः । ~ धात्वादेः

उप + नह् + क्तिप् (वा० of 3.3.94 स्त्रियाम्) सम्पदादिभ्यः क्तिप् ।

उपा + नह् 6.3.116 नहिवृतिवृषिव्यधिरुचिसहितनिषु कौ । ~ पूर्वस्य दीर्घः with 1.1.52 अलोऽन्त्यस्य।

उपानह् 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

नीवृत् (kingdom), प्रावृट् (rainy season), मर्मावित् (one who pierces vital points), नीरुक् (lustreless), ऋतीषट् (one who maintains sacred laws) are made in the same manner.

उपानह् + सुँ<sup>1/1</sup>

उपानह् 6.1.68 हल्ब्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

उपानध् 8.2.34 नहो धः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

उपानद् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।

उपानत् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ झलाम् चर्

[LSK] उपानहौ<sup>1/2</sup> ।

उपानह् + औ

उपानह् + भ्याम्<sup>3/2</sup>

उपानध् + भ्याम् 8.2.34 नहो धः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

उपानद् + भ्याम् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।

उपानद्भ्याम्

[LSK] उपानत्सु<sup>7/3</sup> ॥

उपानह् + सुप्

उपानध् + सु 8.2.34 नहो धः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

उपानद् + सु 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।

उपानत् + सु 8.4.56 खरि च । ~ झलां चर्

उपानत्सु

### Summary of declension of उपानह् (ह्-स्त्री-1)

|   | एकवचनम्   | द्विवचनम्                                      | बहुवचनम्   |
|---|---|--|--|
| 1 | उपानत्/उपानद् 6.1.68, <u>8.2.34</u> ,<br>8.2.39, 8.4.56 | उपानहौ   | उपानहः   |
| 5 | same as above   | same as above                                  | same as above  |
| 2 | उपानहम्   | same as above                                  | same as above  |
| 3 | उपानहा  | उपानद्भ्याम् <u>8.2.34</u> , 8.2.39,<br>8.4.53 | उपानद्भिः <u>8.2.34</u> , 8.2.39,<br>8.2.66, 8.3.15, 8.4.53  |
| 4 | उपानहे  | same as above                                  | उपानद्भ्यः <u>8.2.34</u> , 8.2.39,<br>8.2.66, 8.3.15, 8.4.53 |
| 5 | उपानहः  | same as above                                  | same as above  |
| 6 | same as above   | उपानहोः  | उपानहाम्   |
| 7 | उपानहि  | same as above                                  | उपानत्सु <u>8.2.34</u> , 8.2.39, 8.4.55                      |

ह-कारान्त-स्त्रीलिङ्गः (2) उष्णिह्

उष्णिह् (a name of meter in the Veda) is नित्य-स्त्रीलिङ्ग word. One of the words derived by

3.2.59 ऋत्विग्दधृक्स्त्रिग्दिगुष्णिग् अञ्चयुजिक्रुञ्चां च । ~ किन्

ष्णिहँ प्रीतौ (4P) to have affection

स्निह् 6.1.64 धात्वादेः षः सः ।, (प०) निमित्तापाये नैमित्तिकस्याप्यपायः ।

उद् + स्निह् + किन् 3.2.59 ऋत्विग्दधृक्स्त्रिग्दिगुष्णिग् अञ्चयुजिक्रुञ्चां च । ~ किन्

उ + ष्णिह् प्रत्ययस्य सर्वापहारिलोपः, दकारलोपः, षत्वं च निपातनं by the sūtra.

उष्णिह् 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च ।

[LSK] किन्-अन्तत्वात्<sup>5/1</sup> कुत्वेन<sup>3/1</sup> घः<sup>1/1</sup> । उष्णिक्<sup>1/1</sup>, उष्णिग्<sup>1/1</sup> ।

Because उष्णिह् is किन्-प्रत्यय-अन्त, the पदान्त ह् gains कुत्व by 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः ।. By गुणतः, soft and महाप्राण letter among कु, which is घ, is chosen.<sup>17</sup>

उष्णिह् + सुँ<sup>1/1</sup>

उष्णिह् 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

उष्णिह् 8.2.31 हो ढः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

उष्णिह् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।

उष्णिग् 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः । with the help of 1.1.52 स्थानेऽन्तरतमः । by गुणतः

उष्णिक् 8.4.56 वावसाने । ~ झलाम् चर्

[LSK] उष्णिहौ<sup>1/2</sup>

[LSK] उष्णिग्भ्याम्<sup>3/2</sup> ।

उष्णिह् + भ्याम्

उष्णिह् + भ्याम् 8.2.31 हो ढः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

उष्णिह् + भ्याम् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।

उष्णिग्भ्याम् 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः । with the help of 1.1.52 स्थानेऽन्तरतमः । by गुणतः

<sup>17</sup> According to a grammarian कैयट, 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः । has to come first. However, the simple method of using 8.2.31 हो ढः । first, as SK follows, is good.

उष्णिह् + सुप्<sup>7/3</sup>

उष्णिह् + सु 8.2.31 हो ढः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

उष्णिङ् + सु 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।

उष्णिग् + सु 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः । (soft and महाप्राण)

उष्णिग् + षु 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः ।

उष्णिक् + षु 8.4.56 खरि च । ~ झलां चर्

उष्णिक्षु

Summary of declension of उष्णिह् (ह्-स्त्री-2)

|   | एकवचनम्   | द्विवचनम्                               | बहुवचनम्  |
|---|---|---|---|
| 1 | उष्णिक्/उष्णिग् 6.1.68, 8.2.62,<br>8.2.39, 8.4.56 | उष्णिहौ                                 | उष्णिहः   |
| 5 | same as above                                     | same as above                           | same as above   |
| 2 | उष्णिहम्  | same as above                           | same as above   |
| 3 | उष्णिहा   | उष्णिग्भ्याम् 8.2.62, 8.2.39,<br>8.4.53 | उष्णिग्भिः 8.2.62, 8.2.39,<br>8.2.66, 8.3.15, 8.4.53  |
| 4 | उष्णिहे   | same as above                           | उष्णिग्भ्यः 8.2.62, 8.2.39,<br>8.2.66, 8.3.15, 8.4.53 |
| 5 | उष्णिहः   | same as above                           | same as above   |
| 6 | same as above                                     | उष्णिहोः                                | उष्णिहाम्   |
| 7 | उष्णिहि   | same as above                           | उष्णिक्षु 8.2.62, 8.2.39, 8.4.55,<br>8.3.59           |

**व-कारान्त-स्त्रीलिङ्गः (1) दिव्**

दिव् (स्वर्ग, sky), by itself, not in a compound, is a नित्य-स्त्रीलिङ्ग and it declines like सुदिव् in पुल्लिङ्ग.

दिवुं क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु (4A)

दिव् + डिविं (वा०) आधारे डिवि ।

द् + इव् डित्वसामर्थ्याद् अभास्यापि टेलोपः ।

दिव् 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च ।

[LSK] द्यौः<sup>1/1</sup> ।

दिव् + सुं

दि औ + स् 7.1.84 दिव औत् । ~ सौ

द्य औ + स् 6.1.77 इको यणचि ।

द्यौः 8.2.66, 8.3.15

[LSK] दिवौ<sup>1/2</sup> । दिवः<sup>1/3</sup> ।

दिव् + औ

[LSK] द्युभ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

दिव् + भ्याम्

दि उ + भ्याम् 6.1.131 दिव उत् । ~ पदान्ते

द्य उ + भ्याम् 6.1.77 इको यणचि ।

**Declension of दिव् (व-स्त्री-1)**

|   | एकवचनम्       | द्विवचनम्          | बहुवचनम्               |
|---|---------------|--------------------|------------------------|
| 1 | द्यौः 7.1.84  | दिवौ               | दिवः                   |
| 5 | same as above | same as above      | same as above          |
| 2 | दिवम्         | same as above      | same as above          |
| 3 | दिवा          | द्युभ्याम् 6.1.131 | द्युभिः 6.1.131        |
| 4 | दिवे          | same as above      | द्युभ्यः 6.1.131       |
| 5 | दिवः          | same as above      | same as above          |
| 6 | same as above | दिवोः              | दिवाम्                 |
| 7 | दिवि          | same as above      | द्युषु 6.1.131, 8.3.59 |

## रेफान्त-स्त्रीलिङ्गः (1) गिर्

गिर् (वाणी, speech, words)

गृ निगरणे (6P) to swallow

गृ + क्तिप् 3.2.76 क्तिप् च ।

गिर् 7.1.100 ऋत इद्घातोः ।

गिर् 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च ।

[LSK] गीः <sup>1/1</sup> ।

गिर् + सुँ

गिर् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्वपृक्तं हल् । ~ लोपः

गीर् 8.2.76 वोरुपधाया दीर्घ इकः । ~ धातोः पदस्य अन्ते

गीः 8.2.66, 8.3.15

[LSK] गिरौ <sup>1/2</sup> । गिरः <sup>1/3</sup> ॥

गिर् + औ

गिर् + भ्याम् <sup>3/2</sup>

गीर् + भ्याम् 8.2.76 वोरुपधाया दीर्घ इकः । ~ धातोः पदस्य अन्ते

गीर्भ्याम्

गिर् + सुप् <sup>7/3</sup>

गीर् + सु 8.2.76 वोरुपधाया दीर्घ इकः । ~ धातोः पदस्य अन्ते

रेफ becoming विसर्ग by 8.3.15 खरवसानयोर्विसर्जनीयः । is restricted by 8.3.16 रोः सुपि ।, which says that the रेफ should be born of रूँ to become विसर्ग when the निमित्त is सुप्.

गीर् + षु 8.3.59 आदेश-प्रत्यययोः । ~ इणकोः सः मूर्धन्यः

गीर्षु

[LSK] एवम्<sup>0</sup> पूः <sup>1/1</sup> ॥

पुर् (city) declines in the same manner.

Declension of गिर् (र-स्त्री-1 #1)

|   | एकवचनम्       | द्विवचनम्         | बहुवचनम्                         |
|---|---------------|-------------------|----------------------------------|
| 1 | गीः 8.2.76    | गिरौ              | गिरः                             |
| S | same as above | same as above     | same as above                    |
| 2 | गिरम्         | same as above     | same as above                    |
| 3 | गिरा          | गीर्भ्याम् 8.2.76 | गीर्भिः 8.2.76                   |
| 4 | गिरे          | same as above     | गीर्भ्यः 8.2.76                  |
| 5 | गिरः          | same as above     | same as above                    |
| 6 | same as above | गिरोः             | गिराम्                           |
| 7 | गिरि          | same as above     | गीर्षु 8.2.76, 8.3.16,<br>8.3.59 |

Declension of पुर (र-स्त्री-1 #2)

|   | एकवचनम्       | द्विवचनम्       | बहुवचनम्                       |
|---|---------------|-----------------|--------------------------------|
| 1 | पूः 8.2.76    | पुरौ            | पुरः                           |
| S | same as above | same as above   | same as above                  |
| 2 | पुरम्         | same as above   | same as above                  |
| 3 | पुरा          | पूर्याम् 8.2.76 | पूरिभिः 8.2.76                 |
| 4 | पुरे          | same as above   | पूर्यः 8.2.76                  |
| 5 | पुरः          | same as above   | same as above                  |
| 6 | same as above | पुरोः           | पुराम्                         |
| 7 | पुरि          | same as above   | पूरु 8.2.76, 8.3.16,<br>8.3.59 |

## रेफान्त-स्त्रीलिङ्गः (2) चतुर्

चतुर् (four) is a नित्यबहुवचन-अन्त word.

The declension is like त्रि in feminine. (R.B. त्रि-शब्द in इ. स्त्री)

[LSK] चतस्रः<sup>1/3, 2/3</sup> ।

चतुर् + जस्

चतसृ + अस् 7.2.99 त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ । ~ विभक्तौ

चतस्र् + अस् 7.2.100 अचि र ऋतः । ~ तिसृचतस्रोः

चतस्रः 8.2.66, 8.3.15

चतुर् + भिस्<sup>3/1</sup>

चतसृ + भिस् 7.2.99 त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ । ~ विभक्तौ

चतसृभिः 8.2.66, 8.3.15

[LSK] चतसृणाम्<sup>6/3</sup> ॥

चतुर् + आम्

चतसृ + आम् 7.2.99 त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ । ~ विभक्तौ

Now, there is विप्रतिषेध between 7.2.100 अचि र ऋतः । and 7.1.54 ह्रस्वनद्यापो नुट् । Here,

1.4.2 विप्रतिषेधे परं कार्यम् । is negated by (वा०) नुमचिरतृज्वद्भावेभ्यो नुट् पूर्वविप्रतिषेधेन ।

चतसृ + न् आम् 7.1.54 ह्रस्वनद्यापो नुट् । with (वा०) नुमचिरतृज्वद्भावेभ्यो नुट् पूर्वविप्रतिषेधेन ।

दीर्घ by 6.4.3 नामि । is negated by 6.4.4 न तिसृचतसृ ।

चतसृ + णाम् (वा०) ऋवर्णान्नस्य णत्वं वाच्यम् ।

चतुर् + सुप्<sup>7/3</sup>

चतसृ + सु 7.2.99 त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ । ~ विभक्तौ

चतसृ + षु 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः ।

चतसृषु

Declension of चतुर् (र-स्त्री-2)

|   | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम्                          |
|---|---------|-----------|-----------------------------------|
| 1 |         |           | चतस्रः 7.2.99, 7.2.100            |
| 2 |         |           | चतस्रः 7.2.99, 7.2.100            |
| 3 |         |           | चतसृभिः 7.2.99                    |
| 4 |         |           | चतसृभ्यः 7.2.99                   |
| 5 |         |           | same as above                     |
| 6 |         |           | चतसृणाम् 7.2.99, 7.1.54,<br>6.4.4 |
| 7 |         |           | चतसृषु 7.2.99, 8.3.59             |

It declines like त्रि in feminine.

### म-कारान्त-स्त्रीलिङ्गः (1) किम्

किम् is an interrogative pronoun. In feminine, it takes a feminine suffix टाप् and declines like सर्वा. (Ref. रमा, सर्वा in आ. स्त्री.)

[LSK] का<sup>1/1</sup> ।

किम् + सुँ<sup>1/1</sup>

|               |  |
|---------------|--|
| क + स्        | 7.2.103 किमः कः । ~ विभक्तौ                            |
| क + टाप् + स् | 4.1.4 अजाद्यतष्टाप् । ~ स्त्रियाम्                     |
| का + स्       | 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः ।                            |
| का            | 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्वपृक्तं हल् । ~ लोपः |

Up to 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः । is the common process among all विभक्तis. Once the अङ्ग becomes आ-ending, it declines like सर्वा.

[LSK] के<sup>1/2</sup> ।

किम् + औ<sup>1/2</sup>

|         |                          |
|---------|--------------------------|
| का + औ  | After the common process |
| का + शी | 7.1.18 औङ् आपः । ~ शी    |
| के      | 6.1.87 आद्गुणः ।         |

[LSK] काः<sup>1/3</sup> ।

किम् + जस्<sup>1/3</sup>

|          |   |
|----------|---|
| का + अस् | After the common process  |
| कास्     | 6.1.102 प्रथमयोः पूर्वसवर्णः । is negated by 6.1.105 दीर्घाज्जसि च ।<br>Finally 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः । |
| काः      | 8.2.66, 8.3.15  |

[LSK] सर्वावत्<sup>0</sup> ॥

किम् + अम्<sup>2/1</sup>

|          |                               |
|----------|-------------------------------|
| का + अम् | After the common process      |
| काम्     | 6.1.107 अमि पूर्वः । ~ दीर्घः |

|                              |   |
|------------------------------|---|
| किम् + शस् <sup>2/3</sup>    |   |
| का + अस्                     | After the common process                        |
| कास्                         | 6.1.102 प्रथमयोः पूर्वसवर्णः ।                  |
| काः                          | 8.2.66, 8.3.15                                  |
| किम् + टा <sup>3/1</sup>     |   |
| का + आ                       | After the common process                        |
| क् ए + आ                     | 7.3.105 आङि चापः । ~ एत्                        |
| क् अय् + आ                   | 6.1.78 एचोऽयवायावः । ~ अचि                      |
| कया                          |   |
| किम् + भ्याम् <sup>3/2</sup> |   |
| का + भ्याम्                  | After the common process                        |
| काभ्याम्                     |   |
| किम् + डे <sup>4/1</sup>     |   |
| का + ए                       | After the common process                        |
| का + स्याट् + ए              | 7.3.114 सर्वनाम्नः स्याड्ढस्वश्च । ~ आपः डित्तः |
| क + स्या + ए                 | 7.3.114 सर्वनाम्नः स्याड्ढस्वश्च । ~ आपः डित्तः |
| क + स्यै                     | 6.1.88 वृद्धिरेचि । ~ आत् संहितायाम्            |
| कस्यै                        |   |
| किम् + ङसिं <sup>5/1</sup>   |   |
| का + अस्                     | After the common process                        |
| का + स्याट् + अस्            | 7.3.114 सर्वनाम्नः स्याड्ढस्वश्च । ~ आपः डित्तः |
| क + स्या + अस्               | 7.3.114 सर्वनाम्नः स्याड्ढस्वश्च । ~ आपः डित्तः |
| क + स्यास्                   | 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः ।                     |
| कस्याः                       | 8.2.66, 8.3.15                                  |
| किम् + ओस् <sup>6/2</sup>    |   |
| का + ओस्                     | After the common process                        |
| क् ए + ओस्                   | 7.3.105 आङि चापः । ~ एत्                        |
| क् अय् + ओस्                 | 6.1.78 एचोऽयवायावः । ~ अचि                      |
| कयोः                         | 8.2.66, 8.3.15                                  |

किम् + आम्<sup>6/3</sup>

का + आम् After the common process

का + स् आम् 7.1.52 आमि सर्वनाम्नः सुट् । ~ आत्

कासाम्

किम् + सुप्<sup>7/3</sup>

का + सु After the common process

कासु

### Declension of किम् (म्-स्त्री-1)

|   | एकवचनम्       | द्विवचनम्     | बहुवचनम्      |
|---|---------------|---------------|---------------|
| 1 | का            | के            | काः           |
| 5 | /             |               |               |
| 2 | काम्          | same as above | काः           |
| 3 | कया           | काभ्याम्      | काभिः         |
| 4 | कस्यै         | same as above | काभ्यः        |
| 5 | कस्याः        | same as above | same as above |
| 6 | same as above | कयोः          | कासाम्        |
| 7 | कस्याम्       | same as above | कासु          |

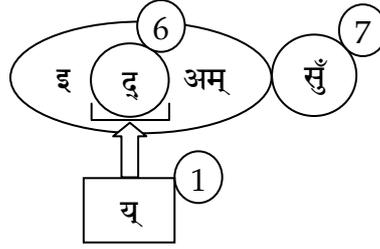
After making the अङ्ग आवन्त, the entire declension is like सर्वा.

म-कारान्त-स्त्रीलिङ्गः (2) इदम्

इदम् (this) is सर्वनाम.

[विधिसूत्रम्] 7.2.110 यः सौ । ~ इदमः दः

When सुँ follows, द् of इदम् is replaced by य्.



यः 1/1 सौ 7/1 । ~ इदमः 6/1 दः 6/1

2 words in the सूत्र; 2 word as अनुवृत्ति

- यः 1/1 – This is आदेश. The अ after य् is उच्चारणार्थ.
- सौ 7/1 – प्रातिपदिक is सुँ in परसप्तमी.
- इदमः 6/1 – From 7.2.108 इदमो मः ।; in सम्बन्धे षष्ठी to दः.
- दः 6/1 – From 7.2.109 दश्च ।; प्रातिपदिक is द्; in स्थानेयोगा षष्ठी.

[LSK] इदमः 6/1 दः 6/1 यः 1/1 ।

य् is the substitute in the place of द् of इदम् when सुँ follows.

[LSK] इयम्<sup>1/1</sup> ।

इदम् + सुँ<sup>1/1</sup>

इदम् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्वपृक्तं हल् । ~ लोपः

इदम् 7.2.108 इदमो मः । ~ विभक्तौ (अपवाद of त्यदादीनामः)

इयम् 7.2.110 यः सौ । ~ इदमः दः

This sūtra is applicable only to इदम् in feminine. How this is possible without mentioning स्त्री in the sūtra is analyzed next.

The सूत्रक्रम analysis of इदम् section (7.1.108 to 7.2.113)

| सूत्रम्                | स्थानी            | आदेशः | निमित्तम्  | उदाहरणम्   |
|------------------------|-------------------|-------|------------|--|
| 7.2.108 इदमो मः ।      | इदमः अलोऽन्त्यस्य | मः    | सौ         | अयम् <sup>m/1/1</sup> , इयम् <sup>f/1/1</sup>  |
| 7.2.109 दश्च ।         | इदमः दः           | मः    | विभक्तौ    | इमौ <sup>m/1/2, 2/2</sup> , इमे <sup>m/1/3</sup> , इमान् <sup>m/1/3</sup> ,<br>इमे <sup>f/1/2, 2/2</sup> , इमाः <sup>f/1/3, 2/3</sup> ,<br>इमे <sup>n/1/2, 2/2</sup> , इमानि <sup>n/1/3, 2/3</sup> |
| 7.2.110 यः सौ ।        | इदमः दः           | यः    | सौ         | इयम् <sup>f/1/1</sup>  |
| 7.2.111 इदोऽय् पुंसि । | इदमः इदः          | अय्   | सौ (पुंसि) | अयम् <sup>m/1/1</sup>  |
| 7.2.112 अनाप्यकः ।     | इदमः इदः          | अन्   | आपि        | अनेन, अनया, अनयोः  |
| 7.2.113 हलि लोपः ।     | इदमः इदः          | लोपः  | हलि आपि    | आभ्याम्, अस्मै, एभिः, एभ्यः, अस्यै, etc.   |

In पुल्लिङ्ग 1/1, the last letter is modified by 7.2.108 and इद् is modified by 7.2.111, which is अपवाद to 7.2.110.

In स्त्रीलिङ्ग 1/1, the last letter is modified by 7.2.108 and द् is modified by 7.2.110.

In नपुंसकलिङ्ग 1/1 and 2/1, सुँ and अम् get लुक्-elision by 7.1.23 स्वमोर्नपुंसकात् । ~ लुक्. By 1.1.63 न लुमताऽङ्गस्य ।, 1.1.62 प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम् । is negated. Thus none of these sūtras above are applicable. The forms remain as इदम्.

The rest of 1<sup>st</sup> and 2<sup>nd</sup> cases in all लिङ्गs, first 7.2.102 त्यदादीनामः । is applied then 7.2.109 is applied.

In all लिङ्गs in अजादि 3/1 to 7/3, after 7.2.102 त्यदादीनामः ।, 7.2.112 is applied.

In all लिङ्गs in हलादि 3/1 to 7/3, after 7.2.102 त्यदादीनामः ।, 7.2.113 is applied.

Thus all the forms of इदम् in all लिङ्गs are covered by these sūtras in this section.

The next lines are explanations for the रूपसिद्धि in 1/2 onwards.

[LSK] त्यदादि-अत्वम्<sup>1/1</sup> (7.2.102) । पररूपत्वम्<sup>1/1</sup> (6.1.97) । टाप्<sup>1/1</sup> (4.1.4) ।

Up to 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः । is the common process among any विभक्ति from 1/2 to 7/3. Once आ-ending अङ्ग is made, it declines like सर्वा.

इदम् + औ<sup>1/2</sup>

इद अ + औ 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

इद + औ 6.1.97 अतो गुणे । ~ पररूपम्

इद + टाप् + औ 4.1.4 अजाद्यतष्टाप् । ~ स्त्रियाम्

इदा + औ 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः ।

[LSK] “दश्च” (7.2.109) इति<sup>0</sup> मः<sup>1/1</sup> । इमे<sup>1/2</sup> ।

इदा + शी 7.1.18 औङ् आपः । ~ शी

इमा + ई 7.2.109 दश्च । ~ इदमः मः

इमे 6.1.87 आद्गुणः ।

[LSK] इमाः<sup>1/3</sup> ।

इदम् + जस्

इदा + अस् After the common process

इमा + अस् 7.2.109 दश्च । ~ इदमः मः

इमास् 6.1.102 प्रथमयोः पूर्वसवर्णः । is negated by 6.1.105 दीर्घाज्जसि च ।

Finally 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः ।

इमाः 8.2.66, 8.3.15

[LSK] इमाम्<sup>2/1</sup> ।

इदम् + अम्

इदा + अम् After the common process

इमा + अम् 7.2.109 दश्च । ~ इदमः मः

इमाम् 6.1.107 अमि पूर्वः । ~ दीर्घः

[LSK] इमाः<sup>2/3</sup> ।

इदम् + शस्

इदा + अस् After the common process

इमा + अस् 7.2.109 दश्च । ~ इदमः मः

इमास् 6.1.102 प्रथमयोः पूर्वसवर्णः ।

इमाः 8.2.66, 8.3.15

[LSK] अनया<sup>3/1</sup> ।

इदम् + टा

इदा + आ After the common process

अन् आ + आ 7.2.112 अनाप्यकः । ~ इदमः इदः

अन् ए + आ 7.3.105 आङि चापः । ~ एत्

अन् अय् + आ 6.1.78 एचोऽयवायावः । ~ अचि

[LSK] हलि लोपः (7.2.113) । आभ्याम्<sup>3/2</sup> । आभिः<sup>3/3</sup> ।

इदम् + भ्याम्

इदा + भ्याम् After the common process

आ + भ्याम् 7.2.113 हलि लोपः । ~ इदमः इदः

आभ्याम्

[LSK] अस्यै<sup>4/1</sup> ।

इदम् + डे

इदा + ए After the common process

इदा + स्याट् + ए 7.3.114 सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च । ~ आपः डितः

इद् + स्या + ए 7.3.114 सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च । ~ आपः डितः

इद् + स्यै 6.1.88 वृद्धिरेचि । ~ आत् संहितायाम्

अ + स्यै 7.2.113 हलि लोपः । ~ इदमः इदः

[LSK] अस्याः<sup>5/1,6/1</sup> ।

इदम् + डसिँ

इदा + अस् After the common process

इदा + स्याट् + अस् 7.3.114 सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च । ~ आपः डितः

इद् + स्या + अस् 7.3.114 सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च । ~ आपः डितः

इद् + स्यास् 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः ।

|                                  |   |
|----------------------------------|---|
| अ + स्यास्                       | 7.2.113 हलि लोपः । ~ इदमः इदः                 |
| अस्याः                           | 8.2.66, 8.3.15                                |
| [LSK] अनयोः <sup>6/2,7/2</sup> । |   |
| इदम् + ओस्                       |   |
| इदा + ओस्                        | After the common process                      |
| अन् आ + ओस्                      | 7.2.112 अनाप्यकः । ~ इदमः इदः                 |
| अन् ए + ओस्                      | 7.3.105 आङि चापः । ~ एत्                      |
| अन् अय् + ओस्                    | 6.1.78 एचोऽयवायावः । ~ अचि                    |
| अनयोः                            | 8.2.66, 8.3.15                                |
| [LSK] आसाम् <sup>6/3</sup> ।     |   |
| इदम् + आम्                       |   |
| इदा + आम्                        | After the common process                      |
| इदा + स् आम्                     | 7.1.52 आमि सर्वनाम्नः सुट् ।                  |
| इदा + साम्                       | 6.4.3 नामि । ~ दीर्घः (पर्जन्यवत्)            |
| आ + साम्                         | 7.2.113 हलि लोपः । ~ इदमः इदः                 |
| [LSK] अस्याम् <sup>7/1</sup> ।   |   |
| इदम् + ङि                        |   |
| इदा + इ                          | After the common process                      |
| इदा + आम्                        | 7.3.116 डेराम्नाद्याम्नीभ्यः ।                |
| इदा + स्याट् + आम्               | 7.3.114 सर्वनाम्नः स्याड्ढस्वश्च । ~ आपः ङितः |
| इद् + स्या + आम्                 | 7.3.114 सर्वनाम्नः स्याड्ढस्वश्च । ~ आपः ङितः |
| इद् + स्याम्                     | 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः । ~ संहितायाम्      |
| अ + स्याम्                       | 7.2.113 हलि लोपः । ~ इदमः इदः                 |
| [LSK] आसु <sup>7/2</sup> ।       |   |
| इदम् + सुप्                      |   |
| इदा + सु                         | After the common process                      |
| आ + सु                           | 7.2.113 हलि लोपः । ~ इदमः इदः                 |

Summary of declension of इदम् in feminine (म्-स्त्री-2)

|   | एकवचनम्                                    | द्विवचनम्                      | बहुवचनम्              |
|---|--|--------------------------------|-----------------------|
| 1 | इयम् 7.2.108, 7.2.110                      | इमे 7.1.18, 7.2.109, 6.1.87    | इमाः 7.2.109, 6.1.101 |
| S |  |                                |                       |
| 2 | इमाम् 7.2.109, 6.1.107                     | same as above                  | इमाः 7.2.109, 6.1.102 |
| 3 | अनया 7.2.112, 7.3.105, 6.1.87              | आभ्याम् 7.2.113                | आभिः 7.2.113          |
| 4 | अस्यै 7.3.114, 6.1.88, 7.2.113             | same as above                  | आभ्यः 7.2.113         |
| 5 | अस्याः 7.3.114, 6.1.101, 7.2.113           | same as above                  | same as above         |
| 6 | same as above                              | अनयोः 7.2.112, 7.3.105, 6.1.78 | आसाम् 7.1.52, 7.2.113 |
| 7 | अस्याम् 7.3.116, 7.3.114, 6.1.101, 7.2.113 | same as above                  | आसु 7.2.113           |

अन्वादेश of इदम् in feminine (म्-स्त्री-2)

|   | एकवचनम्       | द्विवचनम्     | बहुवचनम्      |
|---|---------------|---------------|---------------|
| 1 | इयम्          | इमे           | इमाः          |
| S |               |               |               |
| 2 | एनाम्         | एने           | एनाः          |
| 3 | एनया          | आभ्याम्       | आभिः          |
| 4 | अस्यै         | same as above | आभ्यः         |
| 5 | अस्याः        | same as above | same as above |
| 6 | same as above | एनयोः         | आसाम्         |
| 7 | अस्याम्       | same as above | आसु           |

In the shaded area, इदम्/एतद् is replaced by एन by 2.4.34 द्वितीयाटौस्वेनः ।.

After टप् is suffixed, it declines like आ-ending सर्वनाम.

The rest declines like इदम् in feminine.

द-कारान्त-स्त्रीलिङ्गः (1) त्यद्

त्यद् (that) is the first member of त्यदादिगण in सर्वादिगण.

[LSK] त्यदादि-अत्वम्<sup>1/1</sup> । टाप्<sup>1/1</sup> । स्या<sup>1/1</sup> ।

त्यद् + सुँ<sup>1/1</sup>

त्य अ + स् 7.2.102 त्यदादीनामः ।

त्य + स् 6.1.97 अतो गुणे ।

त्य + टाप् + स् 4.1.4 अजाद्यतष्टाप् । ~ स्त्रियाम्

त्या + स् 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः ।

स्या + स् 7.2.106 तदोः सः सावनन्त्ययोः । ~ त्यदादीनाम्

स्या 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

[LSK] त्ये<sup>1/2</sup> । त्याः<sup>1/3</sup> ॥

Declension of त्यद् (दृ-स्त्री-1 #1)

दकारान्त-सर्वनाम-त्यदादिगण-शब्दः

|   | एकवचनम्              | द्विवचनम्     | बहुवचनम्      |
|---|----------------------|---------------|---------------|
| 1 | स्या 7.2.106, 6.1.68 | त्ये          | त्याः         |
| 5 | /                    |               |               |
| 2 | त्याम्               | same as above | त्याः         |
| 3 | त्यया                | त्याभ्याम्    | त्याभिः       |
| 4 | त्यस्यै              | same as above | त्याभ्यः      |
| 5 | त्यस्याः             | same as above | same as above |
| 6 | same as above        | त्ययोः        | त्यासाम्      |
| 7 | त्यस्याम्            | same as above | त्यासु        |

The declension is like सर्वा.

[LSK] एवम्<sup>0</sup> तद् एतद् ॥

तद् and एतद् decline in the same manner.

तद् + सुँ<sup>1/1</sup>

त अ + स् 7.2.102 तदादीनामः ।

त + स् 6.1.97 अतो गुणे ।

त + टाप् + स् 4.1.4 अजाद्यतष्टाप् । ~ स्त्रियाम्

ता + स् 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः ।

सा + स् 7.2.106 तदोः सः सावनन्त्ययोः । ~ तदादीनाम्

सा 6.1.68 हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्वपृक्तं हल् । ~ लोपः

Declension of तद् (द्व-स्त्री-1# 2)

|   | एकवचनम्            | द्विवचनम्     | बहुवचनम्      |
|---|--------------------|---------------|---------------|
| 1 | सा 7.2.106, 6.1.68 | ते            | ताः           |
| S |                    |               |               |
| 2 | ताम्               | same as above | ताः           |
| 3 | तया                | ताभ्याम्      | ताभिः         |
| 4 | तस्यै              | same as above | ताभ्यः        |
| 5 | तस्याः             | same as above | same as above |
| 6 | same as above      | तयोः          | तासाम्        |
| 7 | तस्याम्            | same as above | तासु          |

Declension of एतद् (दृ-स्त्री-1# 3)

|   | एकवचनम्                     | द्विवचनम्     | बहुवचनम्      |
|---|-----------------------------|---------------|---------------|
| 1 | एषा 7.2.106, 6.1.68, 8.3.59 | एते           | एताः          |
| 5 | /                           |               |               |
| 2 | एताम्                       | same as above | एताः          |
| 3 | एतया                        | एताभ्याम्     | एताभिः        |
| 4 | एतस्यै                      | same as above | एताभ्यः       |
| 5 | एतस्याः                     | same as above | same as above |
| 6 | same as above               | एतयोः         | एतासाम्       |
| 7 | एतस्याम्                    | same as above | एतासु         |

अन्वादेश for एतद् is the same as for इदम्.

अन्वादेश of एतद् in feminine (दृ-स्त्री-1# 3)

|   | एकवचनम्       | द्विवचनम्     | बहुवचनम्      |
|---|---------------|---------------|---------------|
| 1 | एषा           | एते           | एताः          |
| 5 | /             |               |               |
| 2 | एनाम्         | एने           | एनाः          |
| 3 | एनया          | एताभ्याम्     | एताभिः        |
| 4 | एतस्यै        | same as above | एताभ्यः       |
| 5 | एतस्याः       | same as above | same as above |
| 6 | same as above | एनयोः         | एतासाम्       |
| 7 | एतस्याम्      | same as above | एतासु         |

In the shaded area, इदम्/एतद् is replaced by एन by 2.4.34 द्वितीयाटौस्वेनः ।.

After टाप् is suffixed, it declines like आ-ending सर्वनाम.

The rest declines like एतद् in feminine.

## च-कारान्त-स्त्रीलिङ्गः (1) वाच्

वाच् (word, speech)

वृच्चं परिभाषणे (2P) to speak

वच् + क्विप् (वा०) क्विब्बचिप्रच्छ्यायतस्तु ।

वाच् (वा०) क्विब्बचिप्रच्छ्यायतस्तु ।

दीर्घ and the absence of संप्रसारण are also taught in the same sūtra.

[LSK] वाक्<sup>1/1</sup>, वाग्<sup>1/1</sup> ।

वाच् + सुँ

वाच् 6.1.68 हल्ब्याब्ब्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

वाक् 8.2.30 चोः कुः । ~ झलि पदस्य अन्ते

वाग् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।

वाक् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ झलाम् चर्

[LSK] वाचौ<sup>1/2</sup> ।

वाच् + औ

[LSK] वाग्भ्याम्<sup>3/2</sup> ।

वाच् + भ्याम्<sup>3/2</sup>

वाक् + भ्याम् 8.2.30 चोः कुः । ~ झलि पदस्य अन्ते

वाग् + भ्याम् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।

[LSK] वाक्षु<sup>7/3</sup> ॥

वाच् + सु<sup>7/3</sup>

वाक् + सु 8.2.30 चोः कुः । ~ झलि पदस्य अन्ते

वाग् + सु 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।

वाग् + षु 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः ।

वाक् + षु 8.4.55 खरि च । ~ झलां चर्

वाक्षु

## Declension of पुर (च्-स्त्री-1)

|   | एकवचनम्                             | द्विवचनम्                 | बहुवचनम्                                 |
|---|-------------------------------------|---------------------------|--|
| 1 | वाक्/वाग्<br>8.2.30, 8.2.39, 8.4.56 | वाचौ                      | वाचः                                     |
| S | same as above                       | same as above             | same as above                            |
| 2 | वाचम्                               | same as above             | same as above                            |
| 3 | वाचा                                | वाग्भ्याम् 8.2.30, 8.2.39 | वाभिः 8.2.30, 8.2.39                     |
| 4 | वाचे                                | same as above             | वाग्भ्यः 8.2.30, 8.2.39                  |
| 5 | वाचः                                | same as above             | same as above                            |
| 6 | same as above                       | वाचोः                     | वाचाम्                                   |
| 7 | वाचि                                | same as above             | वाक्षु 8.2.30, 8.2.39,<br>8.3.59, 8.4.55 |

## प-कारान्त-स्त्रीलिङ्गः (1) अप्

अप् (water)

[LSK] अप्-शब्दः <sup>1/1</sup> नित्यम् <sup>0</sup> बहुवचन-अन्तः <sup>1/1</sup> ।

The word अप् always ends with suffix termed बहुवचन.

[LSK] “अप्तृन्” (6.4.11) इति <sup>0</sup> दीर्घः <sup>1/1</sup> । आपः <sup>1/3</sup> ।

अप् + जस्

आप् + अस् 6.4.11 अप्-तृन्तृच्चस्वसृनसृनेष्टृत्वष्टृक्षतृहोतृपोतृप्रशास्तृणाम् । ~ दीर्घः

आपः 8.2.66, 8.3.15

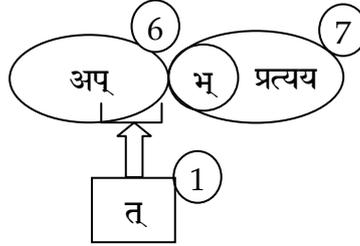
[LSK] अपः <sup>2/3</sup> ।

अप् + शस्

अपः 8.2.66, 8.3.15

## [विधिसूत्रम्] 7.4.48 अपो भि । ~ तः अङ्गस्य

When भ्-beginning suffix follows, the last letter of अप् is replaced by त्.



अपः <sup>6/1</sup> भि <sup>7/1</sup> । ~ तः <sup>1/1</sup> अङ्गस्य <sup>6/1</sup>

2 words in the सूत्र; 2 words as अनुवृत्ति

- अपः 6/1 – प्रातिपदिक is अप्; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- भि 7/1 – प्रातिपदिक is भ्; in परसप्तमी.
- तः 1/1 – From 7.2.47 अच उपसर्गात् तः। This is आदेश. The अ after त् is उच्चारणार्थ. 1.1.52 अलोऽन्त्यस्य। is required.
- अङ्गस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 6.4.1 अङ्गस्य ।. By the definition of अङ्ग 1.4.13 यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्।, a 7<sup>th</sup> case-ending word “प्रत्यये” is understood. By तदादिविधि with भि 7/1, it results in “भकारादि-प्रत्यये”.

[LSK] अपः<sup>6/1</sup> तकारः<sup>1/1</sup> भ्-आदौ<sup>7/1</sup> प्रत्यये<sup>7/1</sup> ।

त् is the substitute in the place of the last letter of अप् when भ्-beginning suffix follows.

[LSK] अद्भिः<sup>3/3</sup> । अद्भ्यः<sup>4/3</sup> । अद्भ्यः<sup>5/3</sup> ।

अप् + भिस्

अत् + भिस् 7.4.48 अपो भि । ~ तः अङ्गस्य

अद् + भिस् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।

[LSK] अपाम्<sup>6/3</sup> ।

अप् + आम्

[LSK] अप्सु<sup>7/3</sup> ।

अप् + सुप्

अब् + सु 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।

अप् + सु 8.4.55 खरि च । ~ झलां चर्

(वा०) चयो द्वितीयाः शरि पौष्कलसादेरिति वाच्यम् । which belongs to 8.4.48, according to काशिका, does not apply because of असिद्धत्व of 8.4.55 खरि च ।

### Declension of अप् (प-स्त्री-1)

|   | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम्       |
|---|---------|-----------|----------------|
| 1 |         |           | आपः 6.4.11     |
| 2 |         |           | अपः            |
| 3 |         |           | अद्भिः 7.4.48  |
| 4 |         |           | अद्भ्यः 7.4.48 |
| 5 |         |           | same as above  |
| 6 |         |           | अपाम्          |
| 7 |         |           | अप्सु          |

## श-कारान्त-स्त्रीलिङ्गः (1) दिश

दिश (direction) is नित्यस्त्रीलिङ्गशब्द. Since it is क्तिन्-प्रत्यय-ending, कुत्व by 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः। takes place at the end of पद.

दिशँ अतिसर्जने (6U) to point out, to show

दिश + क्तिन् 3.2.59 ऋत्विग्दधृक्स्त्रिग्दिग्गुष्णिग् अञ्चयुजिक्रुञ्चां च । ~ क्तिन्

दिश 6.1.67 वेरपृक्तस्य । ~ लोपः

[LSK] दिक्<sup>1/1</sup>, दिग्<sup>1/1</sup> ।

दिश + सुँ

दिश 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः

दिष् 8.2.36 व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

दिङ् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।

दिग् 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः । ~ पदस्य अन्ते

दिक् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ झलाम् चर्

[LSK] दिशै<sup>1/2</sup> । दिशः<sup>1/3</sup> ।

दिश + औ

[LSK] दिग्भ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

दिश + भ्याम्

दिष् + भ्याम् 8.2.36 व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

दिङ् + भ्याम् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।

दिग् + भ्याम् 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः । ~ पदस्य अन्ते

Declension of दिश (श-स्त्री-1)

|   | एकवचनम्                                     | द्विवचनम्                            | बहुवचनम्   |
|---|---|--------------------------------------|--|
| 1 | दिक्/दिग् 8.2.36, 8.2.39,<br>8.2.62, 8.4.56 | दिशौ                                 | दिशः   |
| S | same as above                               | same as above                        | same as above                                    |
| 2 | दिशम्                                       | same as above                        | same as above                                    |
| 3 | दिशा  | दिग्भ्याम् 8.2.36, 8.2.39,<br>8.2.62 | दिग्भिः 8.2.36, 8.2.39,<br>8.2.62                |
| 4 | दिशे  | same as above                        | दिग्भ्यः 8.2.36, 8.2.39,<br>8.2.62               |
| 5 | दिशः  | same as above                        | same as above                                    |
| 6 | same as above                               | दिशोः                                | दिशाम्   |
| 7 | दिशि  | same as above                        | दिक्षु 8.2.36, 8.2.39,<br>8.2.62, 8.3.59, 8.4.55 |

## श-कारान्त-स्त्रीलिङ्गः (2) दृश्

दृश् in the sense of eye is feminine word. The प्रातिपदिक is derived with क्तिप्. The धातु दृश् is considered to be क्तिन्-प्रत्यय, the धातु which can take क्तिन्, because क्तिन् is enjoined to दृश्-धातु by 3.2.60 त्यदादिषु दृशोऽनालोचने कञ्च । ~ क्तिन्. Thus, even though दृश् is क्तिवन्त, कुत्व by 8.2.62 क्तिन्प्रत्ययस्य कुः। takes place at the end of पद.

दृशिर् प्रेक्षणे (1P) to see

दृश् + क्तिप् 3.2.76 क्तिप् च ।

दृश् 6.1.67 वेरपृक्तस्य । ~ लोपः

[LSK] “त्यदादिषु” (3.2.60) इति<sup>0</sup> दृशेः<sup>5/1</sup> क्तिन्-विधानात्<sup>5/1</sup> अन्यत्र<sup>0</sup> अपि<sup>0</sup> कुत्वम्<sup>1/1</sup> ।

Because of the injunction of क्तिन् after दृश्, कुत्व takes place in a situation other than क्तिन्-अन्त.

Therefore, the entire declension is like दिश्.

[LSK] दृक्<sup>1/1</sup>, दृग्<sup>1/1</sup> ।

दृश् + सुँ

दृश् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्वपृक्तं हल् । ~ लोपः

दृष् 8.2.36 व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

दृड् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।

दृग् 8.2.62 क्तिन्प्रत्ययस्य कुः । ~ पदस्य अन्ते

दृक् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ झलाम् चर्

[LSK] दृशै<sup>1/2</sup> । दृशः<sup>1/3</sup> ।

दृश् + औ

[LSK] दृग्भ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

दृश् + भ्याम्

दृष् + भ्याम् 8.2.36 व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

दृड् + भ्याम् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।

दृग् + भ्याम् 8.2.62 क्तिन्प्रत्ययस्य कुः । ~ पदस्य अन्ते

## Declension of दृश् (श-स्त्री-2)

|   | एकवचनम्                                     | द्विवचनम्                            | बहुवचनम्   |
|---|---|--------------------------------------|--|
| 1 | दृक्/दृग् 8.2.36, 8.2.39,<br>8.2.62, 8.4.56 | दृशौ                                 | दृशः   |
| S | same as above                               | same as above                        | same as above                                    |
| 2 | दृशम्                                       | same as above                        | same as above                                    |
| 3 | दृशा  | दृग्भ्याम् 8.2.36, 8.2.39,<br>8.2.62 | दृग्भिः 8.2.36, 8.2.39,<br>8.2.62                |
| 4 | दृशे  | same as above                        | दृग्भ्यः 8.2.36, 8.2.39,<br>8.2.62               |
| 5 | दृशः  | same as above                        | same as above                                    |
| 6 | same as above                               | दृशोः                                | दृशाम्   |
| 7 | दृशि  | same as above                        | दृक्षु 8.2.36, 8.2.39,<br>8.2.62, 8.3.59, 8.4.55 |

The entire declension is like दिश्.

**ष-कारान्त-स्त्रीलिङ्गः (1) त्विष्**

त्विष् (lustre) is नित्यस्त्रीलिङ्गशब्द. The entire declension is like रत्नमुष् in masculine.

त्विष् दीप्तौ (1U) to shine

त्विष् + क्विप् 3.2.76 क्विप् च ।

त्विष् 6.1.67 वेरपृक्तस्य । ~ लोपः

[LSK] त्विट्<sup>1/1</sup>, त्विङ्<sup>1/1</sup> ।

त्विष् + सुँ

त्विष् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्वपृक्तं हल् । ~ लोपः

त्विङ् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।

त्विट् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ झलाम् चर्

[LSK] त्विषौ<sup>1/2</sup> । त्विषः<sup>1/3</sup> ।

त्विष् + औ

[LSK] त्विङ्भ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

त्विष् + भ्याम्

त्विङ् + भ्याम् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।

**Declension of त्विष् (ष-स्त्री-2)**

|   | एकवचनम्                      | द्विवचनम्           | बहुवचनम्                                    |
|---|------------------------------|---------------------|---|
| 1 | त्विट्/त्विङ् 8.2.39, 8.4.56 | त्विषौ              | त्विषः                                      |
| S | same as above                | same as above       | same as above                               |
| 2 | त्विषाम्                     | same as above       | same as above                               |
| 3 | त्विषा                       | त्विङ्भ्याम् 8.2.39 | त्विङ्भिः 8.2.39                            |
| 4 | त्विषे                       | same as above       | त्विङ्भ्यः 8.2.39                           |
| 5 | त्विषः                       | same as above       | same as above                               |
| 6 | same as above                | त्विषोः             | त्विषाम्                                    |
| 7 | त्विषि                       | same as above       | त्विट्सु/त्विङ्सु<br>8.2.39, 8.3.29, 8.4.55 |

The entire declension is like रत्नमुष् in masculine.

ष-कारान्त-स्त्रीलिङ्गः (2) सजुष्

सजुष् (friend)

सह जुषते सेवते इति सजूः ।

जुष् प्रीतिसेवनयोः (6A) to like, to enjoy

सह + जुष् + क्तिप् 3.2.76 क्तिप् च ।

सह + जुष् 6.1.67 वेरपृक्तस्य । ~ लोपः

स + जुष् 6.3.78 सहस्य सः संज्ञायाम् ।

[LSK] “ससजुषो रूँः” इति<sup>0</sup> रूँत्वम्<sup>1/1</sup> । सजूः<sup>1/1</sup> ।

सजुष् + सुँ

सजुष् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्वपृक्तं हल् । ~ लोपः

सजुरूँ 8.2.66 ससजुषो रूँः । ~ पदस्य

सजूर् 8.2.76 वोरूपधाया दीर्घ इकः । ~ धातोः पदस्य अन्ते

सजूः 8.3.15 खरवसानयोर्विसर्जनीयः । ~ रः पदस्य

[LSK] सजुषौ<sup>1/2</sup> ।

सजुष् + औ

[LSK] सजूर्भ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

सजुष् + भ्याम्

सजुरूँ + भ्याम् 8.2.66 ससजुषो रूँः । ~ पदस्य

सजूर् + भ्याम् 8.2.76 वोरूपधाया दीर्घ इकः । ~ धातोः पदस्य अन्ते

सजूर्भ्याम्

सजुष् + सुप्<sup>7/3</sup>

सजुरूँ + सु 8.2.66 ससजुषो रूँः । ~ पदस्य

सजूर् + सु 8.2.76 वोरूपधाया दीर्घ इकः । ~ धातोः पदस्य अन्ते

सजूः + सु 8.3.15 खरवसानयोर्विसर्जनीयः । ~ रः पदस्य

सजूः + सु 8.3.36 वा शरि । ~ विसर्जनीयस्य सः

सजूः + षु 8.3.59 आदेश-प्रत्यययोः । ~ इणकोः सः मूर्धन्यः with 8.3.58 नुम्विसर्जनीयशर्व्ववायेऽपि ।

विसर्ग-अभाव-पक्षे

सजूस् + सु 8.3.36 वा शरि । ~ विसर्जनीयस्य सः

सजूस्+ षु 8.3.59 आदेश-प्रत्यययोः । ~ इण्कोः सः मूर्धन्यः with 8.3.58 नुम्बिसर्जनीयशर्व्यवायेऽपि । ~ मूर्धन्यः

सजूष्+ षु 8.4.41 घृना घृः । ~ स्तोः

Declension of सजूष् (ष्-स्त्री-1)

|   | एकवचनम्                                | द्विवचनम्                  | बहुवचनम्  |
|---|--|----------------------------|---|
| 1 | सजूः 6.1.68, 8.2.66,<br>8.2.76, 8.3.15 | सजूषौ                      | सजूषः   |
| S | same as above                          | same as above              | same as above   |
| 2 | सजूषाम्                                | same as above              | same as above   |
| 3 | सजूषा                                  | सजूर्भ्याम् 8.2.66, 8.2.76 | सजूर्भिः 8.2.66, 8.2.76                                     |
| 4 | सजूषे                                  | same as above              | सजूर्भ्यः 8.2.66, 8.2.76                                    |
| 5 | सजूषः                                  | same as above              | same as above   |
| 6 | same as above                          | सजूषोः                     | सजूषाम्   |
| 7 | सजूषि                                  | same as above              | सजूःषु/सजूष्पु<br>8.2.66, 8.2.76, 8.3.36,<br>8.3.59, 8.4.41 |

ष-कारान्त-स्त्रीलिङ्गः (3) आशिष्

आशिष् (a wish, blessing)

शासुँ अनुशिष्टौ (2P) to teach

आङ् + शास् + क्तिप् 3.2.76 क्तिप् च ।

आ + शिस् (वा०) आशास क्वावुपसङ्ख्यानम् ।

आ + शिष् 8.3.58 शासिवसिघसीनां च ।

आशिष्

[LSK] आशीः<sup>1/1</sup> ।

आशिष् + सुँ

आशिष् 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्वपृक्तं हल् । ~ लोपः

आशिर्ँ 8.2.66 ससजुषो रँः । ~ पदस्य

मूर्धन्य by 8.3.58 शासिवसिघसीनां च । is असिद्ध from the view of 8.2.66 ससजुषो रँः ।

आशीर् 8.2.76 वोरूपधाया दीर्घ इकः । ~ धातोः पदस्य अन्ते

आशीः 8.3.15 खरवसानयोर्विसर्जनीयः । ~ रः पदस्य

[LSK] आशिषौ<sup>1/2</sup> ।

आशिष् + औ

[LSK] आशीर्भ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

आशिष् + भ्याम्

आशिर्ँ + भ्याम् 8.2.66 ससजुषो रँः । ~ पदस्य

आशीर् + भ्याम् 8.2.76 वोरूपधाया दीर्घ इकः । ~ धातोः पदस्य अन्ते

आशीर्भ्याम्

आशिष् + सुप्<sup>7/3</sup>

आशिर्ँ + सु 8.2.66 सआशिषो रँः । ~ पदस्य

मूर्धन्य by 8.3.58 शासिवसिघसीनां च । is असिद्ध from the view of 8.2.66 ससजुषो रँः ।

आशीर् + सु 8.2.76 वोरूपधाया दीर्घ इकः । ~ धातोः पदस्य अन्ते

आशीः + सु 8.3.15 खरवसानयोर्विसर्जनीयः । ~ रः पदस्य

आशीः + सु 8.3.36 वा शरि । ~ विसर्जनीयस्य सः

आशीः+ षु 8.3.59 आदेश-प्रत्यययोः । ~ इण्कोः सः मूर्धन्यः with 8.3.58 नुम्विसर्जनीयशर्च्यवायेऽपि ।

विसर्ग-अभाव-पक्षे

आशीस् + सु 8.3.36 वा शरि । ~ विसर्जनीयस्य सः

आशीस्+ षु 8.3.59 आदेश-प्रत्यययोः । ~ इण्कोः सः मूर्धन्यः with 8.3.58 नुम्विसर्जनीयशर्च्यवायेऽपि । ~ मूर्धन्यः

आशीष्+ षु 8.4.41 घृना घृः । ~ स्तोः

### Declension of आशिष् (ष-स्त्री-3)

|   | एकवचनम्                                | द्विवचनम्                | बहुवचनम्  |
|---|--|--------------------------|---|
| 1 | आशीः 6.1.68, 8.2.66,<br>8.2.76, 8.3.15 | आशिषौ                    | आशिषः   |
| S | same as above                          | same as above            | same as above   |
| 2 | आशिषम्                                 | same as above            | same as above   |
| 3 | आशिषा                                  | आशीभ्याम् 8.2.66, 8.2.76 | आशीभिः 8.2.66, 8.2.76                                       |
| 4 | आशिषे                                  | same as above            | आशीभ्यः 8.2.66, 8.2.76                                      |
| 5 | आशिषः                                  | same as above            | same as above   |
| 6 | same as above                          | आशिषोः                   | आशिषाम्   |
| 7 | आशिषि                                  | same as above            | आशीःषु/आशीष्पु<br>8.2.66, 8.2.76, 8.3.36,<br>8.3.59, 8.4.41 |

The entire declension is like सजुष्.

स-कारान्त-स्त्रीलिङ्गः (1) अदस्[LSK] असौ <sup>1/1</sup> ।

अदस् + सुँ

अद औ + स् 7.2.107 अदस औ सुलोपश्च । ~ सौ

अद औ 7.2.107 अदस औ सुलोपश्च । ~ सौ

अदौ 6.1.88 वृद्धिरेचि ।

असौ 7.2.106 तदोः सः सावनन्त्ययोः ।

Note: The same process as masculine. टाप् does not come because the प्रातिपदिक does not become अ-ending.

[LSK] उत्त्व-मत्वे <sup>1/2</sup> । अम् <sup>1/2</sup> ।

उत्त्व and मत्व by 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः ।.

अदस् + औ

अद अ + औ 7.2.102 त्यदादीनामः ।

अद + औ 6.1.97 अतो गुणे । ~ पररूपम्

अद टाप् + औ 4.1.4 अजाद्यतष्टाप् । ~ स्त्रियाम्

अदा + औ 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः ।

From 1/2 onwards, up to here is the common process.

अदा + शी 7.1.18 औङ आपः । ~ शी

अदे 6.1.87 आद्गुणः ।

अमे 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य

अम् 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य

[LSK] अम् <sup>1/3</sup> ।

अदस् + जस्

अदा + अस् After the common process

अदास् 6.1.102 प्रथमयोः पूर्वसवर्णः । ~ दीर्घः

अदास् 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य

अमूस् 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य

अमूः 8.2.66, 8.3.15

अदस् + अम्<sup>2/1</sup>

अदा + अम् After the common process

अदाम् 6.1.107 अमि पूर्वः । ~ अकः

अमाम् 8.2.80 अदसोऽसेर्दाद्दु दो मः । ~ पदस्य

अमूम् 8.2.80 अदसोऽसेर्दाद्दु दो मः । ~ पदस्य

अदस् + शस्<sup>2/3</sup>

अदा + अस् After the common process

अदास् 6.1.102 प्रथमयोः पूर्वसवर्णः । ~ दीर्घः

अमास् 8.2.80 अदसोऽसेर्दाद्दु दो मः । ~ पदस्य

अमूस् 8.2.80 अदसोऽसेर्दाद्दु दो मः । ~ पदस्य

अमूः 8.2.66, 8.3.15

[LSK] अमुया<sup>3/1</sup> ।

अदस् + टा<sup>3/1</sup>

अदा + आ After the common process

अदे + आ 7.3.105 आङि चापः ।

अदय् + आ 6.1.78 एचोऽयवायावः ।

अमय् + आ 8.2.80 अदसोऽसेर्दाद्दु दो मः । ~ पदस्य

अमुय् + आ 8.2.80 अदसोऽसेर्दाद्दु दो मः । ~ पदस्य

अमुया

[LSK] अमूभ्याम्<sup>3/2, 4/2, 5/2</sup> ।

अदस् + भ्याम्

अदा + भ्याम् After the common process

अमा+ भ्याम् 8.2.80 अदसोऽसेर्दाद्दु दो मः । ~ पदस्य

अमू+ भ्याम् 8.2.80 अदसोऽसेर्दाद्दु दो मः । ~ पदस्य

अमूभ्याम्

[LSK] अमूभिः<sup>3/3</sup> ।

अदस् + भिस्

अदा + भिस् After the common process

अमा+ भिस् 8.2.80 अदसोऽसेर्दाद्दु दो मः । ~ पदस्य

अमू+ भिस् 8.2.80 अदसोऽसेर्दाद्दु दो मः । ~ पदस्य

अमूभिः 8.2.66, 8.3.15

Since the अङ्ग is not अदन्त, 7.3.103 बहुवचने झल्येत् । with 7.1.11 नेदमदसोरकोः । does not come. Thus 8.2.81 एत ईद्वहुवचने । is not applicable in feminine because of टाप,

[LSK] अमुष्मै<sup>4/1</sup>।

अदस् + डे

अदा + ए After the common process

अदा + स्याट् ए 7.3.114 सर्वनाम्नः स्याड्ढस्वश्च । ~ आपः

अद + स्याट् ए 7.3.114 सर्वनाम्नः स्याड्ढस्वश्च । ~ आपः

अद + स्यै 6.1.88 वृद्धिरेचि ।

अम + स्यै 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य

अमु + स्यै 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य

अमु + ष्यै 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः ।

अमुष्मै

[LSK] अमूभ्यः<sup>4/3,5/3</sup> ।

अदस् + भ्यस्

अदा + भ्यस् After the common process

अमा+ भ्यस् 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य

अमू+ भ्यस् 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य

अमूभ्यः 8.2.66, 8.3.15

[LSK] अमुष्म्याः<sup>5/1,6/1</sup> ।

अदस् + ङसिँ

अदा + अस् After the common process

अदा + स्याट् अस् 7.3.114 सर्वनाम्नः स्याड्ढस्वश्च । ~ आपः

अद + स्याट् अस् 7.3.114 सर्वनाम्नः स्याड्ढस्वश्च । ~ आपः

अद + स्यास् 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः ।

अम + स्यास् 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य

अमु + स्यास् 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य

अमु + ष्यास् 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः ।

अमुष्म्याः 8.2.66, 8.3.15

[LSK] अमुयोः<sup>6/2,7/2</sup> ।

अदस् + ओस्

अदा + ओस् After the common process

अदे + ओस् 7.3.105 आङि चापः ।

अदय् + ओस् 6.1.78 एचोऽयवायावः ।

अमय् + ओस् 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य

अमुय् + ओस् 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य

अमुयोः 8.2.66, 8.3.15

[LSK] अमूषाम्<sup>6/3</sup> ।

अदस् + आम्

अदा + ओस् After the common process

अदा + स् आम् 7.1.52 आमि सर्वनाम्नः सुट् । ~ आत्

अमा + साम् 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य

अमू + साम् 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य

अमीषाम् 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः ।

[LSK] अमुष्याम्<sup>7/1</sup> ।

अदस् + ङि

अदा + इ After the common process

अदा + आम् 7.3.116 डेराम्नाङ्गान्नीभ्यः ।

अदा + स्याट् आम् 7.3.114 सर्वनाम्नः स्याङ्ङुस्वश्च । ~ आपः

अद + स्याट् आम् 7.3.114 सर्वनाम्नः स्याङ्ङुस्वश्च । ~ आपः

अद + स्याम् 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः ।

अम + स्याम् 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य

अमु + स्याम् 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य

अमुष्याम् 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः ।

[LSK] अमूषु<sup>7/3</sup> ॥

अदस् + सुप्

अदा + सु After the common process

अमा + सु 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य

अमू + सु 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य

Declension of अदस् (स्त्री-1)

Other than 1/1, once the अङ्ग becomes आवन्त (अदा), it declines like सर्वा, then 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । is applied.

The difference from masculine is that there is no occasion for 8.2.81 एत ईद्वहुवचने । ~ अदसः दात् दः मः in plural, because the अङ्ग never becomes अदन्त, subject to एत्व.

|   | एकवचनम्                         | द्विवचनम्     | बहुवचनम्      |
|---|---------------------------------|---------------|---------------|
| 1 | असौ 7.2.107, 6.1.88,<br>7.2.106 | अमू           | अमूः          |
| 2 | अमूम्                           | same as above | अमूः          |
| 3 | अमुया                           | अमूभ्याम्     | अमूभिः        |
| 4 | अमुष्यै                         | same as above | अमूभ्यः       |
| 5 | अमुष्याः                        | same as above | same as above |
| 6 | same as above                   | अमुयोः        | अमूषाम्       |
| 7 | अमुष्याम्                       | same as above | अमूषु         |

इति हलन्तस्त्रीलिङ्गाः ।

Thus completes the section of शब्दs ending with हल् and whose gender is feminine.

## अथ हलन्तनपुंसकलिङ्गाः

### ह-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (1) स्वनडुह

स्वनडुह (that which has excellent bulls, such as family, field)

Sūtras learnt in अनडुह-शब्द in हलन्तपुंलिङ्ग are used here.

शोभनाः अनडुहः वृषभाः यस्य/यस्मिन् तत् स्वनडुत् (116B) कुलम् ।

सु + जस् + अनडुह् + जस् 2.2.24 अनेकमन्यपदार्थे । ~ बहुव्रीहिः समासः

1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

सु + अनडुह् 2.4.71 सुपो धातुप्रातिपदिकयोः । ~ लुक्

स्वनडुह् 6.1.77 इको यणचि ।

[LSK] स्वमोः<sup>6/2</sup> लुक्<sup>1/1</sup> (7.1.23) । दत्वम्<sup>7/1</sup> (8.2.72) । स्वनडुत्<sup>1/1</sup>, स्वनडुद्<sup>1/1</sup> ।

In neuter, there is लुक् elision of सुँ and अम् after consonant-ending प्रातिपदिक. This is अपवाद of 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः<sup>18</sup>

At पदान्त, 8.2.72 वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः । is applicable.

स्वनडुह् + सुँ

स्वनडुह् 7.1.23 स्वमोर्नपुंसकात् । ~ लुक्

स्वनडुद् 8.2.72 वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः । ~ सः पदानाम्

स्वनडुत् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ झलाम् चर्

[LSK] स्वनडुही<sup>1/2</sup> ।

स्वनडुह् + औ

स्वनडुह् + शी 7.1.19 नपुंसकाच्च । ~ औङः शी

स्वनडुह् + ई 1.3.8, 1.3.9 with 1.1.56 स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ ।

स्वनडुही

<sup>18</sup> Because of लुक्-elision of सुँ, not लोप, 1.1.62 प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम् । is negated by 1.1.63 न लुमताऽङ्गस्य ।

Thus the elided सुँ cannot be the निमित्त for 7.1.82 सावनडुहः । ~ नुम्. This instance illustrates the difference between 6.1.68 हल्ब्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् । ~ लोपः and 7.1.23 स्वमोर्नपुंसकात् । ~ लुक्.

[LSK] “चतुरनडुहोः” (7.1.98) इति<sup>0</sup> आम्<sup>1/1</sup> । स्वनड्वाहि<sup>1/3</sup> ।

स्वनडुह् + जस्

स्वनडुह् + शि 7.1.20 जश्शसोः शि । ~ नपुंसकात्

सर्वनामस्थानसंज्ञा for शि by 1.1.42 शि सर्वनामस्थानम् ।

स्वनडु आ ह् + इ 7.1.98 चतुरनडुहोरामुदात्तः । ~ सर्वनामस्थाने

स्वनडु आ न् ह् + इ 7.1.72 नपुंसकस्य झलचः । ~ नुम्

स्वनड्वा न् ह् + इ 6.1.77 इको यणचि ।

स्वनड्वाहि 8.3.24 नश्चापदान्तस्य झलि ।

[LSK] पुनः<sup>0</sup> तद्वत्<sup>0</sup> ।

Again, for द्वितीया विभक्तिः, the same thing is repeated.

[LSK] शेषम्<sup>1/1</sup> पुंवत्<sup>0</sup> ।

The rest is like ह्-ending masculine, like अनडुह्.

स्वनडुह् + भ्याम्<sup>3/2</sup>

स्वनडुद् + भ्याम् 8.2.72 वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः । ~ सः पदानाम्

स्वनडुद्भ्याम्

### Declension of स्वनडुह् (ह्-न-1)

|   | एकवचनम्                                     | द्विवचनम्             | बहुवचनम्   |
|---|---|-----------------------|--|
| 1 | स्वनडुत्/स्वनडुद्<br>7.1.23, 8.2.72, 8.4.56 | स्वनडुही 7.1.19       | स्वनड्वाहि 7.1.20, 7.1.98, 7.1.72,<br>6.1.77, 8.3.24 |
| 5 | same as above                               | same as above         | same as above  |
| 2 | same as above                               | same as above         | same as above  |
| 3 | स्वनडुहा                                    | स्वनडुद्भ्याम् 8.2.72 | स्वनडुद्भिः 8.2.72                                   |
| 4 | स्वनडुहे                                    | same as above         | स्वनडुद्भ्यः 8.2.72                                  |
| 5 | स्वनडुहः                                    | same as above         | same as above  |
| 6 | same as above                               | स्वनडुहोः             | स्वनडुहाम्   |
| 7 | स्वनडुहि                                    | same as above         | स्वनडुत्सु 8.2.72, 8.4.55                            |

3/1 onwards decline like अनडुह् in masculine.

रेफ-अन्त-नपुंसकलिङ्गः (1) वार्

वार् (water)

[LSK] वाः<sup>1/1</sup>।

वार् + सुँ

वार् 7.1.23 स्वमोर्नपुंसकात् । ~ लुक्

वाः 8.3.15 खरवसानयोर्विसर्जनीयः । ~ रः पदस्य

[LSK] वारी<sup>1/2</sup>।

वार् + औ

वार् + शी 7.1.19 नपुंसकाच्च । ~ औङः शी

वार् + ई 1.3.8, 1.3.9 with 1.1.56 स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ ।

वारी

[LSK] वारि<sup>1/3</sup>।

वार् + जस्

वार् + शि 7.1.20 जश्शसोः शि । ~ नपुंसकात्

वारि

Note that 7.1.72 नपुंसकस्य झलचः । ~ नुम् does not apply.

[LSK] वाभ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

वार् + भ्याम्

वाभ्याम्

वार् + सुप्<sup>7/3</sup>

Because of नियम by 8.3.16 रोः सुपि ।, विसर्जनीय by 8.3.15 is restricted.

वार् + षु 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः ।

Declension of वार् (रू-न-1)

|   | एकवचनम्            | द्विवचनम्     | बहुवचनम्              |
|---|--------------------|---------------|-----------------------|
| 1 | वाः 7.1.23, 8.3.15 | वारी 7.1.19   | वारि 7.1.20           |
| 5 | same as above      | same as above | same as above         |
| 2 | same as above      | same as above | same as above         |
| 3 | वारा               | वाभ्याम्      | वारिभिः               |
| 4 | वारे               | same as above | वारिभ्यः              |
| 5 | वारः               | same as above | same as above         |
| 6 | same as above      | वारोः         | वाराम्                |
| 7 | वारि               | same as above | वार्षु 8.3.16, 8.3.59 |

Declension of चतुर् (रू-न-2)

|   | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम्                                     |
|---|---------|-----------|--|
| 1 |         |           | चत्वारि 7.1.20, 7.1.98, 6.1.77               |
| 2 |         |           | same as above                                |
| 3 |         |           | चतुर्भिः                                     |
| 4 |         |           | चतुर्भ्यः                                    |
| 5 |         |           | same as above                                |
| 6 |         |           | चतुर्णाम्/चतुर्णाम्<br>7.1.55, 8.4.1, 8.4.46 |
| 7 |         |           | चतुर्षु 8.3.16, 8.3.59                       |

रेफ-अन्त-नपुंसकलिङ्गः (2) चतुर्

चतुर् (four)

[LSK] चत्वारि<sup>1/3, 2/3</sup> ॥

चतुर् + जस्

चतुर् + शि 7.1.20 जश्शसोः शि । ~ नपुंसकात्

चतु आ र् + इ 7.1.98 चतुरनडुहोरामुदात्तः । ~ सर्वनामस्थाने

चत् व् आ र् + इ 6.1.77 इको यणचि ।

चत्वारि

चतुर् + भ्याम्<sup>3/2</sup>

चतुर्भ्याम्

चतुर् + आम्<sup>6/3</sup>

चतुर् + न् आम् 7.1.55 षट्चतुर्भ्यश्च । ~ नुट्

चतुर् + ण् आम् 8.4.1 रषाभ्यां णो नः समानपदे ।

चतुर्णाम्

चतुर्णाम् 8.4.46 अचो रहाभ्यां द्वे । ~ वा

चतुर् + सुप्<sup>7/3</sup>

Because of नियम by 8.3.16 रोः सुपि ।, विसर्जनीय by 8.3.15 is restricted.

चतुर् + षु 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः ।

म-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (1) किम्[LSK] किम्<sup>1/1</sup> ।

किम् + सुँ

किम् 7.1.23 स्वमोर्नपुंसकात् । ~ लुक्

Note: 7.2.103 किमः कः । ~ विभक्तौ does not apply because of 1.1.63 न लुमताऽङ्गस्य । ~

प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम्

[LSK] के<sup>1/2</sup>।

किम् + औ

क + औ 7.2.103 किमः कः । ~ विभक्तौ

क + शी 7.1.19 नपुंसकाच्च । ~ औडः शी

के 6.1.87 आद्गुणः ।

Note: 6.4.148 यस्येति च । does not apply because of the (वा०) औडः श्यां प्रतिषेधो वाच्यः ।

[LSK] कानि<sup>1/3</sup> ॥

किम् + जस्

क + जस् 7.2.103 किमः कः । ~ विभक्तौ

क + शि 7.1.20 जश्शसोः शि । ~ नपुंसकात्

क न् + इ 7.1.72 नपुंसकस्य झलचः । ~ नुम्

कान् + इ 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ । ~ दीर्घः नोपधायाः

कानि

## Declension of किम् (म्-न-1)

|   | एकवचनम्       | द्विवचनम्     | बहुवचनम्      |
|---|---------------|---------------|---------------|
| 1 | किम्          | के            | कानि          |
| S | /             |               |               |
| 2 | same as above | same as above | same as above |

The rest is like in पुलिङ्ग.

**म-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (2) इदम्**

[LSK] इदम्<sup>1/1</sup> ।

इदम् + सुँ

इदम् 7.1.23 स्वमोर्नपुंसकात् । ~ लुक्

Note: 7.2.108 इदमो मः ~ विभक्तौ does not apply because of 1.1.63 न लुमताऽङ्गस्य । ~ प्रत्ययलोपे

प्रत्ययलक्षणम्

[LSK] इमे<sup>1/2</sup> ।

इदम् + औ

इद अ + औ 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

इद + औ 6.1.97 अतो गुणे ।

इद + शी 7.1.19 नपुंसकाच्च । ~ औङः शी

इदे 6.1.87 आद्गुणः ।

इमे 7.2.109 दः च । ~ इदमः मः

[LSK] इमानि<sup>1/3</sup> ॥

इदम् + जस्

इद अ + जस् 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

इद + जस् 6.1.97 अतो गुणे ।

इद + शि 7.1.20 जश्शसोः शि । ~ नपुंसकात्

इद न् + इ 7.1.72 नपुंसकस्य झलचः । ~ नुम्

इदान् + इ 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ । ~ दीर्घः नोपधायाः

इमान् + ई 7.2.109 दः च । ~ इदमः मः

इमानि

**Declension of इदम् (म्-न-2)**

|   | एकवचनम्       | द्विवचनम्     | बहुवचनम्      |
|---|---------------|---------------|---------------|
| 1 | इदम्          | इमे           | इमानि         |
| S |               |               |               |
| 2 | same as above | same as above | same as above |

The rest is like in पुलिङ्ग.

The next वार्तिक is about 2.4.34 द्वितीयाटौस्वेनः । ~ इदमः एतद्: अन्वादेशे.

## (वार्तिकम्) अन्वादेशे नपुंसके वा एनद् वक्तव्यः ।

It has to be said that एनद् is the substitute for इदम् and एतद् in अन्वादेश in neuter.

अन्वादेशे<sup>7/1</sup> नपुंसके<sup>7/1</sup> वा<sup>0</sup> एनद्<sup>1/1</sup> वक्तव्यः<sup>1/1</sup>।

4 words in the वार्तिक, other words are understood by the context.

- अन्वादेशे 7/1 – In the sense of अन्वादेश, repeated mentioning; in विषयसप्तमी.
- नपुंसके 7/1 – In नपुंसक; in विषयसप्तमी.
- वा 0 – This word is found only in LSK of Gitapress. There seems to be no use for this word.
- एनद् 1/1 – This is आदेश. By 1.1.54 अनेकालिशत्सर्वस्य।, the whole स्थानिन् is replaced. In भैमी, एनद्-आदेश is for all 6 places (2/1, 2/2, 2/3, 3/1, 6/2, 7/2), while in लघु-टिप्पणी, एनद्-आदेश is only for 2/1. In both cases, the result is the same because of 7.2.102 त्यदादीनामः ।.
- वक्तव्यः 1/1 – It should have been said, even though Pāṇini did not mention एनद्-आदेश.

[LSK] एनत्<sup>2/1</sup> ।

इदम् + अम्

इदम् 7.1.23 स्वमोर्नपुंसकस्य । ~ लुक् (अपवादः of 6.1.68)

एनद् (वा०) अन्वादेशे नपुंसके वा एनद् वक्तव्यः ।

Note: 7.2.108 इदमो मः । ~ विभक्तौ does not apply because of 1.1.63 न लुमताऽङ्गस्य । ~

प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम्

[LSK] एते<sup>2/1</sup> । एनानि<sup>2/3</sup> । एनेन<sup>3/1</sup> । एनयोः<sup>6/2,7/2</sup> ॥

इदम् + औ<sup>2/2</sup>

इदम् + शी 7.1.19 नपुंसकाच्च । ~ औङः शी

एनद् + ई (वा०) अन्वादेशे नपुंसके वा एनद् वक्तव्यः ।

एन अ + ई 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

एन + ई 6.1.97 अतो गुणे ।

एने 6.1.87 आद्गुणः ।

Declension of इदम् in अन्वादेश (म्-न-2)

|   | एकवचनम्   | द्विवचनम्     | बहुवचनम्      |
|---|-----------|---------------|---------------|
| 1 | इदम्      | इमे           | इमानि         |
| 5 | /         |               |               |
| 2 | एनत्/एनद् | एने           | एनानि         |
| 3 | एनेन      | आभ्याम्       | एभिः          |
| 4 | अस्मै     | same as above | एभ्यः         |
| 5 | अस्मात्   | same as above | same as above |
| 6 | अस्य      | एनयोः         | एषाम्         |
| 7 | अस्मिन्   | same as above | एषु           |

The only difference from masculine is in 2/1, caused by the वार्तिकम्.

न-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (1) अहन्

A sūtra related to अहन् (day) has been studied in विसर्गसन्धि section.

[LSK] अहः<sup>1/1</sup> ।

अहन् + सुँ<sup>1/1</sup>

अहन् 7.1.23 स्वमोर्नपुंसकात् । ~ लुक्

अहर् 8.2.69 रोऽसुपि । ~ अहन्<sup>19</sup>

अहः 8.3.15 खरवसानयोर्विसर्जनीयः । ~ रः पदस्य

[LSK] “विभाषा ङिश्योः” (6.4.136) अह्नी<sup>1/2</sup>, अहनी<sup>1/2</sup> ।

In भ, 6.4.134 अल्लोपोऽनः । ~ भस्य is applicable. However, when ङि or शी follows, the लोप is optional. (Ref. हलन्तनपुंसक दधि)

अहन् + औ<sup>1/2</sup>

अहन् + शी 7.1.19 नपुंसकाच्च । ~ औङः शी

अह् न् + ई 6.4.136 विभाषा ङिश्योः । ~ अत् लोपः अनः भस्य

अह्नी

लोप-अभाव-पक्षे

अहनी

[LSK] अहानि<sup>1/3</sup> ।

अहन् + जस्<sup>1/3</sup>

अहन् + शि 7.1.20 जश्शसोः शि । ~ नपुंसकात्

अहान् + इ 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ । ~ दीर्घः नोपधायाः

अहानि

अहन् + टा<sup>3/1</sup>

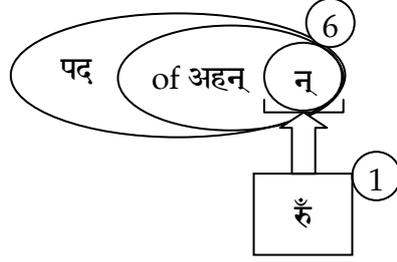
अह् न् + आ 6.4.134 अल्लोपोऽनः । ~ भस्य

अहा

<sup>19</sup> 8.3.69 रोऽसुपि । रः<sup>1/1</sup> असुपि<sup>7/1</sup> – अहः<sup>6/1</sup> रेफादेशः<sup>1/1</sup> न<sup>0</sup> तु<sup>0</sup> सुपि<sup>7/1</sup> । अहरहः । अहर्गुणः ।

[विधिसूत्रम्] 8.2.68 अहन् । ~ रँ: पदस्य अन्ते

The last letter of अहन् is replaced by रँ at the end of पद.



अहन्<sup>6/1</sup> । ~ रँ: <sup>1/1</sup> पदस्य <sup>6/1</sup> अन्ते <sup>7/1</sup>

1 word in the सूत्र; 2 words as अनुवृत्ति

- अहन् 6/1 – In स्थानेयोगा षष्ठी; विभक्ति is लुप्त, elided.
- रँ 1/1 – From 8.2.66 ससजुषो रँ: । This is आदेश.
- पदस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 8.1.16 पदस्य ।; सम्बन्धे षष्ठी to अन्ते.
- अन्ते 7/1 – From 8.2.29 स्कोः संयोगाद्योरन्ते च। (मण्डूकप्लुतगति); in अधिकरणे सप्तमी.

[LSK] “अहन्” इति<sup>0</sup> अस्य <sup>6/1</sup> रँ: <sup>1/1</sup> पदान्ते <sup>7/1</sup> ।

रँ is the substitute in the place of the last letter of अहन् at the end of पद.

[LSK] अहोभ्याम् <sup>3/2</sup> ॥<sup>20</sup>

अहन् + भ्याम्

अह रँ + भ्याम्            8.2.68 अहन् । ~ रँ: पदस्य अन्ते with 1.1.52 अलोऽन्त्यस्य ।

अह उ + भ्याम्            6.1.114 हशि च ।

अहोभ्याम्                6.1.87 आहुणः ।

<sup>20</sup> 8.2.68 अहन् । ~ रँ: and 8.2.69 रोऽसुपि । are असिद्ध to 8.2.7 नलोपः प्रातिकदिकान्तस्य । This is avoided by repeating (आवृत्ति) the sūtra “अहन्” twice. The first “अहन्” is to negate नलोप (नलोप-अभावं निपात्य), and the second “अहन्” is to give रँ-आदेश (रँ-विधेयः) [SK]

अहन् + सुप्<sup>7/3</sup>

|             |   |
|-------------|---|
| अह रूँ + सु | 8.2.68 अहन् । ~ रूँः पदस्य अन्ते          |
| अहः + सु    | 8.3.15 खरवसानयोर्विसर्जनीयः । ~ रः पदस्य  |
| अहः + सु    | 8.3.36 वा शरि । ~ विसर्जनीयस्य विसर्जनीयः |
| पक्षे       |   |
| अहः + सु    | 8.3.34 विसर्जनीयस्य सः ।                  |

Declension of अहन् (न्-न-1)

|   | एकवचनम्                    | द्विवचनम्                            | बहुवचनम्   |
|---|----------------------------|--------------------------------------|--|
| 1 | अहः 7.1.23, 8.2.69, 8.3.15 | अह्नी/अहनी<br>7.1.19, 6.4.136        | अहानि 7.1.20, 6.4.8                              |
| S | same as above              | same as above                        | same as above                                    |
| 2 | same as above              | same as above                        | same as above                                    |
| 3 | अह्ना 6.4.134              | अहोभ्याम् 8.2.68, 6.1.114,<br>6.1.87 | अहोभिः 8.2.68, 6.1.114,<br>6.1.87                |
| 4 | अहे 6.4.134                | same as above                        | अहोभ्यः 8.2.68, 6.1.114,<br>6.1.87               |
| 5 | अहः 6.4.134                | same as above                        | same as above                                    |
| 6 | same as above              | अहोः 6.4.134                         | अहाम् 6.4.134                                    |
| 7 | अहि/अहनि 6.4.136           | same as above                        | अहःसु/अहस्सु<br>8.2.68, 8.3.15,<br>8.3.36/8.3.34 |

## न-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (2) दण्डिन्

दण्डिन् (one who has a stick, कुलम्) is इन्-प्रत्यय ending word.

दण्डः अस्य अस्ति इति दण्डि, कुलम् ।

दण्ड + सु + इनिँ 5.2.115 अत इनिँठनौ ।

1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

दण्ड + इन् 2.4.71 सुपो धातुप्रातिपदिकयोः । ~ लुक्

दण्ड् + इन् 6.4.148 यस्येति च । ~ लोपः भस्य

दण्डिन्

[LSK] दण्डि<sup>1/1</sup> ।

दण्डिन् + सुँ

दण्डिन् 7.1.23 स्वमोर्नपुंसकात् । ~ लुक्

दण्डि 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य ।

दण्डिन् + सुँ<sup>S/1</sup>

दण्डिन् 7.1.23 स्वमोर्नपुंसकात् । ~ लुक्

दण्डि (वा०) सम्बुद्धौ नपुंसकानां नलोपो वा वाच्यः । for 8.2.8 न डिन्सम्बुद्धोः । ~ नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य

दण्डिन् पक्षे

[LSK] दण्डिनी<sup>1/2</sup> ।

दण्डिन् + औ

दण्डिन् + शी 7.1.19 नपुंसकाच्च । ~ औडः शी

दण्डिन् + ई

दण्डिनी

[LSK] दण्डिनी<sup>1/3</sup> ।

दण्डिन् + जस्

दण्डिन् + शि 7.1.20 जश्शसोः शि । ~ नपुंसकात्

दण्डिन् + इ 6.4.12 इन्हन्पूर्वार्थम्णां शौ । ~ उपधायाः दीर्घः अङ्गानाम् (नियमसूत्रम् to 6.4.8 सर्वनामस्थाने...।)

दण्डिनी

[LSK] दण्डिना<sup>3/1</sup> ।

दण्डिन् + टा

दण्डिन् + आ

[LSK] दण्डिभ्याम्<sup>3/2</sup> ॥

दण्डिन् + भ्याम्

दण्डि + भ्याम् 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य ।

Declension of दण्डिन् (न्-न-2)

|   | एकवचनम्                              | द्विवचनम्         | बहुवचनम्              |
|---|--------------------------------------|-------------------|-----------------------|
| 1 | दण्डि 7.1.23, 8.2.7                  | दण्डिनी 7.1.19    | दण्डीनि 7.1.20, 6.4.8 |
| S | दण्डि/दण्डिन्<br>7.1.23, (वा०) 8.2.8 | same as above     | same as above         |
| 2 | दण्डि 7.1.23, 8.2.7                  | same as above     | same as above         |
| 3 | दण्डिना                              | दण्डिभ्याम् 8.2.7 | दण्डिभिः 8.2.7        |
| 4 | दण्डिने                              | same as above     | दण्डिभ्यः 8.2.7       |
| 5 | दण्डिनः                              | same as above     | same as above         |
| 6 | same as above                        | दण्डिनोः          | दण्डिनाम्             |
| 7 | दण्डिनि                              | same as above     | दण्डिषु               |

In the same manner, स्रग्विन्<sup>21</sup>, वाग्मिन्, बहुवृत्रहन्, etc;

<sup>21</sup> Q: Because of अर्थवद्-ग्रहणे नानर्थकस्य ग्रहणम् ॥ प० 14 ॥ the इन् in the sūtra 6.4.12 इन्हन्पूर्वार्यम्णां शौ । does not indicate the विनिं?

A: No. Because of अन-इन्-अस्-मन्-ग्रहणानि अर्थवता चानर्थकेन च तदन्तविधिं बोधयन्ति ॥ प० 16 ॥, the इन् in the sūtra indicates the विनिं also.

### न-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (3) सुपथिन्

सुपथिन् (in which there are good roads, नगरम्) is पथिन् ending word.

सुपथिन् (in which there are good roads, नगरम्)

शोभनाः पन्थानः यस्मिन् तत् सुपथि, नगरम्

सु + सुँ + पथिन् + सुँ 2.2.24 अनेकमन्यपदार्थे । ~ बहुव्रीहिः समासः

प्रातिपदिक-संज्ञा by 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

सु + पथिन् 2.4.71 सुपो धातुप्रातिपदिकयोः । ~ लुक्

सुपथिन्

[LSK] सुपथि<sup>1/1</sup> ।

सुपथिन् + सुँ

सुपथिन् 7.1.23 स्वमोर्नपुंसकात् । ~ लुक्

सुपथि 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य ।

सुपथिन् + सुँ<sup>S/1</sup>

सुपथिन् 7.1.23 स्वमोर्नपुंसकात् । ~ लुक्

सुपथि (वा०) सम्बुद्धौ सपुंसकानां नलोपो वा वाच्यः । for 8.2.8 न डि-सम्बुद्ध्योः । ~ नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य

सुपथिन् पक्षे

[LSK] टेलोपः (7.1.88) । सुपथी<sup>1/2</sup> ।

सुपथिन् + औ

सुपथिन् + शी 7.1.19 नपुंसकाच्च । ~ औडः शी

सुपथ् + ई 7.1.88 भस्य टेलोपः । ~ पथिमथ्यृभुक्षामात्

सुपथी

[LSK] सुपन्थानि<sup>1/3</sup> ।

सुपथिन् + जस्

सुपथिन् + शि 7.1.20 जश्शसोः शि । ~ नपुंसकात्

सुपथन् + इ 7.1.86 इतोऽत्सर्वनामस्थाने । ~ पथिमथ्यृभुक्षामात्

सुपन्थन् + इ 7.1.87 थोऽन्थः । ~ पथिमथ्यृभुक्षामात् सर्वनामस्थाने

सुपन्थान् + इ 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ । ~ नोपधायाः दीर्थः

सुपन्थानि

## Declension of सुपथिन् (न-न-3)

|   | एकवचनम्                                  | द्विवचनम्            | बहुवचनम्                                   |
|---|--|----------------------|--|
| 1 | सुपथि 7.1.23, 8.2.7                      | सुपथी 7.1.19, 7.1.88 | सुपन्थानि 7.1.20, 7.1.86,<br>7.1.87, 6.4.8 |
| 5 | हे सुपथि /सुपथिन्<br>7.1.23, (वा०) 8.2.8 | same as above        | same as above                              |
| 2 | सुपथि 7.1.23, 8.2.7                      | same as above        | same as above                              |
| 3 | सुपथा                                    | सुपथिभ्याम् 8.2.7    | सुपथिभिः 8.2.7                             |
| 4 | सुपथे                                    | same as above        | सुपथिभ्यः 8.2.7                            |
| 5 | सुपथः                                    | same as above        | same as above                              |
| 6 | same as above                            | सुपथोः               | सुपथाम्                                    |
| 7 | सुपथि                                    | same as above        | सुपथिषु 8.2.7                              |

ज-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (1) ऊर्ज

ऊर्ज (strength, brightness)

ऊर्जँ बलप्राणनयोः (10U) to strengthen, to live

ऊर्ज + क्विप् 3.2.76 क्विप् च ।

प्रातिपदिक-संज्ञा by 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

[LSK] ऊर्क्<sup>1/1</sup>, ऊर्ग्<sup>1/1</sup> ।

ऊर्ज + सुँ

ऊर्ज 7.1.23 स्वमोर्नपुंसकात् । ~ लुक्

ऊर्ग् 8.2.30 चोः कुः ।

ऊर्क् 8.4.56 वावसाने ।

Note: 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः । does not apply because of the नियमसूत्रम् 8.2.24 रात् सस्य ।

This नियमसूत्रम् is meant only for this word.

[LSK] ऊर्जी<sup>1/2</sup> ।

ऊर्ज + औ

ऊर्ज + शी 7.1.19 नपुंसकाच्च । ~ औडः शी

ऊर्ज + ई

ऊर्जी

[LSK] ऊर्जि<sup>1/3</sup> । नरजानाम्<sup>6/3</sup> संयोगः<sup>1/1</sup> ।

The conjunct consonants of न्, र्, and ज् in 1/3.

ऊर्ज + जस्

ऊर्ज + शि 7.1.20 जश्शसोः शि । ~ नपुंसकात्

ऊ न् ऊर्ज + इ 7.1.72 नपुंसकस्य झलचः । ~ नुम्

ऊर्जि

Declension of ऊर्ज् (ज-न-1)

|   | एकवचनम्                               | द्विवचनम्        | बहुवचनम्                       |
|---|---------------------------------------|------------------|--------------------------------|
| 1 | ऊर्क्/ऊर्ग्<br>7.1.23, 8.2.30, 8.4.56 | ऊर्जी 7.1.19     | ऊर्जि 7.1.20, 7.1.72           |
| 5 | same as above                         | same as above    | same as above                  |
| 2 | same as above                         | same as above    | same as above                  |
| 3 | ऊर्जा                                 | ऊर्भ्याम् 8.2.30 | ऊर्भिः 8.2.30                  |
| 4 | ऊर्जे                                 | same as above    | ऊर्भ्यः 8.2.30                 |
| 5 | ऊर्जः                                 | same as above    | same as above                  |
| 6 | same as above                         | ऊर्जाः           | ऊर्जाम्                        |
| 7 | ऊर्जि                                 | same as above    | ऊर्क्षु 8.2.30, 8.3.59, 8.4.55 |

**द-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (1) तद्**

[LSK] तत्<sup>1/1</sup> ।

तद् + सुँ

तद् 7.1.23 स्वमोर्नपुंसकात् । ~ लुक्

Note: 7.2.106 तदोः सः सावनन्त्ययोः । ~ विभक्तौ does not apply because of 1.1.63 न लुमताऽङ्गस्य

। ~ प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम्

तत् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ झलाम् चर्

[LSK] ते<sup>1/2</sup> ।

तद् + औ

त + अ + औ 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

त + औ 6.1.97 अतो गुणे ।

त + शी 7.1.19 नपुंसकाच्च । ~ औङः शी

ते 6.1.87 आद्गुणः ।

[LSK] तानि<sup>1/3</sup> ।

तद् + जस्

त + अ + जस् 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

त + जस् 6.1.97 अतो गुणे ।

त + शि 7.1.20 जश्शसोः शि । ~ नपुंसकात्

त न् + इ 7.1.72 नपुंसकस्य झलचः । ~ नुम्

ता न् + इ 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ ।

तानि

**Declension of तद् (द-न-1)**

|   | एकवचनम्               | द्विवचनम्                             | बहुवचनम्                                       |
|---|-----------------------|---------------------------------------|--|
| 1 | तत्/तद् 7.1.23, 8.456 | ते 7.2.102, 6.1.97,<br>7.1.19, 6.1.87 | तानि 7.2.102, 6.1.97, 7.1.20,<br>7.1.72, 6.4.8 |
| S |                       |                                       |  |
| 2 | same as above         | same as above                         | same as above                                  |

The rest is like in पुलिङ्ग.

द-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (2) यद्

[LSK] यत्<sup>1/1</sup> ।

यद् + सुँ

यद् 7.1.23 स्वमोर्नपुंसकात् । ~ लुक्

Note: 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ does not apply because of 1.1.63 न लुमताऽङ्गस्य । ~

प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम्

यत् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ झलाम् चर्

[LSK] ये<sup>1/2</sup> । यानि<sup>1/3</sup> ।

The rest is the same as for तद्.

Declension of यद् (द्व-न-2)

|   | एकवचनम्               | द्विवचनम्                             | बहुवचनम्                                       |
|---|-----------------------|---------------------------------------|--|
| 1 | यत्/यद् 7.1.23, 8.456 | ये 7.2.102, 6.1.97,<br>7.1.19, 6.1.87 | यानि 7.2.102, 6.1.97, 7.1.20,<br>7.1.72, 6.4.8 |
| S |                       |                                       |  |
| 2 | same as above         | same as above                         | same as above                                  |

The rest is like in पुलिङ्ग.

**द-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (3) एतद्**

[LSK] एतत्<sup>1/1</sup> ।

एतद् + सुँ

एतद् 7.1.23 स्वमोर्नपुंसकात् । ~ लुक्

Note: 7.2.106 तदोः सः सावनन्त्ययोः । ~ विभक्तौ does not apply because of 1.1.63 न लुमताऽङ्गस्य । ~ प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम्

एतत् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ झलाम् चर्

[LSK] एते<sup>1/2</sup> । एतानि<sup>1/3</sup> ।

The rest is the same as for एतद्.

**Declension of एतद् (द-न-3)**

|   | एकवचनम्                 | द्विवचनम्                           | बहुवचनम्                                     |
|---|-------------------------|-------------------------------------|--|
| 1 | एतत्/एतद् 7.1.23, 8.456 | एते 7.2.102, 6.1.97, 7.1.19, 6.1.87 | एतानि 7.2.102, 6.1.97, 7.1.20, 7.1.72, 6.4.8 |
| S |                         |                                     |  |
| 2 | same as above           | same as above                       | same as above                                |

The rest is like in पुलिङ्ग.

**Declension of इदम् in अन्वादेश (म-न-2)**

|   | एकवचनम्   | द्विवचनम्     | बहुवचनम्      |
|---|-----------|---------------|---------------|
| 1 | एतत्/एतद् | एते           | एतानि         |
| S |           |               |               |
| 2 | एनत्/एनद् | एने           | एनानि         |
| 3 | एनेन      | एताभ्याम्     | एतैः          |
| 4 | एतस्मै    | same as above | एतेभ्यः       |
| 5 | एतस्मात्  | same as above | same as above |
| 6 | एतस्य     | एनयोः         | एतेषाम्       |
| 7 | एतस्मिन्  | same as above | एतेषु         |

The only difference from masculine is in 2/1, caused by the वार्तिकम्.

**च-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (1) गो + अच् (गत्यर्थे अच्)**

गो अच् (one who goes after cows, कुलम) is गो-उपपद-गति-अर्थ-अच्-धातु with किन्-प्रत्यय.

गाम् अञ्चति इति

गो + अम् + अच् + किन् 3.2.59 ऋत्विग्दधृक्स्त्रिग्दिगुष्णिग् अञ्चयुजिक्रुञ्चां च । ~ किन्

गो + अच् 6.4.24 अनदितां हल उपधायाः किञ्चति ।

[LSK] गवाक्<sup>1/1</sup> ।

गो अच् + सुँ

गो अच् 7.1.23 स्वमोर्नपुंसकात् । ~ लुक्

गो अक् 8.2.30 चोः कुः । ~ झलि पदस्य अन्ते च

गो अग् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।

गो अक् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ झलाम् चर्

ग् अव अक्/ग् 6.1.123 अवङ् स्फोटायनस्य ।

गवाक्/गवाग्

गोअक्/गोअग् 6.1.122 सर्वत्र विभाषा गोः । ~ प्रकृत्या

गोऽक्/गोऽग् 6.1.109 एङः पदान्तादति । ~ पूर्वः

[LSK] गोची<sup>1/2</sup> ।

गो अच् + औ

गो अच् + शी 7.1.19 नपुंसकाच्च । ~ औङः शी

गो च् + ई 6.4.138 अचः । ~ अत् लोपः भस्य

गोची

[LSK] गवाञ्चि<sup>1/3</sup> ।

गो अच् + जस्

गो अच् + शि 7.1.20 जश्शसोः शि । ~ नपुंसकात्

गो अ न् च् + इ 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ ।

Being नलोपी अञ्चधातु, नुम्-आगम is given.

|                |   |
|----------------|---|
| गो अञ्च + इ    | 8.3.24 नश्चापदान्तस्य झलि । ~ अनुस्वारः |
| गो अञ्च + इ    | 8.4.58 अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः ।       |
| <u>गवाञ्चि</u> | 6.1.123 अवङ् स्फोटायनस्य ।              |
| <u>गोअञ्चि</u> | 6.1.122 सर्वत्र विभाषा गोः ।            |
| <u>गोऽञ्चि</u> | 6.1.109 एङः पदान्तादति ।                |

[LSK] पुनः<sup>0</sup> तद्धत्<sup>0</sup> ।

[LSK] गोचा<sup>3/1</sup> ।

|             |                               |
|-------------|-------------------------------|
| गो अच् + टा |                               |
| गो च् + आ   | 6.4.138 अचः । ~ अत् लोपः भस्य |
| गोचा        |                               |

In the same manner with अजादि-suffix.

[LSK] गवाग्भ्याम्<sup>3/2</sup> ।

|                                |                              |
|--------------------------------|------------------------------|
| गो अच् + भ्याम् <sup>3/2</sup> |                              |
| गो अज् + भ्याम्                | 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।       |
| गो अग् + भ्याम्                | 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः ।  |
| <u>गवाग्भ्याम्</u>             | 6.1.123 अवङ् स्फोटायनस्य ।   |
| <u>गोअग्भ्याम्</u>             | 6.1.122 सर्वत्र विभाषा गोः । |
| <u>गोऽग्भ्याम्</u>             | 6.1.109 एङः पदान्तादति ।     |

गो अच् + सुप्<sup>7/3</sup>

|                |                              |
|----------------|------------------------------|
| गो अज् + सु    | 8.2.39 झलां जशोऽन्ते ।       |
| गो अग् + सु    | 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः ।  |
| गो अग् + षु    | 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः ।      |
| गो अक् + षु    | 8.4.55 खरि च । ~ झलां चर्    |
| <u>गवाक्षु</u> | 6.1.123 अवङ् स्फोटायनस्य ।   |
| <u>गोअक्षु</u> | 6.1.122 सर्वत्र विभाषा गोः । |
| <u>गोऽक्षु</u> | 6.1.109 एङः पदान्तादति ।     |

Declension of गो + अच् (च-न-1)

|   | एकवचनम्                                   | द्विवचनम्                                 | बहुवचनम्                            |
|---|---|---|-------------------------------------|
| 1 | गवाक्/गवाग्<br>गोअक्/गोअग्<br>गोऽक्/गोऽग् | गोची                                      | गवाञ्चि<br>गोअञ्चि<br>गोऽञ्चि       |
| S | same as above                             | same as above                             | same as above                       |
| 2 | same as above                             | same as above                             | same as above                       |
| 3 | गोचा                                      | गवाग्भ्याम्<br>गोअग्भ्याम्<br>गोऽग्भ्याम् | गवाग्भिः<br>गोअग्भिः<br>गोऽग्भिः    |
| 4 | गोचे                                      | same as above                             | गवाग्भ्यः<br>गोअग्भ्यः<br>गोऽग्भ्यः |
| 5 | गोचः                                      | same as above                             | same as above                       |
| 6 | same as above                             | गोचोः                                     | गोचाम्                              |
| 7 | गोचि                                      | same as above                             | गवाक्षु<br>गोअक्षु<br>गोऽक्षु       |

Summary:

|   | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |    |
|---|---------|-----------|----------|----|
| 1 | 6       | 1         | 3        | 10 |
| S | 6       | 1         | 3        | 10 |
| 2 | 6       | 1         | 3        | 10 |
| 3 | 1       | 3         | 3        | 7  |
| 4 | 1       | 3         | 3        | 7  |
| 5 | 1       | 3         | 3        | 7  |
| 6 | 1       | 1         | 1        | 3  |
| 7 | 1       | 1         | 3        | 5  |
|   |         |           |          | 59 |

In 1/1, S/1, 2/1 :

By 3 options of अच्-सन्धि and 2 options at the end, there are 6 forms.

In भ section:

There is only one form.

In other section:

There are 3 forms by 3 options of अच्-सन्धि.

**च-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (2) गो + अच् (पूजार्थे अच्)**

गो अच् (one who worships cows, कुलम्) is गो-उपपद-पूजा-अर्थ-अच्-धातु with किन्-प्रत्यय.

गाम् अच्चति इति

गो + अम् + अच् + किन् 3.2.59 ऋत्विग्दधृक्स्त्रिग्दिगुष्णिग् अच्चयुजिकृच्चां च । ~ किन्

गो + अच् 6.4.30 नाच्चेः पूजायाम् । अनिदितां हल उपधायाः विङिति

गो अच् + सुँ<sup>1/1</sup>

गो अच् 7.1.23 स्वमोर्नपुंसकस्य । ~ लुक् (अपवादः of 6.1.68)

गो अन् 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः ।, निमित्तापाये नैमित्तिकस्याप्यपायः ।

गो अङ् 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः ।

ग् अव अङ् 6.1.123 अवङ् स्फोटायनस्य ।

गवाङ्

गोअङ् 6.1.122 सर्वत्र विभाषा गोः ।

गोऽङ् 6.1.109 एङः पदान्तादति ।

गो अच् + औ<sup>1/2</sup>

गो अच् + शी 7.1.19 नपुंसकाच्च । ~ औङः शी

गवाञ्ची 6.1.123 अवङ् स्फोटायनस्य ।

गोअञ्ची 6.1.122 सर्वत्र विभाषा गोः ।

गोऽञ्ची 6.1.109 एङः पदान्तादति ।

गो अच् + जस्<sup>1/3</sup>

गो अच् + शि 7.1.20 जश्शसोः शि । ~ नपुंसकात्

गवाञ्चि 6.1.123 अवङ् स्फोटायनस्य ।

गोअञ्चि 6.1.122 सर्वत्र विभाषा गोः ।

गोऽञ्चि 6.1.109 एङः पदान्तादति ।

Note: Because of the sentence (from where?) अच्: परस्यैव झलो नुम्बिधानम् ।

गो अञ्च + टा<sup>3/1</sup>

गवाञ्चा 6.1.123 अवङ् स्फोटायनस्य ।

गोअञ्चा 6.1.122 सर्वत्र विभाषा गोः ।

गोऽञ्चा 6.1.109 एङः पदान्तादति ।

In the same manner with अजादि-suffix.

गो अञ्च + भ्याम्<sup>3/2</sup>

गो अन् + भ्याम् 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः ।, निमित्तापाये नैमित्तिकस्याप्यपायः ।

गो अङ् + भ्याम् 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः ।

गवाङ्भ्याम् 6.1.123 अवङ् स्फोटायनस्य ।

गोअङ्भ्याम् 6.1.122 सर्वत्र विभाषा गोः ।

गोऽङ्भ्याम् 6.1.109 एङः पदान्तादति ।

गो अञ्च + सुप्<sup>7/3</sup>

गो अन् + सु 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः ।, निमित्तापाये नैमित्तिकस्याप्यपायः ।

गो अङ् + सु 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः ।

गो अङ् + षु 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः ।

गवाङ्षु 6.1.123 अवङ् स्फोटायनस्य ।

गोअङ्षु 6.1.122 सर्वत्र विभाषा गोः ।

गोऽङ्षु 6.1.109 एङः पदान्तादति ।

गो अङ् + सु 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः ।

गो अङ् क् + सु 8.3.28 ङणोः कुक्टुक् शरि । ~ वा

गो अङ् क् + षु 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः ।

गवाङ्क्षु 6.1.123 अवङ् स्फोटायनस्य ।

गोअङ्क्षु 6.1.122 सर्वत्र विभाषा गोः ।

गोऽङ्क्षु 6.1.109 एङः पदान्तादति ।

गो अङ् क् + सु 8.3.28 ङणोः कुक्टुक् शरि । ~ वा

गो अङ् ख् + सु (वा०) चयो द्वितीयाः शरि पौष्करसादेरिति वाच्यम् ।

गो अङ् ख् + षु 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः ।

गवाङ्खषु 6.1.123 अवङ् स्फोटायनस्य ।

गोअङ्खषु 6.1.122 सर्वत्र विभाषा गोः ।

गोऽङ्खषु 6.1.109 एङः पदान्तादति ।

Declension of गो + अच् (च्-न-2)

|   | एकवचनम्   | द्विवचनम्   | बहुवचनम्   |
|---|---|---|--|
| 1 | गवाङ् 6.1.123<br>गोअङ् 6.1.122<br>गोऽङ् 6.1.109       | गवाञ्ची 6.1.123<br>गोअञ्ची 6.1.122<br>गोऽञ्ची 6.1.109             | गवाञ्चि 6.1.123<br>गोअञ्चि 6.1.122<br>गोऽञ्चि 6.1.109  |
| S | same as above   | same as above   | same as above  |
| 2 | same as above   | same as above   | same as above  |
| 3 | गवाञ्चा 6.1.123<br>गोअञ्चा 6.1.122<br>गोऽञ्चा 6.1.109 | गवाङ्भ्याम् 6.1.123<br>गोअङ्भ्याम् 6.1.122<br>गोऽङ्भ्याम् 6.1.109 | गवाङ्भिः 6.1.123<br>गोअङ्भिः 6.1.122<br>गोऽङ्भिः 6.1.109   |
| 4 | गवाञ्चे 6.1.123<br>गोअञ्चे 6.1.122<br>गोऽञ्चे 6.1.109 | same as above   | गवाङ्भ्यः 6.1.123<br>गोअङ्भ्यः 6.1.122<br>गोऽङ्भ्यः 6.1.109  |
| 5 | गवाञ्चः 6.1.123<br>गोअञ्चः 6.1.122<br>गोऽञ्चः 6.1.109 | same as above   | same as above  |
| 6 | same as above   | गवाञ्चोः 6.1.123<br>गोअञ्चोः 6.1.122<br>गोऽञ्चोः 6.1.109          | गवाञ्चाम् 6.1.123<br>गोअञ्चाम् 6.1.122<br>गोऽञ्चाम् 6.1.109  |
| 7 | गवाञ्चि 6.1.123<br>गोअञ्चि 6.1.122<br>गोऽञ्चि 6.1.109 | same as above   | गवाङ्षु/गवाङ्क्षु/गवाङ्खषु 6.1.123<br>गोअङ्षु/गोअङ्क्षु/गोअङ्खषु 6.1.122<br>गोऽङ्षु/गोऽङ्क्षु/गोऽङ्खषु 6.1.109 |

Summary:

|   | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |    |
|---|---------|-----------|----------|----|
| 1 | 3       | 3         | 3        | 9  |
| S | 3       | 3         | 3        | 9  |
| 2 | 3       | 3         | 3        | 9  |
| 3 | 3       | 3         | 3        | 9  |
| 4 | 3       | 3         | 3        | 9  |
| 5 | 3       | 3         | 3        | 9  |
| 6 | 3       | 3         | 3        | 9  |
| 7 | 3       | 3         | 9        | 15 |
|   |         |           |          | 78 |

In 1/1, S/1, 2/1 :

By 3 options of अच्-सन्धि and 2 options at the end, there are 6 forms.

In भ section:

There is only one form.

In other section:

There are 3 forms by 3 options of अच्-सन्धि.

How many declined forms of गो + अच् + किन् are there all together?

गत्यर्थे 59

पूजार्थे 78

= 137

However, it is said to be 109 forms. How?

गत्यर्थे 59 (सम्बोधने -10) = 49

पूजार्थे 78 (सम्बोधने -9) = 69 (जसि शसि समानरूपाणि -6) (सुपि वार्तिककारपक्षे -3) = 60

= 109

Forms in सम्बोधन are not counted. Since forms are the same, 6 forms in 1/3 and 2/3 are not counted twice. In 7/3 of पूजार्थ, forms with ख् by (वा०) चयो द्वितीयाः शरि पौष्करसादेरिति वाच्यम् । is not according to सूत्रकार, thus 3 forms are deducted. Then total number should be 109.

**त-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (1) शकृत्**

शकृत् (पुरीषः)

[LSK] शकृत्<sup>1/1</sup> ।

शकृत् + सुँ

शकृत् 7.1.23 स्वमोर्नपुंसकात् । ~ लुक्

शकृद् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

शकृत् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ झलाम् चर्

[LSK] शकृती<sup>1/2</sup> ।

शकृत् + औ

शकृत् + शी 7.1.19 नपुंसकाच्च । ~ औङः शी

शकृती

[LSK] शकृन्ति<sup>1/3</sup> ।

शकृत् + जस्

शकृत् + शि 7.1.20 जश्शसोः शि । ~ नपुंसकात्

शकृत् + इ 7.1.72 नपुंसकस्य झलचः । ~ नुम्

शकृत् + इ 8.3.24 नश्चापदान्तस्य झलि । ~ अनुस्वारः

शकृन्त् + इ 8.4.58 अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः ।

Note: णत्व cannot take place because the न् is अनुस्वार at the time of application.

**Declension of गो + अच् (च्-न-2)**

|   | एकवचनम्       | द्विवचनम्     | बहुवचनम्      |
|---|---------------|---------------|---------------|
| 1 | शकृत्/शकृद्   | शकृती         | शकृन्ति       |
| S | same as above | same as above | same as above |
| 2 | same as above | same as above | same as above |
| 3 | शकृता         | शकृद्भ्याम्   | शकृद्भिः      |
| 4 | शकृते         | same as above | शकृद्भ्यः     |
| 5 | शकृतः         | same as above | same as above |
| 6 | same as above | शकृतोः        | शकृताम्       |
| 7 | शकृति         | same as above | शकृत्सु       |

त-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (2) ददत्

ददत् (one who is giving)

डुदाञ् (3U) to give

- दा + लट् 3.2.123 वर्तमाने लट् ।  
 दा + शर्त् 3.2.124 लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे ।  
 दा + शप् + अत् 3.1.68 कर्तरि शप् । ~ सार्वधातुके  
 दा + अत् 2.4.75 जुहोत्यादिभ्यः श्लुः । ~ शपः  
 दा दा + अत् 6.1.10 श्लौ । ~ प्रथमस्य द्वे  
 द दा + अत् 7.4.59 ह्रस्वः । ~ अभ्यासस्य  
 द द् + अत् 6.4.112 श्नाभ्यस्तयोरान्तः । ~ लोपः सार्वधातुके किङ्कति  
 ददत्

[LSK] ददत्<sup>1/1</sup> ॥

ददत् + सुँ

- ददत् 7.1.23 स्वमोर्नपुंसकात् । ~ लुक्  
 ददद् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य  
 ददत् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ झलाम् चर्

ददत् + औ<sup>1/2</sup>

- ददत् + शी 7.1.19 नपुंसकाच्च । ~ औडः शी

ददती

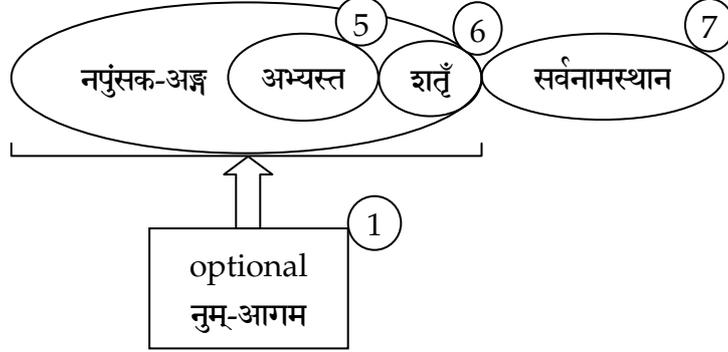
ददत् + जस्

- ददत् + शि 7.1.20 जश्शसोः शि । ~ नपुंसकात्

ऋँ of शर्त् is इत्. Being उगित्, 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः । is प्राप्त, but negated by 7.1.78 नाभ्यस्ताच्छतुः । ~ नुम्. Then the next sūtra gives optional नुम् for नपुंसक.

[विधिसूत्रम्] 7.1.79 वा नपुंसकस्य । ~ अभ्यासात् शतुः अङ्गस्य नुम् सर्वनामस्थाने

नुम् is optional for अङ्ग which is नपुंसकलिङ्ग ending with शतु after अभ्यस्त when सर्वनामस्थान follows.



वा<sup>0</sup> नपुंसकस्य<sup>6/1</sup> । ~ अभ्यस्तात्<sup>5/1</sup> शतुः<sup>6/1</sup> अङ्गस्य<sup>6/1</sup> नुम्<sup>1/1</sup> सर्वनामस्थाने<sup>7/1</sup>

2 words in the सूत्र; 5 words as अनुवृत्ति

- वा 0 – नुम् is optional.
- नपुंसकस्य 6/1 – Neuter; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- अभ्यस्तात् 5/1 – From 7.1.78 नाभ्यस्ताच्छतुः ।; in पूर्वपञ्चमी.
- शतुः 6/1 – From 7.1.78 नाभ्यस्ताच्छतुः ।; with तदन्तविधि, this is understood as “शत्रन्त-नपुंसकस्य”.
- अङ्गस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 6.4.1 अङ्गस्य ।; this is qualified by नपुंसकस्य.
- नुम् 1/1 – From 7.1.58 इदितो नुम् धातोः ।; this is आगम.

[LSK] अभ्यस्तात्<sup>5/1</sup> परः<sup>1/1</sup> यः<sup>1/1</sup> शता<sup>1/1</sup> तदन्तस्य<sup>6/1</sup> क्लीबस्य<sup>6/1</sup> वा<sup>0</sup> नुम्<sup>1/1</sup> सर्वनामस्थाने<sup>7/1</sup> ।

नुम्-आगम optionally takes place for neuter अङ्ग which ends with शतुँ after अभ्यस्त, when सर्वनामस्थान follows.

[LSK] ददन्ति<sup>1/3</sup>, ददति<sup>1/3</sup> ॥

ददत् + जस्

ददत् + शि 7.1.20 जश्शसोः शि । ~ नपुंसकात्

दद न्त् + इ 7.1.79 वा नपुंसकस्य । ~ अभ्यस्तात् शतुः सर्वनामस्थाने नुम्

ददंत् + इ 8.3.24 नश्चापदान्तस्य झलि । ~ अनुस्वारः

ददन्त् + इ 8.4.58 अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः ।

ददन्ति

नमु-अभाव-पक्षे

ददति

Declension of तुदत् (त-न-2)

शत्रन्त after अभ्यस्त

|   | एकवचनम्                             | द्विवचनम्     | बहुवचनम्                                      |
|---|-------------------------------------|---------------|---|
| 1 | ददत्/ददद्<br>7.1.23, 8.2.39, 8.4.56 | ददती 7.1.19   | ददन्ति/ददति 7.1.20, 7.1.79,<br>8.3.24, 8.4.58 |
| S | same as above                       | same as above | same as above                                 |
| 2 | same as above                       | same as above | same as above                                 |
| 3 | ददता                                | ददद्भ्याम्    | ददद्भिः                                       |
| 4 | ददते                                | same as above | ददद्भ्यः                                      |
| 5 | ददतः                                | same as above | same as above                                 |
| 6 | same as above                       | ददतोः         | ददताम्  |
| 7 | ददति                                | same as above | ददत्सु  |

त-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (3) तुदत्

तुदत् (one who is pushing) is a शतृ-अन्त-नपुंसक word with 6<sup>th</sup> conjugation (श-गणविकरण)

तुदँ (6U) to push

|                |   |
|----------------|---|
| तुद् + लट्     | 3.2.123 वर्तमाने लट् ।                      |
| तुद् + शतृँ    | 3.2.124 लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे ।    |
| तुद् + श + अत् | 3.1.77 तुदादिभ्यः शः । ~ सार्वधातुके कर्तरि |
| तुद् + अत्     | 6.1.79 अतो गुणे । ~ पररूपम्                 |
| तुदत्          | 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्  |

[LSK] तुदत् ॥

तुदत् + सुँ

|       |                                  |
|-------|----------------------------------|
| तुदत् | 7.1.23 स्वमोर्नपुंसकात् । ~ लुक् |
| तुदद् | 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य   |
| तुदत् | 8.4.56 वाऽवसाने । ~ झलाम् चर्    |

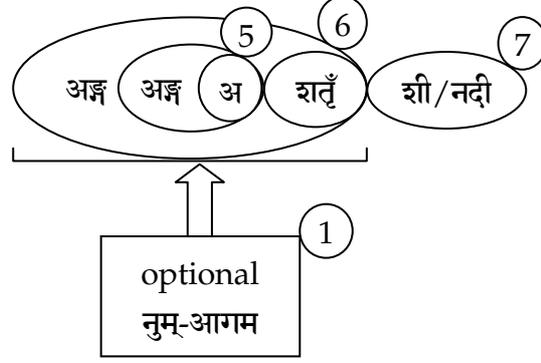
तुदत् + औ<sup>1/2</sup>

|            |                              |
|------------|------------------------------|
| तुदत् + शी | 7.1.19 नपुंसकाच्च । ~ औडः शी |
|------------|------------------------------|

The next sūtra is required.

[विधिसूत्रम्] 7.1.80 आच्छीनद्योर्नुम् । ~ अङ्गात् शतुः अङ्गस्य वा

नुम्-आगम is optional for अङ्ग which ends with a part of शतु which is after अङ्ग ending with अ, when शी or नदी follows.



आत्<sup>5/1</sup> शीनद्योः<sup>7/2</sup> नुम्<sup>1/1</sup> । ~ अङ्गात्<sup>5/1</sup> शतुः<sup>6/1</sup> अङ्गस्य<sup>6/1</sup> वा<sup>0</sup>

3 words in the सूत्र; 4 words as अनुवृत्ति

- आत्<sup>5/1</sup> – प्रातिपदिक is अ; in पूर्वपञ्चमी.
- शीनद्योः<sup>7/2</sup> – प्रातिपदिक is शी-नदी; शी च नदी च शीनद्यौ (ID), तयोः।; in परसप्तमी.
- नुम्<sup>1/1</sup> – This is आगम.
- वा<sup>0</sup> – नुम् is optional.
- अङ्गात्<sup>5/1</sup> – From अधिकारसूत्र 6.4.1 अङ्गस्य ।; विभक्तिपरिणाम with आत् in परसप्तमी.
- शतुः<sup>6/1</sup> – From 7.1.78 नाभ्यस्ताच्छतुः।; with तदन्तविधि, this is understood as “शत्रन्त-अङ्गस्य”.
- अङ्गस्य<sup>6/1</sup> – From अधिकारसूत्र 6.4.1 अङ्गस्य ।.

[LSK] अवर्ण-अन्तात्<sup>5/1</sup> अङ्गात्<sup>5/1</sup> परः<sup>1/1</sup> यः<sup>1/1</sup> शतुः<sup>6/1</sup> अवयवः<sup>1/1</sup> तदन्तस्य<sup>6/1</sup> नुम्<sup>1/1</sup> वा<sup>0</sup> शीनद्योः<sup>7/2</sup> ।

नुम्-आगम optionally takes place for अङ्ग ending with a part of शतुँ after अवर्ण-अन्त-अङ्ग, when शी or नदी follows.

[LSK] तुदन्ती<sup>1/2</sup>, तुदती<sup>1/2</sup> ।

तुदत् + औ

तुदत् + शी 7.1.19 नपुंसकाच्च । ~ औङः शी

तुद नत् + ई 7.1.80 आच्छीनद्योर्नुम् । ~ अङ्गात् शतुः अङ्गस्य वा

तुदन्त + ई 8.3.24 नश्चापदान्तस्य झलि । ~ अनुस्वारः

तुदन्त + ई 8.4.58 अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः ।

तुदन्ती

नमु-अभाव-पक्षे तुदती

[LSK] तुदन्ति<sup>1/3</sup> ॥

तुदत् + जस्

तुदत् + शि 7.1.20 जश्शसोः शि । ~ नपुंसकात्

तुदन्त् + इ 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थानेऽघातोः ।

तुदंत् + इ 8.3.24 नश्चापदान्तस्य झलि । ~ अनुस्वारः

तुदन्त् + इ 8.4.58 अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः ।

### Declension of तुदत् (त्-न-3)

शत्रन्त after अवर्ण other than शप् or श्यन्

|   | एकवचनम्                               | द्विवचनम्                                       | बहुवचनम्                                  |
|---|---------------------------------------|---|---|
| 1 | तुदत्/तुदद्<br>7.1.23, 8.2.39, 8.4.56 | तुदन्ती/तुदती 7.1.19, 7.1.80,<br>8.3.24, 8.4.58 | तुदन्ति 7.1.20, 7.1.70,<br>8.3.24, 8.4.58 |
| S | same as above                         | same as above                                   | same as above                             |
| 2 | same as above                         | same as above                                   | same as above                             |
| 3 | तुदता                                 | तुदञ्चाम्                                       | तुदद्भिः                                  |
| 4 | तुदते                                 | same as above                                   | तुदद्भ्यः                                 |
| 5 | तुदतः                                 | same as above                                   | same as above                             |
| 6 | same as above                         | तुदतोः  | तुदताम्                                   |
| 7 | तुदति                                 | same as above                                   | तुदत्सु                                   |

त-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (4) पचत्

पचत् (one who is cooking) is a शतृ-अन्त-नपुंसक word with 1<sup>st</sup> conjugation (शप्-गणविकरण)

डुपचष् (1U) to cook

पच् + लट् 3.2.123 वर्तमाने लट् ।

पच् + शतृँ 3.2.124 लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे ।

पच् + श + अत् 3.1.68 कर्तरि शप् । ~ सार्वधातुके

पच् + अत् 6.1.79 अतो गुणे । ~ पररूपम्

पचत् 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

पचत् + सुँ

पचत् 7.1.23 स्वमोर्नपुंसकात् । ~ लुक्

पचद् 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य

पचत् 8.4.56 वाऽवसाने । ~ झलाम् चर्

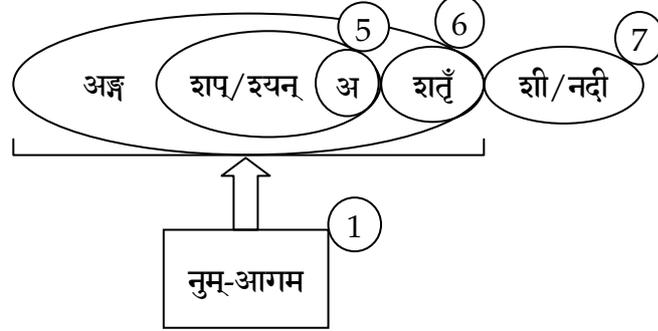
पचत् + औ<sup>1/2</sup>

पचत् + शी 7.1.19 नपुंसकाच्च । ~ औङः शी

The next sūtra is required.

[विधिसूत्रम्] 7.1.81 शप्श्यनोर्नित्यम् । ~ आत् शतुः अङ्गस्य नुम् शीनद्योः

नुम् is compulsory for अङ्ग which ends with a part of शतु which is after शप् or श्यन् ending with अ, when शी or नदी follows.



शप्श्यनोः 6/2 नित्यम् 2/1 । ~ आत् 5/1 शतुः 6/1 अङ्गस्य 6/1 नुम् 1/1 शीनद्योः 7/2

2 words in the सूत्र; 4 words as अनुवृत्ति

- शप्श्यनोः 6/2 – प्रातिपदिक is शप्-श्यन्; शप् च श्यन् च शप्शनौ (ID), तयोः।; in परसप्तमी.
- नित्यम् 2/1 – Compulsory. Since the नुम् in the previous sūtra was optional, this is for clarification.
- आत् 5/1 – From 7.1.80 आच्छीनद्योर्नुम् ।; in पूर्वपञ्चमी.
- शतुः 6/1 – From 7.1.78 नाभ्यस्ताच्छतुः।; with तदन्तविधि, this is understood as “शत्रन्त-अङ्गस्य”.
- अङ्गस्य 6/1 – From अधिकारसूत्र 6.4.1 अङ्गस्य ।.
- नुम् 1/1 – From 7.1.78 नाभ्यस्ताच्छतुः।; this is आगम.
- शीनद्योः 7/2 – From 7.1.80 आच्छीनद्योर्नुम् ।; in परसप्तमी.

[LSK] शप्शनोः 6/2 आत् 5/1 परः 1/1 यः 1/1 शतुः 6/1 अवयवः 1/1 तदन्तस्य 6/1 नित्यम् 2/1 नुम् 1/1 शीनद्योः 7/2 ।

नुम्-आगम compulsorily takes place for अङ्ग ending with शतुँ after the अ of शप् or श्यन्, when शी or नदी follows.

[LSK] पचन्ती 1/2 ।

पचत् + औ

पचत् + शी 7.1.19 नपुंसकाच्च । ~ औङः शी

पच न्त् + ई 7.1.81 शप्श्यनोर्नित्यम् । ~ आत् शतुः अङ्गस्य नुम् शीनद्योः

पचन्त् + ई 8.3.24 नश्चापदान्तस्य झलि । ~ अनुस्वारः

पचन्त् + ई 8.4.58 अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः ।

पचन्ती

[LSK] पचन्ति<sup>1/3</sup> ॥

पचत् + जस्

पचत् + शि 7.1.20 जश्शसोः शि । ~ नपुंसकात्

पच न्त् + इ 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः ।

तुदंत् + इ 8.3.24 नश्चापदान्तस्य झलि । ~ अनुस्वारः

पचन्त् + इ 8.4.58 अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः ।

Declension of पचत् (त-न-4)

शत्रन्त with शप्

|   | एकवचनम्                             | द्विवचनम्                                | बहुवचनम्                                 |
|---|-------------------------------------|--|--|
| 1 | पचत्/पचद्<br>7.1.23, 8.2.39, 8.4.56 | पचन्ती 7.1.19, 7.1.80,<br>8.3.24, 8.4.58 | पचन्ति 7.1.20, 7.1.70,<br>8.3.24, 8.4.58 |
| 5 | same as above                       | same as above                            | same as above                            |
| 2 | same as above                       | same as above                            | same as above                            |
| 3 | पचता                                | पचद्भ्याम्                               | पचद्भिः                                  |
| 4 | पचते                                | same as above                            | पचद्भ्यः                                 |
| 5 | पचतः                                | same as above                            | same as above                            |
| 6 | same as above                       | पचतोः                                    | पचताम्                                   |
| 7 | पचति                                | same as above                            | पचत्सु                                   |

## त-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (5) दीव्यत्

दीव्यत् (one who is playing) is a शतृ-अन्त-नपुंसक word with 4<sup>th</sup> conjugation, whose गणविकरण (additional suffix to conjugational suffix which comes after धातु) is श्यन्, दिवुँ (4A) to play, etc.

|                    |  |
|--------------------|--|
| दिव् + लट्         | 3.2.123 वर्तमाने लट् ।                     |
| दिव् + शतृ         | 3.2.124 लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे ।   |
| दिव् + श्यन् + अत् | 3.1.68 कर्तरि शप् । ~ सार्वधातुके          |
| दिव् + यत्         | 6.1.79 अतो गुणे । ~ पररूपम्                |
| दीव् + यत्         | 8.2.76 वोरूपधाया दीर्घ इकः । ~ धोतोः       |
| दीव्यत्            | 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम् |

[LSK] दीव्यत्<sup>1/1</sup> ।

दीव्यत् + सुँ

|         |                                  |
|---------|----------------------------------|
| दीव्यत् | 7.1.23 स्वमोर्नपुंसकात् । ~ लुक् |
| दीव्यद् | 8.2.39 झलां जशोऽन्ते । ~ पदस्य   |
| दीव्यत् | 8.4.56 वाऽवसाने । ~ झलाम् चर्    |

[LSK] दीव्यन्ती<sup>1/2</sup> ।

दीव्यत् + औ

|                |  |
|----------------|--|
| दीव्यत् + शी   | 7.1.19 नपुंसकाच्च । ~ औडः शी                               |
| दीव्य न्त् + ई | 7.1.81 शप्शानोर्नित्यम् । ~ आत् शतुः अङ्गस्य नुम् शीनद्योः |
| पचन्त् + ई     | 8.3.24 नश्चापदान्तस्य झलि । ~ अनुस्वारः                    |
| दीव्यन्त् + ई  | 8.4.58 अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः ।                          |

दीव्यन्ती

[LSK] दीव्यन्ति<sup>1/3</sup> ॥

दीव्यत् + जस्

|                |   |
|----------------|---|
| दीव्यत् + शि   | 7.1.20 जश्शसोः शि । ~ नपुंसकात्         |
| दीव्य न्त् + इ | 7.1.70 उगिद्चां सर्वनामस्थानेऽधातोः ।   |
| तुदन्त् + इ    | 8.3.24 नश्चापदान्तस्य झलि । ~ अनुस्वारः |
| दीव्यन्त् + इ  | 8.4.58 अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः ।       |

दीव्यन्ति

Declension of दीव्यत् (त-न-5)

शत्रन्त with श्यन्

|   | एकवचनम्                                   | द्विवचनम्                                   | बहुवचनम्                                       |
|---|---|---|--|
| 1 | दीव्यत्/दीव्यद्<br>7.1.23, 8.2.39, 8.4.56 | दीव्यन्ती 7.1.19, 7.1.80,<br>8.3.24, 8.4.58 | दीव्यन्ति 7.1.20,<br>7.1.70,<br>8.3.24, 8.4.58 |
| S | same as above                             | same as above                               | same as above                                  |
| 2 | same as above                             | same as above                               | same as above                                  |
| 3 | दीव्यता                                   | दीव्यद्याम्                                 | दीव्यद्भिः                                     |
| 4 | दीव्यते                                   | same as above                               | दीव्यद्भ्यः                                    |
| 5 | दीव्यतः                                   | same as above                               | same as above                                  |
| 6 | same as above                             | दीव्यतोः                                    | दीव्यताम्                                      |
| 7 | दीव्यति                                   | same as above                               | दीव्यत्सु                                      |

## Summary of declension of शत्रन्त for all लिङ्गs

Four types of declension:

धातुs can be divided into four according to how शर्तु-*ending* प्रातिपदिकs decline.

There are two areas in declension chart where the differences are made. One area is where सर्वनामस्थान follows, and the other area is where शी or नदी (ङीप) follows.

|   | अङ्ग for शर्तु (गण of धातु)  | In सर्वनामस्थान   | In शी and नदी                               |
|---|--|---|---|
| A | अभ्यस्त<br>(3 <sup>rd</sup> , धातु termed अभ्यस्त<br>by 6.1.5 and 6.1.6)   | Optional नुम् in neuter<br>7.1.79 वा नपुंसकस्य ।<br>No नुम् in other genders<br>7.1.78 नाभ्यस्ताच्छतुः। | No नुम्                                     |
| B | अङ्ग for शर्तु, ending<br>with अवर्ण<br>(आदन्त 2 <sup>rd</sup> , 6 <sup>th</sup> , "स्य"-<br>ending in लृट्)                         | नुम्<br>7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः ।/<br>7.1.72 नपुंसकस्य झलचः ।                                | Optional नुम्<br>7.1.80 आच्छीनद्योर्नुम् ।  |
| C | अङ्ग ending with अवर्ण<br>of शप्/श्यन्<br>(1 <sup>st</sup> , 4 <sup>th</sup> , सनाद्यन्त (णिच्,<br>सन्, etc.)<br>This is अपवाद to B. | नुम्<br>7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः ।/<br>7.1.72 नपुंसकस्य झलचः ।                                | नित्यम् नुम्<br>7.1.81 शप्श्योनोर्नित्यम् । |
| D | The rest<br>(2 <sup>nd</sup> , 5 <sup>th</sup> , 7 <sup>th</sup> , 8 <sup>th</sup> , 9 <sup>th</sup> )                               | नुम्<br>7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः ।/<br>7.1.72 नपुंसकस्य झलचः ।                                | No नुम्                                     |

| गण               | गणविकरण-<br>प्रत्ययः | अवर्णान्त-अङ्ग<br>for शतृ? | Note  |
|------------------|----------------------|----------------------------|---|
| 1 <sup>st</sup>  | शप् (अ)              | Yes                        |   |
| 2 <sup>nd</sup>  | शप् (अ)              | No                         | शप् is elided by लुक्.  |
|                  |                      | Yes                        | When धातु ends with आ   |
| 3 <sup>rd</sup>  | शप् (अ)              | No                         | शप् is elided by श्चु, which causes द्वित्व. The reduplicated धातु gains अभ्यस्त-संज्ञा. आ at the end of अभ्यस्त is elided by 6.4.112 श्राभ्यस्तयोरान्तः ।        |
| 4 <sup>th</sup>  | श्यन् (य)            | Yes                        |   |
| 5 <sup>th</sup>  | श्रु (नु)            | No                         |   |
| 6 <sup>th</sup>  | श (अ)                | Yes                        |   |
| 7 <sup>th</sup>  | श्रम् (न)            | No                         | श्रम् is आगम, whose content is न. However, there is no धातु in 7 <sup>th</sup> गण which ends with vowel. Thus, there is no possibility to have अवर्ण-ending अङ्ग. |
| 8 <sup>th</sup>  | उ (उ)                | No                         |   |
| 9 <sup>th</sup>  | श्ना (ना)            | No                         | आ of श्ना is elided by 6.4.112 श्राभ्यस्तयोरान्तः ।   |
| 10 <sup>th</sup> | णिच् + शप् (अय)      | Yes                        |   |
| लृट्-<br>लकार    | स्य (स्य)            | Yes                        |   |
| अभ्यस्त          |                      |                            | Any reduplicated धातु and जक्षात्यादिगण.  |
| सनाद्यन्त        | + शप्                | Yes                        |   |

Group A: 3<sup>rd</sup> गण

Declension of शर्त्- ending with धातु in 3<sup>rd</sup> गण

In neuter सर्वनामस्थान, optional नुम् by 7.1.79 वा नपुंसकस्य । ~ नुम्

In everywhere else, no नुम् by 7.1.78 नाभ्यस्ताच्छतुः। ~ नुम्

|   | 1     | 2          | 3        | 1        | 2          | 3        | 1                     | 2    | 3               |
|---|-------|------------|----------|----------|------------|----------|-----------------------|------|-----------------|
| 1 | ददन्  | ददतौ       | ददतः     | ददती     | ददत्यौ     | ददत्यः   | ददत्                  | ददती | ददति/<br>ददन्ति |
| 5 | s.a.  | s.a.       | s.a.     | ददति     | s.a.       | s.a.     | s.a.                  | s.a. | s.a.            |
| 2 | ददतम् | s.a.       | ददतः     | ददतीम्   | s.a.       | ददतीः    | s.a.                  | s.a. | s.a.            |
| 3 | ददता  | ददत्र्याम् | ददद्भिः  | ददत्या   | ददतीभ्याम् | ददतीभिः  | same as for masculine |      |                 |
| 4 | ददते  | s.a.       | ददद्भ्यः | ददत्यै   | s.a.       | ददतीभ्यः |                       |      |                 |
| 5 | ददतः  | s.a.       | s.a.     | ददत्याः  | s.a.       | s.a.     |                       |      |                 |
| 6 | s.a.  | ददतोः      | ददताम्   | s.a.     | ददत्योः    | ददतीनाम् |                       |      |                 |
| 7 | ददति  | s.a.       | ददत्सु   | ददत्याम् | s.a.       | ददतीषु   |                       |      |                 |

डुदाञ् (3U) to give

दा + लट् 3.2.123 वर्तमाने लट् ।

दा + शर्त् 3.2.124 लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे ।

दा + शप् + अत् 3.1.68 कर्तरि शप् । ~ सार्वधातुके

दा + अत् 2.4.75 जुहोत्यादिभ्यः श्चुः । ~ शपः

दा दा + अत् 6.1.10 श्चौ । ~ प्रथमस्य द्वे

द दा + अत् 7.4.59 ह्रस्वः । ~ अभ्यासस्य

द द् + अत् 6.4.112 श्नाभ्यस्तयोरातः । ~ लोपः सार्वधातुके किङिति

ददत्

The अङ्ग for शर्त् is दद्, which is termed अभ्यस्त by 6.1.5 उभे अभ्यस्तम् ।

Group B: आदन्त 2<sup>rd</sup>, 6<sup>th</sup> गण, लृट्-आदेश

Declension of शतृ- ending with आदन्त-धातु in 2<sup>nd</sup> गण

In सर्वनामस्थान, नुम् by 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः ।

In नदी and शी, optional नुम् by 7.1.80 आच्छीनद्योर्नुम् ।

|   | 1       | 2          | 3        | 1                       | 2                           | 3                       | 1                        | 2               | 3      |
|---|---------|------------|----------|-------------------------|-----------------------------|-------------------------|--------------------------|-----------------|--------|
| 1 | यान्    | यान्तौ     | यान्तः   | यान्ती/<br>याती         | यान्त्यौ/<br>यात्यौ         | यान्त्यः/<br>यात्यः     | यात्                     | याती/<br>यान्ती | यान्ति |
| S | s.a.    | s.a.       | s.a.     | यान्ति/<br>याति         | s.a.                        | s.a.                    | s.a.                     | s.a.            | s.a.   |
| 2 | यान्तम् | s.a.       | यातः     | यान्तीम्/<br>यातीम्     | s.a.                        | यान्तीः/<br>यातीः       | s.a.                     | s.a.            | s.a.   |
| 3 | याता    | यात्र्याम् | याद्भिः  | यान्त्या/<br>यात्या     | यान्तीभ्याम्/<br>यातीभ्याम् | यान्तीभिः/<br>यातीभिः   | same as for<br>masculine |                 |        |
| 4 | याते    | s.a.       | याद्भ्यः | यान्त्यै/<br>यात्यै     | s.a.                        | यान्तीभ्यः/<br>यातीभ्यः |                          |                 |        |
| 5 | यातः    | s.a.       | s.a.     | यान्त्याः/<br>यात्याः   | s.a.                        | s.a.                    |                          |                 |        |
| 6 | s.a.    | यातोः      | याताम्   | s.a.                    | यान्त्योः/<br>यात्योः       | यान्तीनाम्/<br>यातीनाम् |                          |                 |        |
| 7 | याति    | s.a.       | यात्सु   | यान्त्याम्/<br>यात्याम् | s.a.                        | यान्तीषु/<br>यातीषु     |                          |                 |        |

या प्रापणे (2P) to go

या + लृट् 3.2.123 वर्तमाने लृट् ।

या + शतृ 3.2.124 लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे ।

या + शप् + अत् 3.1.68 कर्तरि शप् । ~ सार्वधातुके

या + अत् 2.4.72 अदिप्रभृतिभ्यः शपः । ~ लुक्

यात् 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः । ~ एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

The अङ्ग for शतृ is या, which is अवर्ण-अन्त. The अवर्ण is not of शप् or श्यन्.

Declension of शतृँ-ending with आदन्त-धातु in 6<sup>th</sup> गण

In सर्वनामस्थान, नुम् by 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः ।

In नदी and शी, optional नुम् by 7.1.80 आच्छीनघोर्नुम् ।

|   | 1        | 2           | 3         | 1                         | 2                                 | 3                         | 1                        | 2                 | 3       |
|---|----------|-------------|-----------|---------------------------|-----------------------------------|---------------------------|--------------------------|-------------------|---------|
| 1 | तुदन्    | तुदन्तौ     | तुदन्तः   | तुदन्ती/<br>तुदती         | तुदन्त्यौ/<br>तुदत्यौ             | तुदन्त्यः/<br>तुदत्यः     | तुदत्                    | तुदती/<br>तुदन्ती | तुदन्ति |
| S | s.a.     | s.a.        | s.a.      | तुदन्ति/<br>तुदति         | s.a.                              | s.a.                      | s.a.                     | s.a.              | s.a.    |
| 2 | तुदन्तम् | s.a.        | तुदतः     | तुदन्तीम्/<br>तुदतीम्     | s.a.                              | तुदन्तीः/<br>तुदतीः       | s.a.                     | s.a.              | s.a.    |
| 3 | तुदता    | तुदन्त्याम् | तुदद्भिः  | तुदन्त्या/<br>तुदत्या     | तुदन्तीभ्याम्<br>/<br>तुदतीभ्याम् | तुदन्तीभिः/<br>तुदतीभिः   | same as for<br>masculine |                   |         |
| 4 | तुदते    | s.a.        | तुदद्भ्यः | तुदन्त्यै/<br>तुदत्यै     | s.a.                              | तुदन्तीभ्यः/<br>तुदतीभ्यः |                          |                   |         |
| 5 | तुदतः    | s.a.        | s.a.      | तुदन्त्याः/<br>तुदत्याः   | s.a.                              | s.a.                      |                          |                   |         |
| 6 | s.a.     | तुदतोः      | तुदताम्   | s.a.                      | तुदन्त्योः/<br>तुदत्योः           | तुदन्तीनाम्/<br>तुदतीनाम् |                          |                   |         |
| 7 | तुदति    | s.a.        | तुदत्सु   | तुदन्त्याम्/<br>तुदत्याम् | s.a.                              | तुदन्तीषु/<br>तुदतीषु     |                          |                   |         |

तुदँ (6U) to push

तुद् + लट् 3.2.123 वर्तमाने लट् ।

तुद् + शतृँ 3.2.124 लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे ।

तुद् + श + अत् 3.1.77 तुदादिभ्यः शः । ~ सार्वधातुके कर्तरि

तुद् + अत् 6.1.79 अतो गुणे । ~ पररूपम्

तुदत् 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

The अङ्ग for शतृँ is तुद, which is अवर्ण-अन्त. The अवर्ण is not of शप् or श्यन्.

Declension of शर्तु-<sup>1</sup>ending of लृट्

In सर्वनामस्थान, नुम् by 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः ।

In नदी and शी, optional नुम् by 7.1.80 आच्छीनद्योर्नुम् ।

|   | 1          | 2             | 3           | 1                             | 2                                 | 3                             | 1                     | 2                     | 3         |
|---|------------|---------------|-------------|-------------------------------|-----------------------------------|-------------------------------|-----------------------|-----------------------|-----------|
| 1 | नेष्यन्    | नेष्यन्तौ     | नेष्यन्तः   | नेष्यन्ती/<br>नेष्यती         | नेष्यन्त्यौ/<br>नेष्यत्यौ         | नेष्यन्त्यः/<br>नेष्यत्यः     | नेष्यत्               | नेष्यती/<br>नेष्यन्ती | नेष्यन्ति |
| S | s.a.       | s.a.          | s.a.        | नेष्यन्ति/<br>नेष्यति         | s.a.                              | s.a.                          | s.a.                  | s.a.                  | s.a.      |
| 2 | नेष्यन्तम् | s.a.          | नेष्यतः     | नेष्यन्तीम्/<br>नेष्यतीम्     | s.a.                              | नेष्यन्तीः/<br>नेष्यतीः       | s.a.                  | s.a.                  | s.a.      |
| 3 | नेष्यता    | नेष्यन्त्याम् | नेष्यद्भिः  | नेष्यन्त्या/<br>नेष्यत्या     | नेष्यन्तीभ्याम्/<br>नेष्यतीभ्याम् | नेष्यन्तीभिः/<br>नेष्यतीभिः   | same as for masculine |                       |           |
| 4 | नेष्यते    | s.a.          | नेष्यद्भ्यः | नेष्यन्त्यै/<br>नेष्यत्यै     | s.a.                              | नेष्यन्तीभ्यः/<br>नेष्यतीभ्यः |                       |                       |           |
| 5 | नेष्यतः    | s.a.          | s.a.        | नेष्यन्त्याः/<br>नेष्यत्याः   | s.a.                              | s.a.                          |                       |                       |           |
| 6 | s.a.       | नेष्यतोः      | नेष्यताम्   | s.a.                          | नेष्यन्त्योः/<br>नेष्यत्योः       | नेष्यन्तीनाम्/<br>नेष्यतीनाम् |                       |                       |           |
| 7 | नेष्यति    | s.a.          | नेष्यत्सु   | नेष्यन्त्याम्/<br>नेष्यत्याम् | s.a.                              | नेष्यन्तीषु/<br>नेष्यतीषु     |                       |                       |           |

णी प्रापणे (1U) to lead

नी 6.1.65 णो नः । ~ धात्वादेः

नी + लृट् 3.2.13 लृट् शेषे च । ~ भविष्यति

नी + शर्तु 3.3.14 लृट्ः सद्वा ।

नी + स्य + अत् 3.1.33 स्यतासी लृलुटोः ।

ने + स्य + अत् 7.3.84 सार्वधातुकार्धधातुकयोः । ~ गुणः

ने + स्यत् 6.1.79 अतो गुणे । ~ पररूपम्

ने + ष्यत् 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः ।

नेष्यत् 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

The अङ्ग for शर्तु is नेष्य, which is अवर्ण-अन्त. The अवर्ण is not of शप् or श्यन्.

Group C: 1<sup>st</sup>, 4<sup>th</sup> गण, सनाद्यन्तधातु

Declension of शर्त्-ending with धातु in 1<sup>st</sup> गण

In सर्वनामस्थान, नुम् by 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः ।

In नदी and शी, नुम् by 7.1.81 शङ्योनोर्नित्यम् । ~ आत् शीनद्योः नुम्

|   | 1       | 2          | 3        | 1          | 2            | 3          | 1                     | 2      | 3      |
|---|---------|------------|----------|------------|--------------|------------|-----------------------|--------|--------|
| 1 | पचन्    | पचन्तौ     | पचन्तः   | पचन्ती     | पचन्त्यौ     | पचन्त्यः   | पचत्                  | पचन्ती | पचन्ति |
| S | s.a.    | s.a.       | s.a.     | पचन्ति     | s.a.         | s.a.       | s.a.                  | s.a.   | s.a.   |
| 2 | पचन्तम् | s.a.       | पचतः     | पचन्तीम्   | s.a.         | पचन्तीः    | s.a.                  | s.a.   | s.a.   |
| 3 | पचता    | पचद्भ्याम् | पचद्भिः  | पचन्त्या   | पचन्तीभ्याम् | पचन्तीभिः  | same as for masculine |        |        |
| 4 | पचते    | s.a.       | पचद्भ्यः | पचन्त्यै   | s.a.         | पचन्तीभ्यः |                       |        |        |
| 5 | पचतः    | s.a.       | s.a.     | पचन्त्याः  | s.a.         | s.a.       |                       |        |        |
| 6 | s.a.    | पचतोः      | पचताम्   | s.a.       | पचन्त्योः    | पचन्तीनाम् |                       |        |        |
| 7 | पचति    | s.a.       | पचत्सु   | पचन्त्याम् | s.a.         | पचन्तीषु   |                       |        |        |

डुपँचष् पाके (1U) to cook

पच् + लट् 3.2.123 वर्तमाने लट् ।

पच् + शर्त् 3.2.124 लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे ।

पच् + शप् + अत् 3.1.68 कर्तरि शप् । ~ सार्वधातुके

पच् + अत् 6.1.79 अतो गुणे । ~ पररूपम्

पचत् 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

The अङ्ग for शर्त् is पच्, which is अवर्ण-अन्त. Since this अवर्ण is of शप् or श्यन्, 7.1.81 शङ्योनोर्नित्यम् । ~ आत् शीनद्योः नुम् is applied.

सनाद्यन्त-धातुs (णिच्-ending such as धातुs in 10<sup>th</sup> गण and causative धातु, सन्, etc.) are suffixed with शप् when शर्त् follows. Thus they are treated in the same manner as धातुs in 1<sup>st</sup> गण.

Declension of शर्त्-ending with धातु in 4<sup>th</sup> गण

In सर्वनामस्थान, नुम् by 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः ।

In नदी and शी, नुम् by 7.1.81 शष्पयोर्नोर्नित्यम् । ~ आत् शीनद्योः नुम्

|   | 1          | 2             | 3           | 1             | 2               | 3             | 1                     | 2         | 3         |
|---|------------|---------------|-------------|---------------|-----------------|---------------|-----------------------|-----------|-----------|
| 1 | दीव्यन्    | दीव्यन्तौ     | दीव्यन्तः   | दीव्यन्ती     | दीव्यन्त्यौ     | दीव्यन्त्यः   | दीव्यत्               | दीव्यन्ती | दीव्यन्ति |
| S | s.a.       | s.a.          | s.a.        | दीव्यन्ति     | s.a.            | s.a.          | s.a.                  | s.a.      | s.a.      |
| 2 | दीव्यन्तम् | s.a.          | दीव्यतः     | दीव्यन्तीम्   | s.a.            | दीव्यन्तीः    | s.a.                  | s.a.      | s.a.      |
| 3 | दीव्यता    | दीव्यन्त्याम् | दीव्यन्तिः  | दीव्यन्त्या   | दीव्यन्तीभ्याम् | दीव्यन्तीभिः  | same as for masculine |           |           |
| 4 | दीव्यते    | s.a.          | दीव्यन्त्यः | दीव्यन्त्यै   | s.a.            | दीव्यन्तीभ्यः |                       |           |           |
| 5 | दीव्यतः    | s.a.          | s.a.        | दीव्यन्त्याः  | s.a.            | s.a.          |                       |           |           |
| 6 | s.a.       | दीव्यतोः      | दीव्यताम्   | s.a.          | दीव्यन्त्योः    | दीव्यन्तीनाम् |                       |           |           |
| 7 | दीव्यति    | s.a.          | दीव्यत्सु   | दीव्यन्त्याम् | s.a.            | दीव्यन्तीषु   |                       |           |           |

दिवुं क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु (4P) to play, etc.

दिव् + लट् 3.2.123 वर्तमाने लट् ।

दिव् + शर्त् 3.2.124 लटः शर्त्शानचावप्रथमासमानाधिकरणे ।

दिव् + श्यन् + अत् 3.1.69 दिवादिभ्यः श्यन् । ~ सार्वधातुके कर्तरि

दिव् + यत् 6.1.79 अतो गुणे । ~ पररूपम्

दीव् + यत् 8.2.77 हलि च । ~ धातोः वीः उपधायाः दीर्घः इकः

दीव्यत् 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

The अङ्ग for शर्त् is दीव्, which is अवर्ण-अन्त. Since this अवर्ण is of शप् or श्यन्, 7.1.81 शष्पयोर्नोर्नित्यम् । ~ आत् शीनद्योः नुम् is applied.

Group D: 2<sup>nd</sup>, 5<sup>th</sup>, 7<sup>th</sup>, 8<sup>th</sup>, 9<sup>th</sup> गण

Declension of शतृ-<sup>2</sup>ending with घातु in 2<sup>nd</sup> गण

In सर्वनामस्थान, नुम् by 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थानेऽघातोः ।

In नदी and शी, no नुम्

|   | 1       | 2          | 3        | 1        | 2          | 3        | 1                     | 2    | 3                    |
|---|---------|------------|----------|----------|------------|----------|-----------------------|------|----------------------|
| 1 | अदन्    | अदन्तौ     | अदन्तः   | अदती     | अदत्यौ     | अदत्यः   | अदत्                  | अदती | अदन्ति <sup>22</sup> |
| S | s.a.    | s.a.       | s.a.     | अदति     | s.a.       | s.a.     | s.a.                  | s.a. | s.a.                 |
| 2 | अदन्तम् | s.a.       | अदतः     | अदतीम्   | s.a.       | अदतीः    | s.a.                  | s.a. | s.a.                 |
| 3 | अदता    | अदन्त्याम् | अदद्भिः  | अदत्या   | अदतीभ्याम् | अदतीभिः  | same as for masculine |      |                      |
| 4 | अदते    | s.a.       | अदद्भ्यः | अदत्यै   | s.a.       | अदतीभ्यः |                       |      |                      |
| 5 | अदतः    | s.a.       | s.a.     | अदत्याः  | s.a.       | s.a.     |                       |      |                      |
| 6 | s.a.    | अदतोः      | अदताम्   | s.a.     | अदत्योः    | अदतीनाम् |                       |      |                      |
| 7 | अदति    | s.a.       | अदत्सु   | अदत्याम् | s.a.       | अदतीषु   |                       |      |                      |

अदँ भक्षणे (2P) to eat

अद् + लट् 3.2.123 वर्तमाने लट् ।

अद् + शतृँ 3.2.124 लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे ।

अद् + शप् + अत् 3.1.68 कर्तरि शप् । ~ सार्वधातुके

अद् + अत् 2.4.72 अदिप्रभृतिभ्यः शपः । ~ लुक्

अदत्

The अङ्ग for शतृँ is अद्, which is not अवर्ण-अन्त. Thus there is no occasion for नुम् with शी and नदी by 7.1.80 आच्छीनद्योर्नुम् । and 7.1.81 शप्शोर्नोर्नित्यम् ।.

<sup>22</sup> The word “प्रयन्ति” in the first anuvāka of भृगु-वह्नी of तैत्तिरीयोपनिषद् is a noun made of प्रातिपदिक प्रयत् in neuter with 1/3 ending. प्र is the उपसर्ग; इण् गतौ (2P to go) is the घातु, शतृ is the कृत्-प्रत्यय. इ + अत् = यत् with 6.4.81 इणो यण् ।.

Declension of शर्त्-ending with धातु in 5<sup>th</sup> गण

In सर्वनामस्थान, नुम् by 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः ।

In नदी and शी, no नुम्

|   | 1          | 2             | 3           | 1           | 2             | 3           | 1                     | 2       | 3         |
|---|------------|---------------|-------------|-------------|---------------|-------------|-----------------------|---------|-----------|
| 1 | सुन्वन्    | सुन्वन्तौ     | सुन्वन्तः   | सुन्वती     | सुन्वत्यौ     | सुन्वत्यः   | सुन्वत्               | सुन्वती | सुन्वन्ति |
| S | s.a.       | s.a.          | s.a.        | सुन्वति     | s.a.          | s.a.        | s.a.                  | s.a.    | s.a.      |
| 2 | सुन्वन्तम् | s.a.          | सुन्वतः     | सुन्वतीम्   | s.a.          | सुन्वतीः    | s.a.                  | s.a.    | s.a.      |
| 3 | सुन्वता    | सुन्वद्भ्याम् | सुन्वद्भिः  | सुन्वत्या   | सुन्वतीभ्याम् | सुन्वतीभिः  | same as for masculine |         |           |
| 4 | सुन्वते    | s.a.          | सुन्वद्भ्यः | सुन्वत्यै   | s.a.          | सुन्वतीभ्यः |                       |         |           |
| 5 | सुन्वतः    | s.a.          | s.a.        | सुन्वत्याः  | s.a.          | s.a.        |                       |         |           |
| 6 | s.a.       | सुन्वतोः      | सुन्वताम्   | s.a.        | सुन्वत्योः    | सुन्वतीनाम् |                       |         |           |
| 7 | सुन्वति    | s.a.          | सुन्वत्सु   | सुन्वत्याम् | s.a.          | सुन्वतीषु   |                       |         |           |

षुञ् अभिषवे (5U) to press

सु 6.1.64 धात्वादेः षः सः ।

सु + लट् 3.2.123 वर्तमाने लट् ।

सु + शर्त् 3.2.124 लटः शर्त्शानचावप्रथमासमानाधिकरणे ।

सु + श्चु + अत् 3.1.73 स्वादिभ्यः श्चुः । ~ सार्वधातुके कर्तरि

सु + न्व् + अत् 6.4.87 हुश्चुवोः सार्वधातुके । ~ अचि यण्

सुन्वत्

The अङ्ग for शर्त् is सुन्व्, which is not अवर्ण-अन्त. Thus there is no occasion for नुम् with शी and नदी by 7.1.80 आच्छीनद्योर्नुम् । and 7.1.81 शष्च्योनोर्नित्यम् ।

Declension of शर्त्-ending with धातु in 7<sup>th</sup> गण

In सर्वनामस्थान, नुम् by 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः ।

In नदी and शी, no नुम्

|   | 1          | 2             | 3           | 1           | 2             | 3           | 1                     | 2       | 3         |
|---|------------|---------------|-------------|-------------|---------------|-------------|-----------------------|---------|-----------|
| 1 | रुन्धन्    | रुन्धन्तौ     | रुन्धन्तः   | रुन्धती     | रुन्धत्यौ     | रुन्धत्यः   | रुन्धत्               | रुन्धती | रुन्धन्ति |
| S | s.a.       | s.a.          | s.a.        | रुन्धति     | s.a.          | s.a.        | s.a.                  | s.a.    | s.a.      |
| 2 | रुन्धन्तम् | s.a.          | रुन्धतः     | रुन्धतीम्   | s.a.          | रुन्धतीः    | s.a.                  | s.a.    | s.a.      |
| 3 | रुन्धता    | रुन्धत्र्याम् | रुन्धद्भिः  | रुन्धत्या   | रुन्धतीभ्याम् | रुन्धतीभिः  | same as for masculine |         |           |
| 4 | रुन्धते    | s.a.          | रुन्धद्भ्यः | रुन्धत्यै   | s.a.          | रुन्धतीभ्यः |                       |         |           |
| 5 | रुन्धतः    | s.a.          | s.a.        | रुन्धत्याः  | s.a.          | s.a.        |                       |         |           |
| 6 | s.a.       | रुन्धतोः      | रुन्धताम्   | s.a.        | रुन्धत्योः    | रुन्धतीनाम् |                       |         |           |
| 7 | रुन्धति    | s.a.          | रुन्धत्सु   | रुन्धत्याम् | s.a.          | रुन्धतीषु   |                       |         |           |

रुधिर् आवरणे (7U) to obstruct

रुध् + लट् 3.2.123 वर्तमाने लट् ।

रुध् + शर्त् 3.2.124 लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे ।

रु + न् + ध् + अत् 3.1.78 रुधादिभ्यः श्रम् । ~ सार्वधातुके कर्तरि

रुन्धत्

The अङ्ग for शर्त् is रुन्ध, which is not अवर्ण-अन्त. Thus there is no occasion for नुम् with शी and नदी by 7.1.80 आच्छीनद्योर्नुम् । and 7.1.81 शप्शयोर्नित्यम् ।

Declension of शर्त्-ending with धातु in 8<sup>th</sup> गण

In सर्वनामस्थान, नुम् by 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः ।

In नदी and शी, no नुम्

|   | 1          | 2             | 3           | 1           | 2             | 3           | 1                     | 2       | 3         |
|---|------------|---------------|-------------|-------------|---------------|-------------|-----------------------|---------|-----------|
| 1 | कुर्वन्    | कुर्वन्तौ     | कुर्वन्तः   | कुर्वती     | कुर्वत्यौ     | कुर्वत्यः   | कुर्वत्               | कुर्वती | कुर्वन्ति |
| S | s.a.       | s.a.          | s.a.        | कुर्वति     | s.a.          | s.a.        | s.a.                  | s.a.    | s.a.      |
| 2 | कुर्वन्तम् | s.a.          | कुर्वतः     | कुर्वतीम्   | s.a.          | कुर्वतीः    | s.a.                  | s.a.    | s.a.      |
| 3 | कुर्वता    | कुर्वन्ध्याम् | कुर्वद्भिः  | कुर्वत्या   | कुर्वतीभ्याम् | कुर्वतीभिः  | same as for masculine |         |           |
| 4 | कुर्वते    | s.a.          | कुर्वद्भ्यः | कुर्वत्यै   | s.a.          | कुर्वतीभ्यः |                       |         |           |
| 5 | कुर्वतः    | s.a.          | s.a.        | कुर्वत्याः  | s.a.          | s.a.        |                       |         |           |
| 6 | s.a.       | कुर्वतोः      | कुर्वताम्   | s.a.        | कुर्वत्योः    | कुर्वतीनाम् |                       |         |           |
| 7 | कुर्वति    | s.a.          | कुर्वत्सु   | कुर्वत्याम् | s.a.          | कुर्वतीषु   |                       |         |           |

डुकृञ् करणे (8U) to do

कृ + लट् 3.2.123 वर्तमाने लट् ।

कृ + शर्त् 3.2.124 लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे ।

कृ + उ + अत् 3.1.79 तनादिकृञ्भ्यः उः । ~ सार्वधातुके कर्तरि

कर् + उ + अत् 7.3.84 सार्वधातुकार्धधातुकयोः । ~ गुणः

कुर + उ + अत् 6.4.110 अत उत्सार्वधातुके ।

कुर + व् + अत् 6.1.77 इको यणचि । ~ संहितायाम्

कुर्वत् 8.2.79 न भकुर्छुराम् । ~ दीर्घः उपधायाः

The अङ्ग for शर्त् is कुर्व, which is not अवर्ण-अन्त. Thus there is no occasion for नुम् with शी and नदी by 7.1.80 आच्छीनद्योर्नुम् । and 7.1.81 शप्शयोर्नित्यम् ।

Declension of शतृ- ending with धातु in 9<sup>th</sup> गण

In सर्वनामस्थान, नुम् by 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः ।

In नदी and शी, no नुम्

|   | 1          | 2             | 3           | 1           | 2             | 3           | 1                     | 2       | 3         |
|---|------------|---------------|-------------|-------------|---------------|-------------|-----------------------|---------|-----------|
| 1 | मुष्णन्    | मुष्णन्तौ     | मुष्णन्तः   | मुष्णती     | मुष्णत्यौ     | मुष्णत्यः   | मुष्णत्               | मुष्णती | मुष्णन्ति |
| S | s.a.       | s.a.          | s.a.        | मुष्णति     | s.a.          | s.a.        | s.a.                  | s.a.    | s.a.      |
| 2 | मुष्णन्तम् | s.a.          | मुष्णतः     | मुष्णतीम्   | s.a.          | मुष्णतीः    | s.a.                  | s.a.    | s.a.      |
| 3 | मुष्णता    | मुष्णद्भ्याम् | मुष्णद्भिः  | मुष्णत्या   | मुष्णतीभ्याम् | मुष्णतीभिः  | same as for masculine |         |           |
| 4 | मुष्णते    | s.a.          | मुष्णद्भ्यः | मुष्णत्यै   | s.a.          | मुष्णतीभ्यः |                       |         |           |
| 5 | मुष्णतः    | s.a.          | s.a.        | मुष्णत्याः  | s.a.          | s.a.        |                       |         |           |
| 6 | s.a.       | मुष्णतोः      | मुष्णताम्   | s.a.        | मुष्णत्योः    | मुष्णतीनाम् |                       |         |           |
| 7 | मुष्णति    | s.a.          | मुष्णत्सु   | मुष्णत्याम् | s.a.          | मुष्णतीषु   |                       |         |           |

मुषँ स्तेये (9P) to steal

मुष् + लट् 3.2.123 वर्तमाने लट् ।

मुष् + शतृँ 3.2.124 लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे ।

मुष् + श्ना + अत् 3.1.81 क्र्यादिभ्यः श्ना । ~ सार्वधातुके कर्तरि

मुष् + न् + अत् 6.4.112 श्नाभ्यस्तयोरतः । ~ लोपः सार्वधातुके विडति

मुष्णत् 8.4.1 रषाभ्यां णो नः समानपदे ।

The अङ्ग for शतृँ is मुष्ण, which is not अवर्ण-अन्त. Thus there is no occasion for नुम् with शी and नदी by 7.1.80 आच्छीनद्योर्नुम् । and 7.1.81 शप्श्र्योर्नोर्नित्यम् ।

ष-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (1) धनुष्

धनुष् (bow)

प्रत्यय-अवयव-स् (ष)-ending word

धनँ (3P) धान्ये to produce fruit

धन् + उस् (उ०) 2.119 अतिपृवपियजितनिधनितपिभ्यो नित्

धन् + उष् 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः।

धनुष् 1.2.46 कृत्तद्धितसमासाश्च । ~ प्रातिपदिकम्

[LSK] धनुः<sup>1/1</sup>।

धनुष् + सुँ

धनुष् 7.1.23 स्वमोर्नपुंसकात् । ~ लुक्

धनुँ 8.2.66 ससजुषो रुँः ।

In the view of 8.2.66 ससजुषो रुँः ।, the ष by 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः। is असिद्धवत्.

धनुः 8.3.15 खरवसानयोर्विसर्जनीयः । ~ रः पदस्य

[LSK] धनुषी<sup>1/2</sup>।

धनुष् + औ

धनुष् + शी 7.1.19 नपुंसकाच्च । ~ औङः शी

धनुषी

[LSK] “सान्त” (6.4.10) इति<sup>0</sup> दीर्घः<sup>1/1</sup> । “नुम्-विसर्जनीय” (8.3.58) इति<sup>0</sup> षः<sup>1/1</sup> । धनूषि<sup>1/3</sup> ।धनुष् + जस्<sup>1/3</sup>

धनुष् + शि 7.1.20 जश्शसोः शि । ~ नपुंसकात्

धनु न् ष + इ 7.1.72 नपुंसकस्य झलचः । ~ नुम्

धनु न् स् + इ 6.4.10 सान्तमहतः संयोगस्य । ~ दीर्घः

ष by 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः। is असिद्धवत्.

धनूस् + इ 8.3.24 नश्चापदान्तस्य झलि ।

धनूष् + इ 8.3.58 नुम्-विसर्जनीय-शर्-व्यवायेऽपि ।

[LSK] धनुषा<sup>3/1</sup>।[LSK] धनुर्भ्याम्<sup>3/2</sup>।

धनुष् + भ्याम्

धनुँ + भ्याम् 8.2.66 ससजुषो रुँः ।

In the view of 8.2.66 ससजुषो रूँः ।, the ष by 8.3.59 आदेशप्रत्यययोः। is असिद्धवत्.

धनुर्भ्याम्

धनुष् + सुप्<sup>7/3</sup>

धनुरूँ + सु 8.2.66 ससजुषो रूँः ।

धनुः + सु 8.3.15 खरवसानयोर्विसर्जनीयः । ~ रः पदस्य

धनुस् + सु 8.3.36 वा शरि । ~ विसर्जनीयस्य सः

धनुस् + षु 8.3.58 नुम्-विसर्जनीय-शर्-व्यवायेऽपि ।

धनुष् + षु 8.4.41 ट्टुना ट्टुः । ~ स्तोः

धनुष्

धनुः + सु 8.3.15 खरवसानयोर्विसर्जनीयः । ~ रः पदस्य

धनुःषु 8.3.58 नुम्-विसर्जनीय-शर्-व्यवायेऽपि ।

धनुःषु

[LSK] एवम्<sup>0</sup> चक्षुष्<sup>1/1</sup> हविष्<sup>1/1</sup> आदयः<sup>1/3</sup> ॥<sup>23</sup>

### Declension of धनुष् (ष-न-1)

|   | एकवचनम्                     | द्विवचनम्          | बहुवचनम्  |
|---|-----------------------------|--------------------|---|
| 1 | धनुः 7.1.23, 8.2.66, 8.3.15 | धनुषी 7.1.19       | धनुषि 7.1.20, 7.1.72, 6.4.10, 8.3.24                |
| 5 | same as above               | same as above      | same as above                                       |
| 2 | same as above               | same as above      | same as above                                       |
| 3 | धनुषा                       | धनुर्भ्याम् 8.2.66 | धनुर्भिः 8.2.66                                     |
| 4 | धनुषे                       | same as above      | धनुर्भ्यः 8.2.66                                    |
| 5 | धनुषः                       | same as above      | same as above                                       |
| 6 | same as above               | धनुषोः             | धनुषाम्   |
| 7 | धनुषि                       | same as above      | धनुष्/धनुःषु 8.2.66, 8.3.15, 8.3.36, 8.3.58, 8.4.41 |

<sup>23</sup> Are these उणादि इस्/उस्-ending words सकारान्त or षकारान्त? Since उणादि words are considered to be अव्युत्पन्न, they should be considered to be ष-ending when अजातिप्रत्यय follows. However, in 1/1 and 3/2 etc. also, grammatical explanation is required. For this बहुलत्व of उणादि can take care of this.

स-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (1) पयस्

पयस् (milk, water)

[LSK] पयः<sup>1/1</sup> ।

पयस् + सुँ

पयस् 7.1.23 स्वमोर्नपुंसकात् । ~ लुक्

पयरुँ 8.2.66 ससजुषो रुँः ।

पयः 8.3.15 खरवसानयोर्विसर्जनीयः । ~ रः पदस्य

[LSK] पयसी<sup>1/2</sup> ।

पयस् + औ

पयस् + शी 7.1.19 नपुंसकाच्च । ~ औङः शी

पयसी

[LSK] पयांसि<sup>1/3</sup> ।

पयस् + जस्

पयस् + शि 7.1.20 जश्शसोः शि । ~ नपुंसकात्

पय न् स् + इ 7.1.72 नपुंसकस्य झलचः । ~ नुम्

पया न् स् + इ 6.4.10 सान्तमहतः संयोगान्तस्य । ~ दीर्घः

पयांस् + इ 8.3.24 नश्चापदान्तस्य झलि ।

[LSK] पयसा<sup>3/1</sup> ।[LSK] पयोभ्याम्<sup>3/2</sup> ।

पयस् + भ्याम्

पयरुँ + भ्याम् 8.2.66 ससजुषो रुँः ।

पय उ + भ्याम् 6.1.114 हशि च ।

पयो+ भ्याम् 6.1.87 आद् गुणः ।

पयोभ्याम्

पयस् + सुप्<sup>7/3</sup>

पयरुँ + सु 8.2.66 ससजुषो रुः ।

पयः + सु 8.3.15 खरवसानयोर्विसर्जनीयः । ~ रः पदस्य

पयस् + सु 8.3.36 वा शरि । ~ विसर्जनीयस्य सः

पयस्सु

पक्षे

पयःसु

Declension of पयस् (स्-न-1)

|   | एकवचनम्                    | द्विवचनम्                            | बहुवचनम्                               |
|---|----------------------------|--------------------------------------|--|
| 1 | पयः 7.1.23, 8.2.66, 8.3.15 | पयसी 7.1.19                          | पयांसि 7.1.20, 7.1.72, 6.4.10, 8.3.24  |
| 5 | same as above              | same as above                        | same as above                          |
| 2 | same as above              | same as above                        | same as above                          |
| 3 | पयसा                       | पयोभ्याम्<br>8.2.66, 6.1.114, 6.1.87 | पयोभिः 8.2.66, 6.1.114, 6.1.87         |
| 4 | पयसे                       | same as above                        | पयोभ्यः 8.2.66, 6.1.114, 6.1.87        |
| 5 | पयसः                       | same as above                        | same as above                          |
| 6 | same as above              | पयसोः                                | पयसाम्                                 |
| 7 | पयसि                       | same as above                        | पयस्सु/पयःसु<br>8.2.66, 8.3.15, 8.3.36 |

स-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (2) सुपुंस

सुपुंस (that in which there are good men; a family)

शोभनाः पुमांसः यस्मिन् तत् सुपुम् (कुलम्)

सु + जस् + पुंस + जस् 2.2.24

सुपुंस

[LSK] सुपुम्<sup>1/1</sup> ।

सुपुंस + सुँ

सुपुंस 7.1.23 स्वमोर्नपुंसकात् । ~ लुक्

सुपुं 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः । ~ पदस्य

सुपुम् (प०) निमित्तापाये नैमित्तिकास्याप्यपायः ।

[LSK] सुपुंसी<sup>1/2</sup> ।

सुपुंस + औ

सुपुंस + शी 7.1.19 नपुंसकाच्च । ~ औडः शी

सुपुंसी

[LSK] सुपुमांसि<sup>1/3</sup> ॥

सुपुंस + जस्

सुपुंस (+ शि) सर्वनामस्थाने विवक्षिते -

सुपुं + असुँड् + जस् 7.1.89 पुंसोऽसुड् । ~ सर्वनामस्थाने with the help of 1.1.53 डिच्च ।

सुपुम् + अस् + जस् (प०) निमित्तापाये नैमित्तिकस्याप्यपायः ।

सुपुमस् + शि 7.1.20 जशशसोः शि । ~ नपुंसकात्

सुपुमन्स् + इ 7.1.72 नपुंसकस्य झलचः । ~ नुम्

सुपुमान्स् + इ 6.4.10 सान्तमहतः संयोगस्य । ~ न उपधायाः दीर्घः असम्बुद्धौ सर्वनामस्थाने

सुपुमांस् + इ 8.3.24 नश्चापदान्तस्य झलि ।

सुसुपुमांसि

|                 |   |
|-----------------|---|
| सुपुंस + भ्याम् |   |
| सुपुं + भ्याम्  | 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः । ~ पदस्य        |
| सुपुम् + भ्याम् | (प०) निमित्तापाये नैमित्तिकास्याप्यपायः । |
| सुपुं + भ्याम्  | 8.3.23 मोऽनुस्वारः ।                      |
| सुपुम् + भ्याम् | 8.4.58 अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः ।         |

|               |   |
|---------------|---|
| सुपुंस + सुप् |   |
| सुपुं + सु    | 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः । ~ पदस्य        |
| सुपुम् + सु   | (प०) निमित्तापाये नैमित्तिकास्याप्यपायः । |
| सुपुं + सु    | 8.3.23 मोऽनुस्वारः ।                      |

Note that 8.3.58 नुम्विसर्जनीयशर्ब्यवायेऽपि । ~ मूर्धन्यः does not apply here because the अनुस्वार is not of नुम्.

### Declension of सुपुंस (स-न-2)

|   | एकवचनम्                     | द्विवचनम्                 | बहुवचनम्   |
|---|-----------------------------|---------------------------|--|
| 1 | सुपुम् 7.1.23, 8.2.23, (प०) | सुपुंसी 7.1.19            | सुपुमांसि 7.1.89, 7.1.20, 7.1.72, 6.4.10, 8.3.24 |
| 5 | same as above               | same as above             | same as above                                    |
| 2 | same as above               | same as above             | same as above                                    |
| 3 | सुपुंसा                     | सुपुम्भ्याम् 8.2.23, (प०) | सुपुम्भिः 8.2.23, (प०)                           |
| 4 | सुपुंसे                     | same as above             | सुपुम्भ्यः 8.2.23, (प०)                          |
| 5 | सुपुंसः                     | same as above             | same as above                                    |
| 6 | same as above               | सुपुंसोः                  | सुपुंसाम्  |
| 7 | सुपुंसि                     | same as above             | सुपुंसु 8.2.23, (प०)                             |

स-कारान्त-नपुंसकलिङ्गः (3) अदस्

अदस् (that) in neuter

[LSK] अदः<sup>1/1</sup> ।

अदस् + सुँ

अदस् 7.1.23 स्वमोर्नपुंसकात् । ~ लुक्

अदरुँ 8.2.66 ससजुषो रुँः । ~ पदस्य

अदः 8.3.15 खरवसानयोर्विसर्जनीयः । ~ रः पदस्य

7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ does not apply because, the विभक्ति सुँ is elided by लुक्.

8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । does not apply because of the word in the sūtra “असेः”. अदस्

after लुक्-elision ends with स,

[LSK] विभक्तिकार्यम्<sup>1/1</sup> । उत्त्व-मत्वे<sup>1/2</sup> । अमू<sup>1/2</sup> ।

अदस् + औ

अद अ + औ 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

अद + औ 6.1.97 अतो गुणे । ~ पररूपम्

अद + शी 7.1.19 नपुंसकाच्च । ~ औङः शी

अदे 6.1.87 आद्गुणः । ~ अचि एकः पूर्वपरयोः संहितायाम्

अमे 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य

अमू 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य with the help of 1.1.50 स्थानेऽन्तरतमः । by प्रमाणतः

[LSK] अमूनि<sup>1/3</sup> ।

अदस् + जस्

अद अ + जस् 7.2.102 त्यदादीनामः । ~ विभक्तौ

अद + जस् 6.1.97 अतो गुणे । ~ पररूपम्

अद + शि 7.1.20 जश्शसोः शि । ~ नपुंसकात्

अदन् + इ 7.1.72 नपुंसकस्य झलचः । ~ नुम्

अदान् + इ 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ । ~ नोपधायाः दीर्घः

अदानि

अमानि 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य

अमूनि 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः । ~ पदस्य with the help of 1.1.50 स्थानेऽन्तरतमः । by प्रमाणतः

[LSK] शेषम्<sup>1/1</sup> पुंवत्<sup>0</sup> ।

The rest declines like for masculine.

Declension of अदस् (स्-न-3)

|   | एकवचनम्                    | द्विवचनम्                                      | बहुवचनम्   |
|---|----------------------------|--|--|
| 1 | अदः 7.1.23, 8.2.66, 8.3.15 | अमू 7.2.102, 6.1.97, 7.1.19,<br>8.2.80, 8.2.80 | अमूनि 7.2.102, 6.1.97, 7.1.20,<br>8.2.80, 8.2.80 |
| 5 |                            |  |  |
| 2 | same as above              | same as above                                  | same as above                                    |
| 3 | अमुना                      | अमूभ्याम्                                      | अमीभिः   |
| 4 | अमुष्मै                    | same as above                                  | अमीभ्यः  |
| 5 | अमुष्मात्                  | same as above                                  | same as above                                    |
| 6 | अमुष्य                     | अमुयोः   | अमीषाम्  |
| 7 | अमुष्मिन्                  | same as above                                  | अमीषु  |

इति हलन्त-नपुंसकलिङ्गाः ।

इति षड्लिङ्गप्रकरणम् ॥

## अथाव्ययानि

### [संज्ञासूत्रम्] 1.1.37 स्वरादिनिपातमव्ययम् ।

Words in स्वर-आदि गण and निपात-संज्ञक words are termed अव्यय.

स्वरादि-निपातम्<sup>1/1</sup> अव्ययम्<sup>1/1</sup> ।

2 words in the सूत्र, no word is required as अनुवृत्ति.

- स्वरादि-निपातम् 1/1 – This is संज्ञी. स्वरादि च निपातं च स्वरादिनिपातम् (SD) ।
- अव्ययम् 1/1 – This is संज्ञा.

[LSK] स्वर-आदयः<sup>1/3</sup> निपाताः<sup>1/3</sup> च<sup>0</sup> अव्यय-संज्ञाः<sup>1/3</sup> स्युः<sup>III/3</sup> ।

A group of words starting with स्वर and that which are termed निपात (from 1.4.56 to 1.4.98) are termed अव्यय.

|     |         | लघु-टिप्पणी      | In the sense of ...  |
|-----|---------|------------------|--|
| 1.  | स्वर्   | स्वर्गे परलोके च | heaven; any other world  |
| 2.  | अन्तर्  | मध्ये            | in the middle, between   |
| 3.  | प्रातर् | प्रत्यूषे        | dawn   |
| 4.  | पुनर्   | अप्रथमे विशेषे च | not first; to indicate the difference from what is told before तु-अर्थे “किं पुनः” |
| 5.  | सनुतर्  | अन्तर्धाने       | disappearance (only in Veda)   |
| 6.  | उच्चैस् | महति             | high   |
| 7.  | नीचैस्  | अल्पे            | low  |
| 8.  | शनैस्   | क्रियामान्द्ये   | Slowness in action   |
| 9.  | ऋधक्    | सत्ये            | truth (only in Veda)   |
| 10. | ऋते     | वर्जने           | without, excluding   |
| 11. | युगपद्  | एककाले           | simultaneity   |

|     |          |  |   |
|-----|----------|--|---|
| 12. | आराद्    | दूर-समीपयोः  | far, near   |
| 13. | पृथक्    | भिन्ने   | separation  |
| 14. | ह्यस्    | अतीते अहि  | yesterday   |
| 15. | श्वस्    | अनागते अहि   | tomorrow  |
| 16. | दिवा     | दिवसे  | The whole day; during day time                                |
| 17. | रात्रौ   | निशि   | at night  |
| 18. | सायम्    | निशामुखे   | evening   |
| 19. | चिरम्    | बहुकाले  | long time   |
| 20. | मनाक्    | अल्पे  | a little  |
| 21. | ईषत्     | अल्पे  | a little  |
| 22. | जोषम्    | सुखे मौने च  | Happiness; silence  |
| 23. | तूष्णीम् | मौने   | silence   |
| 24. | बहिस्    | बाह्ये   | outside   |
| 25. | अवस्     | बाह्ये   | outside   |
| 26. | समया     | समीपे मध्ये च  | near, middle  |
| 27. | निकषा    | अन्तिके  | near  |
| 28. | स्वयम्   | आत्मना   | by oneself  |
| 29. | वृथा     | व्यर्थे  | in vein, waste  |
| 30. | नक्तम्   | रात्रौ   | at night  |
| 31. | नञ्      | निषेधे   | negation  |
| 32. | हेतौ     | निमित्ते   | cause (it is not found anywhere)                              |
| 33. | इद्धा    | प्राकाशये  | manifest (it is not found anywhere)                           |
| 34. | अद्धा    | स्फुट-अवधारणयोः  | clear, definite   |
| 35. | सामि     | अर्धे जुगुप्सिते च   | half, hated   |
| 36. | वत्      | तुल्येऽर्थे तद्धितप्रत्ययः,<br>तस्य ब्राह्मणवत्,<br>क्षत्रियवत्, इत्युदाहरणे | vat-suffix-ending word by 5.1.115 तेन तुल्यं क्रिया चेद्वति । |
| 37. | सना      | नित्ये   | eternal   |
| 38. | सनत्     | नित्ये   | eternal   |
| 39. | सनात्    | नित्ये   | eternal   |

अव्ययम्

|     |         |  |  |
|-----|---------|--|--|
| 40. | उपधा    | भेदे   | difference (it is not found anywhere)                                  |
| 41. | तिरस्   | अन्तर्धौ तिर्यगर्थे परिभवे च                 | disappearance, horizontal, disrespect                                  |
| 42. | अन्तरा  | मध्ये विनार्थे च                             | middle, without  |
| 43. | अन्तरेण | वर्जने                                       | without  |
| 44. | ज्योक्  | कालाधिक्ये प्रश्ने शीघ्रे<br>सम्प्रत्यर्थे च | for a long time, to indicate question, fast, at present (only in Veda) |
| 45. | कम्     | वारि-मूर्ध-निन्दा-सुखेषु                     | Water, head, criticism, happiness                                      |
| 46. | शम्     | सुखे   | Happiness  |
| 47. | सहसा    | आकस्मिक-अविमर्शयोः                           | Suddenly, at random  |
| 48. | विना    | वर्जने                                       | Without  |
| 49. | नाना    | अनेक-विना-अर्थयोः                            | Many, without  |
| 50. | स्वस्ति | मङ्गले                                       | Auspicious   |
| 51. | स्वधा   | पितृदाने                                     | Exclamation used for offering to manes                                 |
| 52. | अलम्    | भूषण-पर्याप्ति-सक्ति-वारण-<br>निषेधेषु       | Ornament, enough, able, avoiding, no use (prohibiting)                 |
| 53. | वषट्    | हविर्दाने                                    | Offering oblation  |
| 54. | श्रौषट् | हविर्दाने                                    | Offering oblation  |
| 55. | वौषट्   | हविर्दाने                                    | Offering oblation  |
| 56. | अन्यत्  | अन्यार्थे                                    | Another  |
| 57. | अस्ति   | सत्तायाम्                                    | Existence  |
| 58. | उपांशु  | अप्रकट-उच्चारण-<br>रहस्ययोः                  | Whispering, secret   |
| 59. | क्षमा   | क्षान्तौ                                     | Forgiveness  |
| 60. | विहायसा | आकाशार्थे                                    | space  |
| 61. | दोषा    | रात्रौ                                       | Night  |
| 62. | मृषा    | वितथे  | False  |
| 63. | मिथ्या  | वितथे  | False  |
| 64. | मुधा    | व्यर्थे                                      | Waste  |
| 65. | पुरा    | अविरते चिरातीते<br>भविष्यत्-आसन्ने च         | Eternally, longtime ago, soon  |
| 66. | मिथो    | रहःसहार्थयोः                                 | Secret; together   |

|     |            |                        |                        |
|-----|------------|------------------------|------------------------|
| 67. | मिथस्      | रहःसहार्थयोः           | Secret; together       |
| 68. | प्रायस्    | बाहुल्ये               | Mostly                 |
| 69. | मुहुस्     | पुनरर्थे               | Again                  |
| 70. | प्रवाहुकम् | समानकाले ऊर्ध्वार्थे च | Simultaneous, up       |
| 71. | प्रवाहिका  | पाठान्तरम्             | Another reading        |
| 72. | आर्यहलम्   | बलात्कारे              | Forcing                |
| 73. | आर्या      | प्रतिबन्धे             | Obstructing            |
| 74. | हलम्       | प्रतिषेध-विवादयोः वा   | Prohibiting, disputing |
| 75. | अभीक्षणम्  | पौनःपुन्ये             | Repeating              |
| 76. | साकम्      | सहार्थे                | Together               |
| 77. | सार्धम्    | सहार्थे                | Together               |
| 78. | नमस्       | नतौ                    | Saluting               |
| 79. | हिरुक्     | वर्जने                 | Without                |
| 80. | धिक्       | निन्दा-भर्त्सनयोः      | Criticizing; treating  |
| 81. | अथ         | आनन्तर्ये              | Immediate sequence     |
| 82. | अम्        | शैघ्र्ये अल्पे च       | Swiftness; little      |
| 83. | आम्        | अङ्गीकारे              | Accepting              |
| 84. | प्रताम्    | ग्लानौ                 | Depression             |
| 85. | प्रशान्    | समानार्थे              | Sameness               |
| 86. | प्रतान्    | विस्तारे               | Extension              |
| 87. | मा         | निषेध-आशङ्कयोः         | Prohibition; doubt     |
| 88. | माङ्       | निषेध-आशङ्कयोः         | Prohibition; doubt     |

[LSK] आकृतिगणः<sup>1/1</sup> अयम्<sup>1/1</sup> ॥

This गण is an open-ended list.

The following is the list of later additions.

|    |          |               |           |
|----|----------|---------------|-----------|
| 1. | कामम्    | स्वाच्छन्द्ये | Freedom   |
| 2. | प्रकामम् | अतिशये        | Exceeding |

अव्ययम्

|     |            |                      |                     |
|-----|------------|----------------------|---------------------|
| 3.  | भूयस्      | पुनरर्थे             | Again               |
| 4.  | साम्प्रतम् | न्याय्ये             | Proper              |
| 5.  | परम्       | किन्तु-अर्थे         | However             |
| 6.  | साक्षात्   | प्रत्यक्षे           | Direct              |
| 7.  | साची       | तिर्यक्-अर्थे        | crooked             |
| 8.  | सत्यम्     | अर्ध-अङ्गीकारे       | Half acceptance     |
| 9.  | मङ्क्षु    | शैघ्र्ये             | Quick               |
| 10. | आशु        | शैघ्र्ये             | Quick               |
| 11. | संवत्      | वर्षे                | year                |
| 12. | अवश्यम्    | निश्चये              | Certain             |
| 13. | उषा        | रात्रौ               | Night               |
| 14. | ओम्        | अङ्गीकारे ब्रह्मणि च | Acceptance; Brahman |
| 15. | भूरू       | पृथिव्याम्           | Earth               |
| 16. | भुवर्      | अन्तरिक्षे           | Intermediate space  |
| 17. | झटिति      | शैघ्र्ये             | Quick               |
| 18. | झगिति      | शैघ्र्ये             | Quick               |
| 19. | तरसा       | शैघ्र्ये             | Quick               |
| 20. | सुष्टु     | प्रशंसायाम्          | Praise              |
| 21. | दुष्टु     | निकृष्टे             | Low                 |
| 22. | सु         | पूजायाम्             | Praise              |
| 23. | कु         | कुत्सित-ईषद्-अर्थयोः | Criticized, little  |
| 24. | अञ्जसा     | तत्त्व-शीघ्रार्थयोः  | True; quick         |
| 25. | मिथु       | द्वौ इत्यर्थे        | Two                 |
| 26. | अस्तम्     | विनाशे               | Destruction         |
| 27. | स्थाने     | युक्ते               | Proper              |
| 28. | वरम्       | ईषद्-उत्कर्षे        | Better              |
| 29. | सुदि       | शुक्लपक्षे           | A bright fortnight  |
| 30. | सुठि       | कृष्णपक्षे           | A dark fortnight    |

Now, चादिगण starts. Members of चादिगण gain निपात-संज्ञा when they denote असत्त्व, that which is without लिङ्ग and वचन. By being निपात, they get अव्यय-संज्ञा.

|     |        |   |   |
|-----|--------|---|---|
| 1.  | च      | समुच्चय-अन्वाचय-इतरेतरयोग-समाहारेषु       | See the four meanings of च in इतरेतरद्वन्द्व. <sup>24</sup> |
| 2.  | वा     | स्यात्-विकल्प-उपमयोः इव-अर्थेऽपि समुच्चये | Optional; comparison; like; and                             |
| 3.  | ह      | प्रसिद्धौ                                 | Famous  |
| 4.  | अह     | पूजायाम्                                  | Worship   |
| 5.  | एव     | अवधारणे अनवकृप्तौ च                       | Ascertainment;  |
| 6.  | एवम्   | उक्त-परामर्श                              | Reminding, recollecting what is said                        |
| 7.  | नूनम्  | निश्चये तर्के च                           | Definite; inference   |
| 8.  | शश्वत् | पौनःपुन्ये नित्ये सहार्थे च               | Repetition; eternity; together                              |
| 9.  | युगपद् | एककाले                                    | Simultaneity  |
| 10. | भूयस्  | पुनरर्थे आधिक्ये च                        | Again; more   |
| 11. | कूपद्  | प्रश्ने प्रशंसायां च                      | Questioning; praising                                       |
| 12. | कुविद् | भूरी-अर्थे प्रशंसायां च                   | Very much; praising   |
| 13. | नेद्   | शङ्कायां प्रतिषेध-विचार-समुच्चयेषु च      | Doubt; prohibition; inquiry; connection                     |
| 14. | चेत्   | यदि-अर्थे                                 | If  |

<sup>24</sup> The four meanings of च :

1. समुच्चयः – “ईश्वरं गुरुं च भजस्व” इति परस्परनिरपेक्षस्य अनेकस्य एकस्मिन् अन्वयः समुच्चयः ।

A and B are two independent things connected to one thing.

2. अन्वाचयः – “भिक्षाम् अटं गां च आनय” इति अन्यतरस्य आनुषङ्गिकत्वेन अन्वयः अन्वाचयः ।

A is the main thing and B is subordinate. च is given to B.

3. इतरेतरयोगः – “धव-खदिरौ छिन्धि” इति मिलितानाम् अन्वयः इतरेतरयोगः ।

A and B are together connected to one action.

4. समाहारः – “संज्ञापरिभाषम्” इति समूहः समाहारः ।

A and B constitute one group.

अव्ययम्

|     |         |  |   |
|-----|---------|--|---|
| 15. | चण्     | चेत्-अर्थे                             | If  |
| 16. | कच्चित् | इष्टप्रश्ने                            | Question whose positive answer is desired.  |
| 17. | यत्र    | अनवक्लृप्ति-अमर्ष-गर्हा-आश्चर्येषु     | If at all; anger; censure; surprise   |
| 18. | नह      | प्रत्यारम्भे                           | Total negation, not at all  |
| 19. | हन्त    | हर्षे विषादे अनुकम्पायां वाक्यारम्भे च | Joy; sorrow; sympathy; to start a sentence  |
| 20. | माकिर्  | वर्जने                                 | Without   |
| 21. | माकिम्  | वर्जने                                 | Without   |
| 22. | नकिर्   | वर्जने                                 | Without   |
| 23. | नकिम्   | वर्जने                                 | Without   |
| 24. | माङ्    | स्वरादिषूक्तौ                          | Already said in स्वरादिगण (as निषेध-आशङ्कयोः, prohibition; doubt) (why said again?) |
| 25. | नञ्     | स्वरादिषूक्तौ                          | Already said in स्वरादिगण (as निषेधे, prohibition) (why said again?)                |
| 26. | यावत्   | साकल्य-अवधि-मान-अवधारणेषु              | complete; limit, up to; as much; ascertainment                                      |
| 27. | तावत्   | साकल्य-अवधि-मान-अवधारणेषु              | complete; limit, up to; as much; ascertainment                                      |
| 28. | त्वै    | विशेष-वितर्कयोः                        | Excellence; doubt   |
| 29. | द्वै    | वितर्के                                | Doubt   |
| 30. | न्वै    | पाठान्तरम्                             | Doubt   |
| 31. | रै      | दाने अनादरे च                          | Giving; disrespect  |
| 32. | श्रौषट् | स्वरादिषूक्तौ                          | Already said in स्वरादिगण (as हविर्दाने, offering oblation) (why said again?)       |
| 33. | वौषट्   | स्वरादिषूक्तौ                          | Already said in स्वरादिगण (as हविर्दाने, offering oblation) (why said again?)       |
| 34. | स्वाहा  | देवताभ्यः दाने                         | Giving to devatās   |

|     |        |   |   |
|-----|--------|---|---|
| 35. | स्वधा  | पितृभ्यः  | Giving to pitṛs   |
| 36. | तुम्   | तुंकारे   | Disrespect  |
| 37. | तथाहि  | निदर्शने  | To explain  |
| 38. | खलु    | निषेध-वाक्यालंकार-निश्चयेषु   | Prohibition; decorating the sentence; ascertainment                                       |
| 39. | किल    | वार्तायाम् अलीके च  | “It happened like”; untruth, not real   |
| 40. | अथो    | मङ्गल-अनन्तर-आरम्भ-प्रश्न-कात्स्न्य-<br>अधिकार-प्रतिज्ञा-समुच्चयेषु | Auspiciousness; after this; starting; question; totality; topic; proposition; connections |
| 41. | अथ     | मङ्गल-अनन्तर-आरम्भ-प्रश्न-कात्स्न्य-<br>अधिकार-प्रतिज्ञा-समुच्चयेषु | Auspiciousness; after this; starting; question; totality; topic; proposition; connections |
| 42. | सुष्टु | प्रशंसायाम्   | Praising  |
| 43. | स्म    | अतीते पादपूरणे च  | Past; filling up the पाद  |
| 44. | आदह    | उपक्रम-हिंसाकुत्सनेषु   | Beginning; injuring; censuring  |

## (अन्तर्गणसूत्रम्) उपसर्गविभक्तिस्वरप्रतिरूपकाश्च।

उपसर्ग-विभक्ति-स्वर-प्रतिरूपकाः  $1/3$  च  $1/1$ ।

2 words in the वार्तिक

- उपसर्ग-विभक्ति-स्वर-प्रतिरूपकाः 7/1 – उपसर्गः च विभक्तिः च स्वरः च उपसर्गविभक्तिस्वराः (ID),  
उपसर्गविभक्तिस्वराणां प्रतिरूपकाः (6T)। This समास is divided into three:
  1. उपसर्ग-प्रतिरूपकः – a word looks like उपसर्ग.
  2. विभक्ति-प्रतिरूपकः – a word looks like a declined form.
  3. स्वर-प्रतिरूपकः – a word looks like vowel.
- च 0 – They are also counted in चादिगण.

[LSK] अवदत्तम्  $1/1$ ।

This is an example of 1. उपसर्ग-प्रतिरूपकः शब्दः.

## अव्ययम्

अव as non-उपसर्ग

अव + दा + क्त

अव + दद् + त 7.4.46 दो दद् घोः । ~ ति किति

घु-संज्ञक दा is replaced by दद्

अवदत्त

अव as उपसर्ग

अव + दा + क्त

अव + त् + त 7.4.47 अच उपसर्गात् तः । ~ दः घोः ति किति

त्-आदेश when अजन्त उपसर्ग precedes.

अवत्त

[LSK] अहंयुः<sup>1/1</sup> । अस्तिक्षीरा<sup>1/1</sup> ।

This is an example of 2. विभक्ति-प्रतिरूपकः.

अहम् looks like अस्मद्-शब्द 1/1, but it is अव्यय. Its meaning is अहंकार.

अहम् + युस् 5.2.140 अहम्-शुभमोर्युस् । ~ तदस्यास्त्यस्मिन्निति

अस्ति looks like अस्-धातु III/1, but it is अव्यय. Thus it is सुबन्त, hence eligible to be compounded.

अस्ति-क्षीरा 116B

### 3. स्वर-प्रतिरूपकः

Vowels are counted in चादिगण by this अन्तर्गणसूत्र.

|    |   |                             |  |
|----|---|-----------------------------|--|
| 1. | अ | सम्बोधने निषेधे अधिक्षेपे च | Calling; prohibition; censuring                                    |
| 2. | आ | वाक्यस्मरणयोः ।             | Reminding the contradiction he is making, definitely; recollection |
| 3. | इ | सम्बोधन-जुगुप्सा-विस्मयेषु  | Calling; hatred; wonder  |
| 4. | ई | सम्बोधने                    | Calling  |
| 5. | उ | सम्बोधने                    | Calling  |
| 6. | ऊ | सम्बोधने                    | Calling  |
| 7. | ए | सम्बोधने                    | Calling  |
| 8. | ऐ | सम्बोधने                    | Calling  |
| 9. | ओ | सम्बोधने                    | Calling  |

|     |   |          |         |
|-----|---|----------|---------|
| 10. | औ | सम्बोधने | Calling |
|-----|---|----------|---------|

चादि continued

|     |           |                              |   |
|-----|-----------|------------------------------|---|
| 45. | पशु       | सम्यक्-अर्थे                 | Good  |
| 46. | शुकम्     | शैघ्र्ये                     | Quick   |
| 47. | यथाकथाच्च | अनादरे                       | Disrespect  |
| 48. | पाट्      | सम्बोधने                     | Calling   |
| 49. | प्याट्    | सम्बोधने                     | Calling   |
| 50. | अङ्ग      | सम्बोधने                     | Calling   |
| 51. | हे        | सम्बोधने                     | Calling   |
| 52. | हे        | सम्बोधने                     | Calling   |
| 53. | भोस्      | सम्बोधने                     | Calling   |
| 54. | अये       | सम्बोधने                     | Calling   |
| 55. | द्य       | हिंसा-प्रातिलोम्य-पादपूरणेषु | Injury; going against the order;<br>filling up the पाद. |
| 56. | विषु      | नानार्थे                     | In the sense of नाना                                    |
| 57. | एकपदे     | अकस्मात् इत्यर्थे            | Abruptly  |
| 58. | युत्      | कुत्सायाम्                   | Insulting   |
| 59. | आतः       | इतः अपि इत्यर्थे             | Because of this reason also                             |

चादि आकृतिगणः

|    |           |                       |                          |
|----|-----------|-----------------------|--------------------------|
| 1. | यत्तद्    | हेतौ                  | Cause                    |
| 2. | आहोस्वित् | विकल्पे               | Option                   |
| 3. | सीम       | सर्वतोभावे            | Being all around         |
| 4. | शुकम्     | अतिशये                | Exceeding                |
| 5. | अनुकम्    | वितर्के               | Doubt                    |
| 6. | शंवत्     | अन्तःकरणे आभिमुख्ये च | The mind; facing         |
| 7. | व         | पादपूरणे इवार्थे च    | Filling up the पाद; like |
| 8. | दिष्ट्या  | आनन्दे                | Happiness                |

|     |          |             |                              |
|-----|----------|-------------|------------------------------|
| 9.  | चटु      | प्रियवाक्ये | Sentence indicating dearness |
| 10. | चाटु     | प्रियवाक्ये | Sentence indicating dearness |
| 11. | हुम्     | भर्त्सने    | Frightening                  |
| 12. | इव       | सादृश्ये    | Likeness                     |
| 13. | अद्यत्वे | इदानीम्     | Now                          |

### [संज्ञासूत्रम्] 1.1.38 तद्धितश्चासर्वविभक्तिः । ~ अव्ययम्

तद्धित-ending words after which all the विभक्ति in three numbers cannot come are termed अव्यय.

तद्धितः<sup>1/1</sup> च<sup>0</sup> असर्व-विभक्तिः<sup>1/1</sup> । ~ अव्ययम्<sup>1/1</sup>

3 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- तद्धितः 1/1 – This is संज्ञी. तद्धित-प्रत्यय-ending word is intended by (प.) प्रत्ययग्रहणे तदन्तग्रहणम् ।.
- च 0 – This brings अव्ययम् down.
- असर्व-विभक्तिः 1/1 – This is adjective to तद्धितः. न उत्पद्यन्ते सर्वाः वचन-त्रय-आत्मिकाः विभक्तयः यस्मात् सः असर्वविभक्तिः (11B5) । After which all the three वचनs of विभक्ति are not suffixed.
- अव्ययम् 1/1 – From 1.1.37 स्वरादिनिपातमव्ययम् ।; this is संज्ञा.

[SK] यस्मात्<sup>5/1</sup> सर्वा<sup>1/1</sup> विभक्तिः<sup>1/1</sup> न<sup>0</sup> उत्पद्यते<sup>III/1</sup> सः<sup>1/1</sup> तद्धितान्तः<sup>1/1</sup> अव्ययम्<sup>1/1</sup> स्यात्<sup>III/1</sup> ।

After which all 3 वचनs of विभक्ति are not suffixed, that is termed अव्ययम्.

[SK] परिगणनम्<sup>1/1</sup> कर्तव्यम्<sup>1/1</sup> –

Enumeration has to be done.

[LSK] तसिल्-आदयः<sup>1/3</sup> प्राक्<sup>0</sup> पाशपः<sup>5/1</sup> ।

From तसिल् by 5.3.7 पञ्चम्यास्तसिल् । up to पाशप् by 5.3.47 यापे पाशप् ।.

E.g., सर्वतः, सर्वत्र, सर्वदा, सर्वथा, एकधा

[LSK] शस्-प्रभृतयः<sup>1/3</sup> प्राक्<sup>0</sup> समासान्तेभ्यः<sup>5/3</sup> ।

From शस् by 5.4.42 बह्वल्पार्थाच्छस् कारकादन्यतरस्याम् । to डाच् by 5.4.57 अव्यक्तानुकरणाद् द्य,जवरार्धादनितौ डाच् which continues up to 5.4.68 समासान्ताः।.

E.g., बहुशः, अल्पशः, शुक्ली-करोति, अग्निसात्, पटपटा

[LSK] अम् ।

5.4.12 अमु च च्छन्दसि।

E.g., प्रतरं न आयुः

[LSK] आम् ।

5.4.11 किमेत्तिडव्ययधादाम्बद्रव्यप्रकर्षे।

E.g., कितराम्, पचतितमाम्

[LSK] कृत्वस्-अर्थाः ।

The suffixes in the sense of कृत्वसुच् taught by 5.4.17 सङ्ख्यायाः क्रियाऽभ्यावृत्तिगणने कृत्वसुच् ।

कृत्वसुच् by 5.4.17 सङ्ख्यायाः क्रियाऽभ्यावृत्तिगणने कृत्वसुच् । E.g., पञ्चकृत्वः

सुच् by 5.4.18 द्वित्रिचतुभ्यः सुच् । E.g., द्विः, त्रिः

सकृत् by 5.4.19 एकस्य सकुच्च । E.g., सकृत्

धा by 5.4.20 विभाषा बहोर्धाऽविप्रकृष्टकाले । E.g., बहुधा

[LSK] तसिवती ।

तसि by 4.3.113 तसिश्च । ~ तेन एकदिक् E.g., ग्रामतः

वति by 5.1.115 तेन तुल्यं क्रिया चेद्वति । E.g., राजवत्

[LSK] नानाजौ ।

ना and नाञ् by 5.2.27 विनञ्भ्यां नानाजौ न सह । E.g., विना, नाना

[संज्ञासूत्रम्] 1.1.39 कृन्मेजन्तः । ~ अव्ययम्

Words in स्वर-आदि गण and निपात-संज्ञक words are termed अव्यय.

कृत्<sup>1/1</sup> मेजन्तः<sup>1/1</sup> । ~ अव्ययम्<sup>1/1</sup>

2 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- कृत् 1/1 – This is संज्ञी. कृत्-प्रत्यय-ending word is intended by (प.) प्रत्ययग्रहणे तदन्तग्रहणम् ।.
- मेजन्तः 1/1 – This is adjective to कृत्. म् च एच् च मेचौ (ID) । मेचौ अन्तौ यस्य सः मेजन्तः (116B) ।  
That which ends with म् or एच्.
- अव्ययम् 1/1 – From 1.1.37 स्वरादिनिपातमव्ययम् ।; this is संज्ञा.

[LSK] कृत्<sup>1/1</sup> यः<sup>1/1</sup> मान्तः<sup>1/1</sup> एजन्तः<sup>1/1</sup> च<sup>0</sup> तदन्तम्<sup>1/1</sup> अव्ययम्<sup>1/1</sup> स्यात्<sup>III/1</sup> ।

That which ends with कृत्-प्रत्यय, which ends with म् or एच्, is termed अव्यय.

[LSK] स्मारम्<sup>0</sup> स्मारम्<sup>0</sup> । Remembering continuously.

Example of म्-ending:

|               |                                |
|---------------|--------------------------------|
| स्मृ + णमुल्  | 3.4.22 अभीक्ष्ये णमुल् च ।     |
| स्मार् + अम्  | 7.2.116 अत उपधायाः । ~ वृद्धिः |
| अव्ययसंज्ञा   | 1.1.39 कृन्मेजन्तः । ~ अव्ययम् |
| स्मारम् + सुँ |                                |
| स्मारम्       | 2.4.82 अव्ययादाप्सुपः । ~ लुक् |

Other म्-ending कृत्-प्रत्ययस्य are: कमुल् by 3.4.12 शकि णमुल्-कमुलौ ।, खमुञ् by 3.4.25 कर्मण्याक्रोशे कृञः खमुञ् ।, and तुमुन् by 3.3.10 तुमुन्-ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम् ।.

[LSK] जीवसे<sup>0</sup> । in order to live

Example of ए-Ending:

जीव् + असे 3.4.9 तुमर्थे सेसेनसेऽसेन्... ।

[LSK] पिबध्वै<sup>0</sup> ॥ in order to drink

पा + शध्वैन् 3.4.9 तुमर्थे सेसेनसेऽसेन्... ।

पिब + अध्व 7.3.78 पात्राध्मास्था... पिब... । ~ शिति

पिबाध्व 6.1.97 अतो गुणे ।

## [संज्ञासूत्रम्] 1.1.40 त्वातोसुन्कसुनः । ~ अव्ययानि

Words in स्वर-आदि गण and निपात-संज्ञक words are termed अव्यय.

त्वा-तोसुन्-कसुनः<sup>1/3</sup> । ~ अव्ययानि<sup>1/1</sup>

2 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- त्वा-तोसुन्-कसुनः 1/3 – This is संज्ञी. By (प.) प्रत्ययग्रहणे तदन्तग्रहणम् ।, those words which end with these three suffixes: त्वा, तोसुन्, and कसुन्, are intended.
- अव्ययानि 1/3 – From 1.1.37 स्वरादिनिपातमव्ययम् । with वचनपरिणाम; this is संज्ञा.

[LSK] एतद्-अन्तम्<sup>1/1</sup> अव्ययम्<sup>1/1</sup> ।

That which ends with these प्रत्ययस is termed अव्यय.

[LSK] कृत्वा<sup>0</sup> । having done

कृ + त्वा 3.4.21 समानकर्तृकयोः पूर्वकाले ।

कृ + त्वा

अव्ययसंज्ञा 1.1.40 त्वातोसुन्कसुनः । ~ अव्ययानि

कृत्वा + सुँ 4.1.2

कृत्वा 2.4.82 अव्ययादाप्सुपः । ~ लुक्

[LSK] उदेतोः<sup>0</sup> । when it is rising

उद् + इण् + तोसुन् 3.4.16 भावलक्षणे स्थेणकृञ्चदिचरिहुतमिजनिभ्यस्तोसुन् ।

उद् + ए + तोस्

[LSK] विसृपः<sup>0</sup> ॥

वि + सृप् + कसुन् 3.4.17 सुपितृदोः कसुन् । ~ भावलक्षणे

वि + सृप् + अस्

[संज्ञासूत्रम्] 1.1.41 अव्ययीभावश्च । ~ अव्ययम्

अव्ययीभाव-समास is termed अव्यय.

अव्ययीभावः <sup>1/1</sup> च <sup>0</sup> । ~ अव्ययम् <sup>1/1</sup>

2 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- अव्ययीभावः 1/1 – This is संज्ञी. A group of words defined as अव्ययीभाव-समास in the section from 2.1.5 अव्ययीभावः । to 2.1.21 अन्यपदार्थे च संज्ञायाम् ।.
- अव्ययम् 1/1 – From 1.1.37 स्वरादिनिपातमव्ययम् ।; this is संज्ञा.

[LSK] अधिहरि<sup>0</sup> । About Hari.

|                |  |
|----------------|--|
| हरि + डि + अधि | 2.1.6 अव्ययं विभक्तिसमीप... । ~ समासः  |
| अधि + हरि + डि | 2.2.30 उपसर्जनं पूर्वम् । ~ समासे      |
| अधि + हरि      | 2.4.71 सुपो धातुप्रातिपदिकयोः । ~ लुक् |
| अव्ययसंज्ञा    | 1.1.41 अव्ययीभावश्च । ~ अव्ययम्        |
| अधिहरि + सुँ   | 4.1.2                                  |
| अधिहरि         | 2.4.82 अव्ययादाप्सुपः । ~ लुक्         |

[विधिसूत्रम्] 2.4.82 अव्ययादाप्सुपः । ~ लुक्

There is लुक् elision of आप् and सुप् after अव्यय-संज्ञक word.

अव्ययात्<sup>5/1</sup> आप्-सुपः<sup>6/1</sup> । ~ लुक्<sup>1/1</sup>

2 words in the सूत्र; 1 word as अनुवृत्ति

- अव्ययात् 5/1 – Any word defined as अव्यय by 1.1.37 to 1.1.41; in पूर्वपञ्चमी.
- आप्-सुपः 6/1 – आप् च सुप् च आसुप् (SD), तस्य।; in स्थानेयोगा षष्ठी.
- लुक् 1/1 – Elision of प्रत्यय, defined by 1.1.61 प्रत्ययस्य लुक्-श्लु-लुपः।. This is the आदेश; from 2.4.58 ण्यक्षत्रियार्षजितो यूनि लुगणिजोः।.

[LSK] अव्ययात्<sup>5/1</sup> विहितस्य<sup>6/1</sup> आपः<sup>6/1</sup> सुपः<sup>6/1</sup> च<sup>0</sup> लुक्<sup>1/1</sup> ।

There is लुक् elision of आप् and सुप् ordained after अव्यय.

[LSK] तत्र<sup>0</sup> शालायाम्<sup>7/1</sup> ॥ In that hall.

As an adjective to a feminine word, शाला, a feminine suffix टाप् is suffixed after अ-  
ending प्रातिपदिक, तत्र. Because of अव्यय-संज्ञा by 1.1.38 तद्धितश्चासर्वविभक्तिः। for तत्र, टाप् is elided by  
this sūtra.

तत्र + टाप् 4.1.3 अजाद्यतष्टाप् ।

तत्र 2.4.82 अव्ययादाप्सुपः । ~ लुक्

The following कारिका gives definition of अव्यय.

[LSK] सदृशम्<sup>1/1</sup> त्रिषु<sup>7/3</sup> लिङ्गेषु<sup>7/3</sup> सर्वासु<sup>7/3</sup> च<sup>0</sup> विभक्तिषु<sup>7/3</sup> ।  
वचनेषु<sup>7/3</sup> च<sup>0</sup> सर्वेषु<sup>7/3</sup> यत्<sup>1/1</sup> न<sup>0</sup> व्येति<sup>III/1</sup> तत्<sup>1/1</sup> अव्ययम्<sup>1/1</sup> ॥

That which is the same form in three genders, all cases, and all numbers, which does not decline, that is called अव्यय.

Even though the following verse does not have direct connection to the topic under discussion, this verse is listed here at the end of सुबन्त section.

[LSK] वष्टि<sup>III/1</sup> भागुरिः<sup>1/1</sup> अत्-लोपम्<sup>2/1</sup> अव-अप्योः<sup>6/2</sup> उपसर्गयोः<sup>6/2</sup> ।  
आपम्<sup>2/1</sup> च<sup>0</sup> एव<sup>0</sup> हलन्तानाम्<sup>6/3</sup> यथा<sup>0</sup> वाचा<sup>1/1</sup> निशा<sup>1/1</sup> दिशा<sup>1/1</sup> ॥

The grammarian भागुरि says:<sup>25</sup>

1. There is लोप of अ of उपसर्ग अव and अपि, before any धातु.

[LSK] वगाहः<sup>1/1</sup>, अवगाहः<sup>1/1</sup> । पिधानम्<sup>1/1</sup>, अपिधानम्<sup>1/1</sup> ॥

2. आप् is the स्त्री-प्रत्यय for हल्-ending feminine word.<sup>26</sup>

वच् + आप् = वाचा

निश् + आप् = निशा

दिश् + आप् = दिशा

इति अव्ययानि ॥

Thus ends the section of अव्यय.

इति सुबन्तम् ॥

Thus ends the section of सुबन्त, noun.

इति पूर्वार्धम् ॥

Thus ends the first half.

<sup>25</sup> भागुरिनामकः आचार्यः अव-अपि इत्युपसर्गयोः आद्य-अकारस्य लोपम्, हलन्तानाम् आपं च वष्टि = इच्छति ।

<sup>26</sup> वाचा निशा दिशा - परिगणनम् इति केचित्, उदाहरणमात्रम् इत्यन्ये ।

## Index

|  |  |
|--|--|
| <b>अ</b>                                   | <b>ऋ</b>   |
| अचः 6.4.138.....156                        | ऋत्विग्दधृक्स्त्रिग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिकुञ्चां च 3.2.59 ..... 96 |
| अतो गुणे 6.1.97 .....41                    | <b>ए</b>   |
| अत्वसन्तस्य चाधातोः 6.4.14.....185         | एकवचनस्य च 7.1.32 ..... 134                                    |
| अदस औ सुलोपश्च 7.2.107.....226             | एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्वोः 8.2.37 ..... 5                    |
| अदसोऽसेर्दादु दो मः 8.2.80.....227         | एकाजुत्तरपदे णः 8.4.12 ..... 65                                |
| अनाप्यकः 7.2.112 .....43                   | एत ईद्वहुवचने 8.2.81 ..... 229                                 |
| अनिदितां हल उपधायाः किङ्ति 6.4.24.....154  | <b>क</b>   |
| अपो भि 7.4.48 .....260                     | किमः कः 7.2.103 ..... 37                                       |
| अम् सम्बुद्धौ 7.1.99 .....20               | कृदतिङ् 3.1.93..... 98   |
| अर्वणस्त्रसावनञः 6.4.127.....83            | कृन्मेजन्तः 1.1.39..... 349                                    |
| अव्ययादाप्सुपः 2.4.82 .....352             | त्वातोऽसुन्कसुनः 1.1.40..... 350                               |
| अव्ययीभावश्च 1.1.41 .....351               | किन्प्रत्ययस्य कुः 8.2.62 ..... 99                             |
| अष्टन आ विभक्तौ 7.2.84.....93              | <b>ङ</b>   |
| अष्टाभ्य औश् 7.1.21.....94                 | ङेप्रथमयोरम् 7.1.28 ..... 120                                  |
| अहन् 8.2.68 .....286                       | <b>च</b>   |
| <b>आ</b>                                   | चतुरनडुहोरामुदात्तः 7.1.98 ..... 18                            |
| आ सर्वनाम्नः 6.3.91 .....196               | चोः कुः 8.2.30..... 103  |
| आच्छीनद्योर्नुम् 7.1.80 .....309           | चौ 6.3.138 ..... 157   |
| आद्यन्तवदेवस्मिन् 1.1.21.....45            | <b>ज</b>   |
| <b>इ</b>                                   | जक्षित्यादयः षट् 6.1.6..... 193                                |
| इग्यणः संप्रसारणम् 1.1.45.....13           | <b>त</b>   |
| इतोऽत्सर्वनामस्थाने 7.1.86.....85          | तदोः सः सावनन्त्ययोः 7.2.106..... 115                          |
| इदमो मः 7.2.108.....39                     | तद्धितश्चासर्वविभक्तिः 1.1.38 ..... 347                        |
| इदोऽय् पुंसि 7.2.111 .....40               | तवममौ ङसि 7.2.96..... 136                                      |
| इन्हन्पूर्वार्यम्णां शौ 6.4.12 .....63     | तिरसस्तिर्यलोपे 6.3.94 ..... 169                               |
| <b>उ</b>                                   | तुभ्यमहौ ङयि 7.2.95..... 132                                   |
| उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः 7.1.70 .....74 | तेमयावेकवचनस्य 8.1.22..... 146                                 |
| उद ईत् 6.4.139 .....162                    | त्यदादिषु दृशोऽनालोचने कञ्च 3.2.60..... 195                    |
| उभे अभ्यस्तम् 6.1.5 .....190               | त्वमावेकवचने 7.2.97..... 127                                   |

## Index

|  |     |
|--|-----|
| त्वामौ द्वितीयायाः 8.1.23 .....                | 147 |
| त्वाहौ सौ 7.2.94 .....                         | 121 |
| <b>थ</b>                                       |     |
| थो न्यः 7.1.87 .....                           | 86  |
| <b>द</b>                                       |     |
| दश्च 7.2.109 .....                             | 42  |
| दादेर्घातोर्घः 8.2.32 .....                    | 4   |
| दिव उत् 6.1.131 .....                          | 29  |
| दिव औत् 7.1.84 .....                           | 28  |
| द्वितीयाटौस्वेनः 2.4.34 .....                  | 51  |
| द्वितीयायाञ्च 7.2.87 .....                     | 128 |
| <b>घ</b>                                       |     |
| घात्वादेः षः सः 6.1.64 .....                   | 12  |
| <b>न</b>                                       |     |
| न डिसम्बुद्धोः 8.2.8 .....                     | 54  |
| न मु ने 8.2.3 .....                            | 231 |
| न संयोगाद्वमन्तात् 6.4.137 .....               | 60  |
| न सम्प्रसारणे सम्प्रसारणम् 6.1.37 .....        | 80  |
| नलोपः सुँस्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति 8.2.2 ..... | 56  |
| नशेर्वा 8.2.63 .....                           | 199 |
| नहिवृतिवृषिव्यधिरुचिसहितनिषु कौ 6.3.116 .....  | 237 |
| नहो घः 8.2.34 .....                            | 236 |
| नाञ्चेः पूजायाम् 6.4.30 .....                  | 172 |
| नाभ्यस्ताच्छतुः 7.1.78 .....                   | 191 |
| नुम्बिसर्जनीयशर्व्यावायेऽपि 8.3.58 .....       | 208 |
| नेदमदसोरकोः 7.1.11 .....                       | 46  |
| नोपधायाः 6.4.7 .....                           | 91  |
| <b>प</b>                                       |     |
| पञ्चम्या अत् 7.1.31 .....                      | 135 |
| पथिमथ्यृमुक्षामात् 7.1.85 .....                | 84  |
| पादः पत् 6.4.130 .....                         | 152 |
| पुंसोऽसुङ् 7.1.89 .....                        | 215 |

|   |     |
|---|-----|
| प्रथमायाश्च द्विवचने भाषायाम् 7.2.88 .....                | 125 |
| <b>ब</b>  |     |
| बहुवचनस्य वस्त्रसौ 8.1.21 .....                           | 145 |
| <b>भ</b>  |     |
| भस्य टेलोपः 7.1.88 .....                                  | 87  |
| भ्यसोऽभ्यम् 7.1.30 .....                                  | 133 |
| <b>म</b>  |     |
| मघवा बहुलम् 6.4.128 .....                                 | 73  |
| मो नो धातोः 8.2.64 .....                                  | 35  |
| <b>य</b>  |     |
| यः सौ 7.2.110 .....                                       | 249 |
| युजेरसमासे 7.1.71 .....                                   | 101 |
| युवावौ द्विवचने 7.2.92 .....                              | 124 |
| युषदस्मदोः षष्ठीचतुर्थीद्वितीयास्थयोर्वानावौ 8.1.20 ..... | 144 |
| युष्मदस्मदोरनादेशे 7.2.86 .....                           | 131 |
| युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश् 7.1.27 .....                      | 137 |
| यूयवयौ जसि 7.2.93 .....                                   | 126 |
| योऽचि 7.2.89 .....  | 130 |
| <b>र</b>  |     |
| रषाभ्यां णो नः समानपदे 8.4.1 .....                        | 32  |
| रोः सुपि 8.3.16 .....                                     | 33  |
| वोरूपधाया दीर्घ इकः 8.2.76 .....                          | 207 |
| <b>व</b>  |     |
| वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः 8.2.72 .....                    | 21  |
| वसोः सम्प्रसारणम् 6.4.131 .....                           | 213 |
| वा द्रुहमुहृष्णुहृष्णिहाम् 8.2.33 .....                   | 8   |
| वा नपुंसकस्य 7.1.79 .....                                 | 306 |
| वाह ऊट् 6.4.132 .....                                     | 14  |
| विश्वस्य वसुराटोः 6.3.128 .....                           | 111 |
| वेरपृक्तस्य 6.1.67 .....                                  | 98  |
| व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः 8.2.36 .....        | 107 |

|                             |     |
|-----------------------------|-----|
| श                           |     |
| शङ्खनोर्नित्यम् 7.1.81      | 312 |
| शरोऽचि 8.4.49               | 34  |
| शसो न 7.1.29                | 129 |
| शेषे लोपः 7.2.90            | 122 |
| श्वयुवमघोनामतद्धिते 6.4.133 | 77  |

ष

|                       |    |
|-----------------------|----|
| षट्चतुर्भ्यश्च 7.1.55 | 31 |
| ष्णान्ता षट् 1.1.24   | 90 |

स

|                              |     |
|------------------------------|-----|
| संप्रसारणाच्च 6.1.108        | 15  |
| समः समि 6.3.93               | 164 |
| सहस्य सध्निः 6.3.95          | 167 |
| सहेः साडः सः 8.3.56          | 26  |
| सान्तमहतः संयोगस्य 6.4.10    | 182 |
| साम आकम् 7.1.33              | 138 |
| सावनडुहः 7.1.82              | 19  |
| सौ च 6.4.13                  | 64  |
| स्कोः संयोगाद्योरते च 8.2.29 | 113 |
| स्पृशोऽनुदके किन् 3.2.58     | 201 |
| स्वरादिनिपातमव्ययम् 1.1.37   | 337 |

ह

|                           |    |
|---------------------------|----|
| हलि लोपः 7.2.113          | 44 |
| हो ढः 8.2.31              | 2  |
| हो हन्तेर्णिग्नेषु 7.3.54 | 67 |

अन्तर्गणसूत्रम्

|  |     |
|--|-----|
| (अन्तर्गणसूत्रम्) उपसर्गविभक्तिस्वरप्रतिरूपकाश्च | 344 |
|--|-----|

उणादिसूत्रम्

|                                    |     |
|------------------------------------|-----|
| (उणादि) 2.60 परौ व्रजेः षः पदान्ते | 110 |
|------------------------------------|-----|

वार्तिकानि

|   |     |
|---|-----|
| (वार्तिकम्) अन्वादेशे नपुंसके वा एनद् वक्तव्यः      | 283 |
| (वार्तिकम्) अस्य सम्बुद्धौ वानङ्, नलोपश्च वा वाच्यः | 219 |

|  |     |
|--|-----|
| (वार्तिकम्) एकवाक्ये युष्मदस्मदादेशा वक्तव्याः     | 149 |
| (वार्तिकम्) एते वान्नावादयोऽनन्वादेशे वा वक्तव्याः | 150 |
| (वार्तिकम्) ड्वावुत्तरपदे प्रतिषेधो वक्तव्यः       | 55  |

सूत्रक्रमः

|  |     |
|--|-----|
| 1.1.21 आद्यन्तवदेवस्मिन्                             | 45  |
| 1.1.24 ष्णान्ता षट्                                  | 90  |
| 1.1.37 स्वरादिनिपातमव्ययम्                           | 337 |
| 1.1.38 तद्धितश्चासर्वविभक्तिः                        | 347 |
| 1.1.39 कृन्मेजन्तः                                   | 349 |
| 1.1.40 त्वातोऽनुदके                                  | 350 |
| 1.1.41 अव्ययीभावश्च                                  | 351 |
| 1.1.45 इग्यणः संप्रसारणम्                            | 13  |
| 2.4.34 द्वितीयाटौस्वेनः                              | 51  |
| 2.4.82 अव्ययादाप्सुपः                                | 352 |
| 3.1.93 कृदतिङ्                                       | 98  |
| 3.2.58 स्पृशोऽनुदके किन्                             | 201 |
| 3.2.59 ऋत्विग्दधृक्स्त्रिगिदगुष्णिगश्चुयुजिकृष्ठां च | 96  |
| 3.2.60 त्यदादिषु दृशोऽनालोचने कञ्च                   | 195 |
| 6.1.108 संप्रसारणाच्च                                | 15  |
| 6.1.131 दिव उत्                                      | 29  |
| 6.1.37 न सम्प्रसारणे सम्प्रसारणम्                    | 80  |
| 6.1.5 उभे अभ्यस्तम्                                  | 190 |
| 6.1.6 जक्षित्यादयः षट्                               | 193 |
| 6.1.64 धात्वादेः षः सः                               | 12  |
| 6.1.67 वेरपृक्तस्य                                   | 98  |
| 6.1.97 अतो गुणे                                      | 41  |
| 6.3.116 नहिवृतिवृषिव्यधिरुचिसहितनिषु क्कौ            | 237 |
| 6.3.128 विश्वस्य वसुराटोः                            | 111 |
| 6.3.138 चौ   | 157 |
| 6.3.91 आ सर्वनाम्नः                                  | 196 |
| 6.3.93 समः समि                                       | 164 |
| 6.3.94 तिरसस्तिर्यलोपे                               | 169 |

## Index

|   |     |   |     |
|---|-----|---|-----|
| 6.3.95 सहस्य सध्रिः.....                | 167 | 7.1.81 शप्श्यनोर्नित्यम्.....             | 312 |
| 6.4.10 सान्तमहतः संयोगस्य.....          | 182 | 7.1.82 सावनडुहः.....                      | 19  |
| 6.4.12 इन्हन्यूषार्यम्णां शौ.....       | 63  | 7.1.84 दिव औत्.....                       | 28  |
| 6.4.127 अर्वणस्त्रसावनजः.....           | 83  | 7.1.85 पथिमथ्यभुक्षामात्.....             | 84  |
| 6.4.128 मघवा बहुलम्.....                | 73  | 7.1.86 इतोऽत्सर्वनामस्थाने.....           | 85  |
| 6.4.13 सौ च.....                        | 64  | 7.1.87 थो न्यः.....                       | 86  |
| 6.4.130 पादः पत्.....                   | 152 | 7.1.88 भस्य टेलोपः.....                   | 87  |
| 6.4.131 वसोः सम्प्रसारणम्.....          | 213 | 7.1.89 पुंसोऽसुङ्.....                    | 215 |
| 6.4.132 वाह ऊर्त्.....                  | 14  | 7.1.98 चतुरनडुहोरामुदात्तः.....           | 18  |
| 6.4.133 श्वयुवमघोनामतद्धिते.....        | 77  | 7.1.99 अम् सम्बुद्धौ.....                 | 20  |
| 6.4.137 न संयोगाद्धमन्तात्.....         | 60  | 7.2.103 किमः कः.....                      | 37  |
| 6.4.138 अचः.....                        | 156 | 7.2.106 तदोः सः सावनन्त्ययोः.....         | 115 |
| 6.4.139 उद ईत्.....                     | 162 | 7.2.107 अदस औ सुलोपश्च.....               | 226 |
| 6.4.14 अत्वसन्तस्य चाधातोः.....         | 185 | 7.2.108 इदमो मः.....                      | 39  |
| 6.4.24 अनिदितां हल उपधायाः किङ्ति.....  | 154 | 7.2.109 दश्च.....                         | 42  |
| 6.4.30 नाञ्चेः पूजायाम्.....            | 172 | 7.2.110 यः सौ.....                        | 249 |
| 6.4.7 नोपधायाः.....                     | 91  | 7.2.111 इदोऽय् पुंसि.....                 | 40  |
| 7.1.11 नेदमदसोरकोः.....                 | 46  | 7.2.112 अनाप्यकः.....                     | 43  |
| 7.1.21 अष्टाभ्य औश्.....                | 94  | 7.2.113 हलि लोपः.....                     | 44  |
| 7.1.27 युष्मदस्मद्भ्यां ङ्सोऽश्.....    | 137 | 7.2.84 अष्टन आ विभक्तौ.....               | 93  |
| 7.1.28 डेप्रथमयोरम्.....                | 120 | 7.2.86 युष्मदस्मदोरनादेशो.....            | 131 |
| 7.1.29 शसो न.....                       | 129 | 7.2.87 द्वितीयायाञ्च.....                 | 128 |
| 7.1.30 भ्यसोऽभ्यम्.....                 | 133 | 7.2.88 प्रथमायाश्च द्विवचने भाषायाम्..... | 125 |
| 7.1.31 पञ्चम्या अत्.....                | 135 | 7.2.89 योऽचि.....                         | 130 |
| 7.1.32 एकवचनस्य च.....                  | 134 | 7.2.90 शेषे लोपः.....                     | 122 |
| 7.1.33 साम आकम्.....                    | 138 | 7.2.92 युवावौ द्विवचने.....               | 124 |
| 7.1.55 षट्चतुर्भ्यश्च.....              | 31  | 7.2.93 यूयवयौ जसि.....                    | 126 |
| 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः..... | 74  | 7.2.94 त्वाहौ सौ.....                     | 121 |
| 7.1.71 युजेरसमासे.....                  | 101 | 7.2.95 तुभ्यमहौ ङयि.....                  | 132 |
| 7.1.78 नाभ्यस्ताच्छतुः.....             | 191 | 7.2.96 तवममौ ङसि.....                     | 136 |
| 7.1.79 वा नपुंसकस्य.....                | 306 | 7.2.97 त्वमावेकवचने.....                  | 127 |
| 7.1.80 आच्छीनद्योर्नुम्.....            | 309 | 7.3.54 हो हन्तेऽिर्णन्नेषु.....           | 67  |

|   |     |   |     |
|---|-----|---|-----|
| 7.4.48 अपो भि .....                                       | 260 | 8.2.63 नशेर्वा.....                     | 199 |
| 8.1.20 युषदस्मदोः षष्ठीचतुर्थीद्वितीयास्थयोर्नानावौ ..... | 144 | 8.2.64 मो नो धातोः.....                 | 35  |
| 8.1.21 बहुवचनस्य वक्षसौ .....                             | 145 | 8.2.68 अहन्.....                        | 286 |
| 8.1.22 तेमयावेकवचनस्य.....                                | 146 | 8.2.72 वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः .....  | 21  |
| 8.1.23 त्वामौ द्वितीयायाः .....                           | 147 | 8.2.76 वौरुपधाया दीर्घ इकः .....        | 207 |
| 8.2.2 नलोपः सुँप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति .....          | 56  | 8.2.8 न डिसम्बुद्धोः .....              | 54  |
| 8.2.29 स्कोः संयोगाद्योरते च .....                        | 113 | 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः.....         | 227 |
| 8.2.3 न मु ने.....  | 231 | 8.2.81 एत ईद्वहुवचने .....              | 229 |
| 8.2.30 चोः कुः.....                                       | 103 | 8.3.16 रोः सुपि .....                   | 33  |
| 8.2.31 हो ढः .....  | 2   | 8.3.56 सहेः साडः सः .....               | 26  |
| 8.2.32 दादेर्धातोर्घः.....                                | 4   | 8.3.58 नुम्बिसर्जनीयशर्व्यवायेऽपि ..... | 208 |
| 8.2.34 नहो घः.....  | 236 | 8.4.1 रषाभ्यां णो नः समानपदे.....       | 32  |
| 8.2.36 ब्रश्चभ्रस्जसुजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः .....        | 107 | 8.4.12 एकाजुत्तरपदे णः .....            | 65  |
| 8.2.37 एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्थ्वोः .....               | 5   | 8.4.49 शरोऽचि.....                      | 34  |
| 8.2.62 किन्प्रत्ययस्य कुः .....                           | 99  |   |     |

Visit [www.arshaavinash.in](http://www.arshaavinash.in)

Website for free E-books on Vedanta and Sanskrit

All the E-books available on the website can be downloaded FREE!

**PUJYA SWAMI DAYANANDA SARASWATI- A BRIEF BIOGRAPHY BY N. AVINASHILINGAM.** It is available in English, Tamil, Hindi, Japanese and Portuguese.

**SWAMI PARAMARTHANANDA'S TRANSCRIBED CLASS NOTES:** Available class notes are Introduction to Vedanta, Tattva Bodha, Bhagavad Gita (3329 pages), Isavasya Upanisad, Kenopanisad, Kathopanisad, Prasna Upanisad, Mundaka Upanisad, Mandukya Upanisad with karika, Taittiriya Upanisad, Aitareya Upanisad, Chandogya Upanisad, Brihadarnyaka Upanisad (1190 pages), Kaivalya Upanisad, Brahma Sutra (1486 pages), Atma Bodha, Vivekachudamani (2038 pages), Panchadasi, Manisha Panchakam, Upadesha Saara, Saddarsanam, Jayanteya Gita, Jiva Yatra, Advaita Makaranda, Dakshinamurthy Stotram, Drg Drsyva Viveka, Niti Satakam, Vairagya Sataka, Naishkarmya Siddhi, etc.

**BRNI MEDHA MICHKA'S BOOKS ON SANSKRIT GRAMMAR:** Enjoyable Sanskrit Grammar Books- Basic Structure of Language, Phonetics & Sandhi, Derivatives (Pancavrttayah), Dhatukosah, Astadhyayi, Study Guide to Panini Sutras through Lagu Siddhanta Kaumudi, Sanskrit Alphabet Study Books- Single Letters, Conjunct Consonants.

There are many more books and articles on Yoga, Meditation, Holy chants, Indian culture and Spirituality.



**Arsha Avinash Foundation**

**104 Third Street, Tatabad, Coimbatore 641012, India**

**Phone: +91 9487373635**

**E mail: [arshaavinash@gmail.com](mailto:arshaavinash@gmail.com)**

**[www.arshaavinash.in](http://www.arshaavinash.in)**